

1 मध्यप्रदेश का सामान्य परिचय

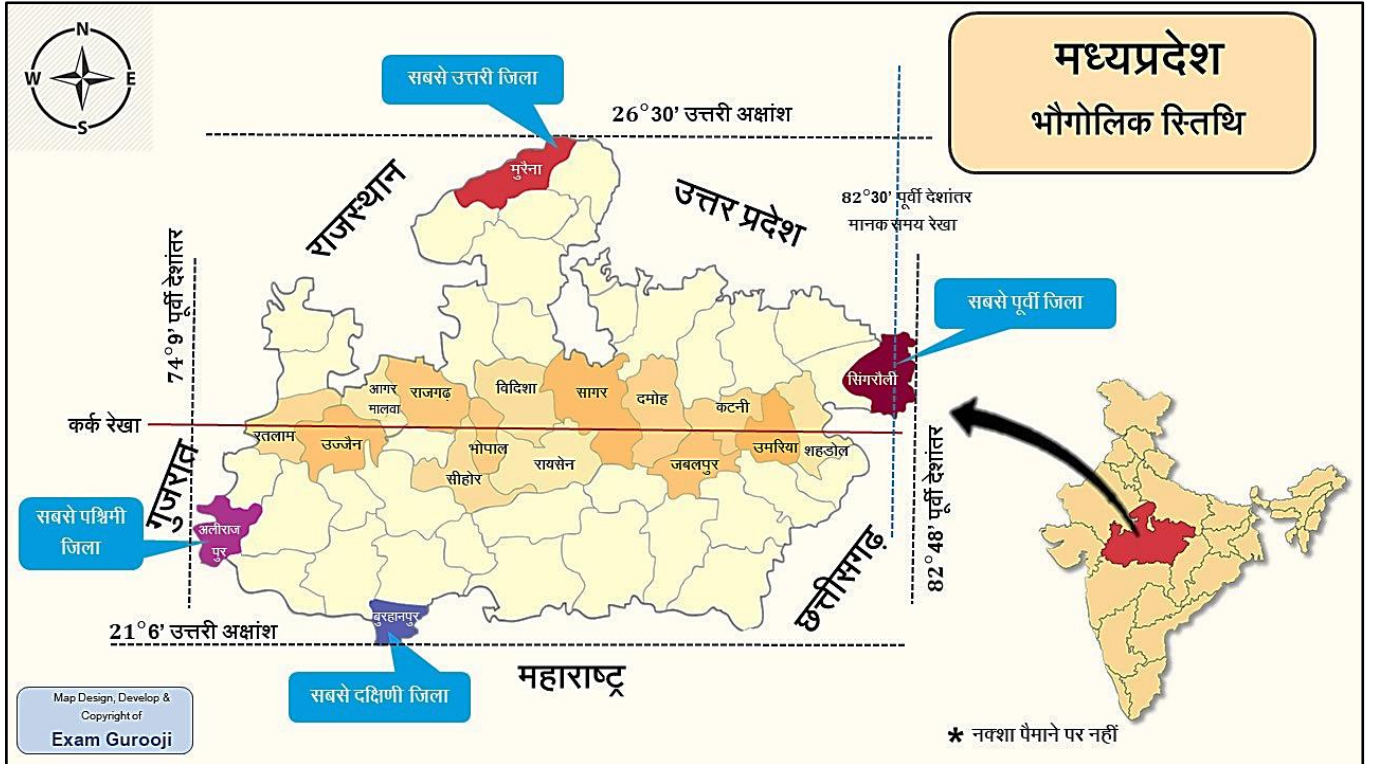
- मध्यप्रदेश - भू-आवेष्टित राज्य, प्राचीनतम गोंडवाना लैंड का भाग, संरचना की दृष्टि से प्रायद्वीपीय पठार का उत्तरी भाग मध्यप्रदेश के अंतर्गत आता है।

भू-आवेष्टित – ऐसे राज्य या जिनकी कोई समुद्री तट रेखा नहीं होती और इनकी सीमा अन्य किसी देश की सीमा से नहीं लगती हैं।
भारत में 5 भू-आवेष्टित – हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, तेलंगाना

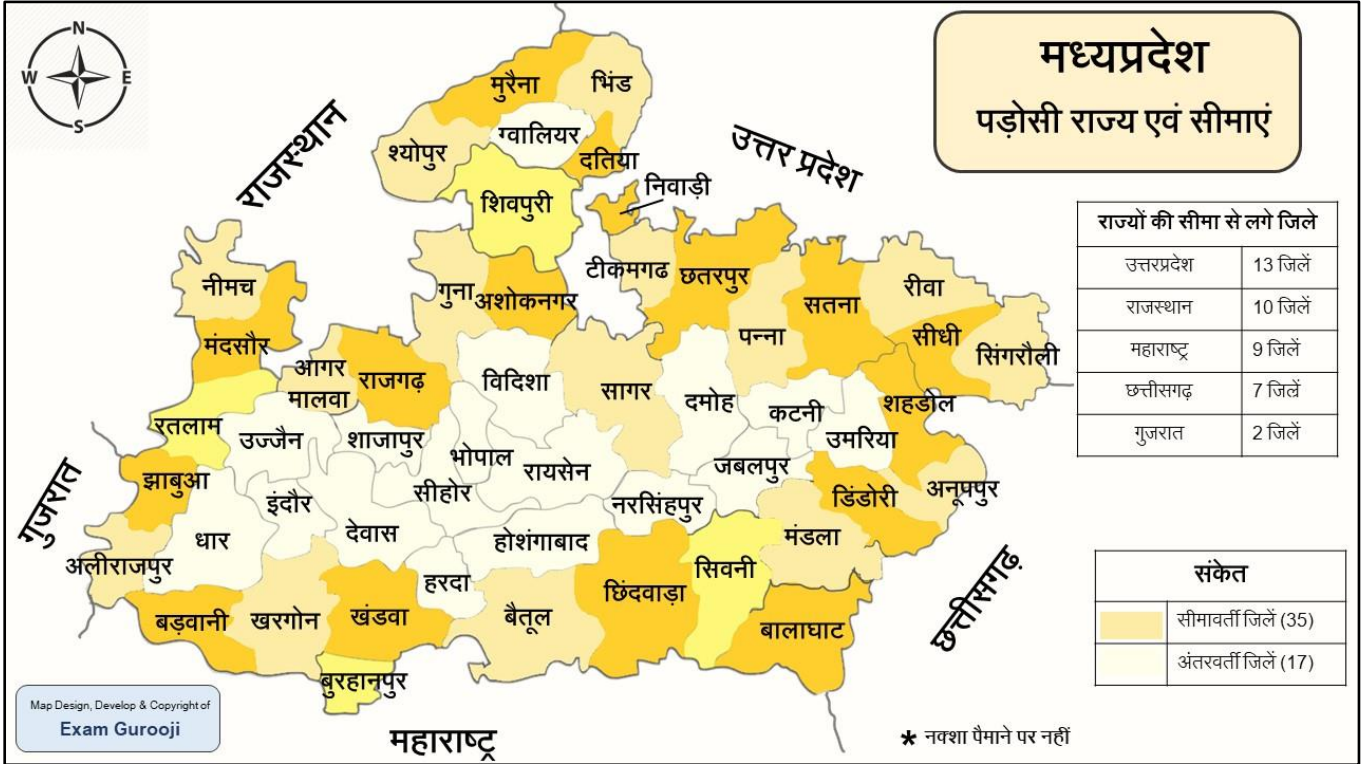
- **उपनाम** - भारत का दिल या हृदय प्रदेश, सोया प्रदेश, नदियों का मायका
- मध्यप्रदेश नामकरण पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा
- स्थापना 1 नवम्बर 1956
- प्रदेश दिवस 1 नवम्बर
- मध्यप्रदेश का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर 2000 (छत्तीसगढ़ के अलग होने के बाद)
- क्षेत्रफल 3,08,252 वर्ग किमी. (भारत का 9.38% देश में दूसरा स्थान)



नोट - अमरकंटक की किरार घाटी विवाद के कारण कुछ जगह 3,08,245 क्षेत्रफल वर्ग किमी भी मिलता है।



- विस्तार 21°6' N अक्षांश से 26°30' N अक्षांश तथा 74°9' E देशांतर से 82°48' E देशांतर तक
- आबाद ग्राम 52,117
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 605 किमी
- नगर निगम 16
- पूर्व से पश्चिम विस्तार 870 किमी
- (नोट - 1 अक्टूबर 2018 को केबिनेट ने भिंड व दतिया को नगर निगम बनाने का फैसला लिया था, लेकिन यह फैसला अभी लागू नहीं हुआ है।)
- संभाग 10
- नगर पालिका 98
- जिलें 52
- नगर पंचायत 264
- तहसील 412
- ग्राम पंचायत 22824
- विकासखण्ड 313
- जनपद पंचायत 313
- कुल नगर/शहर 476
- जिला पंचायत 52
- कुल ग्राम 54,903



मध्यप्रदेश
पड़ोसी राज्य एवं सीमाएं

राज्यों की सीमा से लगे जिले	
उत्तरप्रदेश	13 जिलें
राजस्थान	10 जिलें
महाराष्ट्र	9 जिलें
छत्तीसगढ़	7 जिलें
गुजरात	2 जिलें

संकेत	
	सीमावर्ती जिलें (35)
	अंतरवर्ती जिलें (17)

* नक्शा पैमाने पर नहीं

- रेंज (आई.जी.पुलिस) 11
- रेंज (डी.आई.जी.पुलिस) 15
- कंट्रोल रूम 53
- पुलिस थाने 1099
- पुलिस चौकीयाँ 579
- लोकसभा सीटे 29
- विधानसभा सीटे 230+1
- राज्यसभा सीटे 11

- राजकीय फल - आम
- राजकीय नदी - नर्मदा

नोट - राजकीय पशु, राजकीय पक्षी तथा राजकीय वृक्ष 1 नवंबर 1981 को राज्य की 25 वी वर्षगांठ पर राज्य प्रतीक अधिनियम, 1981 द्वारा घोषित

राजकीय चिन्ह

- राजकीय प्रतीक चिन्ह - चौबीस स्तूपनुमा आकृतियों के अन्दर एक वृत्त जिसमें गेहूं व दूसरी और धान की बालियाँ व बीच में वट वृक्ष प्रदर्शित है, तथा मध्यप्रदेश शासन लिखा है।
- मध्यप्रदेश का गान - मेरा मध्यप्रदेश लेखक - महेश श्रीवास्तव
- राजकीय पुष्प - सफ़ेद लिली
- राजकीय नाट्य - माच
- राजकीय नृत्य - राई
- राजकीय खेल - मलखम्ब
- राजकीय मछली - महाशीर
- राजकीय पशु - बारहसिंघा (ब्रेडरी प्रजाति का)
- राजकीय पक्षी - दूधराज/ शाह बुलबुल (पेराडाइस फ्लाईकेचर)
- राजकीय वृक्ष - बरगद (वटवृक्ष)
- राज्य फसल - सोयाबीन

जनगणना

- जनसंख्या 7,26,26,809 (देश में 5 वां स्थान और 6%)
- पुरुष 3,76,12,306 (51.79%)
- महिला 3,50,14,503 (48.21%)
- लिंगानुपात 931 (भारत - 943)
- जनसंख्या घनत्व 236 (भारत - 382)
- जनसंख्या वृद्धि दर 20.3 (भारत - 17.7)
- ग्रामीण 5,25,57,404 (72.4%)
- नगरीय 2,00,69,405 (27.6%)
- अनुसूचित जाती (SC) 1,13,42,320 (15.61%)
- अनुसूचित जन जाति (ST) 1,53,16,784 (21.08%)
देश में प्रथम
- साक्षरता - 69.32%
- पुरुष - 78.73%
- स्त्री - 59.24%
- मध्यप्रदेश की सर्वाधिक सीमा उत्तर प्रदेश तथा सबसे कम सीमा गुजरात से लगती हैं।



- मध्यप्रदेश के अन्तर्वर्ती जिले (कुल 17 जिले जिनकी सीमा किसी अन्य राज्य को नहीं छूती) - ग्वालियर, विदिशा, उज्जैन, धार, इंदौर, देवास, शाजापुर, सीहोर, भोपाल, रायसेन, होशंगाबाद, हरदा, नरसिंहपुर, दमोह, कटनी, जबलपुर, उमरिया।
- कर्क रेखा - मध्यप्रदेश के 14 जिलों से (रतलाम, उज्जैन, आगरमालवा, राजगढ़, सिहोर, भोपाल, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, जबलपुर, कटनी, उमरिया, शहडोल)।
- मध्य प्रदेश के 13 जिलों की सीमा उत्तर प्रदेश से (मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, टीकमगढ़, निवाड़ी, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, सिंगरौली)।

नोट - भारत सरकार की जनगणना 2011 के नक्शे एवं सीधी जिले की शासकीय वेबसाइट के अनुसार सीधी जिले की सीमा उत्तरप्रदेश के साथ नहीं लगती हैं।

- मध्य प्रदेश के 10 जिलों की सीमा राजस्थान से (झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, नीमच, आगरमालवा, राजगढ़, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना)
- मध्य प्रदेश के 9 जिलों की सीमा महाराष्ट्र से (अलीराजपुर, बड़वानी, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट)
- मध्य प्रदेश के 7 जिलों की सीमा छत्तीसगढ़ से (सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, डिंडोरी, मंडला व बालाघाट)

नोट - भारत सरकार की जनगणना 2011 के नक्शे एवं मंडला जिले की शासकीय वेबसाइट के अनुसार मंडला जिले की सीमा छत्तीसगढ़ के साथ लगती हैं।

- मध्य प्रदेश के 2 जिलों की सीमा गुजरात से (झाबुआ और अलीराजपुर)

मध्यप्रदेश में प्रथम

- प्रथम राज्यपाल - डॉ. पट्टाभि सीतारमैया
- प्रथम महिला राज्यपाल - सुश्री सरला ग्रेवाल
- प्रथम मुख्यमंत्री - पं. रविशंकर शुक्ल
- प्रथम गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री - कैलाश चन्द्र जोशी
- प्रथम महिला मुख्यमंत्री - सुश्री उमा भारती
- प्रथम न्यायाधीश - मो. हिदायतुल्ला
- प्रथम महिला न्यायाधीश - श्रीमती सरोजनी सक्सेना
- प्रथम विधानसभा अध्यक्ष - कुंजीलाल दुबे
- प्रथम मुख्य सचिव - एच. एस. कामथ
- प्रथम महिला मुख्य सचिव - निर्मला बुच
- प्रथम विधानसभा उपाध्यक्ष - विष्णु विनायक सरवटे
- प्रथम विपक्ष का नेता - विष्णुनाथ तामस्कर
- प्रथम महिला विपक्ष नेता - जमुनादेवी

- प्रथम राज्य निर्वाचन आयुक्त - एन. बी. लोहानी
- प्रथम राज्य वित्त आयोग - शीतला सहाय
- प्रथम राज्य सूचना आयुक्त - टी. एन. श्रीवास्तव
- प्रथम पुलिस महानिरीक्षक - बी. जी. घाटे
- प्रथम पुलिस महानिदेशक - वी. पी. दुबे
- प्रथम महाधिवक्ता - एम. अधिकारी
- प्रथम लोकायुक्त - पी वी दीक्षित
- प्रथम राज्य योजना मंडल अध्यक्ष - प्रकाशचंद्र सेठी
- प्रथम भारतीय पुलिस सेवा (महिला) मध्य प्रदेश में - कु. आशा गोपालन
- प्रथम लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष - डी. बी. रेड्डी
- म. प्र. से एवरेस्ट फतह करने वाले प्रथम व्यक्ति - रत्नेश पाण्डेय (सतना) व भगवान सिंह कुशवाह (भोपाल)
- म. प्र. से एवरेस्ट फतह करने वाली प्रथम महिला - मेघा परमार (सिहोर) व दूसरी महिला - भावना डेहरिया (छिंदवाड़ा)
- प्रथम राष्ट्रीय उद्यान - कान्हा किसली
- प्रथम विश्वविद्यालय - डॉ. हरिसिंह गौर
- प्रथम केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा - सागर विश्वविद्यालय
- प्रथम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा - भोपाल
- प्रथम विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) - पीथमपुर
- प्रथम जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान - डिंडोरी
- प्रथम बायोस्फीयर रिजर्व - पचमढी
- प्रथम टाइगर प्रोजेक्ट (मंडला) - कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान
- प्रथम आकाशवाणी केंद्र - इंदौर
- प्रथम समाचार पत्र - ग्वालियर अखबार (1840)
- प्रथम आवासीय खेल विद्यालय - सीहोर
- प्रथम परमाणु बिजलीघर - चुटका गांव (मंडला)
- प्रथम सौर ऊर्जा ग्राम - कस्तूरबा ग्राम इंदौर
- प्रथम ग्राम न्यायालय - बैरसिया (भोपाल)
- प्रथम पर्यटन नगर - शिवपुरी
- प्रथम आपदा प्रबंधन संस्थान - भोपाल
- प्रथम रत्न परिष्कृत केंद्र - जबलपुर
- प्रथम हाइवे एक्सप्रेस मार्ग - इंदौर - भोपाल राजमार्ग
- प्रदेश का सर्वाधिक गांजा उत्पादक जिला - खंडवा
- प्रदेश का सर्वाधिक अफीम उत्पादक जिला - मंदसौर
- प्रदेश की प्रथम नगरपालिका - दतिया (1907)
- प्रदेश का पहला नगर निगम - जबलपुर (1864)

मध्यप्रदेश में सबसे बड़ा/लम्बा/ऊँचा/एकमात्र

- सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन - इटारसी
- सबसे लम्बी नदी - नर्मदा
- सबसे बड़ी अनुसूचित जनजाति - भील
- सबसे बड़ा अनुसूचित जनजाति समूह - गोंड
- सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र - सोहागपुर
- सबसे लम्बा नदी सड़क पुल - सिंध नदी पुल (2500 मी.), शिवपुरी
- सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 46 (634 कि.मी.)
- सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 135BB (7.5 कि.मी.)
- सबसे बड़ा जल प्रपात - केवटी जल प्रपात, बीहड़ नदी
- सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान - कान्हा किसली, मंडला (940 वर्ग किमी)
- सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान - फॉसिल राष्ट्रीय उद्यान (डिंडोरी 0.27 वर्ग कि.मी.)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग - जबलपुर
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला - छिंदवाडा
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा संभाग - शहडोल
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा जिला - दतिया
- सबसे ऊँचा स्थान - धूपगढ़ (1350 मी.)
- सबसे नीचा स्थान - नर्मदा - सोन घाटी

एशिया और विश्व में प्रथम

- एशिया का प्रथम शारीरिक प्रशिक्षण संस्थान - लक्ष्मीबाई शारीरिक विश्वविद्यालय ग्वालियर
- एशिया कि सबसे बड़ी जिला अदालत - भोपाल की जिला अदालत
- एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र - उज्जैन
- एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत मेगनीज खदान - भावेली (बालाघाट)
- एशिया में प्रथम एवं विश्व का तीसरा लेजर अनुसन्धान केंद्र - इंदौर
- वरिष्ठ नागरिक पुनर्वास निति अपनाने वाला प्रथम राज्य- मध्यप्रदेश
- विश्व का पहला जनजातीय सामुदायिक रेडियो केंद्र - भाबरा (चंद्रशेखर आजाद नगर), अलीराजपुर
- विश्व की पहली वाइट टाइगर सफारी महाराजा मार्टड सिंह जूदेव वाइट टाइगर सफारी एंड जू- सतना जिले के मुकुंदपुर में
- विश्व का एक मात्र गौ अभ्यारण्य - सलारिया गाँव(आगरमालवा)
- एशिया एवं देश का प्रथम लेजर अनुसंधान केंद्र - इंदौर
- एशिया एवं देश का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र - उज्जैन
- एशिया का सबसे बड़ा दलहन अनुसंधान केंद्र - अमलाहा, सीहोर

मध्यप्रदेश में एकमात्र और प्रथम

- प्रदेश का एकमात्र उद्यान जहां हवाई पट्टी है - कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
- प्रदेश का एकमात्र किशोर बंदी ग्रह - नरसिंहपुर
- प्रदेश का एकमात्र गैस आधारित विद्युत गृहविद्युत गृह - भांडेर (दतिया)
- प्रदेश का एकमात्र जड़ी बूटी बैंक - पचमढ़ी के पनारपानी में
- प्रदेश का एकमात्र निर्यात उर्वरक औद्योगिक पार्क - देवास
- प्रदेश का एकमात्र सैनिक अड्डा - महाराजपुर (मुरार), ग्वालियर
- प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन - पचमढ़ी
- प्रदेश का पहला आवासीय खेल विद्यालय - सीहोर
- प्रदेश का पहला जल विद्युत केंद्र - गांधी सागर जल विद्युत केंद्र
- प्रदेश का पहला पवन ऊर्जा फॉर्म - धार जिले के खेड़ा गांव की पहाड़ियों पर
- प्रदेश का पहला पेपरलेस कार्यालय - बालाघाट जनसंपर्क कार्यालय
- प्रदेश का पहला वेलेड्रोम - जबलपुर
- प्रदेश का पहला सर्प उद्यान - भोपाल
- प्रदेश का पहला सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय - ग्वालियर
- प्रदेश का पहला सैलरीच जैविक खाद संयंत्र - भोपाल
- प्रदेश का प्रथम किसान विद्यालय - जबलपुर
- प्रदेश का प्रथम चिकित्सा महाविद्यालय - ग्वालियर (1946)
- प्रदेश का प्रथम जल पर्यटन स्थल - हनुवंतिया टापू खंडवा
- प्रदेश का प्रथम नगर निगम - जबलपुर (1864)
- प्रदेश का प्रथम भीली सामुदायिक रेडियो केंद्र - चंद्रशेखर आजाद नगर (भाबरा), अलीराजपुर
- प्रदेश का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान - कान्हा किसली
- प्रदेश का प्रथम समाचार पत्र - ग्वालियर अखबार (1840)
- प्रदेश का प्रथम सैनिक स्कूल - रीवा
- प्रदेश की पहली खुली जेल - नवजीवन शिविर, मुंगावली, अशोकनगर
- प्रदेश की पहली मंडी - करोंद, भोपाल
- प्रदेश की प्रथम औद्योगिक प्रयोगशाला - इंदौर
- प्रदेश की प्रथम चलित एटीएम सेवा - इंदौर
- प्रदेश की प्रथम झींगा हेचरी - बालाघाट
- प्रदेश की प्रथम डीएनए प्रयोगशाला - सागर
- प्रदेश का पहला डिजिटल गांव घोषित - बड़झिरी भोपाल
- प्रदेश का एकमात्र संगीत विश्वविद्यालय - ग्वालियर
- प्रदेश का प्रथम बायोस्फीयर रिजर्व - पचमढ़ी
- प्रदेश का पहला ताप विद्युत केंद्र - चांदनी ताप विद्युत केंद्र नेपानगर, बुरहानपुर

- प्रदेश का पहला महिला पुलिस थाना - भोपाल
- प्रदेश का प्रथम खुले में शौच मुक्त घोषित जिला - नरसिंहपुर
- प्रदेश का प्रथम पर्यटक नगर - शिवपुरी
- प्रदेश का पहला सौर ऊर्जा पार्क - गणेशपुर, राजगढ़
- प्रदेश की पहली चलित आंगनबाड़ी - 'जुगनू' इंदौर
- प्रदेश का प्रथम पुलिस मेट्रो थाना - हबीबगंज, भोपाल
- प्रदेश का प्रथम मेडिकोलीगल संस्थान - भोपाल
- प्रदेश की प्रथम खुली जेल कॉलोनी - होशंगाबाद
- प्रदेश की प्रथम महिला अदालत का आयोजन - 10 मार्च 2013 को मंदसौर में
- प्रदेश की पहली मल्टी डिस्टलरी रिसर्च यूनिट - ग्वालियर के गजरा राजा मेडिकल कॉलेज में

- मध्य भारत की पहली फाइनेंशियल सिटी - इंदौर में प्रस्तावित
- प्रदेश के निजी क्षेत्र का पहला आईटी पार्क - मंडीदीप, रायसेन में प्रस्तावित
- प्रदेश का पहला अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं अनुसंधान केंद्र - खमरिया जबलपुर में प्रस्तावित
- प्रदेश का पहला तितली घर - रायसेन जिले के गोपालपुर में प्रस्तावित
- प्रदेश का पहला नर्सिंग पीएचडी शोध केंद्र - इंदौर में प्रस्तावित

मध्यप्रदेश में जनगणना में सबसे बड़ा और छोटा

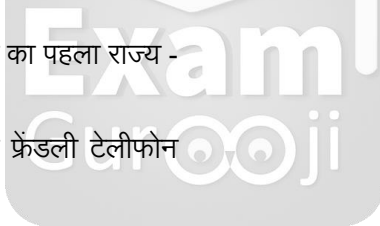
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा संभाग - इंदौर
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे छोटा संभाग - नर्मदापुरम
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला - इंदौर
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे छोटा जिला - हरदा
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी तहसील - इंदौर
- जनसँख्या की दृष्टि से सबसे छोटी तहसील - रौन, भिंड
- सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला - बालाघाट (1021:1000)
- सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला - भिंड (837:1000)
- सर्वाधिक जन घनत्व वाला जिला - भोपाल (855)
- सबसे कम जन घनत्व वाला जिला - डिंडोरी (94)
- सर्वाधिक वृद्धि दर वाला जिला - इंदौर (32.9%)
- सबसे कम जनसँख्या वृद्धि दर वाला जिला - अनुपपुर (12.3%)
- सर्वाधिक अनुसूचित जाति वाला जिला - इंदौर
- सर्वाधिक अनुसूचित जन जाति वाला जिला - धार
- सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला - जबलपुर (81.1%)
- न्यूनतम साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर (36.1%)

- सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला - जबलपुर (87.3%)
- सबसे कम पुरुष साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर
- सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला - भोपाल (74.9%)
- सबसे कम महिला साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर (30.3%)

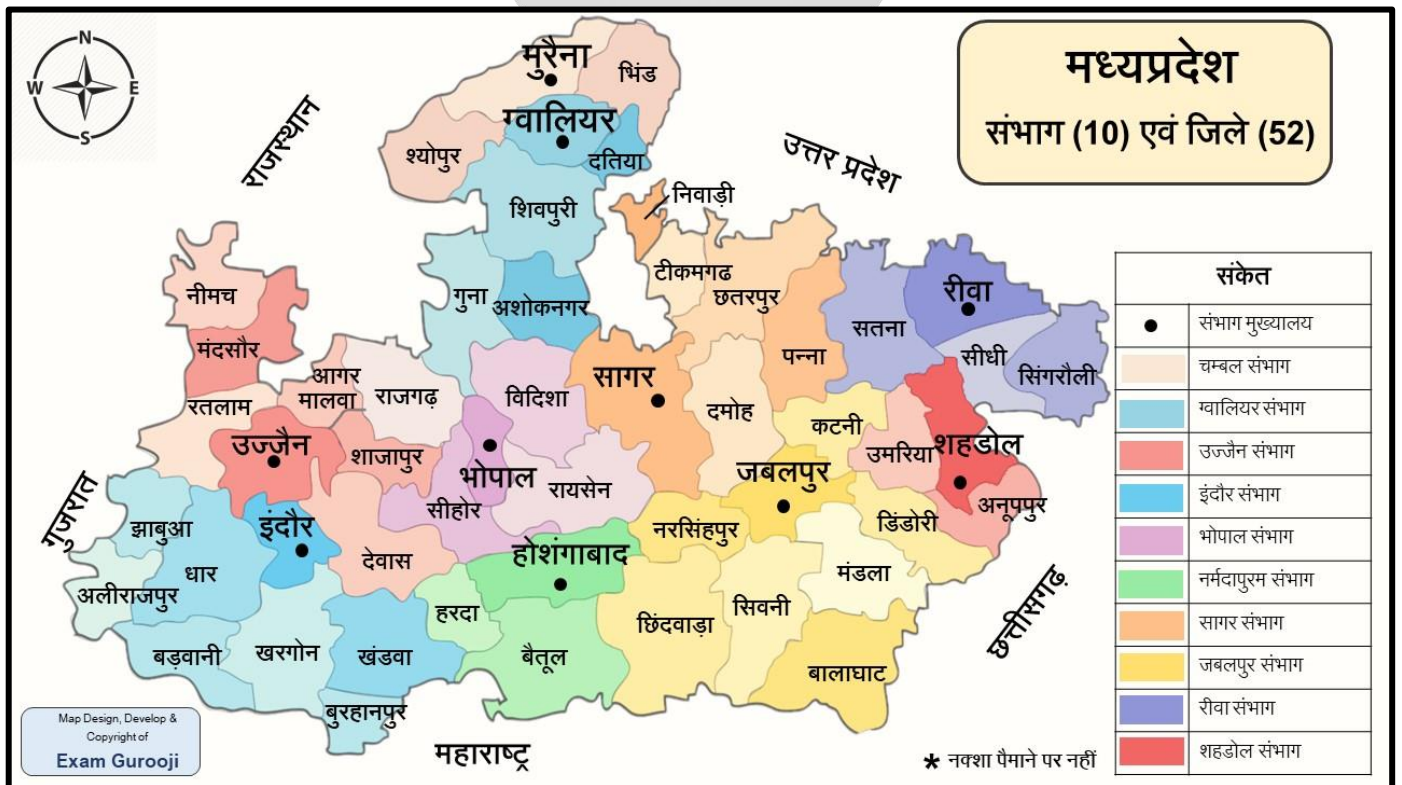
देश का प्रथम

- आनंद विभाग गठित करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
- देश का पहला ISO प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाला पुलिस अधीक्षक कार्यालय - देवास
- देश का पहला आयकर हेल्प सेंटर - इंदौर
- देश का पहला आवासीय कौशल विकास विश्वविद्यालय - सिंबायोसिस यूनिवर्सिटी ऑफ अप्लाइड साइंसेस, इंदौर
- देश का पहला एडवोकेट कंटिन्यूइंग लीगल एजुकेशन इंस्टीट्यूट - ग्वालियर
- देश का पहला ऑप्टिकल फाइबर कारखाना - मंडीदीप, रायसेन जापान के सहयोग से
- देश का पहला चलित टेलीफोन एक्सचेंज - अयोलपाटा, शिवपुरी
- देश का पहला जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रबंध केंद्र - भोपाल
- देश का पहला दिव्यांग पार्क - होशंगाबाद
- देश का पहला नेशनल सैनिक स्कूल - भोपाल
- देश का पहला परमाणु बिजलीघर - चुटका गांव (मंडला)
- देश का पहला प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवंटित मकान - ग्राम विशन खेड़ा विकासखंड आरोन जिला गुना
- देश का पहला बाबू का डीएनए टेस्ट करवाने वाला टाइगर रिजर्व - सतपुड़ा टाइगर रिजर्व
- देश का पहला बौद्ध विश्वविद्यालय - सांची, रायसेन
- देश का पहला मदर मिल्क बैंक - जिला अस्पताल होशंगाबाद
- देश का पहला रत्न परिष्कृत केंद्र - जबलपुर
- देश का पहला राज्य जिसने सभी गांव को ग्राम संपर्क नामक वेबसाइट से जोड़ने में सफलता प्राप्त की - मध्य प्रदेश
- देश का पहला रामायण कला संग्रहालय - ओरछा
- देश का पहला राष्ट्रीय उद्यान जिसने अपना शुभंकर जारी किया - कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान शुभंकर भूरसिंह बारहसिंघा
- देश का पहला विकलांग पुनर्वास केंद्र - जबलपुर
- देश का पहला सामान्य वर्ग निर्धन कल्याण आयोग स्थापित करने वाला राज्य - मध्य प्रदेश
- देश का पहला सिंक्रोट्रॉन विकिरण स्रोत इंडस 1 - भोपाल
- देश का पहला सोयाबीन वायदा बाजार - इंदौर

- देश की पहली आईएसओ प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाली ट्रेन - भोपाल एक्सप्रेस (भोपाल से दिल्ली)
 - देश की प्रथम मलखंब अकैडमी - उज्जैन
 - देश का एकमात्र आदिवासी शोध संचार केंद्र - झाबुआ
 - देश का एकमात्र मानव संग्रहालय - इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय भोपाल
 - हिंदी क्षेत्र का पहला राज्य नाट्य विद्यालय - भोपाल
 - देश में सर्वाधिक नदियां - मध्य प्रदेश
 - प्रत्येक गांव का मास्टर प्लान बनाने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - बायोमास संयंत्र द्वारा बिजली से प्रकाशित होने वाला देश का पहला गांव - कसाई गांव बैतूल
 - मानव अधिकार आयोग गठित करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - लोक सेवा प्रदाय गारंटी अधिनियम लागू करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - सौर ऊर्जा से संचालित देश का पहला इको फ्रेंडली टेलीफोन एक्सचेंज - भोपाल
 - हैप्पीनेस मंत्रालय की स्थापना करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - सौर ऊर्जा से संचालित देश का पहला इको फ्रेंडली टेलीफोन एक्सचेंज - भोपाल
 - हिंदी क्षेत्र का पहला राज्य नाट्य विद्यालय - भोपाल
 - हैप्पीनेस मंत्रालय की स्थापना करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या की दृष्टि से देश में प्रथम राज्य - मध्य प्रदेश
 - आईएसओ सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाला देश का पहला राष्ट्रीय उद्यान - वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल
 - आवास गारंटी विधेयक पारित करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - ईमेल नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - ग्राम न्यायालय स्थापित करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - ग्राम सभा की शुरुआत करने वाला देश का पहला राज्य - मध्य प्रदेश
 - देश का पहला नगरीय निकायों में 50% महिला आरक्षण देने वाला राज्य - मध्य प्रदेश
 - देश का पहला प्रदेश जिसका अपना राज्यगान है - मध्य प्रदेश
 - देश का पहला किन्नर बोर्ड गठित करने वाला राज्य - मध्य प्रदेश
- देश की पहली स्िकल डेवलपमेंट युनिवर्सिटी - इंदौर, म. प्र. (प्रस्तावित)
 - देश की पहली रोबोटिक कंट्रोल वेधशाला - उज्जैन, म.प्र. (प्रस्तावित)
 - देश का पहला आदिवासी मेडिकल कॉलेज - खंडवा में प्रस्तावित
 - देश का पहला पुरातात्विक पार्क - संग्रामपुर, दमोह में प्रस्तावित
 - देश का पहला भूगर्भ एवं खनिज संग्रहालय - ग्वालियर में प्रस्तावित
 - देश का पहला माइक्रो चिप बनाने का प्लांट - भोपाल में प्रस्तावित
 - देश का पहला दुनिया का चौथा डाटा सेंटर पार्क (कलस्टर)- इंदौर में प्रस्तावित
 - देश की पहली डिजाइन यूनिवर्सिटी - उज्जैन में प्रस्तावित
 - देश का पहला शिव संग्रहालय - भोजपुर, रायसेन में प्रस्तावित



- स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत ब्रिटिश प्रांतों एवं देशी रियासतों को एकीकृत करके भारत में राज्यों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया, जो निम्नलिखित हैं -
- **'A' श्रेणी के राज्य -**
- ब्रिटिश भारत के प्रांतों के साथ 216 देशी रियासतों की सम्मिलित करके 'A' श्रेणी के राज्यों का गठन किया गया।
- ये राज्य थे - असम, बिहार, बंबई, मध्य प्रान्त, मद्रास, ओडीशा, पंजाब, संयुक्त प्रांत, पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश। इनकी संख्या 10 थी।
- **'B' श्रेणी के राज्य**
- 275 देशी रियासतों की नयी प्रशासनिक इकाई में गठित करके 'B' राज्य की श्रेणी प्रदान की गयी।
- ये राज्य थे- हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर, मध्य भारत, मैसूर, पेप्सू (पटियाला और पूर्वी पंजाब के राज्यों का संघ), राजस्थान, सौराष्ट्र तथा त्रावणकोर-कोचीन। इनकी संख्या 8 थी।
- **'C' श्रेणी के राज्य -**
- 61 देशी रियासतों को एकीकृत करके 'C' राज्य की श्रेणी में रखा गया।
- ये राज्य थे - अजमेर, बिलासपुर, भोपाल, दुर्ग, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, कच्छ, मणिपुर, त्रिपुरा और विन्ध्य प्रदेश के राज्य। इनकी संख्या 10 थी।
- **'D' श्रेणी के राज्य**
-
- अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह को 'D' राज्य की श्रेणी में रखा गया था।
- 1947 में राज्यों की जो श्रेणियां बनी थी उनमें पार्ट A में म. प्र. (सी. पी. और बरार), पार्ट B में मध्य भारत का प्रांत तथा पार्ट C में विन्ध्यप्रदेश और भोपाल के राज्य शामिल थे।
- **मध्यप्रदेश (सी. पी. एवं बरार) -** सेंट्रल प्रोविंस तथा बरार में छत्तीसगढ़ और बघेलखण्ड को मिलाकर मध्यप्रदेश (सी. पी. एवं बरार) बना जो पार्ट - A के अंतर्गत था।
- इसकी राजधानी नागपुर थी।
- **मध्य भारत -** पश्चिम की रियासतों को मिलाकर मध्य भारत बना जो पार्ट - B के अंतर्गत था।
- मध्यप्रदेश (सी. पी. एवं बरार) राज्य के पश्चिम में स्थित 26 रियासतों को मिलाकर पार्ट B राज्य (मध्य भारत) बनाया गया।
- इसकी राजधानी 6-6 माह के लिए ग्वालियर और इंदौर बनार्यो गयी।
- **विन्ध्य प्रदेश -** विन्ध्य की 36 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश बना जो पार्ट के अंतर्गत था।
- रीवा को इसकी राजधानी बनाया गया।
- **भोपाल -** 1 जून 1949 को भारत में विलय
- भोपाल एक पृथक राज्य था जो पार्ट C राज्य के अंतर्गत था।
- **राज्य पुनर्गठन आयोग - 1953**
- 29 दिस. 1953 को राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की गयी।



- भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश फजल अली इस आयोग के अध्यक्ष और पंडित एच.एन. कुंजरू और सरदार के.एम. पाणिकर इसके सदस्य थे।
- इस अधिनियम के अंतर्गत भारत में चौदह राज्य और पांच केंद्र शासित प्रदेश थे। जिन चौदह राज्यों का उल्लेख था, वे हैं- आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, बंबई, जम्मू-कश्मीर, केरल, मध्यप्रदेश, मद्रास, मैसूर, उड़ीसा (वर्तमान में ओड़िसा), पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल।
- जिन पांच केंद्रशासित प्रदेशों का नाम था, वे हैं - दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा एवं अंडमान-निकोबार द्वीप समूह।
- राज्य पुनर्गठन आयोग 1953 की अनुशंसा पर 1 नवम्बर, 1956 को नवीन म.प्र. का गठन हुआ।

राज्य पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा पर राज्य की सीमाओं में परिवर्तन

- बुलढाना, अकोला, अमरावती, यवतमाल, वर्धा, नागपुर, भंडारा, चाँदा को तत्कालीन बम्बई राज्य (वर्तमान महाराष्ट्र) में मिला दिया गया।
- शेष पार्ट - A का भाग वर्तमान म.प्र. का भाग बना।
- मंदसौर जिले की भानपुरा तहसील के सुनेल टप्पा को छोड़कर शेष भाग को म.प्र. में मिला लिया गया।
- राजस्थान के कोटा जिले की सिरोंज तहसील को म.प्र. के विदिशा जिले में लाया गया।
- शेष पार्ट - B का हिस्सा वर्तमान म.प्र. का अंग है।
- पार्ट- C स्टेट (विध्यप्रदेश) का पूरा-पूरा भाग वर्तमान म.प्र. में मिलाया गया।
- भोपाल राज्य भी वर्तमान म.प्र. का अंग बना।

- नवीन मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल को बनाया गया जो पूर्व में सीहोर जिले की एक तहसील थी।
- इस तरह उपर्युक्त सीमाओं में परिवर्तन के पश्चात् मध्य प्रदेश का 1 नवम्बर 1956 को (गठन) हुआ जिसमें 8 संभाग तथा 43 जिले शामिल थे।
- 26 नव. 1972 को भोपाल तथा राजनांदगांव दो नए जिले बने और जिलों की संख्या 45 हो गयी।
- बी.आर. दुबे की अध्यक्षता में गठित की सिफारिश पर 25 मई 1998 में 10 नए जिले बनाये गए। कुल जिलों की संख्या 55 हो गयी।
- 30 जून, 1998 में गठित सिंघदेव समिति की सिफारिश पर 6 और जिले बनाये गए। इस प्रकार जिलों की संख्या 61 हो गयी।
- 01 नव. 2000 को म.प्र. से छत्तीसगढ़ के अलग होने से 16 जिले नवीन राज्य में चले गए और म.प्र. में पुनः जिलों की संख्या 45 हो गयी।

- वर्ष 2003 में तीन जिले - बुरहानपुर (खंडवा से), अनूपपुर (शहडोल से) तथा अशोकनगर (गुना से) का गठन किया गया, जिससे प्रदेश में जिलों की संख्या 48 हो गयी।
- 17 मई 2008 को अलीराजपुर (झाबुआ से) तथा 24 मई 2008 को सिंगरौली (सीधी से), को जिला बनाया गया और प्रदेश में जिलों की संख्या 50 हो गयी।
- 16 अगस्त 2013 को शाजापुर जिले से पृथक कर आगर-मालवा नाम से एक नया जिला गठित किया और प्रदेश में जिलों की संख्या 51 हो गयी।
- म. प्र. सरकार ने 01 अक्टूबर 2018 को टीकमगढ़ जिले से निवाड़ी, पृथ्वीपुर एवं ओरछा तहसीलों को अलग कर निवाड़ी जिला बनाया जो म. प्र. का 52वां जिला है।
- वर्तमान मध्य प्रदेश प्रशासनिक तौर पर 10 संभागों और 52 जिलों में बंटा हुआ है।

मध्यप्रदेश के संभाग एवं जिले

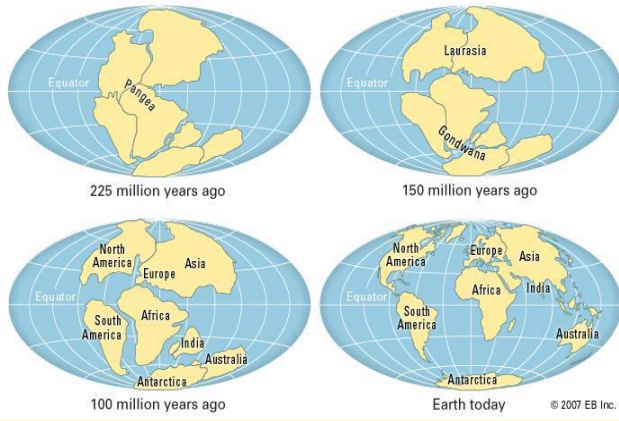
संभाग	शामिल जिले
चंबल संभाग (3)	श्योपुर, मुरैना, भिण्ड
ग्वालियर संभाग (5)	ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, दतिया
उज्जैन संभाग (7)	उज्जैन, देवास, रतलाम, शाजापुर, आगर मालवा, मंदसौर, नीमच
इन्दौर संभाग (8)	इन्दौर, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, खरगौन, बड़वानी, खण्डवा, बुरहानपुर
भोपाल संभाग (5)	भोपाल, सीहोर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा
नर्मदापुरम संभाग (3)	होशंगाबाद, बैतूल, हरदा
सागर संभाग (6)	सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी
जबलपुर संभाग (8)	जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिन्दवाड़ा, सिवनी, मण्डला, बालाघाट, डिंडौरी
रीवा संभाग (4)	रीवा, सिंगरौली, सीधी, सतना
शहडोल संभाग (3)	शहडोल, उमरिया, अनूपपुर

- नोट - 11वा संभाग छिंदवाड़ा घटित होना बाकी है इसमें तीन जिले छिंदवाड़ा, सिवनी एवं बालाघाट होंगे।
- होशंगाबाद संभाग का नाम बदल कर नर्मदापुरम कर दिया गया।

- भू वैज्ञानिक दृष्टि से मध्य प्रदेश सर्वाधिक प्राचीनतम भूभाग गोंडवाना लैंड का भाग है।

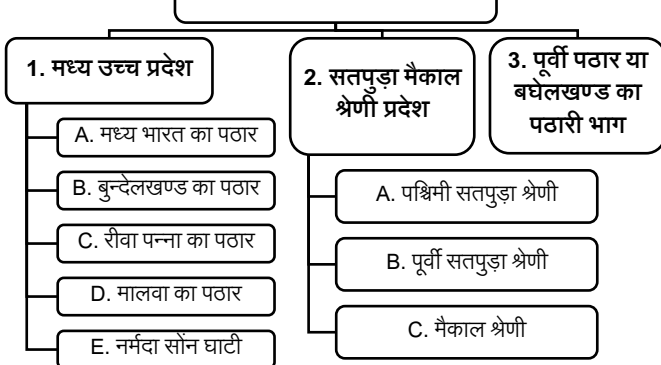
गोंडवानालैंड प्राचीन वृहत महाद्वीप (Super Continent) पैन्जिया

का दक्षिणी भाग था। जिसके उत्तरी भाग को लॉरेशिया कहा जाता है। गोंडवाना लैंड का नाम एडुअरड सुएस ने भारत के गोंडवाना क्षेत्र के नाम पर रखा था। इसके अंतर्गत भारत तथा समीपवर्ती देश आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमरीका, ऐंटार्कटिका, दक्षिणी अफ्रीका और मैडागास्कर आते थे।



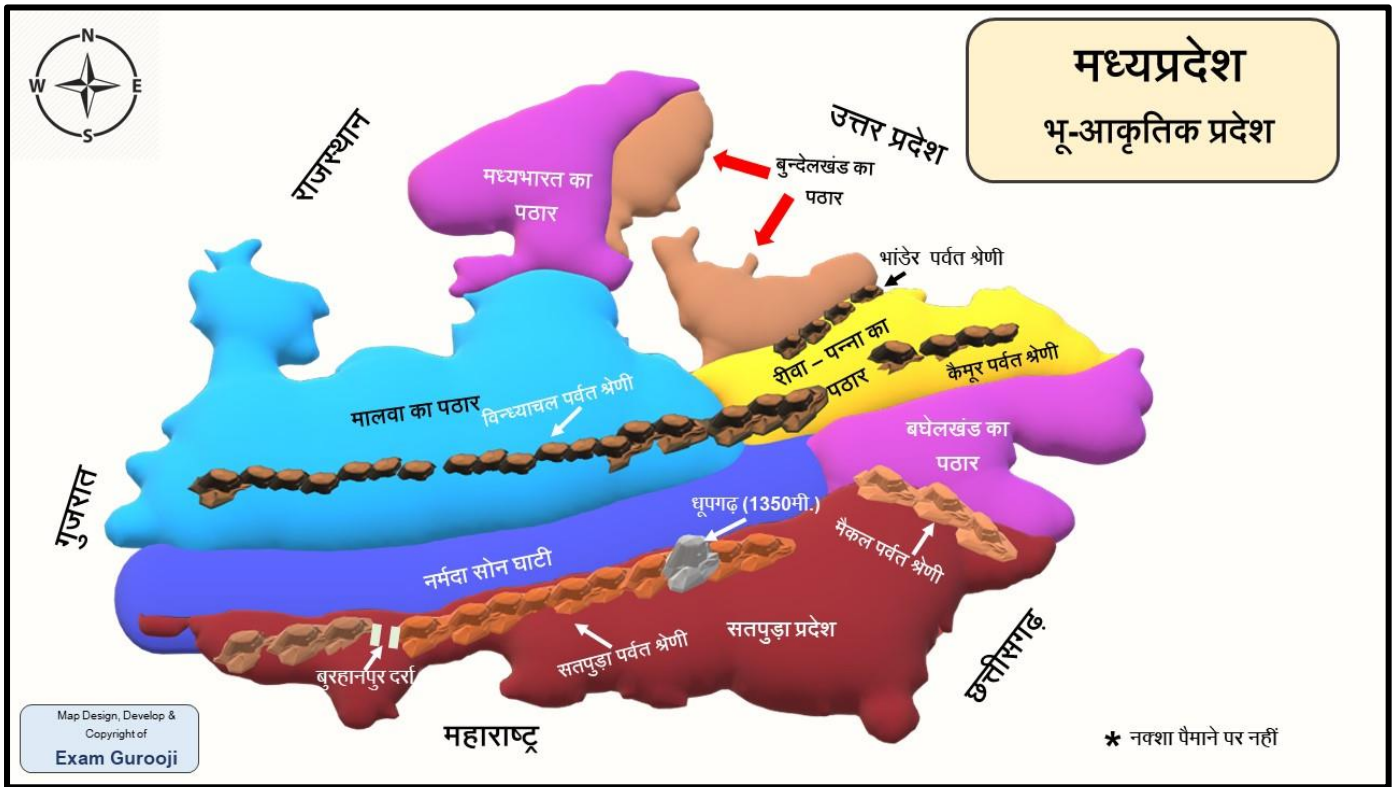
- यह भारत के उत्तर-मध्य हिस्से में बसा प्रायद्वीपीय पठार का एक हिस्सा है, जिसकी उत्तरी सीमा पर गंगा-यमुना के मैदानी इलाके हैं, पश्चिम में अरावली, पूर्व में छत्तीसगढ़ मैदानी इलाके तथा दक्षिण में ताप्ती घाटी और महाराष्ट्र के पठार हैं।
- कर्क रेखा मध्यप्रदेश को दो बराबर बराबर भागों में बांटती हुई, नर्मदा नदी के समानांतर निकलती है।
- कर्क रेखा पर स्थित मध्य प्रदेश के 14 जिले - उज्जैन, रतलाम, आगर मालवा, राजगढ़, भोपाल, सीहोर, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, जबलपुर, कटनी, उमरिया, शहडोल
- मध्य प्रदेश की दक्षिणी सीमा ताप्ती नदी द्वारा तथा उत्तरी सीमा चंबल नदी द्वारा निर्धारित होती है।
- फिजियोग्राफिक मैप ऑफ इंडिया में मध्य प्रदेश को 3 वृहद प्रदेशों में बांटा गया है।

म०प्र० के प्राकृतिक भाग



❖ 1. मध्य उच्च प्रदेश

- नर्मदा सोन नदी घाटियों एवं अरावली श्रेणियों के बीच त्रिभुजाकार तथा मध्य उच्च प्रदेश के नाम से जाना जाता है।
 - इसकी उत्तरी सीमा साधारणतः यमुना नदी द्वारा बनायीं जाती है।
 - विन्ध्याचल भांडेर, कैमूर की श्रेणियां इसी प्रदेश का भाग है। जो नर्मदा सोन नदी घाटी के उत्तर में स्थित है।
 - इस प्रदेश की प्रमुख नदियों में चम्बल, बेतवा, केन, काली सिंध, पार्वती, क्षिप्रा आदि नदियाँ शामिल हैं।
 - यह प्रदेश गंगा नदी बेसिन का हिस्सा है क्योंकि यहां की सभी नदियां गंगा नदी या उसकी सहायक नदियों में जाकर मिल जाती हैं।
- (A) मध्य भारत का पठार (चम्बल उप आद्र प्रदेश)
- भौगोलिक स्थिति - 24° 10' उत्तरी अक्षांश से 26° 48' उत्तरी अक्षांश तथा 74° 50' पूर्वी देशांतर से 79° 10' पूर्वी देशांतर।
 - यह पठार मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित है।
 - चम्बल घाटी यही स्थित है।
 - क्षेत्रफल - 32896 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 10.67%
 - वर्षा - 75 सेमी से कम
 - प्रदेश में सबसे कम वर्षा भिंड जिले में 55 सेमी. होती हैं।
 - यह अर्धशुष्क जलवायु तथा विरल वनस्पति का क्षेत्र है।
 - विस्तार - भिण्ड, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, गुना, शिवपुरी, नीमच व मंदसौर जिले शामिल हैं।
 - मिट्टी - यह पठार जलोढ़ मिट्टी से अच्छादित है
 - कृषि - गेहूं, ज्वार, तिल, सरसों आदि प्रमुख फसलें उगाई जाती हैं।
 - नदियाँ - चम्बल, काली सिंध, पार्वती, कुँआरी, कुनू आदि इस प्रदेश की नदियाँ हैं।
 - इस क्षेत्र में सहरिया जनजाति निवास करती है।
- (B) बुन्देलखण्ड का पठार
- भौगोलिक स्थिति - 24° 6' उत्तरी अक्षांश से 26° 22' उत्तरी अक्षांश तथा 77° 51' पूर्वी देशांतर से 80° 20' पूर्वी देशांतर
 - यह मध्यप्रदेश के मध्य उत्तरी भाग में विस्तृत है।
 - क्षेत्रफल - 23495 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 7.6% है।
 - वर्षा - 75-100 सेमी



- **विस्तार** - छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, शिवपुरी (पिछोर, करैरा), ग्वालियर, डबरा, भिण्ड (लहार) तथा उत्तर प्रदेश के जालौन, झाँसी, ललितपुर, बाँधा एवं हमीरपुर जिले शामिल है।
- इस पठार का निर्माण प्रीकैम्ब्रियन युग में हुआ।
- चट्टानें - ग्रेनाइट, नीस, शिस्ट प्रमुख है।
- नदियाँ - बेटवा, सिंध, केन, धसान, पहूज आदि नदियाँ प्रवाहित है।
- मिट्टी - बुलई दोमट मिट्टी काली तथा लाल मिट्टी के समिश्रण से बनी है।
- कृषि - ज्वार, गेहूँ, टिल अलसी आदि प्रमुख फसलें है।
- इस पठारी क्षेत्र में स्थित सिद्धबाबा (1172 मी.) सबसे ऊँची चोटी है।
- यहाँ उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ वन विस्तृत है जिनमें तेंदू पत्ता (छतरपुर) विशेष रूप से प्राप्त होता है।
- **(C) शीवा-पन्ना का पठार (विन्ध्यन कगारी प्रदेश)**
- भौगोलिक स्थिति - 23°10' उत्तरी अक्षांश से 25°12' उत्तरी अक्षांश तथा 78°4' पूर्वी देशांतर से 82° 18' पूर्वी देशांतर।
- यह मालवा पठार के उत्तर पूर्व में फैला हुआ है।
- क्षेत्रफल - 31954 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 10.36% है।
- वर्षा - औसत 125 सेमी
- चट्टानें - विन्ध्यन क्रम की चट्टानें
- **विस्तार** - रीवा, पन्ना, सतना, दमोह तथा सागर (रेहली, बंडा तहसील) जिलों में है।
- **नदियाँ** - टोंस, केन, सोनार, व्यारमा और बीहड़ (रीवा जिले में चर्चाई जल प्रपात का निर्माण) नदियाँ प्रवाहित होती है।
- **मिट्टी** - बुलई, लाल एवं पीली मिट्टी पाई जाती है।
- **कृषि** - गेहूँ, चावल, ज्वार एवं तिलहन आदि की खेती होती है।
- इस प्रदेश में विस्तृत कैमूर एवं भांडेर श्रेणी को नर्मदा एवं गंगा यमुना के बीच जल विभाजक माना जाता है।
- **(D) मालवा का पठार**
- **भौगोलिक स्थिति** - 20°17' उत्तरी अक्षांश से 25°8' उत्तरी अक्षांश तथा 74°20' पूर्वी देशांतर से 79°20' पूर्वी देशांतर।
- **क्षेत्रफल** - 85322 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 27.68% है।
- **वर्षा** - औसत 125 सेमी
- म. प्र. का सबसे बड़ा भौतिक विभाग है।
- इसकी सबसे ऊँची चोटी सिंगार (881 मी.) है।
- यह पठार ज्वालामुखी उद्गार से निकले लावा से निर्मित हुआ है, जिसमें दक्कन ट्रैप की चट्टानें पाई जाती है।
- **विस्तार** - रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, उज्जैन, देवास, सीहोर, भोपाल, इंदौर, शाजापुर, रायसेन, विदिशा, आगर, राजगढ़ आदि जिले शामिल है।
- **मिट्टी** - गहरी काली मिट्टी पाई जाती है।

- **कृषि** - सोयाबीन, गेहूँ, कपास, मूंगफली, चना एवं गन्ना आदि प्रमुख है।
- इस क्षेत्र में क्रिटेशियस युग बेसाल्ट लावा से निर्मित काली मृदा का विस्तार है जिसमें कपास की फसल नित्यता लगायी जाती है।
- **नदियाँ** - काली सिंध, पार्वती, बेतवा, माही, छिप्रा, नेवज, सोनार, बारना आदि नदियाँ बहती है।

➤ **(E) नर्मदा-सोन घाटी**

- **भौगोलिक स्थिति** - $22^{\circ}30'$ उत्तरी अक्षांश से $23^{\circ}45'$ उत्तरी अक्षांश तथा 74° पूर्वी देशांतर से $81^{\circ}30'$ पूर्वी देशांतर।
- **क्षेत्रफल** - 83657 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 27.14% है।
- **विस्तार** - जबलपुर, नरसिंहपुर, हरदा तथा होशंगाबाद एवं झाबुआ, धार, बड़वानी तथा कटनी के कुछ भाग में हैं।
- **वर्षा** - औसत 125 सेमी
- **चट्टानें** - दक्कन ट्रेप से निर्मित चट्टानें
- यह एक भ्रंश एवं सकरी घाटी है जो पश्चिम से उत्तर पूर्व तक फैली हुई है।
- यह घाटी मध्यप्रदेश का सबसे नीचा भाग है।
- **मिट्टी** - गहरी काली मिट्टी पाई जाती है।
- **कृषि** - मुख्य फसल गेहूँ अन्य फसलों में चावल, कपास, मूंगफली एवं सोयाबीन आदि है।
- **नदियाँ** - नर्मदा, सोन, तवा आदि।
- नर्मदा बेसिन का 89.8 % मध्यप्रदेश में स्थित है।
- नर्मदा की कुल लम्बाई 1312 किमी है। तथा मध्यप्रदेश में नर्मदा की लम्बाई 1077 किमी है।
- नर्मदा नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ बारना, शेर, हिरन, चन्द्रकेशर, हथनी, शक्कर, तवा आदि प्रमुख है।
- सोन नदी अमरकंटक क्षेत्र से निकलकर बघेलखण्ड पठार पर बहती हुई बिहार में गंगा नदी से मिल जाती है। इसकी सहायक नदियों में जोहिला, गोपद प्रमुख है।

❖ **2. सतपुड़ा मैकाल श्रेणी प्रदेश**

- **भौगोलिक स्थिति** - $21^{\circ}30'$ उत्तरी अक्षांश से 23° उत्तरी अक्षांश तथा $74^{\circ}30'$ पूर्वी देशांतर से 81° पूर्वी देशांतर।
- **क्षेत्रफल** - 31317 वर्ग कि.मी. प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 10.16% है।
- **वर्षा** - औसत 125 -150 सेमी
- सर्वाधिक वर्षा क्षेत्र पचमढ़ी 199 सेमी यहाँ स्थित है।
- **मिट्टी** - साधारण काली एवं छिछली काली
- **कृषि** - मुख्य फसल ज्वार अन्य फसलों में गेहूँ, चावल, कपास आदि है।

- **विस्तार** - बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, शहडोल, सीधी, सिंगरौली, बड़वानी, पश्चिमी निमाड़ खरगोन, पूर्वी निमाड़ का कुछ हिस्सा, सिवनी, बैतूल, बालाघाट, छिंदवाड़ा जिलों में है।

- **नदियाँ** - नर्मदा, ताप्ती, वैनगंगा एवं तवा
- पर्यटकों का स्वर्ग कहा जाने वाला पचमढ़ी यहीं पर स्थित है।
- मध्य प्रदेश की सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ 1350 मीटर महादेव पहाड़ियों में स्थित है।
- सतपुड़ा मैकाल श्रेणी खनिजों की दृष्टि से संपन्न है यहां के प्रमुख खनिज और उनके क्षेत्र निम्न है-

- मैग्नीज - बालाघाट, छिंदवाड़ा
- कोयला - बैतूल का पाथरखेड़ा
- तांबा - बालाघाट का मलाजखंड
- बॉक्साइट - शहडोल, बालाघाट, मंडला
- लोहा - बालाघाट

- सतपुड़ा मैकाल श्रेणी को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

■ **(A) पश्चिमी सतपुड़ा श्रेणी (राजपीपला श्रेणी)**

- यह गुजरात तथा मध्यप्रदेश की पश्चिमी भाग से बुरहानपुर दर्रे तक जाती है।
- राजपीपला की पहाड़ियां अखरानी पहाड़ियां, बड़वानी पहाड़ियां, बीजागढ़ तथा असीरगढ़ पहाड़ियां इसी भाग में है।
- यहाँ से तामि नदी निकलती है।

■ **(B) पूर्वी सतपुड़ा श्रेणी**

- इसमें ग्वालिंगढ़ श्रेणी, बैतूल व छिंदवाड़ा के पठार सम्मिलित है।
- बुरहानपुर दर्रे के पूर्व में सतपुड़ा श्रेणी स्थित है।
- यहाँ महादेव पर्वत पर स्थित धूपगढ़ (1350 मीटर) मध्य प्रदेश का सर्वोच्च शिखर है।

■ **(C) मैकाल श्रेणी**

- यह मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में उत्तर से दक्षिण से दक्षिण दिशा में अर्द्धचंद्राकार समूह में विस्तृत श्रेणी है।
- यहाँ अमरकंटक क्षेत्र में नर्मदा, सोन व जोहिला नदियों का उद्गम स्थल है।
- इसके धरातल पर लेटेराइट मृदा स्थित है।

❖ **3. पूर्वी पठार या बघेलखण्ड का पठारी भाग**

- **भौगोलिक स्थिति** - $23^{\circ}40'$ से $24^{\circ}35'$ उत्तरी अक्षांश एवं $80^{\circ}5'$ से $82^{\circ}47'$ पूर्वी देशांतर तक फैला हुआ है।
- इसका विस्तार मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में है।
- **क्षेत्रफल** - 19611 वर्ग किमी प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 6.36% (सबसे छोटा) है।

- **विस्तार** - सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी आदि जिलों में विस्तृत है।
- **वर्षा** - 125 सेमी.
- **मिट्टी** - मुख्यतः लाल पीली मिट्टी पाई जाती है।
- **कृषि** - मुख्य फसल चावल अन्य फसलों में अलसी ज्वार व तिल है।
- **नदियाँ** - सोन एवं जोहिला नदियाँ बहती हैं।
- कर्क रेखा इस पठार के बीचो बीच से होकर गुजरती है।
- इस क्षेत्र में कोयला प्रमुख रूप से मिलता है। (शहडोल, सीधी, सिंगरौली)

क्र.	भौतिक भूभाग का नाम	क्षेत्रफल	अक्षांशीय एवं देशंतारीय विस्तार	वर्षा एवं जलवायु	मिट्टी	कृषि	नदियाँ	विस्तार
1.	मध्यभारत का पठार	32896 (10.67%)	24°6' से 26°22' उत्तरी अक्षांश तथा 77°51' से 80°20' पूर्वी देशांतर	75 सेमी से कम महाद्वीपीय जलवायु	जलोढ़ मिट्टी	गेहूँ, ज्वार, तिल, सरसों	चम्बल, काली सिंध, पार्वती, कुँआरी, कुनू	भिण्ड, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, गुना, शिवपुरी, नीमच व मंदसौर
2.	बुन्देलखण्ड का पठार	23495 (7.6%)	24°6' से 26°22' उत्तरी अक्षांश तथा 77°51' से 80°20' पूर्वी देशांतर	75-100 सेमी महाद्वीपीय जलवायु	काली तथा लाल पीली मिश्रित मिट्टी	ज्वार, गेहूँ, तिल अलसी	बेतवा, सिंध, केन, धसान, पहूज	छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, शिवपुरी (पिछोर, करैरा), ग्वालियर, डबरा, भिण्ड (लहार)
3.	रीवा-पन्ना का पठार	31954 (10.36%)	23°10' से 25°12' उत्तरी अक्षांश तथा 78°4' से 82° 18' पूर्वी देशांतर	125 सेमी महाद्वीपीय जलवायु	बुलई, लाल एवं पीली मिट्टी	गेहूँ, चावल, ज्वार एवं तिलहन	टोंस, केन, सोनार, व्यारमा और बीहड़	रीवा, पन्ना, सतना, दमोह तथा सागर (रेहली, बंडा तहसील)
4.	मालवा का पठार	85322 (27.68%)	20°17' से 25°8' उत्तरी अक्षांश तथा 74°20' से 79°20' पूर्वी देशांतर।	125 सेमी सम जलवायु	गहरी काली मिट्टी	सोयाबीन, गेहूँ, कपास, मूंगफली, चना एवं गन्ना	काली सिंध, पार्वती, बेतवा, माही, छिप्रा, नेवज	रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, उज्जैन, देवास, सीहोर, भोपाल, इंदौर, शाजापुर, रायसेन, विदिशा, आगर, राजगढ़
5.	नर्मदा सोन घाटी	83657 (27.14%)	22°30' से 23°45' उत्तरी अक्षांश तथा 74° से 81°30' पूर्वी देशांतर।	125 सेमी मानसूनी जलवायु	गहरी काली मिट्टी	गेहूँ, चावल, कपास, मूंगफली एवं सोयाबीन	नर्मदा, सोन, तवा	जबलपुर, नरसिंहपुर, हरदा तथा होशंगाबाद एवं झाबुआ, धार, बड़वानी तथा कटनी के कुछ भाग
6.	सतपुड़ा मैकल श्रेणी	31317 (10.16%)	21°30' से 23° उत्तरी अक्षांश तथा 74°30' से 81° पूर्वी देशांतर।	125 -150 सेमी मानसूनी जलवायु	साधारण एवं छिछली काली	ज्वार, गेहूँ, चावल, कपास	नर्मदा, ताप्ती, वैनगंगा एवं तवा	बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, शहडोल, सीधी, सिंगरौली, बड़वानी, पश्चिमी निमाड़ खरगोन,

								पूर्वी निमाड़ का कुछ हिस्सा, सिवनी, बैतूल, बालाघाट, छिंदवाड़ा
7.	पूर्वी पठार (बघेलखंड)	19611 (6.36%)	23°40' से 24°35' उत्तरी अक्षांश एवं 80°5' से 82°47' पूर्वी देशांतर	125 सेमी. मानसूनी जलवायु	लाल पीली मिट्टी	चावल, अलसी ज्वार व तिल	सोन एवं जोहिला	सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी

मध्यप्रदेश के शैल समूह		
शैल समूह	क्षेत्र	श्रेणियां / चट्टान
आद्य महाकल्प चट्टान	बुंदेलखंड, विन्ध्यन कगार	ग्रेनाइट, नीस, सिल डार्क
धारवाड़ शैल समूह (जीवाश्म का आभाव)	दक्षिण मध्यप्रदेश, बुंदेलखंड व विन्ध्यन के मध्य	चिपली श्रेणी (बालाघाट) सौंसर श्रेणी (छिंदवाड़ा) बिजावर श्रेणी भेड़ाघाट श्रेणी (जबलपुर)
विन्ध्यन शैल समूह	पन्ना, ग्वालियर	सोन घाटी, भांडेर श्रेणी, कैमूर श्रेणी, रीवा श्रेणी
कडप्पा शैल समूह	रीवा से चम्बल तक	बिजावर श्रेणी (पन्ना पठार से ग्वालियर तक विस्तृत)
तृतीयक शैल समूह	बघेलखंड	गोंडवाना महाद्वीप
गोंडवाना शैल समूह	सतपुड़ा - बघेलखंड	पेंच घाटी, देनवा, बगरा (कोयला क्षेत्र) तथा पचमढ़ी, महादेव श्रेणी
दक्कन ट्रेप	मालवा का पठार	धजारी, सिंगार श्रेणी, जाना पावा

मध्य प्रदेश के प्रमुख पर्वत

- मध्यप्रदेश के पूर्व से पश्चिम दिशा में दो प्रमुख पर्वत श्रेणियां विस्तृत हैं - 1. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी 2. विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी
- इन दोनों पर्वत श्रेणियों के मध्य नर्मदा की भ्रंश घाटी स्थित है।
- ❖ **1. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी**
 - सतपुड़ा पर्वत की लंबाई 1120 किमी. है जो मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र में विस्तृत है। इसकी औसत ऊंचाई 900 मीटर है।
 - यह पश्चिम में राजपीपला पहाड़ी से पूर्व में मेकल पर्वत तक विस्तृत है।
 - यह पर्वत श्रेणी नर्मदा एवं ताप्ती के बीच जल विभाजक का काम करती है।
 - यह पर्वत नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है जो पूर्व से पश्चिम दिशा में फैला हुआ है।

- इसकी सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ 1350 मीटर है जो महादेव की पहाड़ियों में स्थित है।
- यही प्रदेश का प्रसिद्ध एकमात्र हिल स्टेशन पचमढ़ी स्थित है।
- सतपुड़ा मैकाल श्रेणी को तीन भागों में विभाजित किया गया है -
- **(A) पश्चिमी सतपुड़ा श्रेणी (राजपीपला श्रेणी)**
 - यह गुजरात तथा मध्यप्रदेश की पश्चिमी भाग से बुरहानपुर दर्रे तक जाती है।
 - राजपीपला की पहाड़ियां अखरानी पहाड़ियां, बडबानी पहाड़ियां, बीजागढ़ तथा असीरगढ़ पहाड़ियां इसी भाग में हैं।
 - यहाँ से ताप्ति नदी निकलती है।
- **(B) पूर्वी सतपुड़ा श्रेणी (महादेव श्रेणी)**
 - इसमें ग्वालिंगढ़ श्रेणी, बैतूल व छिंदवाड़ा के पठार सम्मिलित है।
 - बुरहानपुर दर्रे के पूर्व में पूर्वी सतपुड़ा श्रेणी स्थित है।
 - यहाँ महादेव पर्वत पर स्थित धूपगढ़ (1350 मीटर) मध्य प्रदेश का सर्वोच्च शिखर है।
- **(C) मैकाल श्रेणी**
 - यह मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में उत्तर से दक्षिण से दक्षिण दिशा में अर्द्धचंद्राकार समूह में विस्तृत श्रेणी है।
 - यहाँ अमरकंटक क्षेत्र में नर्मदा, सोन व जोहिला नदियों का उद्गम स्थल है।
- ❖ **2. विन्ध्याचल पर्वत**
 - विन्ध्याचल पर्वत नर्मदा नदी के उत्तर में पश्चिम से पूर्व दिशा में स्थित है।
 - विन्ध्याचल पर्वत विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में गिना जाता है। यह एक अवशिष्ट पर्वत है।
 - इसकी ऊंचाई 457 से 610 मीटर तक है।
 - विन्ध्याचल पर्वत के पूर्वी विस्तार को कैमूर और भांडेर की पर्वत श्रेणियां कहते हैं।
 - कैमूर और भांडेर श्रेणियों को नर्मदा एवं यमुना गंगा के बीच जल विभाजक माना जाता है।

- भारत में सर्वाधिक नदियाँ मध्यप्रदेश में प्रवाहित होती हैं इसीलिए मध्य प्रदेश को नदियों का मायका भी कहा जाता है।
- मध्यप्रदेश में प्रवाहित होने वाली नदियाँ प्रायद्वीपीय नदियाँ हैं।
- मध्यप्रदेश में विंध्याचल पर्वत को भारत का सबसे बड़ा जल विभाजक माना जाता है।

म. प्र. की विभिन्न दिशाओं में बहने वाली नदियाँ	
उत्तर की ओर बहने वाली नदियाँ	चंबल, केन, बेतवा, काली सिंध, पार्वती, सिंध
दक्षिण की ओर बहने वाली नदियाँ	वेनगंगा, वर्धा, पेंच
पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ	सोन
पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ	नर्मदा, ताप्ती एवं माही

- मध्य प्रदेश में 5 नदी अपवाह तंत्र है।

❖ 1. गंगा अपवाह तंत्र

- गंगा नदी अपवाह तंत्र में सम्मिलित नदियों का जल बंगाल की खाड़ी में पहुँचता है।
- गंगा अपवाह तंत्र के तीन उपअपवाह क्षेत्र म. प्र. में हैं जो क्रमशः (1) यमुना अपवाह (2) टोंस बेसिन अपवाह तथा (3) सोन बेसिन अपवाह क्षेत्र है।
- यमुना अपवाह तंत्र में सम्मिलित मुख्य नदियाँ चम्बल, केन, बेतवा, धसान, सिंध, पयस्वनी, जामनी आदि हैं।
- इस अपवाह तंत्र की सबसे प्रमुख और बड़ी नदी चंबल है।
- गंगा अपवाह तंत्र प्रदेश का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र है।

❖ 2. नर्मदा अपवाह तंत्र

- नर्मदा नदी अपवाह तंत्र प्रदेश का दूसरा बड़ा अपवाह तंत्र है।
- इस अपवाह तंत्र में नर्मदा नदी और उसकी सहायक नदियाँ सम्मिलित हैं, जिनका जल अरब सागर में मिलता है।
- नर्मदा देश की पाँचवीं सबसे बड़ी नदी है तथा पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे बड़ी नदी है। यह प्रायद्वीप भारत की तीसरी सबसे बड़ी नदी है।
- नर्मदा को म.प्र. की जीवन रेखा कहा जाता है, साथ ही इसे उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत का विभाजक भी माना जाता रहा है।
- संपूर्ण बेसिन में अपवाह प्रतिरूप वृक्षाभ प्रणाली वाला है।

❖ 3. ताप्ती अपवाह तंत्र

- नर्मदा के समानांतर पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली ताप्ती और उसकी सहायक नदियाँ इसमें सम्मिलित हैं।
- ताप्ती, नर्मदा के दक्षिण की ओर समानांतर रूप से बहती हुई अरब सागर की खंभात की खाड़ी में गिरती है।

- ताप्ती का कुल अपवाह क्षेत्र 65145 वर्ग किमी है, जिसमें से 9804 वर्ग किमी. म. प्र. में तथा शेष महाराष्ट्र व गुजरात में है।
- इस अपवाह तंत्र की महत्वपूर्ण नदियों में ताप्ती, पूर्णा, अम्मोरामोग, कन्हार और कनैर है।

❖ 4. गोदावरी अपवाह तंत्र

- गोदावरी अपवाह तंत्र म.प्र. के दक्षिणी भाग में है। गोदावरी नदी म.प्र. में नहीं बहती, लेकिन गोदावरी अपवाह तंत्र में मिलने वाली नदियाँ जैसे वेनगंगा, वर्धा आदि म. प्र. से निकलती हैं।

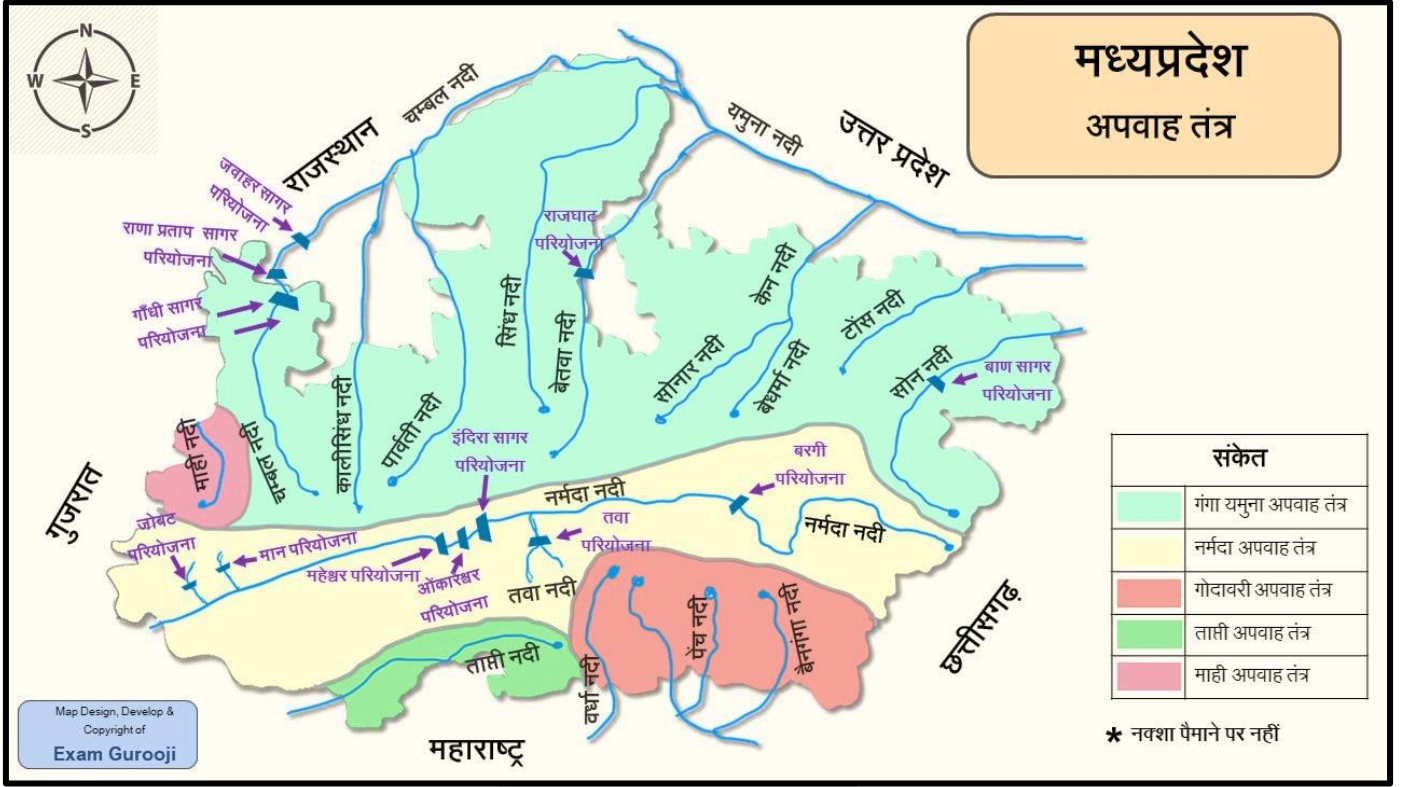
❖ 5. माही अपवाह तंत्र

- माही अपवाह तंत्र प्रदेश का सबसे छोटा नदी अपवाह तंत्र है।
- इस अपवाह तंत्र की सबसे प्रमुख नदी माही है।
- इस अपवाह का कुल क्षेत्र 38699 वर्ग किमी. है। इसमें म.प्र. में 7188 वर्ग किमी. क्षेत्र आता है।
- माही प्रायद्वीपीय भारत की उन तीन नदियों में से एक है, जो पश्चिम की ओर बहती है।

प्रमुख नदियाँ

❖ नर्मदा नदी

- नर्मदा नदी मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी तथा भारत की 5वें नम्बर की एवं पूर्व से पश्चिम की दिशा बहने वाली सबसे बड़ी नदी है।
- **नर्मदा नदी के अन्य नाम** - रेवा, शंकरा, नामोदास, सोमोदेवी, मेकलसुता।
- यह मध्यप्रदेश एवं गुजरात की जीवन रेखा कहलाती है।
- **उद्गम** - अमरकंटक मैकल पर्वत श्रेणी से हुआ है जो अनूपपुर जिले में है।
- यह पूर्व से पश्चिम की दिशा में विंध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य भ्रंश घाटी में बहती है।
- **लंबाई** - 1312 किमी. है तथा मध्यप्रदेश में 1077 किमी।
- **मिलन** - तीन राज्यों मध्यप्रदेश (15 जिलों में), महाराष्ट्र, गुजरात में बहते हुए गुजरात के भड़ोच के पास खंभात की खाड़ी में समाहित हो जाती है।
- नर्मदा नदी डेल्टा नहीं बनाती यह एस्चुरी का बनाती हैं।
- नर्मदा के बेसिन का 89.8 प्रतिशत भाग मध्य प्रदेश में, 8.5 प्रतिशत गुजरात में तथा 2.7 प्रतिशत भाग महाराष्ट्र में है।
- नर्मदा नदी को मध्य प्रदेश की पहली जीवित इकाई का दर्जा दिया गया है।
- नर्मदा पुरुष के नाम से अमृत लाल बेगड़ को जाना जाता है।
- **सहायक नदियाँ** - इसकी 41 सहायक नदियाँ हैं, दायें तट से 19 एवं बाएँ तट से 22 नदियाँ मिलती हैं, जिसमें प्रमुख है - तवा, हिरण, शक्कर, दूधी, करजन, शेर, मान इत्यादि।



- **नर्मदा नदी द्वारा निर्मित जलप्रपात** - कपिल धारा एवं दुग्ध धारा जलप्रपात (अनूपपुर), धुआंधार जलप्रपात (भेड़ाघाट, जबलपुर), सहस्रधारा जलप्रपात (महेश्वर, खरगोन), दर्धी जलप्रपात, मानधाता जलप्रपात।
- **नर्मदा नदी पर निर्मित बांध** - इंदिरा सरोवर (खंडवा), सरदार सरोवर (नवेगाव, गुजरात), महेश्वर परियोजना (महेश्वर) बरगी परियोजना (बरगी, जबलपुर), ओमकारेश्वर परियोजना।
- **किनारे बसे शहर** - अमरकंटक, डिंडोरी, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, मंडला, ओमकारेश्वर, महेश्वर, बडवानी, बडवाह, हांडिया इत्यादि।
- ❖ **चंबल नदी**
 - यह मध्यप्रदेश की दूसरी बड़ी नदी है, इसे चर्मावती, महाभारत में पूर्ण भी कहा जाता है।
 - **उद्गम** - इंदौर की महू तहसील की जानापाव पहाड़ी से हुआ है।
 - **मिलन** - उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी में मिल जाती है।
 - **लंबाई** - 965 किमी है।
 - यह मध्यप्रदेश तथा राजस्थान की सीमा बनाती हुई उग्र में प्रवेश करती है। यह मग्न में दो बार प्रवेश करती है।
 - **सहायक नदियाँ** - कालीसिंध, क्षिप्रा और पार्वती है।
 - **किनारे बसे शहर** - महू, रतलाम, श्योपुर, मुरैना
 - चंबल नदी भिंड मुरैना के क्षेत्रों में खड्डों एवं बीहड़ों का निर्माण करती है।
 - कोटा (राजस्थान) में भैंसरोढगढ़ के पास चूलिया जलप्रपात चंबल नदी द्वारा निर्मित जलप्रपात है।
 - **चंबल नदी पर निर्मित बांध** - गांधी सागर बांध (मंदसौर), राणा प्रताप सागर बांध (चित्तौड़गढ़ राजस्थान), जवाहर सागर बांध (कोटा, राजस्थान)
- ❖ **ताप्ती नदी**
 - **उद्गम** - बैतूल जिले की मुलताई तहसील की सतपुडा पर्वत श्रेणी से निकलती है।
 - **मिलन** - मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा गुजरात में सूरत के निकट खंभात की खाड़ी में मिलती है।
 - **लम्बाई** - 724 किमी
 - **सहायक नदियाँ** - पूर्णा, शिवा तथा बोरी है।
 - ताप्ती नदी नर्मदा नदी के समानांतर पूर्व से पश्चिम ओर बहती है, एव डेल्टा न बनाकर एस्चुरी बनाती है।
 - **किनारे बसे शहर** - मुलताई एवं बुरहानपुर
 - ताप्ती नदी पर मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना - अपर ताप्ती, लोअर ताप्ती।
- ❖ **सोन नदी**
 - सोन नदी को स्वर्ण नदी या हिरण्यबाहू भी कहा जाता है।
 - **उद्गम** - अनूपपुर जिले के अमरकंटक से हुआ है।
 - **मिलन** - मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के सोनभद्र तथा बिहार में बहती हुई पटना के समीप दीनापुर में गंगा में मिल जाती है।

- लंबाई - 780 किमी. है।
- सहायक नदियाँ - जोहिला, गोपद व रिहंद
- सोन नदी पर बाणसागर परियोजना निर्मित है जो शहडोल जिले के देवलोन पर स्थित है।
- ये म. प्र., उत्तरप्रदेश एवं बिहार की संयुक्त परियोजना हैं।

❖ बेतवा नदी

- इस नदी का पौराणिक नाम ब्रेतवती है।
- उद्गम - रायसेन जिले के कुमारागांव से निकलती है।
- मिलन - उप्र के हमीरपुर में यमुना नदी से मिल जाती है।
- लम्बाई - 480 किमी है।
- सहायक नदियाँ - बीना, धसान, सिंध इत्यादि।
- किनारे बसे शहर - विदिशा, सांची, ओरछा
- बेतवा नदी पर राजघाट बांध तथा माताटीला बांध बने हुए हैं जिसमें मप्र एवं उप्र की संयुक्त सिंचाई परियोजना है।
- सिंचाई परियोजना द्वारा भांडेर, दतिया, भिंड तथा ग्वालियर लाभान्वित हुए हैं।
- इसे म. प्र. की गंगा (प्रदुषण के समान स्तर के कारण) कहा जाता है।
- बेतवा केन लिंक प्रोजेक्ट भारत में पहला नदी जोड़ो प्रोजेक्ट है।

❖ क्षिप्रा नदी

- उद्गम - इंदौर के काकरी बारडी नामक पहाड़ी से निकलती है।
- मिलन - उज्जैन, देवास जिलों में बहते हुए मंदसौर में चंबल नदी में मिल जाती है।
- लंबाई - 195 किमी. है।
- क्षिप्रा नदी को मालवा की गंगा भी कहा जाता है।
- इस नदी के किनारे उज्जैन में प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर स्थित है।
- गंभीर एवं खान नदी क्षिप्रा की सहायक नदी है।

❖ वेनगंगा

- उद्गम - सिवनी के परसवाडा पठार से निकलती है।
- मिलन - बेनगंगा नदी महाराष्ट्र में वर्धा नदी में मिल जाती है, जहाँ इन दोनों को प्राणहिता के नाम से जाना जाता है।
- सहायक नदियाँ - कन्हान, पेंच, चन्दन तथा बावनथडी इसकी सहायक नदी है।
- बेनगंगा नदी पर अपर बेनगंगा, संजय सरोवर परियोजना (एशिया के सबसे बड़े मिट्टी बांधों में से एक) है।

❖ तवा नदी

- उद्गम - पचमढ़ी (होशंगाबाद) के महादेव पर्वत से है।
- मिलन - होशंगाबाद के निकट नर्मदा नदी में मिल जाती है।

- तवा नदी की सहायक नदी मालिनी, देनवा, सुखतवा व कालीभीत है।
- इस नदी पर मध्यप्रदेश का दूसरा सबसे लंबा (1322मी.) सड़क पुल है। (सबसे लंबा नदी सड़क पुल शिवपुरी जिले में सिंध नदी पर 2500 मी. है।)

❖ कालीसिंध नदी

- उद्गम - देवास जिले बागली गाँव में विंध्याचल पर्वत से निकलती है।
- मिलन - शाजपुर एवं राजगढ़ जिलों में बहती हुई राजस्थान में चंबल नदी में मिल जाती है।
- लंबाई - 150 किमी. है।

❖ सिंध नदी

- उद्गम - विदिशा जिले में सिरोंज नामक स्थान से निकलती है।
- मिलन - इटावा के पास यमुना नदी में मिल जाती है।
- लंबाई - 470 किमी
- सहायक नदियाँ - कुंवारी, पाहुज एवं माहुर

❖ केन नदी

- उद्गम - कटनी जिले में विंध्याचल पर्वत से निकलती है।
- मिलन - यह उत्तर की ओर बहती हुई उ.प्र. में बाँदा के पास यमुना नदी में मिल जाती है।
- लंबाई - 427 किमी (म. प्र. में 292 किमी)

❖ माही नदी

- उद्गम - धार जिले के सरदारपुर तहसील में विंध्याचल पहाड़ियों से निकलती है।
- मिलन - गुजरात में खंभात की खाड़ी में मिलती है।
- लंबाई - 576 किमी
- भारत की एक मात्र नदी जो कर्क रेखा को दो बार काटती है।

❖ पार्वती नदी

- उद्गम - सिहोर जिले के आष्टा में विंध्यपर्वत से निकलती है।
- मिलन - यह राजस्थान में चंबल नदी में मिल जाती है।

मध्यप्रदेश की छोटी छोटी प्रमुख नदियाँ

- कूनों नदी - शिवपुरी पठार से निकलकर 180 किमी. उत्तर में मुरैना तक बहती है।
- वर्धा नदी - बैतूल के मुलताई के वर्धन शिखर से निकलकर महाराष्ट्र में वेनगंगा नदी में मिलती है।
- गार नदी - सिवनी के लखना क्षेत्र से निकलकर उत्तर में नर्मदा में मिल जाती है बैनगंगा परसवाडा पठार सिवनी से निकलकर महाराष्ट्र में प्रवेश कर जाती है।

- **कुंवारी नदी** - शिवपुरी पठार से निकलती है चंबल के समानांतर बहते हुए भिंड जिले में सिंध में मिल जाती है।
- **बीहड़ नदी** - रीवा पठार से निकलकर टोंस में मिलती है। इस पर मध्य प्रदेश का सबसे ऊंचा जलप्रपात चचाई जलप्रपात बना है।
- **गंभीर नदी** का उद्गम इंदौर जिले के जानापाव पहाड़ी हैं। ये क्षिप्रा की सहायक नदी हैं।
- **लखुन्दर नदी** देवास जिले में चाँदगढ़ पहाड़ी से निकलती है। ये काली सिंध की सहायक नदी हैं।
- **परवन नदी** यह अजनार व घोड़ा पछाड की संयुक्त धारा है। यह मध्यप्रदेश के मालवा पठार विध्याचल से निकलती है। ये काली सिंध की सहायक नदी हैं।
- **नेवज नदी** का उद्गम सीहोर जिले की आषा तहसील हैं।
- **अहेली नदी** श्योपुर जिले के पास प्रवाहित होती है।
- **सिप नदी** चंबल क्षेत्र में प्रवाहित होती है।
- **बेसली नदी** का उद्गम ग्वालियर जिले के काली पहाड़ से हुआ है। इस वैसूल नाम से भी जाना जाता है।
- **आसन नदी** का उद्गम चंबल क्षेत्र के मुरैना जिले से हुआ है।
- **कैथन नदी** का उद्गम विदिशा जिले के सिरोंज से हुआ है।
- **क्योटर नदी** विदिशा जिले की नदी है।
- **महुअर नदी** यह सिंध की सहायक नदी है। इसका उद्गम शिवपुरी जिले से हुआ है।
- **बीना नदी** का उद्गम रायसेन जिले के देहगांव से हुआ है।
- **धसान नदी** का उद्गम रायसेन जिले से हुआ है।
- **पाहुज नदी** का उद्गम शिवपुरी जिले के पिछोर तहसील से हुआ है।
- **बेवस नदी** का उद्गम रायसेन जिले की सियारमउ पहाड़ियों से हुआ है।
- **देहान नदी** बुन्देलखंड की नदी है। इसका प्रमुख प्रवाह सागर जिले के तहत आता है।
- **सोनार नदी** रायसेन और सागर के मध्य स्थित पहाड़ियों से उद्गमित होती है।
- **कोपरा नदी** सागर जिले के रहली से उद्गमित होती है।
- **महानदी छोटी** यह मंडला जिले के अखड़ा गांव के समीप से निकलती है
- **बनास नदी** का उद्गम छत्तसीगढ़ के महेन्द्रगढ़ से हुआ हैं, म.प्र. मे यह सीधी शहडोल जिलों में प्रवाहित होती है।
- **बाघेन नदी** पन्ना जिले से निकलती है।
- **जोहिला नदी** का उद्गम अनूपपुर जिले के अमरकंटक से हुआ है।
- **अजनार नदी** का उद्गम भोपाल के पास जंगली क्षेत्र से हुआ है। भोपाल के समीप प्रवाहित होती है।
- **कलियासोत नदी** भोपाल की समीपवर्ती नदी है।
- **केरवा नदी** भोपाल की समीपवर्ती नदी है।
- **नेउर नदी** प्रदेश के सीधी और सिंगरौली जिलों में प्रवाहित होत हैं
- **गोपद नदी** मध्यप्रदेश के विन्ध्यक्षेत्र की महत्वपूर्ण नदी है। यह छत्तीसगढ़ से उद्गमित होती है।
- **बिजुल नदी** यह सोन की सहायक नदी है। सिंगरौली इसके प्रवाह क्षेत्र में आता है।
- **रेहन नदी** को रिहिन्द नदी भी कहते है यह नदी छत्तीसगढ़ की मातृगा पहाड़ियों से निकलती है।
- **पैसूनी नदी** को पवित्र मंदाकिनी नदी के तौरपर भी जाना जाता है। पैसूनी नदी सतना जिले की डागरी पहाड़ी से उद्गमित होती है।
- **हलाली नदी** को बाणगंगा, बसे और थाल नाम से भी जाना जाता है यह भोपाल जिले के परवलिया गांव से निकलती है।
- हलाली नदी पर सांची के समीप सम्राट अशोक सागर बांध अथवा हलाली बांध बना है।
- **शिवना नदी** का उद्गम रतलाम जिले से हुआ हैं। मंदसौर शिवना नदी के किनारे बसा हुआ है।
- **कारम नदी** इंदौर जिले के सिंगारचोरली पहाड़ी से निकलती है।
- **रिछन नदी** रायसेन जिले में प्रवाहित होती है।
- **सांक नदी** ग्वालियर शहर के समीपवर्ती डीन पहाड़ी से निकलती है।
- **शेर नदी का** उद्गम सिवनी जिले में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी से हुआ है। यह नर्मदा की सहायक नदी हैं।
- **शक्कर नदी** छिंदवाड़ा जिले अमरवाड़ा के समीप से उद्गमित होती है नर्मदा की सहायक नदी है।
- **दूधी नदी** छिंदवाड़ा जिले के तामिया के पास से उद्गमित होती है।
- **गंजाल नदी** हरदा जिले के सांपना बर्रा पहाड़ी से उद्गमित होती है।
- **कावेरी नदी** नर्मदा के बायें तट पर मिलने वाली सहायक नदी है। इसका जलग्रहण क्षेत्र खंडवा जिले में आता है।
- **हिरन नदी** का उद्गम जबलपुर जिले कुन्डम से हुआ है।
- **बारना नदी** का उद्गम रायसेन जिले से हुआ है।
- **कोलार नदी** का उद्गम सीहोर जिले के बिलकीसगंज के समीप पहाड़ियों से हुआ है।
- **चोरल नदी** का उद्गम इंदौर के समीप छोटा जाम से हुआ है। इसके उद्गम स्थल पर जाम दरवासा मंदिर का निर्माण किया गया है।
- **मान नदी** का उद्गम धार जिले के विन्ध्य पर्वतमाला से हुआ है। यह नर्मदा की सहायक नदी हैं।
- **हथनी नदी** का उद्गम अलीराजपुर के समीप से हुआ है। यह नर्मदा की सहायक नदी हैं।

- मोरंड नदी का उद्गम बैतूल जिले के चीचली पहाड़ियों से होता है।
- देनवा नदी का उद्गम पचमढी की धूपगढ़ पहाड़ियों से होता है।
- बावनथड़ी नदी का उद्गम सिवनी जिले के पहाड़ी क्षेत्र से होता है।
- कुन्दा नदी का उद्गम पश्चिमी निमाड़ क्षेत्र से होता है।
- कालघई नदी का उद्गम खंडवा जिले के पंधाना के पास सतपुड़ा की पहाड़ियों से हुआ है।
- पूर्णा नदी तामी की सहायक नदी है। इसका उद्गम बैतूल जिले के भैंसदेही से हुआ है।
- आवना नदी खंडवा जिले के समीप से निकलती है।
- कन्हान नदी छिंदवाड़ा जिले की प्रमुख नदी है। इसका उद्गम छिंदवाड़ा जिले के पहाड़ी क्षेत्र से हुआ है।
- पानाम नदी झाबुआ जिले से उद्गमित होती है।

नर्मदा नदी	अमरकंटक, होशंगाबाद, नेमावर, पुनासा, महेश्वर, जबलपुर, नरसिंहपुर, हंडिया, ओमकारेश्वर, बड़वानी, मंडला, बड़वाह, मंडलेश्वर, झाबुआ
चम्बल नदी	शयोपुर, महु, मुरैना
बेतवा नदी	विदिशा, साँची, ओरछा
ताप्ती नदी	मुलताई, बुरहानपुर
पार्वती नदी	आष्टा, शाजापुर, राजगढ़
सिंध नदी	शिवपुरी, दतिया
कालीसिंध नदी	बागली, सोनकच्छ, देवास
क्षिप्रा नदी	उज्जैन
खान नदी	इंदौर
टोंस नदी	सतना
तवा नदी	तवा नागर, पंचमढी
शिवना नदी	मंदसौर
बैनगंगा नदी	बालाघाट
बिछिया नदी	रीवा

मध्यप्रदेश के जलप्रपात	
जल प्रपात	नदियाँ
धुंआधार जलप्रपात	नर्मदा नदी, भेड़ाघाट, जबलपुर
दुग्धधारा जलप्रपात	नर्मदा नदी, अनूपपुर
कपिलधारा जलप्रपात	नर्मदा नदी, अमरकंटक
मंधार जलप्रपात	नर्मदा नदी, खंडवा
सहस्रधारा जलप्रपात	नर्मदा नदी, महेश्वर
दर्दी जलप्रपात	नर्मदा नदी, खंडवा
चचाई जलप्रपात	बीहड़ नदी रीवा
पुरवा जलप्रपात	रीवा के निकट
केवटी जलप्रपात	बीहड़ नदी रीवा
बहुटी जलप्रपात (म. प्र. का सबसे ऊँचा 142 मी.)	बीहड़ नदी रीवा
पियावन जलप्रपात	रीवा
पुरवा जलप्रपात	रीवा के निकट
बेलौही जलप्रपात	रीवा के निकट
चूलिया जलप्रपात	चम्बल नदी मंदसौर
राहतगढ़ जलप्रपात	बीना नदी सागर
पातालपानी जलप्रपात	चम्बल नदी इंदौर
झाड़ी दाहा जलप्रपात	चम्बल नदी इंदौर
भाल कुण्ड जलप्रपात	सागर
डचेस फाल (झरना)	पचमढी
शंकर खो जलप्रपात	जामनेर
अप्सरा जलप्रपात	पचमढी
रजत जलप्रपात	पचमढी

मध्यप्रदेश की नदियों के किनारे बसे नगर	
नदी	शहर

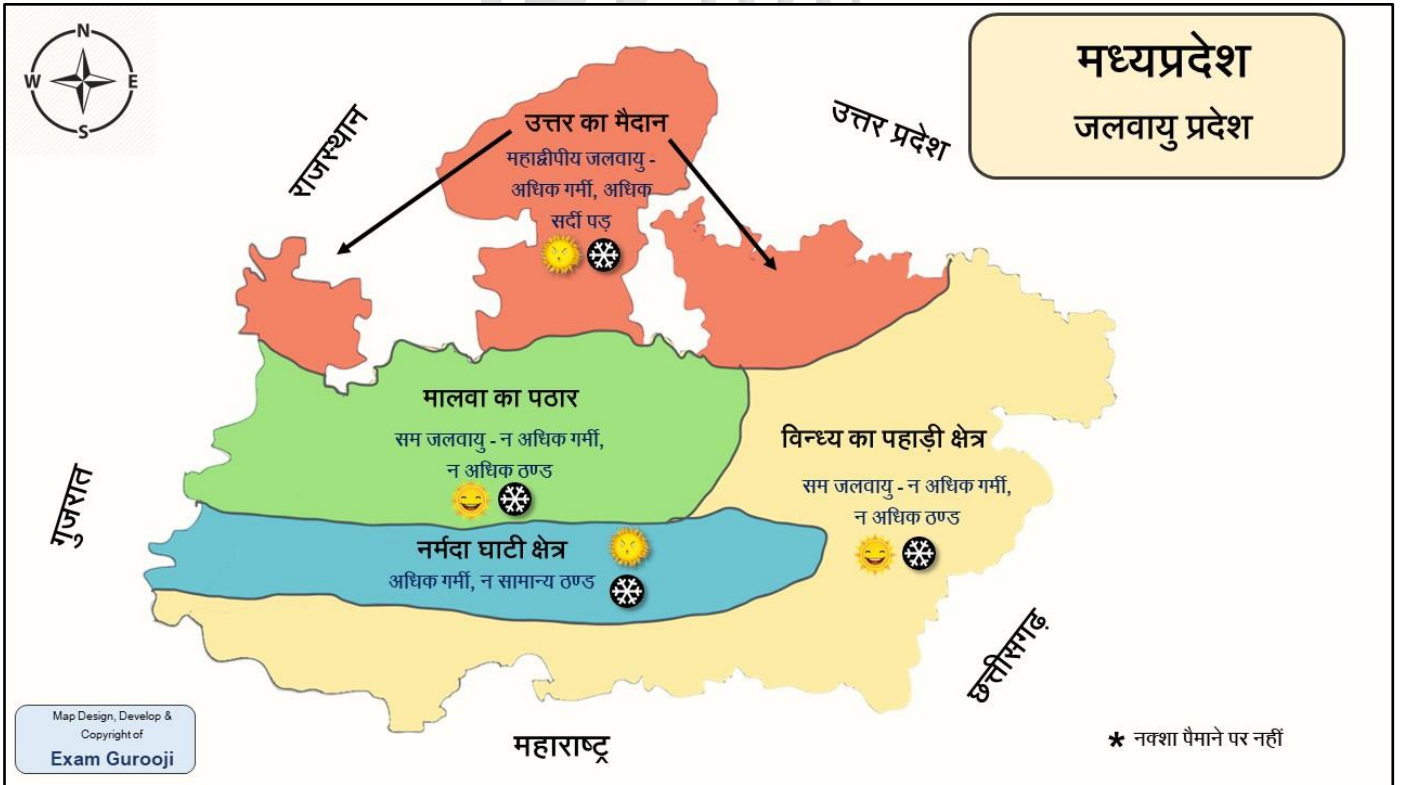
- किसी भी क्षेत्र में लंबे समय तक पाई जाने वाली ताप, वर्षा, आद्रता आदि की मात्रा तथा वायु की गति का औसत रूप में पाया जाना वहां की जलवायु कहलाती है।
- किसी भी स्थान की दिन-प्रतिदिन की वायुमंडल की दशा को मौसम कहा जाता है, जबकि मौसम का दीर्घकालीन औसत स्वरूप जलवायु कहा जाता है।
- पूरे देश की तरह म.प्र. की जलवायु भी पूर्णतः मौसमी अर्थात मानसूनी या उष्णकटिबंधीय मानसूनी हैं।

❖ मध्य प्रदेश की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

- **1. समुद्र से दूरी** - समुद्र से दूरी अधिक होने से तापांतर अधिक होता है।
- **2. कर्क रेखा** - कर्क रेखा के मध्य प्रदेश के बीच से गुजरने के कारण जून महीना सबसे अधिक गर्म होता है।
- **3. पर्वतों की स्थिति** - विन्ध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत के कारण वहां वर्षा अधिक होती है।
- **4. भूमध्य रेखा से दूरी** - मध्य प्रदेश उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है, इसलिए यहां पर उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है।

❖ जलवायु के आधार पर मध्यप्रदेश का विभाजन

- जलवायु के आधार पर मध्यप्रदेश को चार भागों में विभाजित किया गया है-
 - 1. उत्तर का मैदान** - इसमें बुन्देलखण्ड, मध्यभारत तथा रीवा पन्ना का पठार शामिल है। समुद्र से दूर होने के कारण यहाँ गर्मियों में अधिक गर्मी सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है। इस क्षेत्र की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है।
 - 2. मालवा का पठार** - यहाँ की जलवायु सम पाई जाती है अर्थात यहाँ पर न तो ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी और न शीत ऋतु में अधिक ठण्ड पड़ती है। यहाँ सबसे अधिक वर्षा अरब सागर के मानसूनो से होती है। चीनी यात्री फाह्यान ने इसे विश्व की सर्वश्रेष्ठ जलवायु बताया है।
 - 3. विन्ध्य का पहाड़ी क्षेत्र** - विन्ध्याचल पर्वत का क्षेत्र सम जलवायु क्षेत्र है। इसमें अधिक गर्मी नहीं पढ़ती और ठण्ड में भी साधारण ठण्ड पड़ती है। पचमढ़ी और अमरकंटक इसी क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
 - 4. नर्मदा घाटी क्षेत्र** - यह क्षेत्र कर्क रेखा के लगभग समानांतर होने के कारण गर्मियों में इस क्षेत्र में तेज गर्मी पड़ती है लेकिन सर्दियों में सर्दी सामान्य ही रहती है।



ऋतुएं

- मध्य प्रदेश में 3 ऋतुएं होती हैं।

❖ 1. ग्रीष्म ऋतु

- 21 जून को सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत हो जाता है। जो मध्यप्रदेश के बीचों बीच से गुजरती है। जिससे म. प्र. में गर्मी बढ़ जाती है।
- जून माह से राज्य के उत्तर एवं उत्तरी-पश्चिमी भागों में दिन का उच्चतम तापमान 42 से.ग्रे. से अधिक हो जाता है।
- सर्वाधिक तापमान गंजबसौदा (विदिशा) में 1995 में 48.7 डिग्री मापा गया। 2008-12 में सर्वाधिक तापमान बड़वानी तथा 2013 में छतरपुर जिले के खजुराहो व नौगाँव में दर्ज किया गया है।
- संपूर्ण मध्यप्रदेश में मई का महीना सबसे गर्म होता है, जबकि मार्च में दैनिक तापान्तर सर्वाधिक होता है।
- इस ऋतु को 'उनाला' भी कहते हैं।
- सितम्बर - अक्टूबर के समय प्रदेश में द्वितीय ग्रीष्म ऋतु पड़ती है।
- राज्य में न्यूनतम तापमान वाला स्थान शिवपुरी हैं, लेकिन वर्ष 2002 में सबसे कम तापमान उमरिया का रहा था।

❖ 2. वर्षा ऋतु

- जून मध्य तक पश्चिमोत्तर भारत में निम्न दाब के केंद्र बनना शुरू हो जाते हैं, जिसके कारण सागरों से हवाएं इस ओर चलने लगती हैं, जिनसे मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा होती है।
- राज्य में मध्य जून से सितम्बर तक वर्षा ऋतु होती है।
- राज्य में मानसूनी वर्षा बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों ही शाखाओं से होती है।
- प्रदेश में सर्वाधिक वर्षा जुलाई तथा अगस्त माह में (75 से.मी.) होती है।
- प्रदेश में वर्षा की मात्रा सभी स्थानों पर समान नहीं है। पश्चिमी म.प्र. के 75 से.मी से 90 से.मी. वर्षा वाले भाग के बीच महादेव की पहाड़ी पर 150 से.मी. वर्षा होती है।
- पश्चिम की अपेक्षा (औसत 75 से.मी.) पूर्वी म.प्र. में वर्षा अधिक होती है (औसत वर्षा 125 से.मी.)
- प्रदेश में औसत वर्षा 112 C.M. होती है। सर्वाधिक वर्षा होशंगाबाद के पचमढ़ी में 199 C.M. तथा न्यूनतम वर्षा भिण्ड में 55 C.M. होती है।
- बघेलखंड (रीवा विंध्य क्षेत्र) में अरब सागर तथा बंगाल शाखा का मिलन होता है।
- इस ऋतु को 'चौमासा' भी कहते हैं।

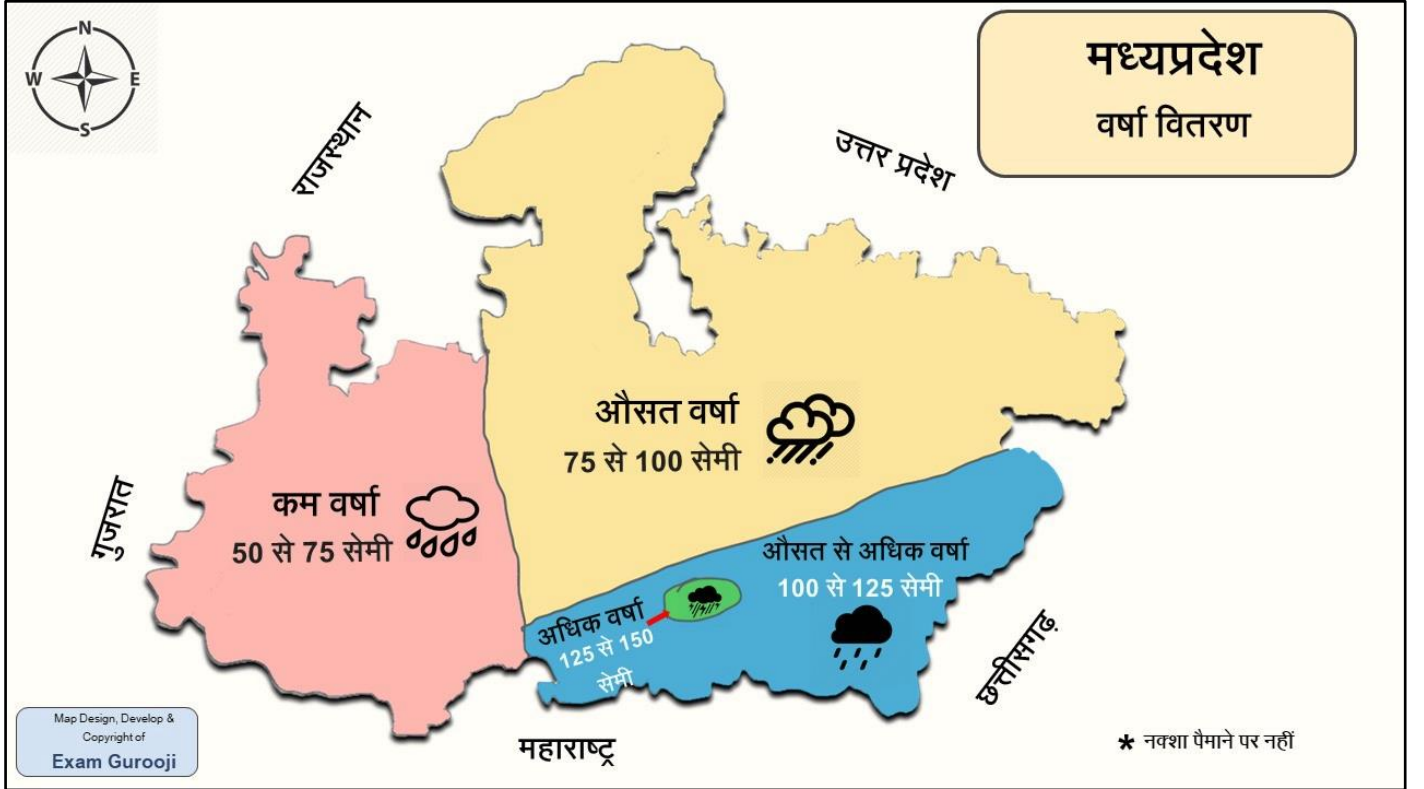
❖ 3. शीत ऋतु

- मध्यप्रदेश में नवम्बर से फरवरी तक शीत ऋतु होती है
- इस ऋतु में सूर्य की स्थिति भूमध्य रेखा के दक्षिण में होती अतः मानसूनी हवाएँ उत्तर पूर्व से लौटने लगती हैं। जिससे म.प्र. का तापमान कम होने लगता है।
- इस ऋतु में म.प्र. का औसत तापमान 20.9" सेंटीग्रेड से 26.6" सेंटीग्रेड के बीच रहता है।
- राज्य में न्यूनतम तापमान वाला स्थान शिवपुरी हैं, लेकिन वर्ष 2002 में सबसे कम तापमान उमरिया का रहा था।
- इस ऋतु को 'स्याला' भी कहते हैं।
- इस ऋतु में कुछ वर्षा भी होती है। इसे लोग 'मावठ' भी कहते हैं।
- म.प्र. में ऋतु संबंधी आंकड़ों को एकत्रित करने वाली ऋतु वेधशाला इन्दौर में है।

म. प्र. में वर्षा का वितरण

- वर्षा की विभिन्नता के आधार पर राज्य को निम्न चार क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।
- ❖ 1. अधिक वर्षा वाले क्षेत्र (125 सेमी से अधिक)
 - राज्य के दक्षिण पूर्वी हिस्से में औसत वर्षा 125 सेंटीमीटर से अधिक होती है।
 - इस क्षेत्र में स्थित पचमढ़ी, महादेव पर्वत, मंडला, सीधी तथा बालाघाट में अधिक वर्षा होती है।
 - अधिक वर्षा होने का प्रमुख कारण नर्मदा घाटी से आने वाली अरब सागरीय मानसून शाखा है।
- ❖ 2. औसत से अधिक वर्षा वाले क्षेत्र (100 से 125 सेमी)
 - इन क्षेत्रों में 100 से 125 सेंटीमीटर तक वर्षा होती है।
 - इस क्षेत्र में बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, होशंगाबाद, नरसिंहपुर आदि जिले आते हैं।
 - पूर्वी भाग में स्थित होने के कारण इन जिलों में अधिक आद्रता होने से अधिक वर्षा होती है
- ❖ 3. औसत वर्षा वाले क्षेत्र (75 से 100 सेमी)
 - इस क्षेत्र में औसत वर्षा 75 से 100 सेंटीमीटर के बीच होती है।
 - प्रदेश के उत्तर पूर्वी जिले इस क्षेत्र में आते हैं।
 - मध्य उच्च पठार, बुंदेलखंड का पठार तथा रीवा पन्ना पठार में औसत वर्षा होने का कारण वायुमंडलीय आद्रता का कम होना एवं क्षेत्रीय स्थलाकृतियों का प्रभाव है।
- ❖ 4. कम वर्षा वाले क्षेत्र (50 से 75 सेमी)
 - राज्य का पश्चिमी क्षेत्र निम्न वर्षा वाला क्षेत्र है जहां औसत वर्षा 50 से 75 सेंटीमीटर होती है।

- दक्षिण पूर्वी मानसून यहां तक पहुंचते-पहुंचते आद्रता रहित हो जाता है। इसलिए इस क्षेत्र में न्यून वर्षा होती है।
- राज्य के नीमच, मंदसौर, रतलाम, धार, झाबुआ आदि इसी क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।



- वन स्थिति रिपोर्ट 2017 (12 फरवरी 2018 को प्रकाशित) के अनुसार देश में सबसे अधिक वनों के क्षेत्रफल वाले राज्य में मध्यप्रदेश 77,414 वर्ग किमी वन के साथ प्रथम स्थान पर है।
- यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 12.44% तथा मध्यप्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 25.11% है।
- वन स्थिति रिपोर्ट 2015 (77462 वर्ग किमी) की तुलना में 2017 (77414 वर्ग किमी) की रिपोर्ट में प्रदेश का 48 वर्ग किमी. का वन क्षेत्र कम हुआ है।
- म. प्र. के बाद दूसरे स्थान पर अरुणाचल प्रदेश (66964 वर्ग किमी) एवं तीसरे स्थान पर छत्तीसगढ़ (55547 वर्ग किमी) हैं।
- प्रतिशत के अनुसार सबसे अधिक वनों का दायरा लक्ष्यदीप (90.33%) इसके बाद मिजोरम (86.27) में है।
- भारत में कुल वनावरण 7,08,273 वर्ग किमी है, जो कि कुल भौगोलिक भूमि का 21.54 प्रतिशत है।
- भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल में वनों और वृक्षों (Forest and Tree cover) की कुल हिस्सेदारी 8,02,088 वर्ग किमी (24.39%) है।
- भारत में जनजाति बहुल वन क्षेत्र वाले कुल 215 जिले हैं, जिनमें से सबसे ज्यादा कुल 24 जिले मध्यप्रदेश में हैं।

राज्य	कुल वन	सघन वन	मध्यम	खुले वन
मध्यप्रदेश	77,482	6,676	34,341	36,465

- अभिलिखित रूप से म. प्र. में कुल 94,689 वर्ग किमी (30.72%) क्षेत्र पर वन फैला हुआ है। जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 12.38 प्रतिशत है।
- म. प्र. में प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र - 0.16 वर्ग किमी. (राष्ट्रीय औसत 0.07)
- वनों का शत प्रतिशत राष्ट्रीयकरण करने वाला प्रथम राज्य हैं।
- मध्य प्रदेश की पहली वन नीति 1952 में बनी थी तथा दूसरी वन नीति 2005 में बनी है।
- मध्य प्रदेश में कुल 925 वन ग्राम हैं, जिनमें 98 वन ग्राम राष्ट्रीय वन उद्यान और अभयारण्य में स्थित वीरान अथवा विस्थापित हैं।

मध्य प्रदेश वन प्रशासन

- वन वृत्त - 16
- वन मण्डल - 63
- उपवन मण्डल - 135
- परिक्षेत्र - 473
- उपवन परिक्षेत्र - 1871
- परिक्षेत्र सहायक वृत्त - 8286

- मध्य प्रदेश सर्वोच्च वन अधिकारी 'प्रधान मुख्य वन संरक्षक' होता है।

❖ वनवृत्त

- पुनर्गठित म. प्र. में 16 वन वृत्त हैं।
- वन वृत्त का प्रमुख अधिकारी वन संरक्षक होता है।
- **तीन सर्वाधिक बड़े वनवृत्त** - खण्डवा, जबलपुर, रीवा।
- **तीन सबसे छोटे वन वृत्त** - होशंगाबाद, इंदौर, बैतूल।
- **सर्वाधिक आरक्षित वन वाला वन वृत्त** - खण्डवा
- **सर्वाधिक संरक्षित वन वाला वन वृत्त** - छतरपुर

❖ वनमंडल

- वनवृत्त पुन - वनमंडलों में विभक्त किये जाते हैं।
- म. प्र. में 62 वनमंडल हैं। एक वनवृत्त में 2 या अधिक वनमंडल होते हैं।
- इसका प्रमुख अधिकारी वनमण्डलाधिकारी होता है।
- सर्वाधिक बड़ा वनमण्डल मण्डला जबलपुर वृत्त का भाग है।

16 वीं वन स्थिति रिपोर्ट 2019

- **देश में कुल वन** - 7,12,249 वर्ग किमी (21.67%)
- **सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले राज्य** - मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ व ओड़ीसा
- **सर्वाधिक वन प्रतिशत वाले राज्य** - मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय व मणिपुर
- **मध्य प्रदेश में कुल वन क्षेत्रफल** - 77,482 वर्ग किमी (25.14%)
- मध्य प्रदेश में पिछली रिपोर्ट की तुलना में 16 वीं वन स्थिति रिपोर्ट में 68 वर्ग किमी क्षेत्र की वृद्धि हुई है।

➤ मध्य प्रदेश में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाले जिले (2019)

1. बालाघाट
2. छिंदवाडा
3. बैतूल

➤ मध्य प्रदेश में सर्वाधिक प्रतिशत वाले जिले (2019)

1. बालाघाट (53.44%)
2. श्योपुर (52.38%)
3. उमरिया (49.62%)

➤ मध्य प्रदेश में न्यूनतम वन क्षेत्रफल वाले जिले (2019)

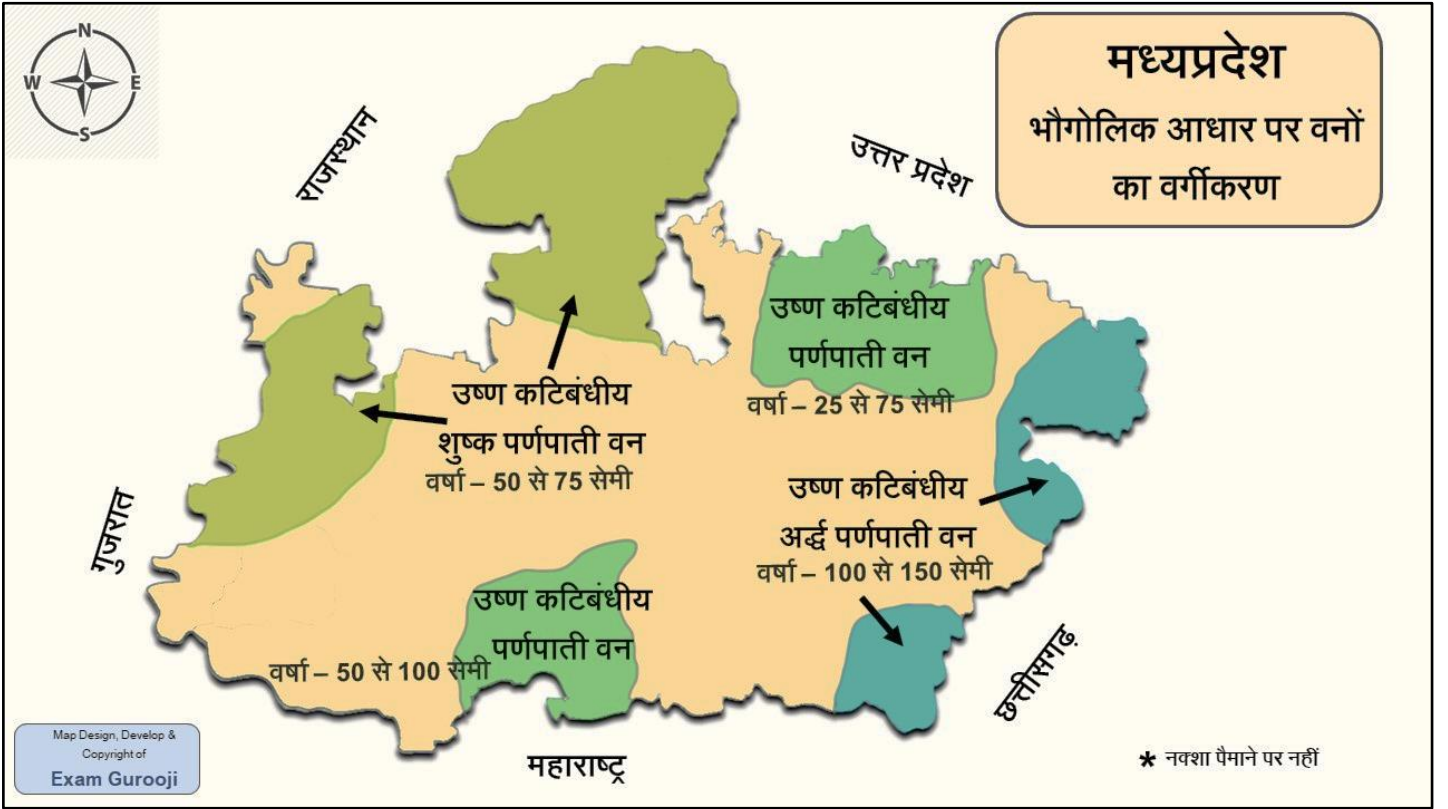
1. उज्जैन
2. शाजापुर
3. रतलाम

➤ मध्य प्रदेश में न्यूनतम वन प्रतिशत वाले जिले (2019)

1. उज्जैन
2. शाजापुर
3. रतलाम

वनों का वर्गीकरण

- मध्यप्रदेश में वनों का वर्गीकरण 5 आधारों पर किया गया है -
- 1. प्रादेशिक आधार पर 2. भौगोलिक आधार पर 3. प्रजाति के आधार पर 4. शासकीय आधार पर 5. वन विभाग के आधार पर



❖ 1. प्रादेशिक आधार पर वर्गीकरण

- (i) विंध्य कैमूर श्रेणी - यहां विरल वन पाए जाते हैं, प्रमुख जिले - सागर एवं दमोह
- (ii) मुरैना एवं शिवपुरी का पठार - यहां सर्वाधिक कटीले वृक्ष पाए जाते हैं, प्रमुख जिले मुरैना एवं शिवपुरी
- (iii) सतपुड़ा, मेकल, बघेलखंड - प्रमुख सघन वन इसी क्षेत्र में पाए जाते हैं, नर्मदा सोन के दक्षिण स्थित सभी जिले जो पश्चिम में खरगोन से लेकर पूर्व में बालाघाट तथा सीधी सिंगरौली तक विस्तृत है।

❖ 2. भौगोलिक आधार पर वर्गीकरण

➤ 1. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन

- ये वन औसत वर्षा 50 से 100 सेमी इलाकों में हैं।
- विशेषता - उत्तम किस्म की इमारती लकड़ी मिलती है।
- वृक्ष - सागौन, शीशम, नीम, पीपल आदि के वृक्ष आते हैं।
- जिलें - सागर, जबलपुर, छिंदवाड़ा, दमोह, छतरपुर, पन्ना, सिवनी, होशंगाबाद में मुख्य रूप से पाये जाते हैं।

➤ 2. उष्ण कटिबंधीय अर्द्धपर्णपाती वन

- ये वन औसत वर्षा 100 से 150 सेमी. इलाकों में हैं।
- वृक्ष - साल, सागौन, बांस, बीजा, धौर, कसाई, तिन्सा, जामुन, महुआ, सेजा, हर्रा आदि।
- जिलें - मंडला, बालाघाट, सीधी, शहडोल, डिंडोरी, उमरिया, अनूपपुर आदि जिलों में पाए जाते हैं।

➤ 3. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

- ये अपेक्षाकृत कम वर्षा वाले क्षेत्रों (25 से 75 सेमी.) में पाए जाते हैं।
- वृक्ष - बबूल, कीकर, हर्रा, पलाश, तेंदू, धोरा, शीशम, हल्दू, सागौन, शीशम आदि।
- जिलें - श्योपुर, शिवपुरी, रतलाम, मंदसौर, दतिया, टीकमगढ़, ग्वालियर, निमाड़ आदि जिलों में मिलते हैं।

❖ 3. प्रजाति के आधार वर्गीकरण

वन	क्षेत्रफल	प्रतिशत
सागौन	18,332	19.36
साल	3,932	4.15
मिश्रित एवं अन्य वन	55,436	58.49
रिक्त (खुला क्षेत्र)	16,989	18

➤ सागौन वन

- इसका बाँटनीकल नाम 'टेक्टोना ग्रेंडिस' है।
- राज्य के सर्वाधिक (19.36%) भाग पर ये वन पाए जाते हैं।
- प्रमुख क्षेत्र - होशंगाबाद (बोरी-घाटी), जबलपुर, बैतूल, सागर, छिन्दवाड़ा और मण्डला जिले।

● उपयोग - भवन निर्माण और फर्नीचर निर्माण

➤ साल वन

- इस का बाँटनीकल नाम 'शोरीया रोबुस्ता' है।
- यह प्रदेश के 4.15% (सागौन के बाद दुसरे) भाग पर विस्तृत है।
- प्रमुख क्षेत्र - मण्डला, बालाघाट, सीधी और शहडोल जिले।

- **उपयोग** - रेलवे स्लीपर (सबसे अधिक), वाहन भवन निर्माण, फर्नीचर, पुलिया निर्माण, खंबे आदि।

➤ **मिश्रित वन**

- प्रदेश में लगभग एक तिहाई वन मिश्रित प्रकार के हैं, जिनमें साल और सागौन के साथ कई अन्य जातियों के वृक्ष पाए जाते हैं।
- **प्रमुख वृक्ष** - स्पंजा, धोरा, बीजा, बहेरा, बांस एवं सलई आदि।
- **प्रमुख क्षेत्र** - बालाघाट, होशंगाबाद, मंडला, सिवनी और छिंदवाड़ा जिलों में पाए जाते हैं।

❖ **4. प्रशासनिक आधार पर वर्गीकरण**

➤ **1. संरक्षित वन**

- ये वे वन हैं, जिन पर शासन का नियंत्रण रहता है, लेकिन मानवीय गतिविधियाँ (पशुचारण, लकड़ी कटाई) कुछ सीमा तक होती हैं।
- यह कुल वनों का 31,098 वर्ग किमी (32.84 प्रतिशत) है।

➤ **2. आरक्षित वन**

- ये वे वन हैं, जिन पर शासन का पूर्ण नियंत्रण रहता है, मानवीय गतिविधियाँ (पशुचारण, लकड़ी कटाई) पूर्णता निषिद्ध होती हैं।
- ये कुल वनों के 61,886 वर्ग किमी (65.36%) है।

➤ **3. अवर्गीकृत वन**

- ऐसे वन जिनका कोई वर्गीकरण नहीं है, पशु चारण एवं लकड़ी कटाई की जा सकती है।
- ये बेहद कम मात्र 1,705 वर्ग किमी (1.8%) है।

❖ **5. वन विभाग के आधार पर वर्गीकृत वन**

- **1. राजकीय वन** - पूर्ण रूप से शासकीय नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले वन हैं।
- **2. निगमित निकाय वन** - स्थानीय नगर पालिकाओं तथा परिषद द्वारा नियंत्रित होने वाले वन हैं।
- **3. निजी वन** - निजी स्वामित्व की भूमि में स्थित वन हैं।

प्रमुख वनोपज

➤ **सागौन**

- इसका बॉटनीकल नाम 'टेक्टोना ग्रैंडिस' है।
- राज्य के सर्वाधिक (19.36%) भाग पर ये वन पाए जाते हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र** - होशंगाबाद (बोरी-घाटी), जबलपुर, बैतूल, सागर, छिन्दवाड़ा और मण्डला जिले।
- **उपयोग** - भवन निर्माण और फर्नीचर निर्माण

➤ **साल**

- इस का बॉटनीकल नाम 'शोरीया रोबुस्ता' है।
- यह प्रदेश के 4.15% (सागौन के बाद दुसरे) भाग पर विस्तृत हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र** - मण्डला, बालाघाट, सीधी और शहडोल जिले।
- **उपयोग** - रेलवे स्लीपर (सबसे अधिक), वाहन भवन निर्माण, फर्नीचर, पुलिया निर्माण, खंबे आदि

➤ **बांस**

- इसका बॉटनीकल नाम 'डेन्डोकलेमस स्ट्रिक्स' है।
- **प्रमुख क्षेत्र** - बालाघाट, बैतूल, जबलपुर, सिवनी, मंडला, सागर और भोपाल।
- **उपयोग** - कागज, लुगदी, टोकरी, चटाई, मचान और छप्पर बनाने में
- वन स्थिति रिपोर्ट 2017 के अनुसार मध्यप्रदेश में सर्वाधिक बांस क्षेत्र वाला राज्य बनने के साथ बांस राज्य का दर्जा प्राप्त है।

➤ **तेन्दूपता**

- अधिकांश तेन्दू वृक्ष छ. ग. में जाने के बावजूद म. प्र. के उत्तर मध्य पूर्वी जिलों में पर्याप्त हैं, इसकी पत्तियों से बीड़ी बनार्यी जाती हैं।
- राज्य में लगभग 260 बीड़ी कारखाने कार्यरत हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र** - सागर (सर्वाधिक), टीकमगढ़, छतरपुर, भोपाल, जबलपुर, रीवा, सीधी, शहडोल।

- **उपयोग** - बीड़ी उद्योग में

➤ **खैर वृक्ष**

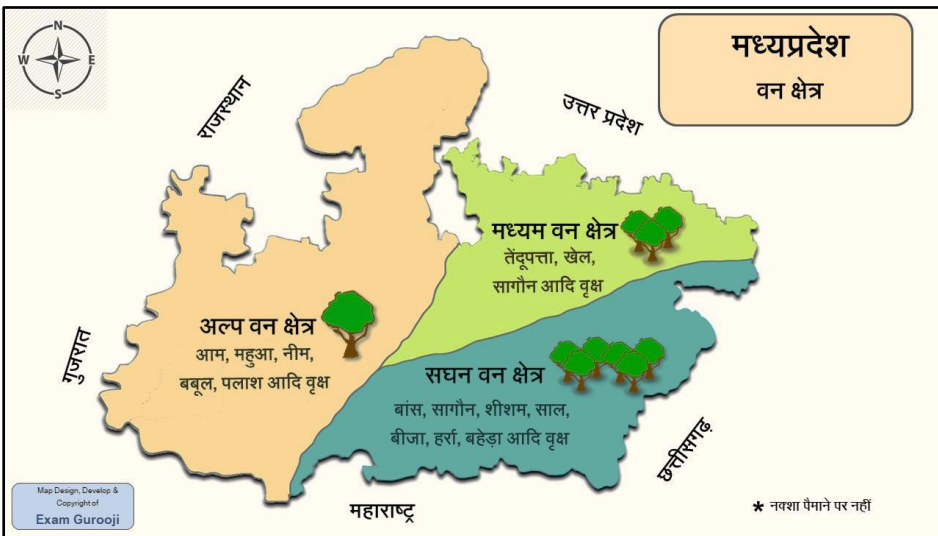
- शिवपुरी और बानमोर (मुरैना) में कत्था बनाने के एक-एक कारखाने हैं।
- **प्रमुख क्षेत्र** - गुना, श्योपुर, शिवपुरी, जबलपुर, सागर, दमोह, उमरिया, होशंगाबाद आदि।

- **उपयोग** - कत्था, पेंट, चर्म शोधन तथा औषधि में

➤ **हर्रा वृक्ष**

- यह एक बहुउपयोगी वृक्ष है।

- हर्रा वृक्ष के फलों में 35 से 40 प्रतिशत 'टेनिंग' पाया जाता है।



- **प्रमुख क्षेत्र** - छिंदवाड़ा, जबलपुर, श्योपुर, बालाघाट, शहडोल, बैतूल, पन्ना, सिवनी, मंडला, सतना व होशंगाबाद

- **उपयोग** - चर्म शोधन स्याही पेंट औषधि तथा खाद्य सामग्री में

➤ लाख

- म, प्र. में पलास, घोट, कुसुम, बैर के वृक्षों और अरहर के पौधे से लाख प्राप्त होती है।

- उमरिया में लाख बनाने का कारखाना है।

- **प्रमुख क्षेत्र** - जबलपुर, सिवनी, शहडोल, होशंगाबाद, भोपाल, इंदौर, झाबुआ, तथा मंडला आदि

- **उपयोग** - चूड़ी, औषधि, सौंदर्य सामग्री, खिलौना निर्माण तथा रासायन में

➤ गोंद

- राज्य में बबूल, कुल्लु, सलाई आदि के वृक्ष पर्याप्त है जिनसे गोंद निकाला जाता है।

- प्रकार - **अरेबिक गोंद** (एनोनइसस लुटीभोलिया या बबूल पेड से), **कुल्लु गोद** (कुल्लु पेड से) और **सलाई गोंद** (सलाई पेड से)।

- **प्रमुख क्षेत्र** - झाबुआ, धार, खण्डवा, खरगोन, ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, रतलाम आदि।

- **उपयोग** - खाद्य सामग्री (बबूल गोंद), कॉपी एवं पेस्टी (कुल्लु गोंद) सुगंध बनाने पेंट और वार्निश बनाने में (सलाईगोंद)

➤ भिलावा

- भिलावा वृक्ष से प्राप्त भिलावा फल भी बहुउपयोगी है।

- छिन्दवाड़ा में इसका एक कारखाना है।

- **प्रमुख क्षेत्र**: पूर्वी जिले।

- **उपयोग** - स्याही, पेन्ट, औषधि।

➤ महुआ

- महुआ वृक्ष से प्राप्त महुआ फल का उपयोग शराब और औषधि दोनों में होता है।

- यह पूर्वी जिलों में विशेष रूप से मिलता है।

मध्य प्रदेश सरकार की वन संरक्षण योजनाएँ

- **सामाजिक वानिकी योजना** - मध्यप्रदेश में 1976 में प्रारंभ इसके अंतर्गत निजी रोपणियों को बढ़ावा देना, कृषकों को उनकी भूमि में वृक्ष खेती, कृषि वानिकी, मेढ वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहन राशि देकर कृषि वानिकी को प्रोत्साहित करना है।

- **पंचवन योजना** - 33 प्रतिशत से कम वन क्षेत्र वाले जिलों में वृक्षारोपण की योजना है।

- **लोक वानिकी योजना** - स्वामियों की निजी स्वामित्व की पड़ती जमीनों पर खड़े वृक्षों के प्रबंधन के लिए अप्रैल 1999 से प्रारंभ की गई।

- **'वनस्पति वन'पंचवर्षीय योजना** - कटनी जिले में एक महत्वाकांक्षी 'वनस्पति वन'पंचवर्षीय योजना का क्रियावयन कार्य प्रगति पर है

- **संजीवनी आयुर्वेद** - औषधीय पौधों के विपणन के लिए भोपाल, बालाघाट, छिंदवाड़ा, कटनी, सिवनी, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, रेहटी (सीहोर), होशंगाबाद, नरसिंहपुर, सतना, मैहर, इंदौर, पन्ना, ग्वालियर, अमरकंटक, छतरपुर, रीवा एवं सिवनी में संजीवनी आयुर्वेद के नाम से 22 विक्रय केंद्र प्रारंभ किए गए।

- **वन एवं वन्य जीव संरक्षण के भारतीय कानून**

1. वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम, 1972
 2. वन्य संरक्षण अधिनियम, 1980
 3. भारतीय दण्ड संहिता, 1860 के कुछ प्रावधान
 4. भू-राजस्व संहिता, 1956 के कुछ प्रावधान
- मध्य प्रदेश में पहली वन नीति - 1952 में
 - मध्य प्रदेश की नई वन नीति: 4 अप्रैल, 2005

वानिकी पुरस्कार

➤ शहीद अमृता देवी स्मृति पुरस्कार

- यह पुरस्कार वन और वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में दिया जाता है।
- वृक्षों को बचाने के लिये प्राणोत्सर्ग करने वाले जनसमूह का नेतृत्व करने वाली वीरंगना 'अमृता देवी' की स्मृति में यह पुरस्कार सन् 1994 से राजस्थान ने प्रारंभ किया गया है।

➤ बसामन मामा स्मृति वन्य प्राणी संरक्षण पुरस्कार

- वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए निम्न दो श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

- **राज्य स्तरीय पुरस्कार** - निजी भूमि पर उत्कृष्ट वृक्षारोपण के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है।

- **विंध्य क्षेत्र हेतु पुरस्कार** - शासकीय तथा अशासकीय व्यक्तियों द्वारा वन एवं वन्य प्राणियों संरक्षण एवं वन संवर्धन के लिए प्रदर्शित की गई शूरवीरता, अदम्य साहस, उत्कृष्ट कार्य एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

➤ वन प्रहरी पुरस्कार

- वनों में अग्नि की रोकथाम, अवैध टन कटान को रोकने वन्य जीव जंतुओं की सुरक्षा के क्षेत्र में को दो श्रेणियों में विभक्त यह पुरस्कार राज्य एवं जिला स्तर पर प्रदान किये जाते हैं।

➤ वृक्ष मित्र पुरस्कार

- श्रीमती इंदिरा गांधी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष उनकी जन्म तिथि 19 नवंबर को अवसर पर 'इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार' दिया जाता है।

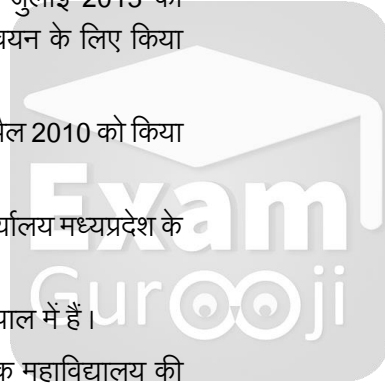
➤ महावृक्ष पुरस्कार

- प्राचीन एवं विशिष्ट प्रजातियों के वृक्षों को पहचान कर सुरक्षित करने के उद्देश्य से वर्ष 1995 से 'महावृक्ष पुरस्कार' योजना शुरू की गई है।

वनों से संबंधित प्रमुख संस्थान

- मध्य प्रदेश राज्य वन विकास निगम की स्थापना 29 जुलाई 1975 को की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य सागौन एवं बांस का व्यवसायिक रोपण है।
- मध्य प्रदेश राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ का गठन 1984 में हुआ था।
- मध्य प्रदेश जैव विविधता विभाग का गठन 2001 में किया गया है।
- मध्य प्रदेश जैव विविधता बोर्ड का गठन 2005 में किया गया था, इसके पदेन अध्यक्ष मुख्यमंत्री होते हैं।
- मध्य प्रदेश इको पर्यटन विकास बोर्ड एक स्वायत्तशासी संस्थान है, जिसका गठन 12 जुलाई 2005 को किया गया था।
- मध्य प्रदेश राज्य बांस मिशन का गठन 3 जुलाई 2013 को राष्ट्रीय बांस मिशन की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए किया गया है।
- राज्य वन विकास अभिकरण का गठन 19 अप्रैल 2010 को किया गया है।
- वन अनुसंधान संस्थान देहरादून का क्षेत्रीय कार्यालय मध्यप्रदेश के जबलपुर में स्थित है।
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट भोपाल में है।
- मध्यप्रदेश में सर्वप्रथम बालाघाट में वन राजिक महाविद्यालय की स्थापना 1979 में की गई थी।
- मध्य प्रदेश का दूसरा वन राजिक महाविद्यालय 1980 में बैतूल में स्थापित किया गया था।
- मध्य प्रदेश का प्रादेशिक वन स्कूल शिवपुरी में स्थित है।
- देश का पहला वाइट टाइगर ब्रीडिंग सेंटर गोविंदगढ़, रीवा बनाया जाएगा।

- मध्य प्रदेश वन अनुसंधान केंद्र (1963) - जबलपुर
- भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (1982) - भोपाल
- मध्यप्रदेश वानिकी अनुसंधान संस्थान - छिंदवाड़ा
- उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान - जबलपुर
- आम अनुसंधान संस्थान - गोविंदगढ़, रीवा
- वन पहरदारों का ट्रेनिंग स्कूल - रीवा, बैतूल
- वन विद्यालय - शिवपुरी, सिवनी, बैतूल, अमरकंटक



7 मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण

- प्रदेश में कुल 11 राष्ट्रीय उद्यान हैं एवं 24 वन्यजीव अभ्यारण्य हैं। जबकि 1 राष्ट्रीय उद्यान 5 वन्यजीव अभ्यारण्य प्रस्तावित हैं।
- प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 10.99 हजार वर्ग किमी. है।
- मध्यप्रदेश में 1974 से वन्यजीव संरक्षण अधिनियम लागू है।
- **राष्ट्रीय उद्यान** - इनकी स्थापना वन्यजीवों को प्राकृतिक क्षेत्र में सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने के उद्देश्य की जाती है। ये ऐसे आरक्षित क्षेत्र होते हैं जिनमें सभी प्रकार की मानवीय गतिविधि प्रतिबंधित होती है
- भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान 1936 में स्थापित हेली नेशनल पार्क था, जिसे अब जिम कार्बेट (उत्तराखंड) के नाम से जाना जाता है।
- **वन्यजीव अभ्यारण्य** - यह से संरक्षित क्षेत्र होते हैं जहां वन्यजीवों को प्राकृतिक एवं सुरक्षित वातावरण में रखा जाता है, इनमें मानव गतिविधियों को सीमित रूप से अनुमति दी जाती है, जबकि राष्ट्रीय उद्यान में सभी प्रकार की मानव गतिविधियां प्रतिबंधित होती है।
- भारत का पहला वन्य जीव अभ्यारण्य मिथानामा वन्य जीव अभ्यारण्य था, जो 1887 में सिक्किम में स्थापित किया गया था।
- बाघ आकलन रिपोर्ट 2018 के अनुसार मध्यप्रदेश में बाघों की संख्या 526 है, जो देश में सर्वाधिक है इस प्रकार मध्य प्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा पुनः प्राप्त हो गया है। दूसरे स्थान पर कर्नाटक (524 बाघ) तथा तीसरे स्थान पर उत्तराखंड (442 बाघ) है।

राष्ट्रीय उद्यान

❖ कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान, मंडला

- कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान मंडला जिले के अंतर्गत आता है।
- यह मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है, जो लगभग 940 वर्ग किमी में फैला हुआ है।
- यह मध्य प्रदेश का पहला राष्ट्रीय उद्यान है, इसे सन् 1932 में अभ्यावन, 1952 में अभ्यारण्य तथा 1955 में नेशनल पार्क बनाया गया।
- कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश का सर्वप्रथम राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 1974 में प्रोजेक्ट टाइगर में शामिल किया गया।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में ब्रेडरी प्रजाति का बारहसिंघा पाया जाता है, जो भारत के केवल इसी राष्ट्रीय उद्यान में है।
- यह मार्च 2017 में भारत का पहला ऐसा टाइगर रिजर्व बना जिसने आधिकारिक रूप से एक शुभंकर जारी किया जिसका नाम भूर सिंह है और यह एक बारहसिंगा है।

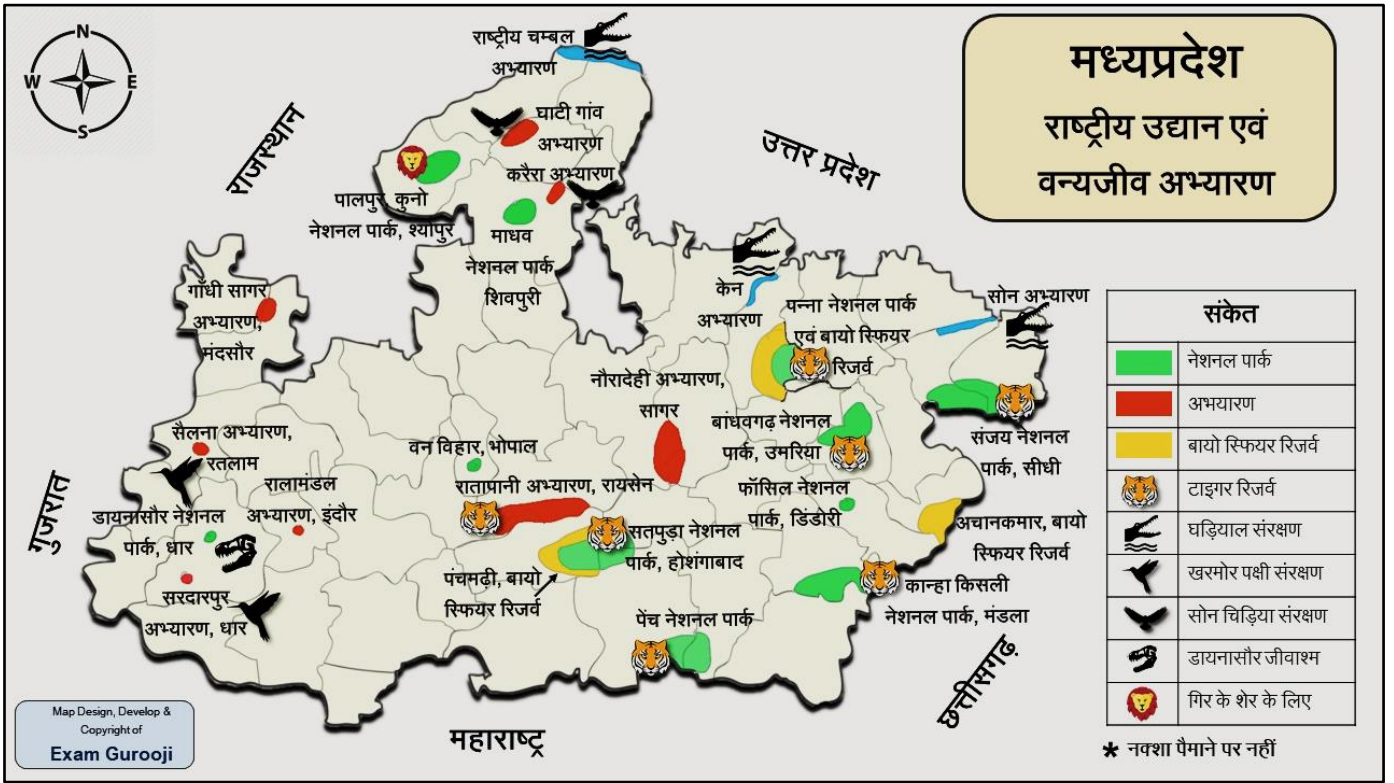


- इस राष्ट्रीय उद्यान में बारहसिंगा, चीतल, चिंगार, बाघ, तेंदुआ, भालू आदि जानवर पाए जाते हैं।
- यहां पर हालो घाटी तथा बंजर घाटी प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में अमेरिका की नेशनल पार्क सर्विस की सहायता से पार्क इंटरप्रीटेशन योजना चल रही है।
- "जंगल गलियारा योजना" के तहत कान्हा किसली तथा बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान को जोड़ा जाना है।
- **❖ पेंच राष्ट्रीय उद्यान, सिवनी - छिंदवाड़ा**
- यह सिवनी - छिंदवाड़ा जिले तथा महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है। इसे इंदिरा गाँधी प्रियदर्शनी पार्क भी कहा जाता है।
- नोट - इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय उद्यान तमिलनाडु में है।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 293 वर्ग किमी है।
- वर्ष 1977 में 449.39 वर्ग कि.मी. वन क्षेत्र को पेंच अभ्यारण्य क्षेत्र घोषित किया गया था। वर्ष 1983 में इसमें से 292.850 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को पेंच राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया था, एवं 118.47 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पेंच अभ्यारण्य के रूप में रखा गया।
- वर्ष 1992 में भारत सरकार द्वारा पेंच राष्ट्रीय उद्यान, पेंच अभ्यारण्य एवं कुछ अन्य वन क्षेत्रों को सम्मिलित कर 757.850 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को देश का 19 वां प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व बनाया गया।
- वर्ष 2002 में पेंच राष्ट्रीय उद्यान एवं पेंच अभ्यारण्य का नाम क्रमशः इंदिरा प्रियदर्शनी पेंच राष्ट्रीय उद्यान एवं पेंच मोगली अभ्यारण्य रखा गया।

- पेंच नदी इस अभ्यारण्य से होकर बहती है।
- पेंच टाइगर रिजर्व एवं इसके आसपास का क्षेत्र रूडियार्ड किपलिंग के प्रसिद्ध "द जंगल बुक" का वास्तविक कथा क्षेत्र है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में मोगली लैंड क्षेत्र तथा वॉटर राफ्टिंग सुविधा है।

❖ बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, उमरिया

- यह राष्ट्रीय उद्यान उमरिया जिलों में है। इसका क्षेत्रफल लगभग 448.84 वर्ग किमी है।
- यह राष्ट्रीय उद्यान 32 पहाड़ियों से घिरा है। इस उद्यान में एक मुख्य पहाड़ है जो 'बांधवगढ़' कहलाता है। बाँधवगढ़ की पहाड़ी पर 2 हजार वर्ष पुराना किला बना है।
- बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना सन् 1968 में की गई थी तथा इसे 1993 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया था।
- यहां बाघों का घनत्व देश में सर्वाधिक (1 बाघ प्रति 8 वर्ग किमी) है।



- पूर्व बांधवगढ़ के चारों ओर फैले जंगल का रखरखाव रीवा के महाराजा के शिकारगाह के रूप में किया जाता था।
- इस राष्ट्रीय उद्यान सफेद बाघ के लिए प्रसिद्ध रहा है।
- ❖ **पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, पन्ना**
- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के पन्ना एवं छतरपुर में फैला हुआ है।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 543 वर्ग किमी है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना सन् 1981 में हुई थी तथा इसे 1994 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया।
- केन नदी किस राष्ट्रीय उद्यान के बीच से होकर गुजरती है।
- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में प्रदेश का एकमात्र रेप्टाइल पार्क है, जहां घड़ियाल मगरमच्छ आदि का प्राकृतिक आवास है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में जंगली भैंसों की संख्या सर्वाधिक है।
- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को 2011 में जैवमंडल रिजर्व घोषित किया गया है।
- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को 'विश्व वन्यजीव कोष (WWF)' से भी सहायता प्राप्त हो रही है।
- ❖ **संजय राष्ट्रीय उद्यान, सीधी**
- यह मध्यप्रदेश के सीधी जिले में है। इस राष्ट्रीय उद्यान का अधिकांश हिस्सा छत्तीसगढ़ राज्य में चला गया है।
- पूर्व में इसका नाम डुबरी था।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 467 वर्ग किमी है।
- यह राष्ट्रीय उद्यान 1981 में स्थापित किया गया था। भारत सरकार द्वारा 2008 में प्रोजेक्ट टाइगर में शामिल किया गया है।
- ❖ **सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, होशंगाबाद**
- यह होशंगाबाद जिले में लगभग 528 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- यह सन् 1983 में स्थापित किया गया था। इसे 1999-2000 में प्रोजेक्ट टाइगर में शामिल किया गया है।
- प्रदेश की सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़ यहीं स्थित है।
- पूरे मध्य भारत में यह एकमात्र टाइगर रिजर्व है जहां पर प्राकृतिक रूप से चलने की आजादी है।
- ❖ **माधव राष्ट्रीय उद्यान, शिवपुरी**
- यह शिवपुरी जिले में है, यह 1958 में स्थापित किया गया था।
- इसका क्षेत्रफल लगभग 355 वर्ग किमी है।
- इस उद्यान से राष्ट्रीय राजमार्ग 3 आगरा - मुंबई गुजरता है।
- यहाँ जार्ज कैसल भवन है।
- यह मूलतः ग्वालियर महाराजा के लिए शाही शिकार का अभ्यारण्य था।
- माधवराव सिंधिया ने वर्ष 1918 में मनहार नदी पर बांधों का निर्माण करते हुए साख्या सागर और माधव तालाब का निर्माण कराया था।
- ❖ **घुघवा फॉसिल (जीवाश्म) राष्ट्रीय उद्यान, डिंडोरी**
- यह डिंडोरी जिले में शाहपुरा में है।

- क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्यप्रदेश का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है इसका क्षेत्रफल लगभग 0.27 वर्ग किमी है।
- इसकी स्थापना 1968 में की गई थी।
- इस उद्यान में पादपों तथा जन्तुओं के जीवाश्म पाए जाते हैं।

❖ वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल

- सन् 1979 में स्थापित यह राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 4.452 वर्ग किमी है।
- इसे 26 जनवरी 1983 को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।
- यह 'श्री इन वन' राष्ट्रीय उद्यान है। नेशनल पार्क के साथ-साथ एक चिड़ियाघर (जू) तथा जंगली जानवरों का रेस्क्यू सेंटर (बचाव केन्द्र) भी है।
- इसके के बीच में स्नेक पार्क (सर्प उद्यान) भी स्थित है।
- यह प्रदेश का एकमात्र ऐसा चिड़ियाघर भी है जिसकी देखरेख वन विभाग करता है। अन्य चिड़ियाघरों (इंदौर एवं जबलपुर) का प्रबंधन स्थानीय नगर निगम करते हैं।

❖ डायनासोर जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान, धार

- यह धार जिले में 2010 में स्थापित किया गया था। इसका क्षेत्रफल लगभग 0.897 है।
- यह क्षेत्र वर्ष 2011 में डायनासोर जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान बाग के रूप में अधिसूचित किया गया है।
- यहाँ 6.5 करोड़ वर्ष पुराने डायनासोर के जीवाश्म (अण्डे) हैं।

❖ कूनो पालपुर राष्ट्रीय उद्यान, श्योपुर

- यह मध्यप्रदेश के शिवपुर में स्थित है जिसकी स्थापना 1981 में अभ्यारण्य के रूप में की गई थी। 2018 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा प्रदान किया गया।
- इसका कुल क्षेत्रफल 413 वर्ग किमी. है।
- गुजरात के गिर अभ्यारण्य के एशियाटिक लॉयन (बब्बर शेर) लाने के लिए म.प्र. सरकार ने कुनो अभ्यारण्य को नेशनल पार्क घोषित किया है।
- इसे 2009 में चीता के पुनर्स्थापन के लिए भी चिन्हित किया गया है।
- यह क्षेत्र सहरिया जनजाति का निवास स्थान है।
- कूनो नदी इस उद्यान से होकर बहती है।

व्हाइट सफारी मुकुंदपुर, सतना

- विश्व की पहली व्हाइट टाइगर सफारी मध्य प्रदेश के सतना जिले के मुकुंदपुर में स्थापित की गई है।
- इसका औपचारिक रूप से लोकार्पण 3 अप्रैल 2016 को किया गया है।

- ऐसे सफारी का नाम महाराजा मार्टींड सिंह जूदेव के नाम पर महाराजा मार्टींड सिंह जूदेव व्हाइट टाइगर सफारी रखा गया है।

• म. प्र. में प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत 6 राष्ट्रीय उद्यान हैं।

1. कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान - 1974 में शामिल
2. पेंच राष्ट्रीय उद्यान - 1992 में शामिल
3. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान - 1993 में शामिल
4. पन्ना राष्ट्रीय उद्यान - 1994 में शामिल
5. सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान - 1999 - 2000 में शामिल
6. संजय गांधी डुबरी टाइगर रिजर्व - 2008 में शामिल

• नोट - रातापानी अभ्यारण को प्रोजेक्ट टाइगर में शामिल नहीं किया गया है।

जैव मंडलीय आरक्षित क्षेत्र (बायोस्फीयर रिजर्व)

- बायोस्फीयर रिजर्व एक विशेष पारिस्थितिकी तंत्र या वनस्पति और जीवों का एक विशेष वातावरण होता है, जिसे सुरक्षा और पोषण की आवश्यकता होती है।
- मध्यप्रदेश में 3 जैवमंडलीय आरक्षित क्षेत्र हैं, मध्य प्रदेश का प्रथम जैव आरक्षित क्षेत्र पचमढ़ी 1999) है।

बायोस्फीयर रिजर्व	स्थापना	क्षेत्रफल	जिले	मुख्य जीव
1. पचमढ़ी जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र	30 मार्च 1999 (2009 UNESCO)	4,981 वर्ग किमी	बैतूल, होशंगाबाद एवं छिंदवाड़ा	बड़ी गिलहरी और उड़ने वाली गिलहरी
2. अमरकंटक अचानकमार जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र	30 मार्च 2005 (2012 UNESCO)	3,835 वर्ग किमी	डिंडोरी, अनूपपुर बिलासपुर (छत्तीसगढ़)	तेंदुए, गौर और चीतल
3. पन्ना जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र	25 अगस्त 2011	2,998 वर्ग किमी	पन्ना, छतरपुर	चीता, चीतल, चिंकारा, सांभर और भालू

मध्यप्रदेश के प्रमुख अभ्यारण्य				
क्र.	नाम	जिला	क्षेत्रफल	मुख्यप्राणी
1.	बगदरा	सीधी	478	काला हिरण, तेन्दुआ, नीलगाय
2.	बोरी	होशंगाबाद	485.71	शेर, तेन्दुआ, चीतल
3.	फैन	मण्डला	110.74	शेर, तेन्दुआ, चीतल, सांभर
4.	गांधी सागर (नीलगाय)	मन्दसौर	368.62	नीलगाय, चिंकारा, तेन्दुआ
5.	घाटी गांव (सोन चिड़िया)	ग्वालियर	510	सोन चिड़िया, काला हिरण
6.	करेरा (सोन चिड़िया)	शिवपुरी	202.21	सोन चिड़िया, काला हिरण
7.	केन (घड़ियाल)	छतरपुर	45.20	घड़ियाल, मगर
8.	खिवनी	देवास	134.77	तेन्दुआ, सांभर चीतल
9.	राष्ट्रीय चंबल (घड़ियाल)	मुरैना	435	घड़ियाल, मगर कछुआ, डॉलफिन
10.	नौरादेही (सबसे बड़ा) (नीलगाय)	सागर	1194.67	नीलगाय, काला हिरण, चीतल, जंगली कुत्ता
11.	पचमढी	होशंगाबाद	491.632	शेर, तेन्दुआ, चीतल, चिंकारा, सांभर, नीलगाय, चौसिंघा भालू
12.	पनपथा	शहडोल	245.84	शेर, तेन्दुआ, चीतल, चिंकारा, सांभर, नीलगाय, चौसिंघा भालू
13.	पेंच	सिवनी, छिन्दवाड़ा	118.473	शेर, तेन्दुआ, चीतल, गौर, सांभर
14.	रातापानी	रायसेन	825	शेर, तेन्दुआ, सांभर, चीतल, नीलगाय, चिंकारा
15.	डुबरी (संजय)	सीधी	364.59	शेर, तेन्दुआ, सांभर, चीतल, नीलगाय, प्रदुबरी, चिंकारा
16.	सिंघोरी	रायसेन	291.91	शेर, तेन्दुआ, चीतल, सांभर, चिंकारा
17.	सोन (घड़ियाल)	सिधी - शहडोल	83	घड़ियाल, मगर, कछुआ
18.	सरदारपुर (खरमौर)	धार	348.12	खरमौर
19.	सौलाना (खरमौर)	रतलाम	12.96	दुधराज, खरमौर
20.	राला मण्डल (सबसे छोटा)	इन्दौर	2.345	शेर, तेन्दुआ, चीतल, चिंकारा
21.	ओरछा	निवाड़ी	44.914	चीतल, नीलगाय
22.	नरसिंहगढ़	राजगढ़	57.19	तेन्दुआ, चीतल, सांभर, गौर, धुबर, धनेरा
23.	रानी दुर्गावती	दमोह	23.973	तेन्दुआ, चीतल
24.	गंगाऊ	ग्वालियर	78.536	-
25.	गौ अभ्यारण्य	सालरिया, सुसनेर (आगर मालवा)	472.63	गाय

मध्यप्रदेश में प्रस्तावित राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य		
राष्ट्रीय उद्यान/अभ्यारण्य	जिला	मुख्य जीव
राष्ट्रीय उद्यान		
1. पन्ना - 2	पन्ना	विशेष रूप से जंगली भैंसे के लिए
2. ओमकारेश्वर	खंडवा	राज्य के सभी मुख्य वन्य प्राणियों के लिए
अभ्यारण्य		
1. काली भीत	बैतूल	
2. सुरमैनिया	खंडवा	
3. मांधाता	खंडवा	
4. कट्टीवाड़ा (मयूर)	अलीराजपुर	

- धरातल की वह ऊपरी परत जो पेड़ पौधों के उगने व बढ़ने के लिए सहायक तत्व को प्रदान करती है, मिट्टी कहलाती है। मिट्टी चट्टान तथा जीवाश्म के मिश्रण से बनती है।
- नदी घाटियों को छोड़कर अधिकतम मध्य प्रदेश में प्रोढ़ मृदाएं पाई जाती हैं, क्योंकि राज्य की मृदा की प्रकृति का निर्धारण यहां पाई जाने वाली प्राचीन चट्टानों के द्वारा हुआ है।
- किसी भी प्रदेश की वनस्पति और कृषि के स्वरूप का निर्धारण बहुत कुछ मिट्टी की प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है।
- मध्य प्रदेश की मिट्टी को 5 भागों में वर्गीकृत किया है।

❖ 1. काली मिट्टी

- काली मिट्टी मध्य प्रदेश में सर्वाधिक क्षेत्रफल 510 लाख एकड़ (47.6%) में पाई जाती है।
- दक्कन ट्रेप (मालवा के पठार) में बेसाल्ट नामक आग्नेय चट्टानों से निर्मित यह लावा-मिट्टी है।
- यह मृदा राज्य में मालवा पठार सतपुड़ा के कुछ भाग तथा नर्मदा घाटी में मिलती है।
- जिला स्तर पर यह मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, खंडवा, खरगोन, इंदौर, देवास, सीहोर, उज्जैन, शाजापुर, राजगढ़, भोपाल, रायसेन, विदिशा, सागर, दमोह, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, बेतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, गुना, शिवपुरी, सीधी आदि जिलों में मिलती है।
- स्थानीय लोग इसे 'भरी या कन्हर' भी कहते हैं।
- इसमें लोहे और चूने की प्रधानता है। लोहे की अधिकता से काला रंग, चूने की उपस्थिति से आद्रता ग्रहण करने की क्षमता होती है।
- काली मिट्टी में फॉस्फेट, नाइट्रोजन एवं जैव पदार्थ की कमी होती है।
- इसका PH मान 6.3 - 6.4 होता है।
- काली मिट्टी कपास कृषि के लिए सर्वोत्तम होती है। इसे रेगड मिट्टी भी कहते हैं।
- रंग तथा मोटाई के आधार पर इस मृदा को निर्णय 3 भागों में वर्गीकृत किया गया है।

➤ 1. गहरी काली मृदा

- यह मृदा राज्य में नर्मदा घाटी, मालवा एवं सतपुड़ा पठार के विस्तृत भाग में लगभग 35 लाख एकड़ (3.5%) भूमि पर पाई जाती है।
- यह मृदा गेहूं, तिलहन, चना तथा ज्वार की कृषि के लिए उपयोगी है।

➤ 2. साधारण काली मृदा

- मृदा यह मृदा प्रदेश के मालवा पठार, उत्तरी भाग तथा निमाड़ क्षेत्र में मिलती है।

- यह राज्य में सबसे अधिक क्षेत्रफल लगभग 400 लाख एकड़ (37%) क्षेत्र में मिलती है।

➤ 3. छिछली काली मृदा

- यह मृदा मुख्य रूप से छिंदवाड़ा, सिवनी तथा बैतूल जिले में पाई जाती है।
- यह राज्य में लगभग 75 लाख एकड़ (7.1%) क्षेत्र में मिलती है।
- राज्य में इसका क्षेत्रफल 7.1 प्रतिशत है।
- यह मृदा गेहूं एवं चावल की कृषि के लिए उपयोगी है।

❖ 2. लाल-पीली मिट्टी

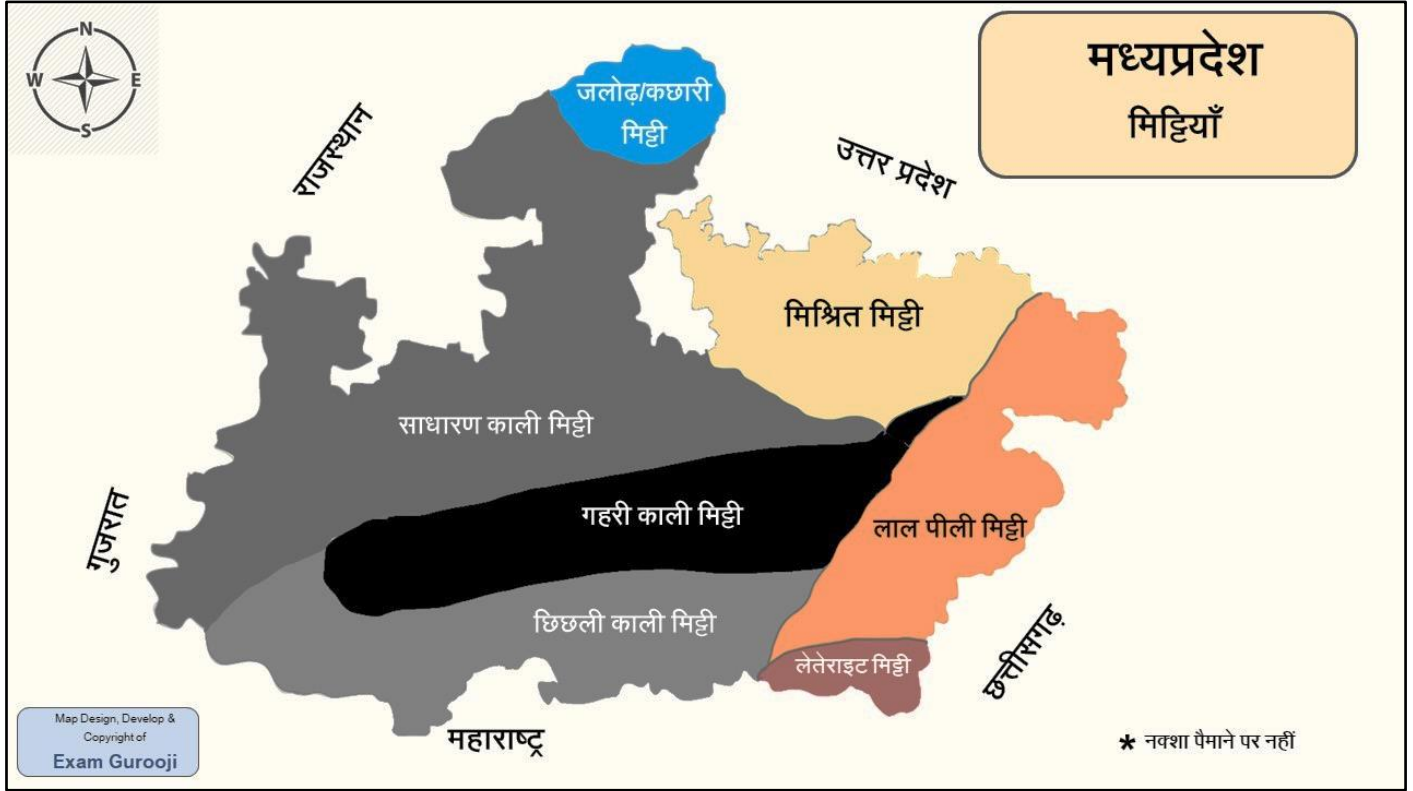
- दूसरी सर्वाधिक मात्रा (18.30%) भूभाग में पायी जाती हैं।
- बुन्देलखण्ड के कुछ भाग तथा बघेलखण्ड में विशेषकर, मण्डला, बालाघाट, सीधी, शहडोल जिलों में यह पायी जाती है।
- इस मिट्टी का निर्माण आर्कियन, धारवाड तथा प्रमुखतः गोण्डवाना काल की चट्टानों के ऋतुक्षरण से हुआ है।
- इसमें ह्यूमस तथा नाइट्रोजन की कमी होती है।
- इस मिट्टी के पीले रंग का निर्धारण फेरिक ऑक्साइड के जलयोजन के कारण तथा लाल रंग लोहे के आक्सीकरण के कारण होता है।
- इस का PH मान 5.5 से 8.5 तक होता है, अर्थात् यह मिट्टी अम्लीय से क्षारीय होती है।
- यह मिट्टी चावल की कृषि के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं।

❖ 3. जलोढ़ मिट्टी (काप मिट्टी)

- राज्य के उत्तर-पश्चिमी जिलों - भिण्ड, मुरैना, शिवपुरी, ग्वालियर में यह मिट्टी पाई जाती हैं।
- प्रदेश इसका क्षेत्रफल लगभग 33 लाख एकड़ (7.57%) हैं।
- इसे एल्यूवाइल मिट्टी या दोमट मिट्टी भी कहते हैं। जलोढ़ मिट्टी में उर्वरता अधिक होती है।
- इसका निर्माण बुन्दलेखण्ड नीस के ऋतुक्षरण तथा चम्बल नदी द्वारा निक्षेपित पदार्थों से हुआ है।
- इसमें नाइट्रोजन, जैव तत्व तथा फास्फोरस की कमी होती है।
- जलोढ़ मिट्टी का pH मान 7 से अधिक होता है। अर्थात् ये उदासीन से क्षारीय प्रकृति की हैं।

❖ 4. लैटराइट मिट्टी

- यह मिट्टी छिन्दवाडा और बालाघाट जिलों के लगभग 70 प्रतिशत भाग यह पाई जाती है। जिसके अंतर्गत प्रदेश का मात्र 4% क्षेत्र आता है।
- लाल चट्टानों के टूटने से निर्मित इस मिट्टी में ह्यूमस, नाइट्रोजन, फास्फेट, चूना, कैल्सियम तथा जैविक पदार्थों की कमी होती है जबकि पोटाश तथा आयरन ऑक्साइड की अधिकता होती है, जिससे यह मिट्टी अनुपजाऊ होती है।



- इस भाटा भी कहते हैं।
 - इसमें ज्वार बाजरा कोदो कुटकी जैसी मोटी फसलें होती हैं।
 - इसमें यह भवन निर्माण के लिए अति उत्तम मानी जाती है।
 - मृदा अपरदन की इस समस्या का समाधान के लिए राज्य का कृषि विभाग विश्व बैंक के साथ मिलकर प्रयास कर रहा है।
 - मृदा अपरदन से शिवपुरी, भिंड व मुरैना जिले प्रभावित हैं, इनमें सबसे अधिक प्रभावित मुरैना जिला है।
 - मृदा अपरदन रोकने के लिए पशु चराई पर नियंत्रण, कंटूर खेती तथा वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जा रहा है।
 - मृदा अपरदन को रोकने के लिए छोटे छोटे बांधों का निर्माण एवं भूमि का चक्रिय पद्धति द्वारा उपयोग करने पर बल दिया जा रहा है।
- ❖ 5. मिश्रित मिट्टी
- प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में लाल पीली एवं काली मिट्टी मिश्रित रूप से पाई जाती है
 - बुंदेलखंड के कुछ भाग में कंकर और बालू से मिश्रित मिट्टी पाई जाती है जो नीस, ग्रेनाइट चट्टानों के टूटने से बनी है।
 - इसमें फास्फोरस, नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थ की कमी रहती है जिससे इसकी उर्वरा शक्ति कम होती है।
 - यह मिट्टी मोटे अनाजों और वनीकरण के लिए सर्वोत्तम है।

मृदा अपरदन

- अपरदन के विभिन्न कारकों द्वारा मृदा की सतह से मृदा के महीन कणों का कट-कटकर बहना मृदा अपरदन कहलाता है।
- मृदा अपरदन को किसान के लिए रेंगती हुई मृत्यु भी कहा जाता है।
- राज्य के अधिकतर भाग पठारी एवं पहाड़ी है, उपयुक्त ढाल होने के कारण, मानसूनी वर्षा एवं भूमि का गलत उपयोग होने से राज्य में मृदा अपरदन एक कठिन समस्या बन गई है।
- चंबल नदी ने बड़े-बड़े बीहड़ों (गहरी खड्ड भूमि) का निर्माण किया है तथा चंबल नदी घाटी अवनालिका अपरदन से ग्रस्त है।
- इस भाग में वनस्पति विहीन मृदा होने के कारण मानसूनी वर्षा अवनालिका अपरदन द्वारा भूमि का कटाव तेजी से करती है।

- मध्य प्रदेश मुख्य रूप से एक कृषि राज्य है। राज्य की 72.37% जनसंख्या ग्रामीण है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र राज्य अर्थव्यवस्था का मुख्य स्थान है।
- राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि और संबद्ध सेवाएं (खेती, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं उधानिकी) लगभग 44% हिस्सेदारी का योगदान करती हैं और इसके कार्यबल का 78% सीधे कृषि में जुड़ा हुआ है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक मध्यप्रदेश में जीविकोपार्जन के लिए कुल कामकाजी लोगों के 69.8% और ग्रामीण इलाकों में हैं, जबकि कुल कामकाजी लोगों के 85.6% कृषि पर आधारित है।
- मध्यप्रदेश का कुल क्षेत्रफल का शुद्ध बुवाई क्षेत्र 50% है, पड़त भूमि 7% हैं। तथा 4% गैर कृषि भूमि है।
- मध्यप्रदेश में 154.22 लाख हेक्टेयर पर वर्ष में एक फसल तथा 86.25 लाख हेक्टेयर पर वर्ष में दो फसल लगाई गयी हैं एवं 10.16 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि पड़त रही हैं।
- मध्य प्रदेश की कृषि विकास दर वर्ष 2016-17 में 29.08% (प्रचलित मूल्य पर) एवं 20.02% (स्थिर मूल्य पर) रही, विगत 4 वर्षों में मध्य प्रदेश की औसत कृषि विकास दर 20% से अधिक रही।
- मध्यप्रदेश में उर्वरकों का उपयोग 2014-15 में 84 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।
- मध्यप्रदेश में फसल सघनता 2014-15 में 155% है, जिसे अगले 10 वर्षों में 170% करने का लक्ष्य रखा गया है।
- वर्ष 2010-11 के अनुसार मध्यप्रदेश में कृषि जोत का औसत आकार 1.78 हेक्टेयर (भारत में - 1.16 हेक्टेयर) है।

कृषक	क्षेत्रफल	प्रतिशत
सीमांत कृषक	एक हेक्टेयर से कम	41%
छोटे कृषक	1 से 2 हेक्टेयर	27%
मध्यम कृषक	2 से 10 हेक्टेयर	28%
बड़े कृषक	10 हेक्टेयर से अधिक	1%

कृषि क्षेत्र में मध्यप्रदेश की उपलब्धियां

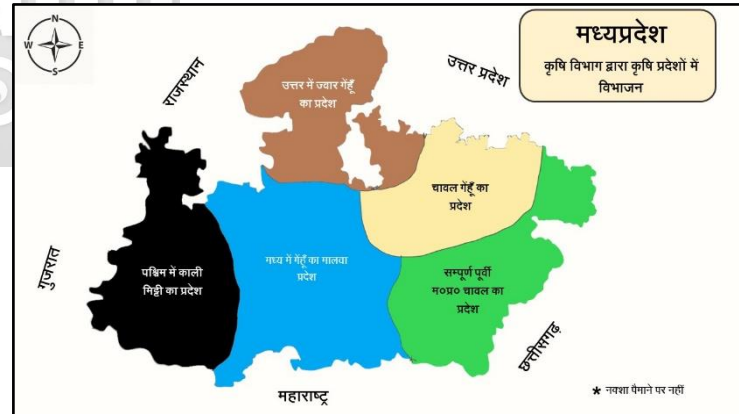
- मध्य प्रदेश को लगातार पांच बार कृषि कर्मण अवार्ड से सम्मानित किया गया है।
- वर्ष 2011-12, 2012-13, 2014-15 में कुल खाद्यान्न की श्रेणी में तथा वर्ष 2013-14 एवं 2015-16 में उत्पादन के लिए यह पुरस्कार प्राप्त किया है।
- गेहूं उत्पादन में मध्य प्रदेश का स्थान उत्तर प्रदेश और पंजाब के बाद तीसरा है।

- गेहूं की उत्पादकता 2013-14 के 2405 किलो प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2014-15 में 3079 किलोप्रति हेक्टेयर हो गई है।
- धान में श्री पद्धति के प्रयोग से इसका बुवाई क्षेत्र 5.58 लाख हेक्टर हो गया है, जिससे धान के उत्पादन में 95% की वृद्धि हुई है।
- भारत में मध्यप्रदेश ही एक ऐसा राज्य है। जहां सबसे अधिक भू-भाग पर जैविक खेती होती है। जो कि करीब 40 फ्रीसदी है।

मध्यप्रदेश में कृषि क्षेत्र

❖ कृषि विभाग द्वारा मध्य प्रदेश को 5 कृषि प्रदेशों में विभाजन

- 1. पश्चिम में काली मिट्टी का मालवा प्रदेश – मंदसौर, नीमच, रतलाम, झाबुआ, बड़वानी, हरदा, धार, देवास, उज्जैन, शाजापुर, इंदौर, खंडवा, खरगोन आदि ज्वार एवं कपास के प्रदेश हैं।
- 2. उत्तर में ज्वार-गेहूं का प्रदेश – मुरैना, श्योपुर, भिंड, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना, छतरपुर, तथा टीकमगढ़ जिला हैं।
- 3. मध्य गेहूं का प्रदेश - इसमें भोपाल, सीहोर, होशंगाबाद, रायसेन, विदिशा, नरसिंहपुर, सागर तथा दमोह जिले शामिल हैं।
- 4. चावल गेहूं का प्रदेश - इसमें उत्तर में पन्ना, सतना, कटनी, उमरिया, जबलपुर, सिवनी के दक्षिण तक का क्षेत्र शामिल हैं।
- 5. संपूर्ण पूर्वी मध्य प्रदेश (चावल का प्रदेश) - इसमें रीवा, सीधी, शहडोल, डिंडोरी, मंडला, बालाघाट आदि जिले सम्मिलित हैं।



❖ फसलों के आधार पर मध्यप्रदेश को 7 कृषि क्षेत्रों में विभाजन

- 1. ज्वार का क्षेत्र – गुना, शिवपुरी, श्योपुर, पश्चिमी मुरैना।
- 2. गेहूं व ज्वार का क्षेत्र -बघेल खंड तथा मालवा के पठार का मध्य भाग, भिंड, मुरैना, ग्वालियर।
- 3. कपास व गेहूं का क्षेत्र– उज्जैन, मंदसौर, शाजापुर, राजगढ़, देवास व सीहोर।
- 4. कपास का क्षेत्र -पश्चिमी मध्य प्रदेश (खंडवा, खरगोन, बड़वानी, धार, रतलाम, झाबुआ)।
- 5. चावल व कपास क्षेत्र - खंडवा।
- 6. चावल, कपास, ज्वार क्षेत्र –सिवनी, छिंदवाड़ा, बेतूल।

➤ 7. चावल का क्षेत्र - बघेलखंड क्षेत्र, शहडोल, मंडला, बालाघाट, सिवनी, सीधी, जबलपुर।



❖ जलवायु के आधार पर मध्यप्रदेश को 11 कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजन

क्र.	कृषि जलवायु क्षेत्र	जिले
1.	छत्तीसगढ़ का मैदान	बालाघाट
2.	छत्तीसगढ़ की उत्तरी पहाड़ियाँ	डिंडोरी, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया
3.	कैमूर का पठार तथा सतपुड़ा की पहाड़ियाँ	जबलपुर, कटनी, पन्ना, रीवा, सतना, सीधी, मंडला, सिवनी
4.	विन्ध्य पठार	भोपाल, सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह, रायसेन
5.	मध्य नर्मदा घाटी	नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा
6.	गिर्द क्षेत्र	ग्वालियर, भिन्ड, मुरैना, शिवपुरी, गुना
7.	बुंदेलखंड क्षेत्र	छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, निवाड़ी
8.	सतपुड़ा का पठार	छिंदवाडा, बैतूल
9.	मालवा का पठार	मंदसौर, रतलाम, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, इन्दौर, देवास तथा धार का कुछ क्षेत्र
10.	निमाड़ घाटी	खंडवा, खरगोन, बड़वानी
11.	झाबुआ की पहाड़ियाँ	झाबुआ तथा धार का कुछ क्षेत्र

❖ मध्यप्रदेश में विभिन्न फसलों के सर्वाधिक उत्पादन वाले जिले (2015-16)

फसल	सर्वाधिक उत्पादन वाले जिले		
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
गेहूँ	होशंगाबाद	सीहोर	उज्जैन
धान	बालाघाट	होशंगाबाद	मंडला
मक्का	छिंदवाडा	सिवनी	धार
चना	विदिशा	सागर	दमोह
अरहर	नरसिंहपुर	छिंदवाडा	मुरैना

सोयाबीन	धार	उज्जैन	रतलाम
सरसों	मुरैना	भिंड	श्योपुर

प्रमुख फसलें

● मध्यप्रदेश में धान, गेहूँ, सोयाबीन, मक्का, ज्वार, अरहर एवं सरसों आदि फसलें प्रमुखता से उगाई जाती हैं।

❖ मौसम के आधार पर फसलों का वर्गीकरण

➤ रबी की फसलें (उनालू) - गेहूँ, जो, चना, मटर, सरसों, आलू इत्यादि - अक्टूबर-नवंबर से मार्च तक

➤ खरीफ की फसलें (स्यालू) - धान, गन्ना, तिलहन, सोयाबीन, मक्का, बाजरा, अरहर इत्यादि - जून-जुलाई से अक्टूबर-नवंबर तक

➤ जायद की फसलें - खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा एवं प्रमुख सब्जियाँ इत्यादि - मार्च से मध्य जून तक

❖ फसल उपयोग के आधार पर फसलों का वर्गीकरण

➤ अनाज की फसलें - गेहूँ, धान, ज्वार, बाजरा, मक्का इत्यादि

➤ दलहनी फसलें - चना, तुवर (अरहर), उड़द, मूंग, मसूर इत्यादि

➤ तिलहनी फसलें - सोयाबीन, सरसों, मूंगफली, तिल, अलसी इत्यादि

➤ नगदी फसलें - कपास, गन्ना

खाद्यान फसलें

● खाद्यान्न फसलों में गेहूँ, चावल, मक्का आदि को शामिल किया जाता है।

❖ धान (ओराइजा सटाइवा/Oryza sativa)

● मुख्यतः खरीफ की फसल है, जिसकी बुवाई जून अगस्त में तथा कटाई अक्टूबर-नवंबर में होती है।

● मध्य प्रदेश के पूर्वी जिले जो छत्तीसगढ़ के समीप हैं, उस क्षेत्र में चावल की सर्वाधिक खेती की जाती है।

● चावल की फसल के लिए औसत वर्षा 100 से 125 सेंटीमीटर या उससे अधिक आवश्यकता होती है।

● धान में ओराइजिन नामक प्रोटीन पाई जाती है।

● श्री (SRI) पद्धति एवं डेपोग (Depog) विधि धान उत्पादन की विधियाँ हैं।

● 2018-19 में धान का क्षेत्राच्छादन 2485 हजार हेक्टेयर एवं उत्पादन 8461 हजार मेट्रिक टन रहा है।

● प्रदेश में सर्वाधिक धान का उत्पादन बालाघाट जिले में होता है। लेकिन सर्वाधिक उत्पादकता (उत्पादन प्रति हेक्टेयर) होशंगाबाद जिले में है।

● सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) - बालाघाट, होशंगाबाद, मंडला

❖ गेहूँ (ट्रीटीकम स्पीसीज/Triticum spp.)

- मुख्यतः रबी की फसल है, जिसकी बुवाई नवम्बर-दिसंबर में तथा कटाई मार्च-अप्रैल में होती है।
- मध्य प्रदेश का गेहूं उत्पादन में उत्तर प्रदेश के बाद दूसरा स्थान है, देश के कुल 18.2% गेहूं का उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है।
- 2018-19 में गेहूं का क्षेत्राच्छादन 5900 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 20774 हजार मेट्रिक टन रहा है।
- मध्यप्रदेश में गेहूं का सर्वाधिक उत्पादन नर्मदा घाटी क्षेत्र में होता है, जबकि मालवा के पठार को गेहूं की डलिया कहा जाता है।
- मालवा क्षेत्र में सीहोर जिले का शरबती गेहूं अपनी उच्च गुणवत्ता एवं अच्छे स्वाद के लिए देश भर में प्रसिद्ध है।
- मध्य प्रदेश के खमरिया, जबलपुर में वर्ष 2011 में गेहूं और मक्का के क्षेत्र में शोध तथा उत्पादन हेतु अंतरराष्ट्रीय गेहूं एवं मक्का शोध केंद्र (CIMMYT) की स्थापना की गई है।
- मध्यप्रदेश में गेहूं अनुसंधान केंद्र पवारखेड़ा, होशंगाबाद में स्थित है।
- सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) – होशंगाबाद, सीहोर, उज्जैन
- गेहूं में ग्लूटेन (Gluten) प्रोटीन पाई जाती है।
- हरित क्रांति के समय गेहूं के बहुतायत उत्पादन का कारण गेहूं की मैक्सीकन बोनी किस्मे थी।
- पहली मानव निम्नित धान्य फसल ट्रिटीकेल हैं। जो गेहूं तथा राई के संकरण से उत्पन्न हुई।

मोटे अनाज की फसलें

- मोटे अनाज की फसलों में मक्का, ज्वार, बाजरा, जो, आदि शामिल है।
- ❖ **मक्का (जिया मेज/Zia mays)**
 - यह खरीद एवं रबी दोनों की फसल है। लेकिन मुख्यतः इसे खरीफ में बोया जाता है।
 - मक्का उत्पादन में मध्यप्रदेश कर्नाटक और महाराष्ट्र के बाद तीसरे स्थान पर है।
 - 2018-19 में मक्का का क्षेत्राच्छादन 1361 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 4925 हजार मेट्रिक टन रहा है।
 - सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) – छिंदवाड़ा, सिवनी, धार
 - मक्का में जीन (Zein) नामक प्रोटीन होती है। इसे अनाज की रानी के नाम से भी जाना जाता है।
 - मक्का में नर व मादा पुष्प एक ही पौधे पर पाए जाते हैं।
 - मक्का में सफेद कलिका (White bud) रोग जिंक (zinc) की कमी से होता है।
- ❖ **ज्वार (सोरघम बाइकलर/sorghum bicolor)**

- यह एक मोटे अनाज वाली प्रमुख फसल है, जिसकी खेती रबी एवं खरीफ दोनों में की जाती है।
- ज्वार उत्पादन में मध्यप्रदेश महाराष्ट्र और कर्नाटक के बाद तीसरे स्थान पर है।
- ज्वार को ऊँट फसल (Camel crop) के नाम से जाना जाता है। क्योंकि यह कम पानी में भी अच्छा उत्पादन देती है।
- मध्यप्रदेश में ज्वार अनुसंधान केंद्र खरगोन जिले में स्थित है।
- सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) – बड़वानी, छिंदवाड़ा, खरगोन
- बाजरा (पेनिसेटम ग्लोकम/Pennisetum glaucum)
- बाजरा मुख्यतः खरीफ की फसल है, भारत में सर्वाधिक बाजरे का उत्पादन राजस्थान में किया जाता है।
- बाजरा खाद्यानो में सबसे अधिक सुखा रोधी फसल है।
- बाजरा के दानों में क्षेत्र प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट 11%, प्रोटीन 5%, वसा, 12.4 % नमी, तथा 2.7 % मिनरल पाए जाते हैं।
- सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) – मुरैना, भिंड, श्योपुर

दलहनी फसलें

- इन के अंतर्गत चना, अरहर, मूंग, मसूर तथा उड़द आदि फसलों को शामिल किया जाता है।
- दलहनी फसलों की जड़ों में राइजोबियम जीवाणु पाए जाते हैं, जो मृदा में वायुमंडल से नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करने में सहायक होते हैं।
- दलहन उत्पादन में मध्य प्रदेश प्रथम स्थान (32.15%), राजस्थान दूसरे स्थान (13.42%) तथा महाराष्ट्र तीसरे स्थान (13.09%) पर है।
- एशिया का सबसे बड़ा दलहन फसल शोध एवं तकनीक प्रसार केंद्र तथा सूखे क्षेत्रों में कृषि संबंधी शोध के लिए अंतरराष्ट्रीय केंद्र की स्थापना सीहोर जिले के अमलाहा में की गई है।
- ❖ **चना (साइसर एरीटीनम/Cicer aeritinum)**
 - यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। जिसे रबी के मौसम में लगाया जाता है।
 - देश में सर्वाधिक चना उत्पादन मध्यप्रदेश (40.92%) में किया जाता है, इसके बाद महाराष्ट्र दूसरे एवं राजस्थान तीसरे स्थान पर आता है।
 - 2018-19 में चने का क्षेत्राच्छादन 3432 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 5217 हजार मेट्रिक टन रहा है।
 - सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16) – विदिशा, सागर, दमोह
- ❖ **अरहर (केजेनस केजान)**

- यह खरीफ की प्रमुख दलहनी फसल है।
- अरहर उत्पादन में मध्यप्रदेश का देश में दूसरा स्थान है, इसमें महाराष्ट्र का प्रथम स्थान है।
- 2018-19 में अरहर का क्षेत्राच्छादन 445 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 577 हजार मेट्रिक टन रहा है।
- **सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16)** – नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, मुरैना
- यह दलहनों में सबसे अधिक शुष्क रोधी फसल है।

तिलहन

- मध्यप्रदेश में तिलहनी फसलों के अंतर्गत सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तिल, सूरजमुखी एवं अलसी आदि का उत्पादन किया जाता है।
- तिलहनी फसलों के उत्पादन में मध्य प्रदेश (22.2%) प्रथम स्थान, राजस्थान (19.7) दूसरे स्थान तथा महाराष्ट्र (18.71%) तीसरे स्थान पर है।

❖ सोयाबीन (ग्लाइसीन मैक्स)

- मध्य प्रदेश में देश का 48.46% सोयाबीन उत्पादन होता है, इसीलिए मध्य प्रदेश को “सोया प्रदेश” भी कहा जाता है।
- सोयाबीन को जादुई फसल (wonder crop) के नाम से भी जाना जाता है।
- मध्य प्रदेश में सोयाबीन की खेती का प्रारंभ 1962 में मालवा क्षेत्र के देवास जिले से हुआ था।
- राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केंद्र इंदौर में है।
- एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र की स्थापना 1983 में उज्जैन में की गई थी।
- 2018-19 में सोयाबीन का क्षेत्राच्छादन 5604 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 7201 हजार मेट्रिक टन रहा है।
- **सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16)** – धार, उज्जैन, रतलाम

❖ मूंगफली (अरेकिस हाइपोजिया)

- मूंगफली खरीद मौसम की तिलहनी फसल है, जिसे Penut/Earthnut/ Monkey nut के नाम से भी जाना जाता है।
- मूंगफली में तेल की मात्रा 40 से 45 प्रतिशत होती है। तथा प्रोटीन की मात्रा लगभग 22 से 25 प्रतिशत होती है।
- मूंगफली में पेगींग की क्रिया लगभग बुआई के 50 से 55 दिन बाद आती है।
- **सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16)** – शिवपुरी, छिंदवाड़ा, टीकमगढ़

❖ सरसों एवं राई (सरसों - ब्रेसिका कम्प्रेसटिस, राई – ब्रेसिका नेपस)

- सरसों रबी मौसम की प्रमुख तिलहनी फसल है।
- मुरैना में सरसों के तेल के कारखाने हैं।
- सरसों उत्पादन में मध्यप्रदेश दूसरे स्थान पर है।
- **सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले (2015-16)** – मुरैना, भिंड, श्योपुर

❖ अलसी

- अलसी रबी की फसल है।
- इसका उत्पादन प्रमुख रूप से रीवा जिले में किया जाता है।
- इसके अलावा इसे सागर, दमोह, टीकमगढ़ बालाघाट एवं सिवनी जिले में भी उत्पादित किया जाता है।

नगदी फसलें

- यह ऐसी फसलें होती हैं जिनको बेचकर नगद प्राप्त किया जा सकता है, किसानों द्वारा इनका का उत्पादन व्यापार की दृष्टि से किया जाता है।
- म. प्र. में नगदी फसलों के अंतर्गत मध्यप्रदेश में कपास, गन्ना, सनई, जूट, मेस्टा आदि का उत्पादन किया जाता है।

❖ कपास (गोसिपियम स्पीसीज *Gossypium spp.*)

- कपास को सफेद सोना कहते हैं। इसकी खेती के लिए काली मिट्टी अत्यंत उपयोगी होती है।
- बी. टी. संकर कपास के पौधे में हानिकारक परजीवी स्वतः नष्ट हो जाते हैं।
- दूध देने वाली भैंस और गाय को कपास के बीज (बिनौला) आहार के रूप में देते हैं।
- कपास में टोपिंग व गिनींग की क्रिया की जाती है।
- वर्ष 2018 में प्रथम जैविक कपास अनुसंधान केंद्र की स्थापना भगवंत राव मंडलोई कृषि महाविद्यालय खंडवा में की गई है।
- 2018-19 में कपास का क्षेत्राच्छादन 614 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 976 हजार मेट्रिक टन रहा है।
- **सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले** – खरगोन, खंडवा, बड़वानी (सुनहरे जिले)

❖ गन्ना (सेकेरम आफिसिनेरम)

- गन्ने का जंगली रूप कांस है।
- मध्यप्रदेश में गन्ना उत्पादन का लगभग 50% क्षेत्रफल नरसिंहपुर जिले में आता है।
- गन्ने के पकने का पता ब्रिक्स वेल्थू के द्वारा लगाया जाता है। जिसको रिफ्रेक्टोमीटर द्वारा मापा जाता है। जिसकी रिडिंग 16 से 18 होती है।
- मध्य प्रदेश में गन्ना अनुसंधान केंद्र नरसिंहपुर जिले के बोहानी में है।

● 2018-19 में गन्ने का क्षेत्राच्छादन 118 हजार हैक्टेयर एवं उत्पादन 416 हजार मेट्रिक टन रहा है।

● सर्वाधिक तीन उत्पादन वाले जिले - नरसिंहपुर, खरगोन, दतिया

❖ अन्य प्रमुख फसलें

➤ गांजा - गांजा उत्पादन में खंडवा प्रथम तथा बुरहानपुर दूसरे स्थान पर है, बुरहानपुर गंजेड़ियों का स्वर्ग भी कहा जाता है।

➤ अफीम - अफीम के उत्पादन में मंदसौर प्रथम तथा नीमच दूसरे स्थान पर है, इसका प्रयोग औषधि निर्माण में किया जाता है। इसके अलावा इससे गैर कानूनी रूप से ब्राउन शुगर और हीरोइन जैसे मादक पदार्थ भी बनाए जाते हैं।

● नीमच जिले में अफीम से औषधि बनाने का कारखाना है।

➤ कॉफी (कहवा) - मध्यप्रदेश में कॉफी का एकमात्र उत्पादक क्षेत्र कुकरू गांव, तहसील भैंसदेही जिला बेतूल है। यहां कॉफी उत्पादन शुरू करने का श्रेय ब्रिटिश नागरिक सेंट बिल्कुल को जाता है।

❖ प्रमुख तथ्य

- मध्यप्रदेश का देश के फलों के उत्पादन में 5वां स्थान है।
- मध्यप्रदेश का अमरूद उत्पादन में प्रथम स्थान है।
- मध्य प्रदेश का सब्जी उत्पादन में देश में तीसरा स्थान है।
- प्रदेश का टमाटर उत्पादन में दूसरा स्थान, प्याज उत्पादन में दूसरा स्थान तथा आलू उत्पादन में पांचवा स्थान है।
- मध्य प्रदेश का फूलों के उत्पादन में देश में चौथा स्थान है।
- मध्य प्रदेश के 25 जिलों में शहतूत रेशम तथा 9 जिलों में टसर रेशम का उत्पादन किया जा रहा है।
- मध्य प्रदेश रेशम के गैर परंपरागत उत्पादन में देश में तीसरे स्थान पर है।
- भारत में सर्वाधिक क्षेत्रफल पर जैविक खेती मध्यप्रदेश में की जाती है।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान	फंदा भोपाल
गन्ना अनुसंधान केंद्र	नरसिंहपुर
प्रथम जैविक कपास अनुसंधान केंद्र	भगवंतराव मंडलोई कृषि महाविद्यालय, खंडवा
दलहन फसल शोध एवं तकनीकी प्रसार केंद्र तथा सूखे क्षेत्रों में कृषि संबंधी शोध के लिए अंतरराष्ट्रीय केंद्र	अमलाहा, सीहोर
कृषि अभियांत्रिकी संस्थान	भोपाल
प्रदेश का प्रथम सैलरीज जैविक खाद संयंत्र	भोपाल
कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय	जबलपुर
उद्यान महाविद्यालय	मंदसौर
देश की प्रथम जैविक खेती इकाई	इंदौर
प्रदेश का प्रथम कृषि विश्व विश्वविद्यालय	जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर
कीटनाशक बनाने का संयंत्र	बीना
सहकारी क्षेत्र में कीटनाशक बनाने का संयंत्र	कटनी
अवशिष्ट पदार्थ से जैविक खाद बनाने का संयंत्र	ग्वालियर
पशु चारा बनाने का संयंत्र	धार
मध्यप्रदेश में कृषि जोत का अधिकतम आकार	हरदा
मध्यप्रदेश में कृषि जोत का न्यूनतम आकार	कटनी, नीमच
अटल बिहारी वाजपेई राष्ट्रीय सहकारिता विकास एवं अनुसंधान केंद्र	इंदौर में प्रस्तावित
मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब	पवारखेड़ा होशंगाबाद
जैविक खेती अनुसंधान केंद्र	मंडला

अनुसन्धान संस्थान/केंद्र/प्रमुख तथ्य	
अनुसन्धान संस्थान/केंद्र/प्रमुख तथ्य	स्थान
राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केंद्र	इंदौर
राज्य सोयाबीन अनुसंधान केंद्र	उज्जैन
चावल अनुसंधान केंद्र	बड़वानी
कपास अनुसंधान केंद्र	खरगोन
एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन कारखाना	उज्जैन
अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं अनुसंधान केंद्र	खमरिया जबलपुर
गेहूं अनुसंधान केंद्र	पवारखेड़ा होशंगाबाद
डेयरी स्टेट केंद्र	परियट जबलपुर
राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र	रतलाम

कृषि सम्बन्धी प्रमुख कार्यक्रम/योजना/संस्था	
कार्यक्रम/योजना/संस्था	स्थापना
मध्य प्रदेश राज्य कृषक आयोग	13 सितंबर 2006
मध्यप्रदेश राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान बरखेड़ी कलां भोपाल	13 मई 2006
मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड (मंडी बोर्ड) मुख्यालय भोपाल, केंद्रीय कार्यालय (7) - इंदौर, भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर, सागर, जबलपुर एवं रीवा	1973
मुख्य मंडियां -257, उप मंडियां -293	

मध्य प्रदेश बीज तथा फार्म विकास निगम	1980
मध्य प्रदेश कृषि उद्योग विकास निगम	1969-70
मध्य प्रदेश राज्य भंडार गृह निगम	1958
लघु कृषक विकास अधिकरण	1971
भूमि विकास निगम	1977-78
राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम	1982
सहकारी डेयरी विकास कार्यक्रम	1975
मध्यप्रदेश राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था	1980
मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड	1972
बलराम ताल योजना	2007
थर्स्ट परियोजना	1989
राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना	1999-2000
उद्यानिकी मिशन	2006-07
अन्नपूर्णा सूरज धारा योजना	2000-01
मध्य प्रदेश स्टेट कोऑपरेटिव डेहरी फेडरेशन लिमिटेड	1975
भावांतर भुगतान योजना (शामिल फसलें उड़द, तुअर, मूंग, मक्का, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, रामतिल)	2017
मध्यप्रदेश कृषि में महिलाओं की भागीदारी (मापवा) योजना	2007-08
मुख्यमंत्री कृषक जीवन कल्याण योजना	2008
मुख्यमंत्री मंडी हम माल एवं तुला वटी सहायता योजना	2008
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना	18 फरवरी 2016 को सीहोर जिले से प्रारंभ
राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) योजना	14 अप्रैल 2016 मध्य प्रदेश में सितंबर 2017

पशुपालन एवं कुक्कुट पालन

- वर्ष 2019 की में 20वीं पशु संगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में कुल पशुधन 4.06 करोड़ है, जो पिछली पशु संगणना 2012 के अनुपात में पशुओं की संख्या 3.63 करोड़ से 11.81% अधिक है।
- भारत के कुल पशुधन में मध्य प्रदेश का योगदान 7.1% है, जो देश में चौथे स्थान पर है।
- मध्यप्रदेश में भारत की 10.27% गायें एवं 7.5% भैंसे पाई जाती हैं।
- मध्यप्रदेश में पशुओं का घनत्व -105 पशु प्रति वर्ग किमी है, सर्वाधिक झाबुआ में 203 पशु प्रति वर्ग किमी तथा सबसे कम होशंगाबाद में 45 प्रति वर्ग किमी हैं।

❖ म. प्र. के गो वंश

- **निमाड़ी गाय** - मध्यप्रदेश राज्य की नर्मदा नदी की घाटी के निमाड़ी क्षेत्र में इसकी उत्पत्ति हुई है। यह नाम इसे नाम अपने मूल निमाड़ क्षेत्र की वजह से मिला है।
- ये गायें प्रतिदिन 2 - 3: 50 लीटर तक दूध देती हैं।
- **मालवी गाय** - इस नस्ल की गाय मध्य प्रदेश में ग्वालियर के आसपास के क्षेत्र में पाई जाती है।
- यह गाय सफेद से लेकर खाकी रंग की होती हैं। और गर्दन के नीचे वाला हिस्सा काले रंग का होता है।
- मुख्यता इन गायों को बैलगाड़ी एवं बोझा ढोने के लिए पाला जाता है।

❖ प्रमुख तथ्य

- गायों की संख्या की दृष्टि में मध्य प्रदेश देश में प्रथम हैं। यहां पर देश भर की 10.3% गाय है।
- मध्यप्रदेश में गोवंश के संरक्षण हेतु 1995 में गौ सेवा आयोग स्थापित किया गया है।
- भैंस की दृष्टि से मध्य प्रदेश देश का पांचवा राज्य है।
- मध्य प्रदेश में 8 पशु प्रजनन क्षेत्र है।

क्र	विवरण	प्रक्षेत्र की स्थापना	प्रक्षेत्र में उपलब्ध नस्ल
1.	शासकीय जर्सी पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भदभदा भोपाल	1976-77	जर्सी, साहिवाल
2.	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र मिनौरा टीकमगढ़	1972	हरियाणा
3.	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र आगर शाजापुर	1942	मालवी
4.	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र रोडिया खरगौन	1979	निमाड़ी
5.	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र रतौना सागर	1946-47	थारी एवं मुर्दा नस्ल
6.	शासकीय पशु प्रजनन प्रक्षेत्र इमलीखेड़ा छिन्दवाड़ा	1954-55	साहीवाल
7.	पशु प्रजनन प्रक्षेत्र गढ़ी बालाघाट	1917	साहीवाल, संकर जर्सी
8.	पशु प्रजनन प्रक्षेत्र पवई पन्ना	2010	केनकथा नस्ल

- मध्यप्रदेश में पशुधन में सर्वाधिक संख्या बकरियों की है।
- मध्य प्रदेश के जबलपुर और इंदौर महु जिले में पशु चिकित्सा महाविद्यालय स्थित है।

- विश्व का पहला गौ अभ्यारण मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले में स्थापित किया गया है।

❖ सालरिया गौ अभ्यारण

- स्थिति - गौ अभ्यारण शाजापुर जिले के सुसनेर तहसील के ग्राम सालरिया में।
- क्षेत्रफल - उक्त गौ अभ्यारण में पांच ग्रामों की भूमि सम्मिलित है। गौ अभ्यारण का कुल क्षेत्रफल 472.63 हैक्टेयर है, जिसमें ग्राम फरसपुरा की 111.14 हैक्टेयर, ग्राम श्यामपुरा की 176.85 हैक्टेयर, ग्राम सेमली की 80.90 हैक्टेयर, ग्राम बायरा की 55.18 हैक्टेयर तथा ग्राम ननोरा की 48.56 हैक्टेयर भूमि सम्मिलित है।
- देश का प्रथम गौ तीर्थ - सालरिया गौ अभ्यारण मध्यप्रदेश का ही नहीं अपितु देश का प्रथम गौ तीर्थ बनने जा रहा है।
- दुग्ध उत्पादन - वर्ष 2017 - 18 में 13445 हजार मेट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2018 - 19 में 14713 हजार मेट्रिक टन (8.3%) अधिक हो गया।
- मध्य प्रदेश का दुग्ध उत्पादन में देश में तीसरा स्थान है। प्रदेश में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन वाले जिले मुरैना तथा श्योपुर है।

पशु उत्पाद	प्रमुख जिले
दुग्ध उत्पादन	मुरैना, उज्जैन, इंदौर, शिवपुरी, देवास, रीवा, भिंड, शाजापुर, ग्वालियर और सतना
मांस	भोपाल, जबलपुर, इंदौर, देवास
अंडे	जबलपुर, भोपाल, इंदौर
ऊन	शिवपुरी एवं टीकमगढ़

- 1970 में मध्य प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए आनंद मॉडल गुजरात पर आधारित सहकारी डेयरी विकास कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।
- इंटरनेशनल डेवलपमेंट एजेंसी (IDA) के वित्तीय सहयोग से 1975 में स्टेट डेयरी डेवलपमेंट कॉरपोरेशन का गठन किया गया।
- मध्य प्रदेश राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ को वर्तमान में एमपी स्टेट कोऑपरेटिव डेहरी फेडरेशन लिमिटेड में परिवर्तित किया गया है, जिसे 5 क्षेत्रों क्रमशः भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर तथा उज्जैन में विभाजित किया गया है।
- 6 अक्टूबर 2016 को बुंदेलखंड सरकारी दूध संयंत्र की स्थापना की गई।
- मध्य प्रदेश में 4 भेड़ प्रजनन प्रक्षेत्र है।
- वर्ष 2011 के अनुसार बकरियों के 8 प्रजनन प्रक्षेत्र कार्यरत हैं।
- देसी पक्षियों की अंडा उत्पादन क्षमता में सुधार हेतु 9 कुक्कुट पालन प्रक्षेत्र कार्यरत हैं।
- मध्यप्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम की स्थापना 19 नवंबर 1982 को की गई है।

- कड़कनाथ मुर्गा (मध्य प्रदेश का गौरव) स्वदेशी प्रजाति हैं, जो पश्चिम मध्य प्रदेश विशेषकर झाबुआ, अलीराजपुर व धार जिले में पाई जाती हैं।

- मार्च 2018 में कड़कनाथ मुर्गे को जी आई टैग दिया गया है।
- इसका मांस का रंग काला होता है। जो काफी पोष्टिक होता है, इसलिए इसे कालामांसी भी कहते हैं।

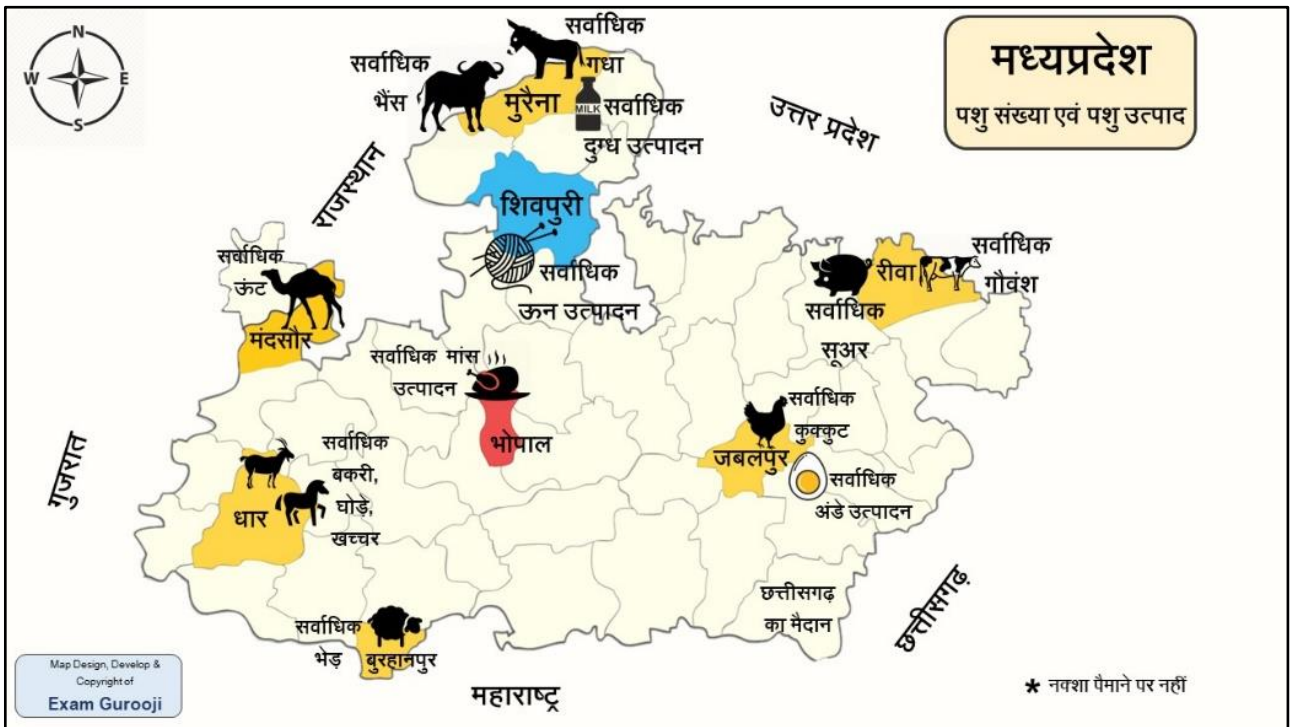
- सन 1969 में राज्य मत्स्य विभाग निगम की स्थापना की गई जिसे 1999 में समाप्त कर मध्य प्रदेश मत्स्य महासंघ बनाया गया है।
- 2008 में जबलपुर में आयोजित मध्य पंचायत में मध्य प्रदेश की पहली मत्स्य पालन नीति की घोषणा की गई।
- मछली उत्पादन में मध्यप्रदेश का देश में 16 स्थान है।
- मानव निर्मित झीलों में मध्यप्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।

वर्ष 2016 - 17 के अंत तक मध्य प्रदेश में पशु स्वास्थ्य सुविधाएँ

पशु चिकित्सालय	1063
पशु ओषधालय	1585
चल पशु चिकित्सा इकाइयां	38
विरुजालय	27
माता महामारी अनुगामी इकाई	10
माता महामारी उन्मूलन सतर्कता इकाई	7
सघन टीकाकरण इकाई	7
माता महामारी रोग शमनदल	2
माता महामारी जांच चौकियां	19
पशु निरोध स्थल	1
राज्य स्तरीय रोग अनुसंधान शाला	1
जिला स्तरीय रोग अनुसंधान शालाएं	22

20 वीं पशु संगणना, 2019 अनुसार म. प्र. में पशुओं की स्थिति

पशु	2007 (संख्या मिलियन में)	2012 (संख्या मिलियन में)	% कमी/वृद्धि	सर्वाधिक
गोवंश	19.6	18.7	-10.55%	रीवा
भैंस	8.2	10.3	+25.8%	मुरैना
बकरी	8.01	11.06	+38.07%	धार
घोड़े	0.19	0.13	-29.48%	धार
खच्चर	0.07	0.03	-63.61%	धार
गधे	0.15	0.08	-45.46%	मुरैना



- मध्य प्रदेश में अधिकतर वर्षा केवल जून से सितंबर तक होती है, औसत वार्षिक वर्षा से 112 सेंटीमीटर है, लेकिन वर्षा वर्ष भर नहीं होती है, जिसके कारण सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- मध्यप्रदेश की प्रमुख 10 नदियों में वार्षिक औसतन 81500 मिलियन घन मीटर (75%) है जिसमें से लगभग 56800 मिलियन घन मीटर प्रदेश को आवंटित है जो कुल उपलब्ध जल क्षेत्र का 69.7 प्रतिशत है।
- 2016-17 में शुद्ध सिंचित क्षेत्र 9876 हजार हेक्टेयर था जो 2018 - 19 में बढ़कर 10566 हजार हेक्टेयर हो गया अतः गत वर्ष की तुलना में 6.99% की वृद्धि हुई।
- शुद्ध बोये का क्षेत्रफल 15191 हजार हेक्टेयर में शुद्ध सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत 69.9% है।
- मध्य प्रदेश में सबसे सिंचित जिला ग्वालियर है तथा सबसे सिंचित फसल गेहूं है।
- मध्यप्रदेश में नहरों से सर्वाधिक सिंचित जिला होशंगाबाद है एवं सर्वाधिक शुद्ध सिंचित जिला मंडला है, तालाबों से सर्वाधिक सिंचित एवं शुद्ध सिंचित जिला बालाघाट है।

मध्यप्रदेश में सिंचाई के स्रोत				
नहर	तालाब	नलकूप/कुएं	अन्य	कुल
1856.9 (20.24%)	281.6 (2.99%)	7115.1 (67.34%)	1312 (12.42%)	9876
चंबल घाटी मध्य मालवा एवं सतपुड़ा क्षेत्र	प्रदेश के दक्षिण पूर्व एवं पश्चिमी भाग	मध्य मालवा, बुंदेलखंड, सतपुड़ा एवं नर्मदा घाटी	---	

- मध्यप्रदेश में कुओं के माध्यम से सर्वाधिक सिंचित जिला मंदसौर है तथा नलकूपों के माध्यम से सर्वाधिक सिंचित जिला इंदौर है। अन्य स्रोतों के माध्यम से सर्वाधिक सिंचाई वाला जिला विदिशा है।
- मध्य प्रदेश में सबसे पहले नहर का निर्माण वैनगंगा नदी पर 1923 में किया गया था।
- मध्यप्रदेश में सिंचाई उद्बहन की स्थापना 1976 में की गई।
- नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण की स्थापना 1980 में की गई।

मध्यप्रदेश की नदी घाटी परियोजनाएं			
परियोजना	नदी	लाभान्वित क्षेत्र	विशेष विवरण
इंदिरा सागर परियोजना	नर्मदा	मध्यप्रदेश	<ul style="list-style-type: none"> • मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा बांध है जो खंडवा जिले के पुनासा में निर्मित • शिलान्यास 23 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा • 27 लाख हेक्टेयर में सिंचाई तथा 2004 से 1000 मेगावाट बिजली का उत्पादन • नर्मदा बचाओ आंदोलन का नेतृत्व मेघा पाटकर द्वारा • इंदिरा सागर डैम पर 1000 मेगा वाट का अल्ट्रा मेगा फ्लोटिंग सोलर संयंत्र की स्थापना का निर्णय लिया गया है।
सरदार सरोवर परियोजना	नर्मदा	मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान तथा महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना	<ul style="list-style-type: none"> • शिलान्यास - 5 अप्रैल 1961 को पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा, लोकार्पण 17 सितंबर 2017 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा • नर्मदा नदी पर गुजरात के बड़ौदा जिले के केवाडिया गांव के पास निर्मित है। • इसके निकट सरदार वल्लभ भाई पटेल की विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति (182मी.) बनाई गई है • विद्युत उत्पादन क्षमता का 57% मध्य प्रदेश को, 27% महाराष्ट्र को और 16% गुजरात को मिलेगा
ओंकारेश्वर परियोजना	नर्मदा		<ul style="list-style-type: none"> • खंडवा जिले के ओंकारेश्वर मांधाता गांव में स्थित है,

			<ul style="list-style-type: none"> सिंचाई क्षमता 1.43 लाख हेक्टेयर तथा विद्युत उत्पादन क्षमता 520 मेगावाट
महेश्वर परियोजना	नर्मदा		<ul style="list-style-type: none"> महेश्वर खरगोन जिले में स्थित है विद्युत उत्पादन क्षमता 450 मेगावाट
बरगी परियोजना (रानी अवंती बाई सागर परियोजना)	बरगी	जबलपुर, मंडला, सिवनी	<ul style="list-style-type: none"> 2.50 लाख हे. सिंचाई
चंबल नदी घाटी परियोजना	चंबल	श्योपुर, भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, मंदसौर (चंबल नहर से 2.25 लाख हेक्टेयर भूमिसिंचित)	<ul style="list-style-type: none"> म.प्र. व राजस्थान की संयुक्त परियोजना हैं। प्रारंभ - 1954 में। निर्माण तीन चरणों में 1. गांधी सागर - मंदसौर की भानपुरा तहसील में 1960 में पूर्ण विद्युत उत्पादन क्षमता 115 मेगा वाट 2. राणा प्रताप सागर - गांधी सागर बांध से 56 किमी. नीचे चित्तौड़गढ़ राजस्थान में 1964 में निर्मित विद्युत उत्पादन क्षमता 172 मेगावाट 3. जवाहर सागर - राणा प्रताप सागर से 32 किमी. नीचे कोटा राजस्थान में 1971 में निर्मित विद्युत उत्पादन क्षमता 99 मेगावाट कोटा बैराज - राजस्थान के कोटा में अवरोधक बांध 1960 में निर्मित बायीं ओर की नहरें राजस्थान को व दायीं ओर की नहरें म.प्र. के कृषि प्रदेश को सींचती हैं।
मोहनपुरा सिंचाई परियोजना	नेवज नदी	राजगढ़	<ul style="list-style-type: none"> लोकार्पण 30 जून 2018 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा, 1.34 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई
बाण सागर परियोजना	सोन नदी	शहडोल, रीवा, सीधी, कटनी	<ul style="list-style-type: none"> मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश तथा बिहार की संयुक्त परियोजना देवलोद, शहडोल में बांध बना है। 425 मेगावाट विद्युत उत्पादन 1.53 लाख हे. सिंचाई
जोवट (चन्द्रशेखर आजाद परियोजना)	हथनी नदी	धार	<ul style="list-style-type: none"> 9848 हे. हसिंचाई क्षमता
हलाली परियोजना (सम्राट अशोक सागर)	हलाली	विदिशा, रायसेन	<ul style="list-style-type: none"> 945 मीटर लंबा 29.57 मीटर ऊंचा बांध 37000 हे. भूमि पर सिंचाई (निर्माण 1973-76)
माताटीला बांध परि. (रानी लक्ष्मी बाई परियोजना)	बेतवा	म.प्र. के 6, उ.प्र. के 4 जिले	<ul style="list-style-type: none"> यह म.प्र. व उ.प्र. की संयुक्त परियोजना यहां माताटीला जल विद्युत गृह भी है म.प्र. में 1.16 लाख हे. व उ.प्र. में 1.09 लाख हे. क्षेत्र में सिंचाई होगी। बेतवा नदी पर ही ललितपुर जिले में राजघाट बांध स्थित है।
सीतारेवा	सीतारेवा	छिन्दवाड़ा के घुमरकैम्प	<ul style="list-style-type: none"> 15 मेगावाट निजी क्षेत्र प्रस्तावित
अपर वेदा	वेदा	खरगौन	<ul style="list-style-type: none"> 9900 हेक्टर भूमि जलग्रहण 523 वर्ग किमी. क्षेत्र
तवा परियोजना	तवा	होशंगाबाद जिला	<ul style="list-style-type: none"> 3.33 लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता वर्तमान में 2.47 लाख हेक्टेयर 1000 मेगावाट विद्युत उत्पादन
पेंच परियोजना	पेंच	छिंदवाड़ा, सिवनी एवं बालाघाट	<ul style="list-style-type: none"> यह म.प्र., एवं महाराष्ट्र की परियोजना है। 63388 हे. क्षेत्र में सिंचाई होगी।

बाघ परियोजना	बाघ	महाराष्ट्र, म.प्र. की सीमा क्षेत्र	सीमा पर सिरपुर गांव में बांध बनाया गया है, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र क्षेत्र में सिंचाई होगी।
बावनथड़ी परियोजना (राजीव सागर)	बावनथड़ी	म.प्र. व महाराष्ट्र	म. प्र., महाराष्ट्र की परियोजना महाराष्ट्र के भंडारा जिले में है बालाघाट में 29,412 हे. व महाराष्ट्र में 17357 हे. में सिंचाई होगी।
काली सरार	बाघ की पूरक	म.प्र., महाराष्ट्र	यह बाघ की पूरक परियोजना है।
केन बहुउद्देशी परियोजना (ग्रेटर गंगऊ)	केन	छतरपुर, पन्ना	यह म.प्र., उ.प्र. की परियोजना है। 50 मेगावाट जलविद्युत भी उत्पादित होगा।
अपर नर्मदा	नर्मदा	डिण्डोरी 18616 हे.	18616 हे.
लोअर गोई	गोई	बड़वानी	13760 हे. सिंचाई क्षमता
हालोन	हालोन	मण्डला	11736 हे.
मान परियोजना	मान	मनावर (धार)	15000 हे. सिंचाई
उर्मिल परियोजना	उर्मिल	छतरपुर	म.प्र. व उ.प्र. में 60:40 जल अनुपात बंटवारा। म.प्र. में नहर – 137 कि.मी. है। उर्मिल बांध उ.प्र. व नहर निर्माण म.प्र. द्वारा।
सिंहपुर बैराज	उर्मिल	छतरपुर	उर्मिल परियोजना के नीचे यह प्रस्तावित है।
बारना	बारना	रायसेन	60290 हे. में सिंचाई बाड़ी गांव के निकट बांध बना है।
भांडेर नहर	बेतवा	दतिया, ग्वालियर, भिण्ड	ल. 57.6 मि.मी. 44,535 हे. सिंचाई क्षमता
अपर बैन गंगा संजय सरोवर	बैनगंगा	बालाघाट, सिवनी	इसकी सिंचाई क्षमता 1,03,722 हे. है।
थाँवर परियोजना	थाँवर	मंडला	18212 हे. सिंचाई क्षमता है।
कोलार परियोजना	कोलार	सीहोर	विश्व बैंक की सहायता से निर्मित सीहोर में सिंचाई के अलावा भोपाल को पेयजल की उपलब्धता।
माही परियोजना	माही नदी	धार झाबुआ, उदम – धार वर्तमान में 5000 हे. में सिंचाई	दो बांध, दो नहरे कुल 137 कि.मी. लंबी नहर धार में 7913 हे. व झाबुआ में 18517 हे. सिंचाई क्षमता।
सुकता परियोजना (भगवंत सागर परियोजना)	सुकता खण्डवा	खण्डवा की जलापूर्ति	18583 हे.
सिंध परियोजना	सिंध	शिवपुरी, ग्वालियर (5600 हे. में सिंचाई प्रारंभ)	35200 हे. पर सिंचाई ग्वालियर नगर की जलापूर्ति
नरगवां परियोजना	केन की सहायक नदी	छतरपुर	म.प्र., उ.प्र. परियोजना छतरपुर में 16190 हे. सिंचाई होगी।
चोरल नदी परियोजना	चोरल इंदौर	इंदौर की महु तहसील	महु 5000 हे. सिंचाई मध्यम सिंचाई परियोजना मध्य प्रदेश की पहली अंतर घाटी परियोजना
देजला देवड़ा		खरगोन	9000 हे. क्षेत्र में सिंचाई होगी।

निर्माणाधीन वृहद परियोजनाएं		
परियोजनाएं	जिला	सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में)

कुंडालिया वृहद बहुउद्देशीय परियोजना	राजगढ़	125000
माही परियोजना	धार/ झाबुआ	33752



Download Exam Gurooji App from Google Play

गरोठ सूक्ष्म सिंचाई परियोजना	मंदसौर	21400
मानपुरा परियोजना	मंदसौर	9490
शामगढ़ सुवासरा उदवहन नहर सिंचाई परियोजना	मंदसौर	40,000
बाणसागर परियोजना	रीवा/ सीधी/ शहडोल/ सतना	291620
महान परियोजना	सीधी	22770
रामनगर माइक्रो इरिगेशन	सतना	20000
नईगढ़ी माइक्रो इरिगेशन	रीवा	50,000
सिंध द्वितीय चरण	ग्वालियर/ भिंड/ दतिया/ शिवपुरी	162100
बान सुजारा परियोजना	टीकमगढ़	75,000
चंदेरी सूक्ष्म सिंचाई परियोजना	अशोकनगर	20000
लोअर ओर परियोजना	शिवपुरी	90000
बरियापुर बायीं नहर परियोजना	छतरपुर	43850
पंचम नगर परियोजना कॉम्प्लेक्स (गोपालपुरा नहर सहित)	दमोह	25000
बीना संयुक्त सिंचाई एवं बहुउद्देशीय परियोजना	सागर/ विदिशा	90000
पेंच व्यपवर्तन परियोजना	सिवनी/ छिंदवाड़ा	85,000
राजीव सागर परियोजना (बावनथड़ी)	बालाघाट	18615
गौड़ परियोजना	सिंगरौली	34500
प्रस्तावित वृहद परियोजनाएं		
परियोजनाएं	जिला	सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में)
कोठा बैराज परियोजना	विदिशा	20000
पार्वती रिंसी परियोजना	राजगढ़	48663
सिंध बैराज (सेवड़ा) परियोजना	दतिया	43275
मझगवा माइक्रो इरिगेशन योजना	सतना	20000
मध्यप्रदेश की प्रमुख नदियां एवं बांध		
बांध	नदी	
नर्मदा सागर/ इंदिरा सागर	नर्मदा नदी	
ओम्कारेश्वर बांध	नर्मदा नदी	
गांधी सागर	चंबल नदी	
जवाहर सागर	चंबल नदी	
राणा प्रताप सागर	चंबल नदी	

बरगी बांध	नर्मदा नदी
बारना बांध	बारना नदी
राजघाट बांध	बेतवा नदी
तवा बांध	तवा नदी
बाणसागर बांध	सोन नदी

मध्य प्रदेश की संयुक्त सिंचाई परियोजनाएं

परियोजनाएं	भागीदार राज्य
चंबल घाटी परियोजना के अंतर्गत गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, कोटा बैराज एवं इनकी नहर प्रणालियां	मध्य प्रदेश एवं राजस्थान
सरदार सरोवर परियोजना	मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात एवं राजस्थान
पेंच परियोजना	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र
बाघ परियोजना	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र
काली सागर परियोजना	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र
बावनथड़ी परियोजना	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र
बाणसागर परियोजना	मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं बिहार
रानी लक्ष्मीबाई परियोजना	मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश
उर्मिल परियोजना	मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश

- मध्यप्रदेश खनिज संसाधनों में प्रचुरता की दृष्टि से राष्ट्र के 8 प्रमुख खनिज संपन्न राज्यों में से एक है।
- वर्ष 2017-18 में मुख्य खनिजों का उत्पादन मूल्य ₹2141 करोड़ रुपए हुआ था, जो पिछले वित्तीय वर्ष में उत्पादित मुख्य खनिजों के उत्पादन मूल्य ₹1814.5 करोड़ रुपए से 18% अधिक है।
- मध्य प्रदेश भारत का चौथा सबसे खनिज समृद्ध प्रदेश है। (प्रथम तीन - 1. पश्चिम बंगाल 2. झारखंड 3. उड़ीसा)
- मध्य प्रदेश का खनिज उत्पादन मूल्य एवं राजस्व प्राप्ति में देश दूसरा स्थान है।

खनिज उत्पादन में म.प्र. का स्थान	
खनिज	स्थान
हीरा	प्रथम (एकमात्र)
ताँबा	प्रथम
मैंगनीज	प्रथम
डायसपोर	प्रथम
पायरोफ़लाइट	प्रथम
स्लेट	प्रथम (एकमात्र)
गेरू	प्रथम
राक फास्फेट	द्वितीय
चूना पत्थर	द्वितीय
फायर क्ले	तृतीय
सीमेंट	चौथा
बाक्साइट	छटवां

मध्यप्रदेश में खनिज भण्डार		
खनिज	इकाई	कुल भण्डार
हीरा	मिलियन कैरट्स	28.7
पायरोफ़ाइलाइट	मिलियन टन	28.55
डायसपोर	मिलियन टन	7.56
ताँबा अयस्क	मिलियन टन	283.42
डोलोमाइट	मिलियन टन	2311.59
रॉक फास्फेट	मिलियन टन	58.05
मैंगनीज अयस्क	मिलियन टन	57.71
कोयला	मिलियन टन	27673
चूना पत्थर	मिलियन टन	9341.58

❖ हीरा

- भारत में हीरे का भंडार मध्य प्रदेश (90.18%), आंध्र प्रदेश (5.72%)



तथा छत्तीसगढ़ (4.09%) में है लेकिन उत्पादन केवल मध्यप्रदेश में ही किया जाता है।

- यहाँ पन्ना ज़िले में पन्ना, सतना ज़िले में मझगाँव तथा हीनोता एवं छतरपुर ज़िले में अंगौर हीरे की प्रसिद्ध खानें हैं।
- प्री-कैम्ब्रियन काल की जीवाश्म रहित विन्ध्यन शैलों की नसों में मिलता है।
- मध्य प्रदेश में ही पन्ना ज़िले की किलकिला नदी द्वारा जमा किये गये निक्षेपों में रामखेरिया नामक स्थान पर धरातल के समीप हीरों की प्राप्ति होती है।
- देश के पहले हीरा संग्रहालय की स्थापना खजुराहो में की जाएगी।
- मध्य प्रदेश में हीरा का उत्खनन नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन द्वारा किया जाता है।

❖ ताँबा

- ताँबा उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है किंतु भंडारण में राजस्थान व झारखंड के बाद तीसरा स्थान है।
- मध्यप्रदेश में ताँबा प्रमुख रूप से बालाघाट जिले की बैहर तहसील के मलाजखंड, जबलपुर के सलीमनाबाद, होशंगाबाद, नरसिंहपुर तथा सागर में मिलता है।
- बालाघाट का मलाजखंड ताँबे की उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहां हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा उत्पन्न किया जाता है।
- ताँबे के देश में मध्यप्रदेश के अलावा झारखंड (सिंहभूमि), राजस्थान (झुंझुनू, अलवर, खेतड़ी) महत्वपूर्ण उत्पादक है।



❖ मैंगनीज

- मध्य प्रदेश का मैंगनीज के उत्पादन में प्रथम स्थान है जबकि भंडारण में ओडिशा व कर्नाटक के बाद तीसरा स्थान है।
- मध्यप्रदेश में देश के कुल भंडार का 12% है यह दो प्रमुख क्षेत्र बालाघाट एवं छिंदवाड़ा में पाया जाता है।
- बालाघाट जिले में भारवेली मैंगनीज की सबसे बड़ी खुले मुंह की खदान है।
- प्रमुख उत्पादक जिलें - बालाघाट, छिंदवाड़ा, झाबुआ एवं जबलपुर
- मैंगनीज काले रंग की भस्म के रूप में धारवाड़ युग की चट्टानों में पाया जाता है। इसके प्रमुख अयस्क साइलामैलीन व ब्रोनाइट है।
- मैंगनीज की कुल खपत का 95 % प्रतिशत भाग धातु निर्माण में तथा अधिकांश भाग इस्पात उद्योगों में तथा कुछ भाग अन्य मिश्र धातुओं के निर्माण में प्रयोग किया जाता है।



- मैंगनीज और लोहे से मिश्रित कर बनाया गया इस्पात फेरोमैंगनीज कहलाता है।

❖ बॉक्साइट



- बॉक्साइट ऐलुमिनियम का अयस्क है।
- बाक्साइट उत्पादन एवं भण्डारण में मध्यप्रदेश का छठवां स्थान है जबकि बॉक्साइट उत्पादन एवं भंडारण में प्रथम स्थान पर ओड़िसा है।
- मध्यप्रदेश में बॉक्साइट का उत्पादन कटनी, शहडोल, अनूपपुर, जबलपुर, रीवा, सीधी एवं सतना जिलों में किया जाता है।
- उत्तरप्रदेश के रेणुकूट ऐलुमीनियम संयंत्र को अनूपपुर के अमरकंटक से बॉक्साइट भेजा जाता है।

❖ लोह अयस्क

- मध्यप्रदेश में लौह अयस्क के भंडार कम मात्रा में पाए जाते हैं।
- लौह आमतौर पर हेमेटाइट (70-72% लोह अंश), हैमेटाइट (60-70% लोह अंश), लिमोनाइट (35-50% लोह अंश) या सिडेराइट (10-30% लोह अंश) (FeCO₃), के रूप में पाया जाता है।
- भारत में सर्वाधिक (70%) लौह अयस्क हेमेटाइट प्रकार का पाया जाता है, जिसका सर्वाधिक भंडार ओड़िसा में है।
- लौह अयस्क के उत्पादन में ओड़ीसा प्रथम तथा कर्नाटक भंडारण में प्रथम स्थान पर है।
- म.प्र. में जबलपुर, अनूपपुर और बालाघाट में लौह अयस्क प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त विदिशा, उज्जैन, शाजापुर, धार, झाबुआ आदि।



❖ कोयला

- मध्य प्रदेश का कोयला के उत्पादन में छत्तीसगढ़, ओड़िसा, झारखंड के बाद चौथा स्थान है, जबकि भंडारण में मध्य प्रदेश का पांचवा स्थान है।
- कोयले की गुणवत्ता उसमें उपस्थित कार्बन की मात्रा के आधार पर तय होती है। एंथ्रेससाइट में 80-90% कार्बन, बिटूमिनस में 55-80% कार्बन, लिग्नाइट में 40-55% कार्बन, पीट में 40 से कम कार्बन
- सोहागपुर (शहडोल) मध्यप्रदेश का सर्वाधिक विस्तृत कोयला क्षेत्र है।
- मध्य प्रदेश के सिंगरौली में जनवरी, 1976 में कोयले की 136 मीटर मोटी तह मिली, जो विश्व में कोयले की दूसरी सर्वाधिक मोटी परत है।
- कोयला वितरण की दृष्टि से मध्य प्रदेश मुख्यतः दो भागों में विभक्त है -
- A. मध्य भारत का कोयला क्षेत्र - इसके अंतर्गत निम्न 5 क्षेत्र हैं।



1. उमरिया क्षेत्र (सबसे छोटा कोयला क्षेत्र 15 वर्ग किमी), 2. सोहागपुर क्षेत्र - मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र, 3. सिंगरौली क्षेत्र, 4. कोरार क्षेत्र (उमरिया), 5. जोहिला कोयला क्षेत्र (उमरिया)

- B. सतपुड़ा कोयला क्षेत्र - इसके अंतर्गत निम्न 4 क्षेत्र हैं।

1. मोहपानी क्षेत्र (नरसिंहपुर), 2. शाहपुरा तवा क्षेत्र (बैतूल-होशंगाबाद), 3. कान्हन घाटी क्षेत्र, 5. पेंच घाटी क्षेत्र

❖ चीनी मिट्टी

- यह सफेद से राख के रंग की मिट्टी है जो अत्यधिक सुघट्य तथा उच्च तापसह है और जलाने पर सिकुड़ती नहीं है। अन्य नाम 'केओलिन' है।
- ग्रेनाइट और फेल्सपार के क्षरण से चीनी मिट्टी का निर्माण होता है।
- चीनी मिट्टी का उपयोग बर्तन, प्याले, कटोरी, थाली, अस्पताल में काम में लाए जानेवाले सामान, बिजली के पृथक्कारी (इंसुलेटर), मोटरगाड़ियों के स्पार्क प्लग, तापसह ईटें इत्यादि बनाने में होता है।
- इसके उत्पादन में रीवा प्रथम स्थान पर तथा जबलपुर द्वितीय स्थान पर है। इसके अलावा ग्वालियर में नाकुम पहाड़ी, आन्तरी तथा बैतूल, छतरपुर, सीधी, सतना आदि स्थानों पर भी चीनी मिट्टी पाई जाती है।
- इनके प्रमुख कारखाने जबलपुर व ग्वालियर में हैं।



❖ अग्नि मिट्टी (फ़ायर क्ले)

- अधिकतर कोयले की खानों से प्राप्त होने वाली यह मिट्टी 1600° फे तक भी नहीं जलती है, इसीलिए इसका उपयोग अँगीठी, भट्टी तथा चिमनी इत्यादि के भीतर किया जाता हैं हैं।
- मध्य प्रदेश में गोण्डवाना युग की चट्टानों में इसके निक्षेपण मिलते हैं जबलपुर के दुबार तथा पिपरिया नरसिंहपुर के साली चौका, मानेगाँव, सोनेरी तथा बधाई एवं छिंदवाड़ा के मुरिया नामक स्थान पर अग्नि मिट्टी पाई जाती है।
- इसका उत्खनन जबलपुर शहडोल तथा पन्ना में हो रहा है।



❖ कोरण्डम

- कोरण्डम ऐल्युमिनियम का प्राकृतिक ऑक्साइड होता है। हीरे के बाद कोरण्डम ही सबसे कठोर खनिज है।
- मध्य प्रदेश में कोरण्डम, पन्ना तथा सीधी जिले के पीपरा एवं परकोटा में पाया जाता है।
- इसका उपयोग समतल शीशे व क्वार्टज की सतह घिसने में होता है।



❖ फेलसपार

- फेलसपार संघटन की दृष्टि से खनिज पोटैशियम, सोडियम, कैल्सियम, तथा बेरियम के ऐलुमिनो सिलिकेट हैं। धरती के गर्भ का लगभग 60% भाग फेलसपार से बना है।



- इसके संपूर्ण उत्पादन की दो तिहाई मात्रा कांच तथा चीनी मिट्टी के उद्योगों में काम आती है।
- उच्च श्रेणी का पोटाश फेलसपार विद्युत-अवरोधी पदार्थ तथा बनावटी दाँत बनाने के काम आता है।
- मध्य प्रदेश में यह खनिज जबलपुर और शहडोल में पाया जाता है, छिंदवाड़ा जिले में बोरगाँव तथा बीधीखेरा में भी इसका उत्खनन किया जाता है।

❖ चूना-पत्थर

- चूना पत्थर (Limestone) एक अवसादी चट्टान है जो, मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट (CaCO₃) के विभिन्न क्रिस्टलीय रूपों जैसे कि खनिज केल्साइट या एरेगोनाइट से मिलकर बनी होती है।



- चूना पत्थर उत्पादन में मध्यप्रदेश का दूसरा स्थान है जबकि भंडारण में सातवें स्थान है।
- मध्यप्रदेश में चूना पत्थर उत्पादन में सतना प्रथम, कटनी (चुना नगरी) द्वितीय, दमोह तृतीय एवं रीवा चतुर्थ स्थान पर है।
- चूना पत्थर के विशाल भण्डार से ही यह प्रदेश सीमेन्ट उद्योग के लिए अनुकूल माना जाता रहा है।

❖ गेरू

- गेरू के उत्पादन में मध्यप्रदेश प्रथम स्थान पर है।
- गेरू के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र प्रथम सतना, द्वितीय जबलपुर हैं।



- अन्य - जबलपुर पन्ना, सोहावल, नागोद, कोठी तथा सतना जिले की बेहट खान में गेरू का विशाल भण्डार है।
- गेरू का उपयोग सोने के आभूषणों पर चमक लाने तथा कपड़ा रँगने के विविध प्रकार के रंगों और तैलरंग तैयार करने में होता है।

❖ सेलखड़ी (टाल्क)

- इसे 'टाल्क' और 'स्टीएटाइट' भी कहा जाता है।
- टाल्कम पाउडर का प्रयोग प्रायः सभी घरों में होता है। इसके अतिरिक्त, यह खनिज कपड़ों से चिकनाई को हटाने में, चीनी मिट्टी के उद्योग में, पॉर्सिलेन तथा टाइल बनाने के काम में



तथा रबर, कागज और रंग के उद्योगों में पूरक के रूप में काम आता है।

❖ टंगस्टन

- टंगस्टन प्रमुख रूप से बुलफ्राम नामक खनिज से प्राप्त किया जाता है।
- इसका उपयोग बिजली के बल्बों के तंतुओं में होता है। दूसरी धातुओं में मिलाने पर उनकी कठोरता बढ़ जाती है, जिस कारण टंगस्टन का उपयोग काटने के औजार, शल्यचिकित्सा के यंत्र आदि की मिश्र धातुओं में होता है, क्योंकि ये मिश्रधातुएँ अम्ल, क्षार आदि से प्रभावित नहीं होतीं।
- टंगस्टन खनिज मध्य प्रदेश में होशंगाबाद जिले के 'अगरगाँव' नामक स्थान से प्राप्त होता है।



❖ सुरमा (एंटीमनी)

- सुरमा रत्न काले रंग का होता है। सुरमा रत्न का उपयोग नेत्रांजन बनाने में होता है।
- सुरमा मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में यह खनिज पाया जाता है।



❖ ग्रेफाइट

- ग्रेफाइट मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में पाया जाता है।
- ग्रेफाइट का उपयोग पेन्सिल की लीड तथा घड़ियों की कमानी बनाने में होता है।
- उच्च ताप पर चलने वाली मशीनों में इसको तेल या पानी के साथ मिलाकर स्नेहक के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- न्यूक्लियर रियेक्टर में मोडरेटर के रूप में इसका उपयोग किया जाता है।



❖ अभ्रक

- अभ्रक के उत्पादन में बालाघाट प्रथम है तथा अन्य जिलें छिंदवाड़ा, मंदसौर एवं झाबुआ है
- यह विद्युत् का कुचालक है अतः इसका प्रयोग विद्युत् उद्योग में अधिक होता है।
- विद्युत् का कुचालक होने के कारण इसका उपयोग कंडेन्सर, कम्प्यूटेटर, टेलीफोन, डायनेमो आदि के काम में होता है।
- अभ्रक के छोटे-छोटे टुकड़ों को चिपकाकर माइकानाइट बनाया जाता है।



❖ एस्बेस्टस

- एस्बेस्टस एक रेशेदार खनिज है जो मैग्निशियम, सिलिका एवं जल के मिश्रण से बनता है।



- एस्बेस्टस के सभी प्रकार के विद्युत्रोधक अथवा उष्मारोधक (इंस्यूलेटर) बनाने के काम में लाया जाता है।
- इनसे अग्निरक्षक परदे, वस्त्र और ऐसी ही अन्य वस्तुएँ बनाई जाती हैं।
- भारत में एस्बेस्टस का मुख्य उपयोग एस्बेस्टस युक्त सीमेंट तथा तत्संबंधी वस्तुएँ, जैसे स्लेट, टाईल, पाइप और चादरें बनाने में किया जाता है।
- मध्य प्रदेश में इसका उत्पादन झाबुआ जिले में होता है।

❖ डोलोमाइट

- डोलोमाइट के उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है।
- जब चूना पत्थर में 10 प्रतिशत से अधिक मैग्नीशियम होता है तो वह डोलोमाइट कहलाता है और जब यह अनुपात 45 प्रतिशत से अधिक हो जाता है तो इसे शुद्ध डोलोमाइट कहते हैं।
- इसका उपयोग लोहा साफ करने में किया जाता है।
- मध्यप्रदेश में झाबुआ में सर्वाधिक डोलोमाइट का उत्पादन किया जाता है अन्य उत्पादक जिले इंदौर, सीधी, ग्वालियर, अलीराजपुर, सतना, छिंदवाड़ा, मंडला, कटनी एवं जबलपुर हैं।



❖ सीसा

- सीसा एक अम्ल प्रतिरोधी पदार्थ है, जिसका उपयोग विद्युत् केबल, लोहे की चादर में लेपन, पेंट, बैटरी तथा युद्ध उपकरण आदि बनाने में किया जाता है।
- सीसा भंडारण में मध्य प्रदेश का राजस्थान तथा आंध्र प्रदेश के बाद तीसरा स्थान है।
- मध्यप्रदेश में सीसा दतिया, शिवपुरी, झाबुआ तथा जबलपुर में पाया जाता है।



❖ रॉक फॉस्फेट

- रॉक फॉस्फेट का सर्वाधिक प्रयोग फास्फेट उर्वरकों के निर्माण में होता है।
- मध्यप्रदेश में रॉक फास्फेट का सर्वाधिक उत्पादन सागर दूसरे स्थान पर छतरपुर एवं तीसरे स्थान पर झाबुआ से किया जाता है।
- रॉक फास्फेट के उत्पादन में मध्य प्रदेश का दूसरा स्थान तथा भंडारण में तीसरा स्थान है।



❖ संगमरमर

- संगमरमर एक कार्यांतरित शैल है, जो कि चूना पत्थर के कार्यांतरण का परिणाम है।



- यह अधिकतर कैल्साइट का बना होता है, जो कि कैल्शियम कार्बोनेट (CaCO₃) का स्फटिकीय रूप है।
- जबलपुर में भेड़ाघाट तथा गवारीघाट, बैतूल, सिवनी तथा छिंदवाड़ा में आर्कियन युग की चट्टानों में संगमरमर के भण्डार मिले हैं।
- इसके भंडारण में मध्य प्रदेश, राजस्थान के बाद दूसरे स्थान पर है।

❖ स्लेट

- मध्य प्रदेश स्लेट उत्पादन की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान पर है, मध्यप्रदेश में इसका सर्वाधिक उत्पादन मंदसौर में किया जाता है।



❖ यूरेनियम

- मध्य प्रदेश में बड़ा हलेहरा बक्सवाहा जिला छतरपुर एवं शहडोल में यूरेनियम के भंडार मिले हैं।
- बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी में ढाई हजार एकड़ क्षेत्र में बहुमूल्य धातु यूरेनियम की मौजूदगी के प्रमाण हवाई सर्वेक्षण में मिले हैं।



❖ मध्य प्रदेश राज्य खनिज निगम

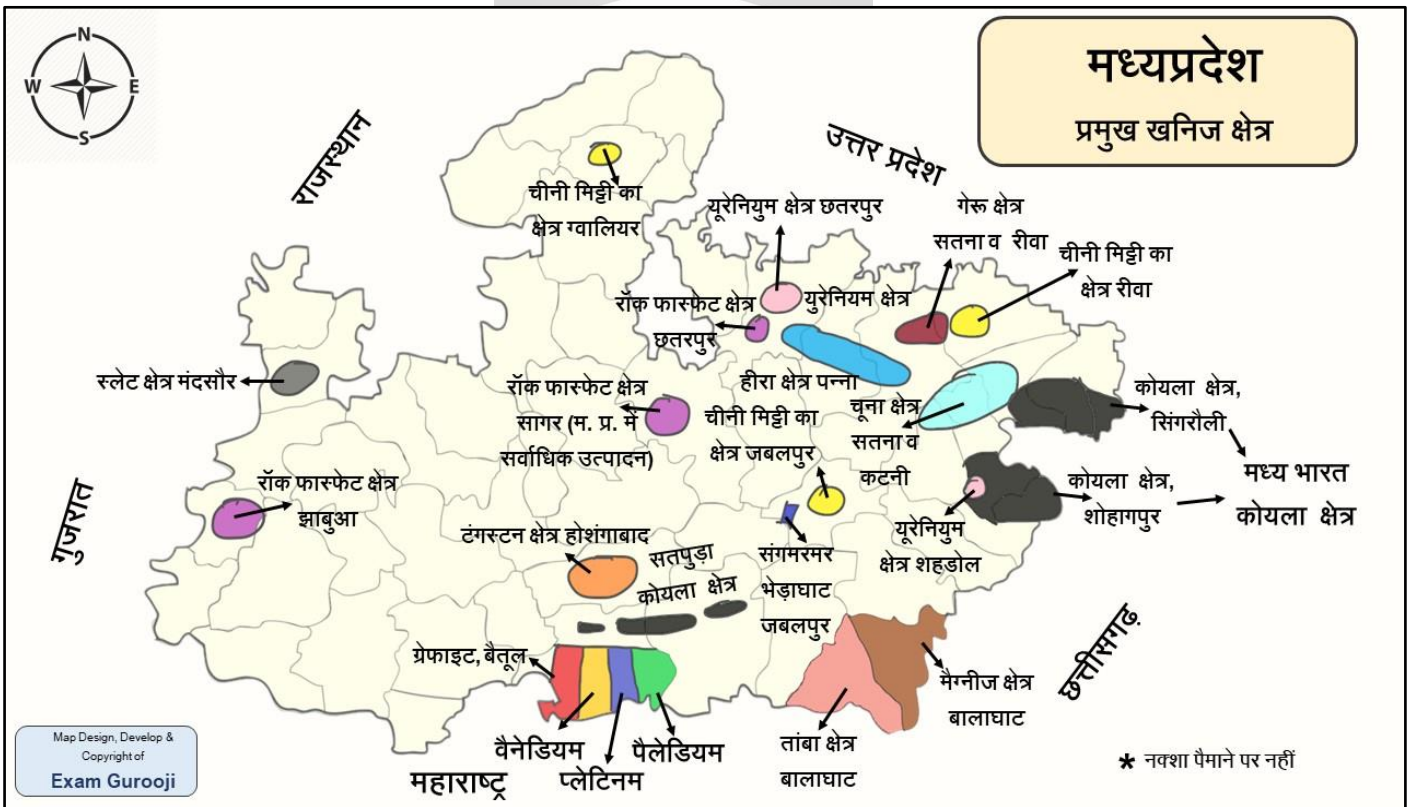
- मध्य प्रदेश राज्य खनिज विकास निगम खनिज पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा राज्य खनिज विकास निगम की स्थापना 19 जनवरी 1962 को की गई थी।
- इसका मुख्यालय भोपाल में है तथा यह निगम राज्य शासन द्वारा पूर्णतः स्वामित्व प्राप्त कम्पनी है।

❖ खनिज नीति

- मध्य प्रदेश में सबसे पहले 1995 में खनिज नीति की घोषणा की थी।
- वर्तमान में लागू मध्यप्रदेश राज्य खनिज नीति-2010 का अनुमोदन 07 सितम्बर 2010 को किया गया था।
- इस खनिज नीति का मूल उद्देश्य सुनियोजित एवं वैज्ञानिक तरीकों से खनिजों का विकास सुनिश्चित करना है।
- खनिजों के विकास के लिये समस्त पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय विषयों का ध्यान रखा जायेगा।

- मध्यप्रदेश में गौण खनिज की रियासतें उत्खनन पट्टा अथवा व्यापारिक खदान के रूप में मध्य प्रदेश गौण खनिज नियम 1996 के प्रावधान के अनुसार स्वीकृत/अनुबंधित की जाती हैं।
- मध्यप्रदेश में गोंड खनिजों से प्राप्त होने वाली राजस्व को वित्त विभाग द्वारा पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को उपलब्ध कराया जाता है, जिसका उपयोग पंचायतों के लिए किया जाता है।

अन्य प्रमुख खनिज एवं प्राप्ति स्थान	
खनिज	प्राप्ति स्थान
वैनेडियम	बैतूल
प्लेटिनम	बैतूल
पैलेडियम	बैतूल
कैल्साइट	बड़वानी
पायरीलाइट	शिवपुरी, टीकमगढ़ छतरपुर
यूरेनियम	शहडोल, छतरपुर
फेल्सपार	छिंदवाडा, जबलपुर
निकेल	सीधी
ग्रेनाइट	पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर
टिन	बैतूल, गोविंदपुर
टंगस्टन	होशंगाबाद
क्वार्ट्ज	रीवा
बैराइट्स	सीधी
डायोस्फर/फायरोफिलाइट	छतरपुर, शिवपुरी, टीकमगढ़
सोना	सीधी, कटनी, बालाघाट
अभ्रक	बालाघाट, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा



- मध्यप्रदेश खनिज संसाधनों में प्रचुरता की दृष्टि से राष्ट्र के 8 प्रमुख खनिज संपन्न राज्यों में से एक है। मध्य प्रदेश भारत का चौथा सबसे खनिज समृद्ध प्रदेश है। (प्रथम तीन - 1. पश्चिम बंगाल 2. झारखंड 3. उड़ीसा)
- इतने प्राकृतिक संसाधनों के होते हुए भी मध्य प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, इसका मुख्य कारण आधारभूत संरचना, वित्तीय संसाधन, वैज्ञानिक कुशलता तथा विकसित तकनीक का अभाव है।
- मध्य प्रदेश में औद्योगिक वितरण में काफी असमानता है, प्रदेश के 52 जिलों में से उद्योगों का केंद्रीकरण केवल भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, धार एवं कटनी आदी जिलों तक ही सीमित है।
- मध्य प्रदेश में प्रति 100000 व्यक्तियों पर उद्योगों की संख्या 5.24 है।
- मध्य प्रदेश के सकल मूल्य वर्धन में (स्थिर भावों पर) औद्योगिक क्षेत्र का योगदान 2017-18 में 24.14% है।

- मध्यप्रदेश में विनिर्माण क्षेत्र की विकास 2018 - 19 में 5.71% अनुमानित है।
- मध्य प्रदेश की जीडीपी में विभिन्न क्षेत्रों की हिस्सेदारी (2018-19 अनुमानित)
- प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, खनन व मत्स्य)- 37.4%
- द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण क्षेत्र) - 24.14%
- तृतीय क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) - 38.46%

- मध्य प्रदेश का निवेश में भारत में पांचवा स्थान है जबकि औद्योगिक विकास में सातवां स्थान है।
- औद्योगिक नीति तथा संवर्धन विभाग द्वारा जारी इज ऑफ डूइंग बिजनेस में मध्य प्रदेश का स्थान व्यापार सुगमता में सातवां है।

❖ जिलों का औद्योगिक वर्गीकरण

- प्रदेश के जिलों को आद्योगिक दृष्टि से विकसित और पिछड़े जिले की श्रेणी में बांटा गया है।
- प्रदेश के 5 जिलों को विकसित जिला माना गया है, जबकि शेष को पिछड़े जिले की श्रेणी में रखा गया है। पिछड़े जिलों को क्रमशः क, ख और ग तीन श्रेणियों में बांटा गया है, जो निम्न अनुसार है -
- **विकसित जिले** - भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, कटनी
- **पिछड़े जिले क श्रेणी** - देवास, होशंगाबाद, खंडवा, मंदसौर, मुरैना, रतलाम, शहडोल, उज्जैन, विदिशा, सतना, नीमच, उमरिया, हरदा, श्योपुर
- **पिछड़े जिले ख श्रेणी** - बैतूल, सीहोर
- **पिछड़े जिले ग श्रेणी** - बालाघाट, भिंड, छतरपुर, दमोह, दतिया, धार, गुना, झाबुआ, खरगोन, बड़वानी, मंडला, डिंडोरी, नरसिंहपुर,

पन्ना, रायसेन, राजगढ़, रीवा, सिवनी, शाजापुर, शिवपुरी, सीधी, टीकमगढ़, सागर, छिंदवाड़ा, आगरमालवा, अलीराजपुर, सिंगरौली, अनूपपुर, निवाड़ी

राज्य के प्रमुख उद्योग

- राज्य में स्थापित उद्योगों को प्रयुक्त होने वाले कच्चे पदार्थों के आधार पर निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

कृषि पर आधारित उद्योग

- राज्य में कृषि पर आधारित प्रमुख उद्योग निम्नलिखित हैं -
- ❖ **चीनी उद्योग**
- यह वस्त्र उद्योग के बाद दूसरा सबसे बड़ा कृषि आधारित उद्योग है।
- मध्य प्रदेश में सबसे पहले चीनी मिल वर्ष 1934 में जावरा, रतलाम में स्थापित हैं।
- वर्तमान में प्रदेश में चीनी मिलों की संख्या 26 है।
- चीनी मिलों की स्थापना मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में अधिक हुई है क्योंकि गन्ना उत्पादक जिले इस क्षेत्र में स्थित हैं।
- प्रदेश का सहकारिता क्षेत्र का सबसे बड़ा चीनी कारखाना बरलाई इंदौर में स्थित है।
- **प्रदेश के मुख्य चीनी कारखाने**
- भोपाल शुगर मिल - सीहोर
- सेठ गोविंद राम शुगर मिल - महिदपुर रोड उज्जैन
- जीवाजी राव शुगर कंपनी लिमिटेड - दलोदा, मंदसौर
- डबरा शुगर मिल लिमिटेड - डबरा, ग्वालियर
- कैलारस शुगर मिल - कैलारस, मुरैना
- पीतांबर शुगर मिल - दतिया
- प्रदेश में गन्ना अनुसंधान केंद्र नरसिंहपुर में स्थित है।
- ❖ **वनस्पति घी**
- राज्य में तिलहन एवं सोयाबीन की कृषि व्यापक पैमाने पर की जाती है फलस्वरूप राज्य में वनस्पति घी बनाने की मीलों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है।
- वर्तमान में प्रदेश में 10 वनस्पति घी के कारखाने हैं।
- वनस्पति घी बनाने के अधिकतर कारखाने तिलहन उत्पादक क्षेत्रों मालवा पठार, बैतूल, छिंदवाड़ा पठार, मध्य नर्मदा घाटी, चंबल की घाटी क्षेत्र में लगाए गए हैं।
- प्रदेश के प्रमुख वनस्पति घी के कारखाने गंजबासौदा, जबलपुर, खंडवा, ग्वालियर, इंदौर, और मुरैना में स्थित है।
- प्रदेश का सबसे बड़ा वनस्पति घी का कारखाना गंज बासौदा विदिशा में स्थित है।

❖ सूती कपड़ा उद्योग

- यह प्रदेश का सबसे बड़ा उद्योग है, प्रदेश में सबसे पहले सूती वस्त्र कपड़ा मिल बुरहानपुर वर्ष 1906 में स्थापित की गई थी जो असफल हुई।
- मध्यप्रदेश में सूती वस्त्र का प्रथम सफल कारखाना 1907 में मालवा मिल इंदौर में स्थापित किया गया था।
- वर्तमान में सूती कपड़े के लगभग 513 कारखाने राज्य में कार्यरत हैं। तथा सूती वस्त्र उत्पादन में मध्यप्रदेश का तीसरा स्थान है।
- इंदौर राज्य का सबसे बड़ा उत्पादक केंद्र है, इसी कारण इसे मध्य प्रदेश की वस्त्र राजधानी कहा जाता है।
- खंडवा एवं खरगोन में कपास की खेती होने के कारण इसका केंद्रीकरण पश्चिमी भागों में हुआ है।
- वर्तमान में इस उद्योग की जगह कृत्रिम रेशे लेते जा रहे हैं क्योंकि इनका कच्चा माल सस्ता एवं सर्वत्र सुलाभ है।

सूती वस्त्रों की प्रमुख मिलें		
मिल	स्थापना वर्ष	स्थान
कल्याण मिल	1934-35	इंदौर
स्वदेशी कॉटन एंड फ्लोर मिल	1928-29	इंदौर
इंदौर मालवा यूनाइटेड मिल	1907-08	इंदौर
हीरा मिल्स लिमिटेड	1934-35	उज्जैन
ताप्ती मिल्स लिमिटेड	1906-07	बुरहानपुर
न्यू भोपाल टेक्सटाइल लिमिटेड	1938-39	भोपाल

❖ कृत्रिम रेशे का कपड़ा उद्योग

- मध्यप्रदेश में कृत्रिम रेशे से कपड़ा बनाने का उद्योग अपेक्षाकृत नवीन उद्योग है। इसके लिए कच्चा माल मुंबई, ग्वालियर तथा देवास की कृत्रिम रेशा उत्पादक मीलों से प्राप्त होता है।
- यह उद्योग नागदा (उज्जैन), ग्वालियर देवास में है, ग्रेसिम फैक्ट्री नागदा में कृत्रिम रेशा बनाने का कारखाना है।
- ऊनी कपड़ा बनाने का कारखाना इंदौर में है।

❖ अन्य कृषि आधारित उद्योग

- जूट उद्योग - सतना, अमलाई (शहडोल)
- स्ट्राबोर्ड मिलें - शाजापुर
- एमपी एग्रो मोरारजी फर्टिलाइजर्स लिमिटेड - इटारसी (होशंगाबाद)
- जीवाणु खाद संयंत्र - भोपाल
- कीटनाशक संयंत्र - बीना (सागर)
- सरसों आयल मिल - मुरैना
- पशु पोषण आहार संयंत्र - धार
- मत्स्य आहार संयंत्र - सिवनी

❖ रेशम उद्योग

- रेशम की किस्में - मलबरी, मूंगा, इरी, टसर, ट्रॉपिकल्सर

- मध्यप्रदेश में मलबरी, इरी और टसर का उत्पादन होता है, इनमें से मलबरी का उत्पादन सबसे ज्यादा होता है।
- प्रदेश के 44 जिलों में रेशम उद्योग संचालित है।
- प्रदेश में मंडला प्रमुख रेशम उत्पादक क्षेत्र है।
- मध्यप्रदेश में इरी रेशम के उत्पादन के कारण सिवनी को मध्य प्रदेश का लखनऊ कहा जाता है।
- मध्यप्रदेश में रेशम की मंडी पंचमढ़ी में स्थापित है।
- प्राकृतिक रेशम के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 1 सितम्बर 1984 को रेशम संचालनालय की स्थापना की गई।

❖ सोयाबीन उद्योग

- देश के कुल सोयाबीन का 48.46 प्रतिशत उत्पादन मध्य प्रदेश में होता है, इसी कारण मध्य प्रदेश को सोया राज्य कहा जाता है।
- मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा सोयाबीन संयंत्र उज्जैन में स्थित है, जबकि सोयाबीन अनुसंधान केंद्र इंदौर में है
- देश का सबसे बड़ा सहकारी क्षेत्र का सोयाबीन कारखाना सिवनी में है तथा सोयाबीन से बिस्कुट बनाने का कारखाना भोपाल में स्थित है।

❖ खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

- मध्य प्रदेश का पहला खाद्य प्रसंस्करण उद्योग बाबई होशंगाबाद में स्थापित किया गया था।
- मध्य प्रदेश का प्रथम मेगा फूड पार्क कसरवावद खरगोन में स्थापित है।
- अन्य मेगा फूड पार्क - दालौद मंदसौर एवं कटनी में स्थित है।
- निजी क्षेत्र का मेगा फूड पार्क देवास में है।
- औद्योगिक विकास निगम द्वारा विकसित फूड पार्क - 1. जग्गा खेड़ी (मंदसौर), 2. निमरानी (खरगोन), 3. मालनपुर (भिंड), 4. बाबई (होशंगाबाद), 5. बोरगांव (छिंदवाड़ा), 6. मनेरी (मंडला)

❖ खनिजों पर आधारित उद्योग

- मध्यप्रदेश के खनिज पर आधारित प्रमुख उद्योग निम्नलिखित है -

❖ चीनी मिट्टी उद्योग

- मध्य प्रदेश में चीनी मिट्टी पर्याप्त रूप से उपलब्ध है, यही कारण है कि प्रदेश में चीनी मिट्टी उद्योग में तेजी से वृद्धि हुई है।
- प्रदेश में ग्वालियर, जबलपुर तथा रतलाम आदि क्षेत्रों में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग स्थापित है।
- राज्य में फायर क्ले ईटें, पाईप तथा बेसिन आदि कटनी एवं जबलपुर में बनाए जाते हैं।

❖ सीमेंट उद्योग

- मध्यप्रदेश में चूना पत्थर के भंडार बड़े पैमाने पर पाए जाते हैं, जिससे प्रदेश में सीमेंट उद्योग की स्थापना में प्रगति हुई है।



- राज्य में पहला सीमेंट कारखाना इस एसीसी द्वारा वानमोर मुरैना में वर्ष 1922 में स्थापित किया गया।
- वर्तमान में कैमूर, सतना, मेहर, नीमच सहित प्रदेश में 23 सीमेंट कारखाने उत्पादन कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश में सीमेंट उद्योग				
कारखाने का नाम	स्थान	कंपनी	स्थापना	विशेष
बानमोर सीमेंट फैक्ट्री	बानमोर मुरैना	ACC (एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी)	1922	मध्य प्रदेश का पहला सीमेंट कारखाना
कैमूर सीमेंट फैक्ट्री	कटनी	ACC (एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी)	1923	आद्र विधि से पोर्टलैंड पोजोलना सीमेंट का कारखाना मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा कारखाना
सतना सीमेंट फैक्ट्री	सतना	बिरला (सीमेंट कारपोरेशन ऑफ इंडिया)	1959	आद्र विधि द्वारा साधारण पोर्टलैंड सीमेंट
नीमच सीमेंट फैक्ट्री	नीमच	सीसीई	1980 - 81	
मैहर सीमेंट फैक्ट्री	मैहर सतना	बिरला	1980 - 81	

वनो पर आधारित उद्योग

- प्रदेश में वन आधारित प्रमुख उद्योग निम्नलिखित हैं -

❖ कागज उद्योग

- राज्य में कागज उद्योग की स्थापना सर्वप्रथम 1948-49 में की गई थी। जब खंडवा (वर्तमान बुरहानपुर) में नेपानगर में नेशनल न्यूज प्रिंट एंड पेपर मिल (अखबारी कागज) की स्थापना की गई थी।
- राज्य में शहडोल जिले के अमलाई में बिरला समूह द्वारा स्थापित निजी क्षेत्र का ओरिएंट पेपर मिल है।
- इंदौर में महीन कागज (टिशु पेपर) बनाने का कारखाना है। सिक्थोरिटी पेपर मिल (नोट छापने का कागज) का कारखाना 1967-68 में होशंगाबाद में स्थापित किया गया था।
- 2015 में होशंगाबाद के प्रतिभूति कारखाने में 'न्यू बैंक नोट पेपर लाइन' का उद्घाटन तत्कालीन वित्तमंत्री अरुण जेटली किया।

❖ बीडी उद्योग

- प्रदेश में तेंदूपत्ता का संग्रहण देश में सर्वाधिक (60%) होता है, यही कारण है कि बीडी उद्योग का विकास जबलपुर, सागर, कटनी, दमोह तथा सतना में हुआ है।
- प्रदेश में बीडी बनाने के लगभग 280 कारखाने कार्यरत हैं।
- इस उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र जबलपुर है।

❖ लकड़ी उद्योग

- इस उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र जबलपुर है। इसके अलावा राज्य के छिंदवाड़ा तथा मंडला में इमारती लकड़ी को चीरने के कारखाने कार्यरत हैं।
- लकड़ी चीरने का सबसे बड़ा कारखाना मनेरी मंडला में स्थित है।
- वर्तमान में लगभग 113 कारखाने प्रदेश में इस उद्योग में लगे हुए हैं।

❖ प्लाईवुड उद्योग

- मध्य प्रदेश में प्रथम प्लाईवुड कारखाना 1964 में इटारसी में स्थापित किया गया था।
- छिंदवाड़ा एवं कोसमी बैतूल में प्लाईवुड तथा नक्काशीदार लकड़ी का कारखाना है।

❖ कत्था उद्योग

- खेर वृक्ष से कत्था बनाने का कार्य पूर्वी मध्य प्रदेश की खेरवार जनजाति द्वारा किया जाता है।
- शिवपुरी एवं बानमोर (मुरैना) में कत्था उत्पादक इकाइयां कार्य कर रही हैं।

❖ लाख उद्योग

- लाख एक प्राकृतिक रेजिन होता है जो केरिया लेकका नामक कीट द्वारा स्रावित होता है।
- राज्य के विंध्य क्षेत्र में लघु उद्योग का केंद्रीकरण है।
- कच्चे लाख से सिड लाख बनाने का शासकीय कारखाना उमरिया में है।

❖ चिप एवं माचिस डिब्बी उद्योग

- चिप बोर्ड एवं पार्टिकल बोर्ड बनाने का कारखाना इटारसी में तथा माचिस की डिब्बी बनाने का कारखाना ग्वालियर में स्थापित है।

अन्य प्रमुख उद्योग

❖ विदेशी सहायता से निर्मित प्रमुख उद्योग

- **भेल (BHEL)** - इसकी स्थापना 1964 में ब्रिटेन की सहायता से भोपाल की गई थी, 2013 में महारत्न कंपनी का दर्जा दिया गया।
- **ऑप्टिकल फाइबर कारखाना** - इसकी स्थापना मंडीदीप रायसेन में जापान की सहायता से की गई है।

➤ नेशनल फर्टिलाइजर कारखाना - इसकी स्थापना 1984 में विजयपुर गुना में अमेरिका और इटली के सहयोग से की गई है।

➤ तेल शोधक कारखाना - इसकी स्थापना 2008 में बीना के आगासोद में ओमान की सहायता से की गई है।

❖ पंचवर्षीय योजना में उद्योगों का विकास

- मध्यप्रदेश में तीसरी पंचवर्षीय योजना में BHEL(भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड) भोपाल तथा नीमच में पॉवर अल्कोहल प्लांट की स्थापना की गई थी।
- योजना अवकाश की अवधि 1967-68 में होशंगाबाद में सिक्योरिटी पेपर मिल की स्थापना की गई थी।

❖ रेल उपकरण उद्योग

- देश का एकमात्र रेल स्प्रिंग कारखाना ग्वालियर
- रेल कोच फैक्ट्री निशातपुरा भोपाल
- रेलवे स्लीपर कारखाना बुधनी सीहोर
- रेलवे इंजन कारखाना भोपाल
- प्रथम डीजल लोकोमोटिव संयंत्र (2012 से प्रस्तावित) सीहोर
- रेल इंजन कारखाना (2015 से प्रस्तावित) विदिशा

मध्य प्रदेश में केंद्र सरकार के सार्वजनिक उपक्रम			
क्र.	प्रतिष्ठान	स्थापना वर्ष	उत्पाद सामग्री
रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत			
1.	गन कैरिज फैक्ट्री, जबलपुर	1904	युद्ध सामग्री
2.	गवर्नमेंट ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, कटनी	1942	युद्ध सामग्री
3.	गवर्नमेंट ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, इटारसी	1943 - 44	युद्ध सामग्री
4.	गवर्नमेंट ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, खमरिया (जबलपुर)	1942	युद्ध सामग्री
5.	हेवी व्हीकल फैक्ट्री, जबलपुर	1969	रक्षा एवं भारी व्यावसायिक वाहन
6.	आधुनिक हथियार फैक्ट्री मालनपुर, भिंड	2017-18	युद्ध सामग्री (इजराइल के सहयोग से)
वित्त मंत्रालय के अंतर्गत			
6.	करंसी प्रिंटिंग प्रेस, देवास	1975 - 76	कागजी मुद्रा
7.	एल्कलॉइड फैक्ट्री, नीमच	1975 - 76	नारकोटिन
8.	सिक्योरिटी पेपर मिल, होशंगाबाद	1967-68	नोट छापने का कागज

रेल मंत्रालय			
9.	रेलवे कोच फैक्ट्री, भोपाल	1975 - 76	रेल कोच का निर्माण
संचार मंत्रालय के अंतर्गत			
10.	गवर्नमेंट पोस्ट एंड टेलीग्राफ वर्कशॉप, जबलपुर	1948	टेलीफोन एवं टेलीग्राफ उपकरण
खनन मंत्रालय के अंतर्गत			
11.	हिंदुस्तान कॉपर प्रोजेक्ट, मलाजखंड (बालाघाट)		तांबा
12.	नार्दन कोलफील्ड्स लिमिटेड, सिंगरौली		कोयला
राष्ट्रीय कपड़ा उद्योग निगम के अंतर्गत			
13.	बुरहानपुर तामी मिल्स लिमिटेड, बुरहानपुर	1906 - 07	सूती कपड़ा
14.	इंदौर मालवा यूनाइटेड मिल्स लिमिटेड, इंदौर	1907 - 08	सूती कपड़ा
15.	कल्याणमल मिल्स लिमिटेड, इंदौर	1934 - 35	सूती कपड़ा
16.	हीरा मिल्स लिमिटेड, उज्जैन	1934 - 35	सूती कपड़ा
17.	स्वदेशी कॉटन एंड फ्लोर मिल्स लिमिटेड, इंदौर	1934 - 35	सूती कपड़ा
18.	दी न्यू भोपाल टेक्सटाइल लिमिटेड, भोपाल	1938 - 39	सूती कपड़ा
भारतीय खाद्य निगम के अंतर्गत			
19.	कॉटन सीड साल्वेंट एक्सटेंशन प्लांट, उज्जैन	1963 - 64	कपास बीज एवं मूंगफली का तेल
अन्य केंद्रीय सार्वजनिक प्रतिष्ठान			
20.	नेशनल न्यूज प्रिंट एवं पेपर, नेपालगर (बुरहानपुर)	1956 - 57	अखबारी कागज
21.	भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, पिपलानी (भोपाल)	1964	स्विच गियर, कंट्रोल गियर, ट्रांसफार्मर, टरबाइन आदि
22.	IISCO एक्सटेंशन पाइप कंपनी लिमिटेड, उज्जैन	1968 - 69	ढलवा लोहे के पाइप
23.	ग्रे आयरन फैक्ट्री फाउंड्री, जबलपुर		कच्चा लोहा

राज्य सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग



नाम एवं स्थिति	स्थापना वर्ष	विवरण
मध्यप्रदेश राज्य उद्योग निगम		
1. रतलाम अल्कोहल प्लांट एंड कार्बन डाइऑक्साइड इंडस्ट्री एस्टेट, रतलाम	1963-64	अल्कोहल एवं कार्बन डाइऑक्साइड
2. ग्वालियर लेदर फैक्ट्री एंड टेनरी, ग्वालियर	1958	जूते तंबू व त्रिपाल तथा चीनी बर्तन
3. ग्वालियर पोर्टीज, ग्वालियर		चीनी के बर्तन
4. केलेडरिंग प्लांट, उज्जैन	1962	रंगाई तथा परिष्करण
5. टिम्बर ट्रीटमेंट प्लांट, इंदौर	1952	इमारती लकड़ी
6. छाता उद्योग, महु		
7. इंजीनियरिंग वर्क्स, इंदौर		ठेके का काम
8. ब्रुश एवं स्पोर्ट्स इंडस्ट्रीज, इंदौर		ब्रुश तथा खेल का सामान
9. देवास इलेक्ट्रिकल्स, देवास		ऊष्मारोधी उपकरण
10. कृषि उपकरण फेक्ट्री, खंडवा		पंप सेट
11. मेटल वर्क्स, विदिशा		कटीले तार, तार की कीलें
12. साइकिल उद्योग, गुना		साइकिल के सामान
13. फर्नीचर वर्क, जबलपुर		फर्नीचर
14. फर्नीचर वर्क्स, अभानपुर		फर्नीचर
15. भोपाल उद्योग, भोपाल		फर्नीचर
मध्य प्रदेश स्टेट टेक्सटाइल कॉरपोरेशन लिमिटेड		
16. सनावद कताई मिल, सनावद खरगोन	1963 - 64	सूती धागा

❖ मध्यप्रदेश में संयुक्त क्षेत्र की प्रमुख योजनाएं

- 1. मध्यप्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, भोपाल
- 2. मध्य प्रदेश विद्युत यंत्र लिमिटेड, गोसलपुर (जबलपुर)
- 3. मध्य प्रदेश लैप्स लिमिटेड, विदिशा

अन्य उद्योग

- रसायन उद्योग का निजी सार्वजनिक भागीदारी से उर्वरक एवं कीटनाशक संयंत्र रैसलपुर होशंगाबाद में स्थापित किया गया है।
- विजयपुर गुना में गैस आधारित यूरिया अमोनिया संयंत्र की स्थापना की गई है।
- वाहन उद्योग का प्रमुख केंद्रीकरण पीथमपुर धार में है, इसी कारण इसे भारत का डेट्राइट कहा जाता है, इसके अलावा देवास में वाहन उद्योग के कारखाने हैं।

मध्यप्रदेश के प्रमुख कारखाना/उद्योग/केंद्र	
कारखाना/उद्योग/केंद्र	स्थान
औद्योगिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला	इंदौर
एकमात्र घड़ी कारखाना	बेतूल
एकमात्र छाता उद्योग	महु इंदौर
एकमात्र डीजल इंजन कारखाना (जनरेटर आदि)	इंदौर
कील व तार बनाने का कारखाना	विदिशा
जिलेटिन बनाने का कारखाना	जबलपुर
इंसुलेटेड बनाने का कारखाना	देवास
जड़ी कढ़ाई उद्योग के लिए प्रसिद्ध जिला	भोपाल
ऑटो उद्योग को बढ़ावा देने के लिए ऑटो क्लस्टर	इंदौर
विश्वस्तरीय टेस्टिंग सेंटर परियोजना की स्थापना	पीथमपुर धार
नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फैशन टेक्नोलॉजी	भोपाल
नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ डिजाइन	ग्वालियर
फुटवियर डिजाइन और विकास संस्थान	हरिपुर (गुना)
राजा रामन्ना सेंटर फॉर एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (लेजर उत्पादन में विश्व का तीसरा एवं एशिया का पहला केंद्र)	इंदौर
प्रदेश का शुष्क बंदरगाह	मांगलिया इंदौर
इंडो जर्मन टूल की स्थापना	इंदौर
इनलैंड कंटेनर ट्रांसपोर्ट डिपो	पीथमपुर धार

मध्य प्रदेश के प्रमुख क्लस्टर/कंपलेक्स/पार्क	
क्लस्टर/कंपलेक्स/पार्क	स्थान
फार्मा क्लस्टर	बेटमा इंदौर
प्लास्टिक पैकिंग प्रोसेसिंग क्लस्टर	इंदौर
रिचार्जबल टॉर्च क्लस्टर	इंदौर
नमकीन क्लस्टर	इंदौर
फाउंड्री क्लस्टर	इंदौर
अपैरल क्लस्टर	बिजेपुर इंदौर
रेडीमेड गारमेंट क्लस्टर	इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर
इंजीनियरिंग क्लस्टर	गोविंदपुरा, भोपाल
ट्रांसफार्मर एंड एलाइड प्रोडक्ट्स क्लस्टर	ग्वालियर
सेंड स्टोन क्लस्टर	ग्वालियर
कंप्यूट्री क्लस्टर	ग्वालियर
पोहा क्लस्टर	उज्जैन
पावरलूम क्लस्टर	जबलपुर एवं बुरहानपुर
ऑटो क्लस्टर	पीथमपुर धार
वुडन फर्नीचर क्लस्टर	छतरपुर
लाइमस्टोन क्लस्टर	कटनी

ब्रिक्स क्लस्टर	बालाघाट, सतना, गुना एवं शाजापुर
एग्रीकल्चर इंफ्लिमेंट्स क्लस्टर	सागर
फूड क्लस्टर	शिवपुरी
नमकीन एवं एलाइड क्लस्टर	रतलाम
चमड़ा कांपलेक्स	देवास
स्टेनलेस स्टील कांपलेक्स	सागर
इलेक्ट्रॉनिक कांपलेक्स	इंदौर
एग्रो कॉन्पलेक्स	छिंदवाड़ा
गारमेंट कांपलेक्स	जबलपुर
रेडीमेड कांपलेक्स	इंदौर
सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क	इंदौर
प्लास्टिक पार्क	तामोट (रायसेन)
हैंडलूम पार्क	अशोकनगर
इंडस्ट्रियल एवं मेडिकल गैस प्लांट	सतना

मध्य प्रदेश के औद्योगिक विकास हेतु स्थापित संस्थान		
संस्था	मुख्यालय	स्थापना
मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम	भोपाल	1961
मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम	भोपाल	1965
मध्य प्रदेश राज्य उद्योग निगम	भोपाल	1969
मध्य प्रदेश वस्त्र उद्योग निगम	इंदौर	1970
मध्य प्रदेश वस्त्र उद्योग मंडल	भोपाल	1972
मध्य प्रदेश राज्य वस्त्र निगम	भोपाल	1976-77
मध्य प्रदेश हैंडलूम संचालनालय	भोपाल	1976
मध्य प्रदेश चर्म विकास निगम	भोपाल	1981
मध्यप्रदेश हस्तशिल्प मंडल	भोपाल	1972
संत रविदास हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम	भोपाल	1981

मध्य प्रदेश एग्रो इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन	भोपाल	--
मध्यप्रदेश वित्त निगम	इंदौर	1955
मध्यप्रदेश खनिज विकास निगम	भोपाल	1962
मध्य प्रदेश माइनिंग कॉर्पोरेशन	भोपाल	1969
मध्य प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड	भोपाल	1979
मध्य प्रदेश लैम्प्स लिमिटेड	विदिशा	--
मध्य प्रदेश विद्युत यंत्र लिमिटेड	जबलपुर	--
मध्यप्रदेश इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड	भोपाल	2004

➤ **औद्योगिक विकास केंद्र** - मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम द्वारा इंदौर, जबलपुर, रीवा एवं ग्वालियर में चार औद्योगिक केंद्रों की घोषणा की गई।

- इसी तारतम्य में बाद में राज्य शासन ने निम्न औद्योगिक विकास केंद्रों की स्थापना की है - 1. पीथमपुर, धार, 2. पीलू खेड़ी, राजगढ़, 3. बानमोर, मुरैना, 4. मनेरी, मंडला, 5. हरदा, 6. पुरैना, पन्ना, 7. अमाना, दमोह, 8. चंद्रपुरा, छतरपुर, 9. जावरा, रतलाम, 10. चैनपुरा, गुना, 11. बगसपुरा, नरसिंहपुर, 12. बैढन, सिंगरौली, 13. बडेरा, दतिया, 14. मंडीदीप, रायसेन, 15. देवास, 16. मक्सी, शाजापुर, 17. किरनापुर, बालाघाट, 18. उद्योग विहार, रीवा, 19. मालनपुर, भिंड, 20. बंडोल, सिवनी, 21. बोरेगांव, छिंदवाड़ा, 22. सिद्धगांव, सागर, 23. मेघनगर, झाबुआ, 24. बूढोंहरा, शिवपुरी, 25. प्रतापपुरा, टीकमगढ़, 26. विदिशा

● **केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत राज्य के औद्योगिक विकास केंद्र (06)**

- 1. पीथमपुर - धार, 2. पुरैना - पन्ना,
- 3. मालनपुर - भिंड, 4. मेघनगर - झाबुआ,
- 5. मनेरी - मंडला, 6. पीलूखेड़ी - राजगढ़

मध्य प्रदेश में स्थापित/प्रस्तावित विशेष आर्थिक प्रक्षेत्र (स्पेशल इकोनॉमिक जोन/SEZ)

- प्रदेश में आकर्षित हो रहे पूंजी निवेश प्रस्तावों की आवश्यकता अनुसार विकसित अधोसंरचना की आवश्यकता है SEZ वस्तुतः फॉरेन टेरिटरी के रूप में विकसित किए गए हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है -

SEZ का प्रकार	विकासकर्ता एजेंसी	प्रस्तावित स्थल	वर्तमान स्थिति
मल्टी प्रोडक्ट SEZ, ग्वालियर	औद्योगिक केंद्र विकास निगम, ग्वालियर	ग्वालियर	बोर्ड ऑफ अप्रूवल, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त
क्रिस्टल आईटी पार्क, इंदौर	औद्योगिक केंद्र विकास निगम, इंदौर	इंदौर	बोर्ड ऑफ अप्रूवल, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार से IT SEZ हेतु अधिसूचित
मल्टी प्रोडक्ट SEZ, इंदौर	औद्योगिक केंद्र विकास निगम, इंदौर	धार	प्रदेश का पहला ग्रीन फील्ड SEZ जो कार्यरत है।



IT/ ITSE, SEZ इंदौर	पार्श्वनाथ डेवलपर्स लिमिटेड, नई दिल्ली	इंदौर	बोर्ड ऑफ अप्रूवल, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त
IT/ ITSE, SEZ इंदौर	मेडिकेप्स लिमिटेड, इंदौर	इंदौर	बोर्ड ऑफ अप्रूवल, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त
प्रोडक्ट स्पेसिफिक (एलुमिनियम) SEZ, सीधी	हिंडालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मुंबई	सीधी	बोर्ड ऑफ अप्रूवल, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार से सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त
मिनरल एंड मिनरल बेस्ड	---	हरगढ़ (जबलपुर)	---

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा औद्योगिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश के तेज गति से औद्योगिक विकास के लिए प्रति 2 वर्ष में आयोजित किए जाते हैं।
- शुरुआत 2007 में इंदौर से की गई थी, जिसका आयोजन कर्ता भारतीय उद्योग परिसंघ था।
- इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन मैग्नीफिसेंट एमपी फरवरी 2019 में इंदौर में किया गया।

मध्य प्रदेश के भौगोलिक संकेतक

धातु शिल्प एवं बर्तन	दतिया, टीकमगढ़
रतलामी सेव	रतलाम
चमड़े के खिलौने	इंदौर
महेश्वर साड़ी	महेश्वर खरगोन
चंदेरी साड़ी	अशोक अशोक नगर
बाघ प्रिंट	धार
कड़कनाथ मुर्गा	झाबुआ (अगस्त 2018)

मध्यप्रदेश में औद्योगिक नीति

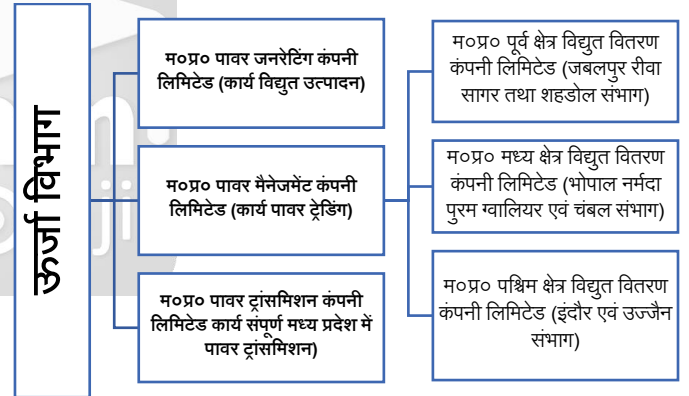
- मध्यप्रदेश में पहली औद्योगिक नीति 1972 में घोषित की गई थी तथा नवीन औद्योगिक नीति 2010 में घोषित की गई थी, वर्तमान में 2014 में नवीन औद्योगिक संवर्धन नीति लागू की गई है।
- एकीकृत अधोसंरचना योजना अंतर्गत स्वीकृत विकास केंद्र - 1. नार्दन टोला सतना, 2. नौगांव सागर, 3. लंबतरा कटनी, 4. निमरानी खरगोन, 5. जग्गा खेड़ी मंदसौर में है।
- दिल्ली मुंबई औद्योगिक गलियारे से संबंधित मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र के उद्योगों में निवेश के लिए निम्न स्थानों पर विश्व स्तरीय आधारभूत संरचना का विकास किया जा रहा है - 1. पीथमपुर-धार- महु, 2. रतलाम - नागदा, 3. शाजापुर - देवास, 4. नीमच - नयागांव

कन्फ्यूजन पैदा करने वाले प्रमुख तथ्य

- डेयरी फार्म - बाबई होशंगाबाद

- डेयरी स्टेट - खमरिया ग्राम जबलपुर
- डेरी स्टेट - ऐसा स्थान जहां पर पशुपालन की नई वैज्ञानिक पद्धति से डेरी लगाने के लिए जगह और सुविधा दी जाती है। यहां पर बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, गोबर और गंदे पानी की निकासी के साथ पशुओं के इलाज की सुविधा दी जाती है।
- राज्य का सबसे बड़ा यंत्रीकरण प्रक्षेत्र - बाबई होशंगाबाद
- मध्यप्रदेश में तकनीकी परिसर - राघोगढ़ गुना जिला
- निर्यात संवर्धन पार्क पीथमपुर इंदौर
- निर्यात उर्वरक औद्योगिक पार्क देवास
- जेम्स एंड ज्वैलरी पार्क इंदौर
- गोल्ड एक्सपोर्ट प्रमोशन पार्क इंदौर
- डायमंड पार्क प्रस्तावित इंदौर
- अपैरल पार्क इंदौर
- रत्न परिष्करण केंद्र जबलपुर
- मध्य प्रदेश सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग विकास नीति 1 अप्रैल 2018 से लागू की गई।
- इजरायल की सहायता से लघु शस्त्र इकाई भिंड में स्थापित की गई है।

- किसी भी देश के विकास आर्थिक क्रियाकलापों एवं जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार लाने के लिए उनको ऊर्जा एक सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।
- मध्य प्रदेश में विभिन्न स्रोतों से कुल उपलब्ध विद्युत क्षमता 18660 मेगावाट (नव. 2018) है।
- मध्यप्रदेश में विद्युत उपभोक्ताओं में सर्वाधिक संख्या सिंचाई हेतु कृषक उपभोक्ताओं की है।
- मध्य प्रदेश एकमात्र ऐसा राज्य है जिसने आकलन के विद्युत संयोजन के सभी पांच मापदंडों पर पूरे अंक प्राप्त किए हैं।
- मध्य प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्र को 24 घंटे, जून 2013 से सभी गैर कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे एवं कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे विद्युत प्रदाय किया जा रहा है।
- वर्ष 2017-18 में विद्युत उपभोग के अंतर्गत सर्वाधिक विद्युत उपभोग 39.7% कृषि क्षेत्र में किया गया इसी अवधि में औद्योगिक उत्पादन हेतु विद्युत का उपभोग 24.2% रहा है।
- मध्य प्रदेश में सबसे पहले विद्युत का उत्पादन ग्वालियर में वर्ष 1905 में 240 किलोवाट की स्टीम टरबाइन से प्रारंभ किया गया है।
- मध्यप्रदेश में ऊर्जा स्रोतों के विकास के लिए 25 अगस्त 1982 में मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम एवं नवीन तथा अक्षय ऊर्जा विभाग की स्थापना की है।
- 10 दिसंबर 1948 को विद्युत प्रदाय अधिनियम मध्य प्रदेश में लागू किया गया तथा 1 दिसंबर 1950 को विद्युत मंडल का गठन किया है।
- वर्तमान में मध्य प्रदेश विद्युत बोर्ड का मुख्यालय जबलपुर में है
- मध्य प्रदेश में विद्युत वितरण को नियंत्रित करने तथा मध्य प्रदेश सरकार को विद्युत शुल्क की दरों पर परामर्श देने के लिए राज्य विद्युत नियामक आयोग की स्थापना 1998 में की गई है।
- विद्युत क्षेत्र के प्रभावी प्रबंधन के लिए मध्य प्रदेश राज्य विद्युत मंडल के का पुनर्गठन किया गया तथा उत्पादन, पारषण एवं विद्युत वितरण के लिए विद्युत कंपनियों का गठन जुलाई 2002 में किया है।
- सभी विद्युत वितरण कंपनियां (मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी, मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी, मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी एवं मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी) 1 जून 2005 से पूर्ण स्वशासी हो गई है।
- विद्युत के थोक व्यापार के लिए जून 2006 में पावर ट्रेडिंग कंपनी गठित की गई, जिसका मूल कार्य तीनों वितरण कंपनियों के लिए विद्युत की व्यवस्था करना है। 10 अप्रैल 2012 को इसका नाम परिवर्तित कर मध्य प्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी कर दिया है।
- मध्य प्रदेश राज्य विद्युत मंडल का पावर मैनेजमेंट कंपनी में 26 अप्रैल 2012 को विलय कर दिया है।
- वर्तमान में ऊर्जा विभाग के अधीन इन कंपनियों की संरचना निम्नानुसार है -



- प्रदेश के विद्युत उत्पादन केंद्र इस प्रकार हैं - 1. तापीय विद्युत गृह, 2. जल विद्युत गृह, परमाणु ऊर्जा

तापीय विद्युत परियोजनाएं

- जीवाश्म ईंधन जैसे पेट्रोलियम, कोयला आदि से प्राप्त ऊर्जा तापीय ऊर्जा कहलाती है।

ताप विद्युत परियोजना	स्थान	स्थापना	विद्युत क्षमता	विशेषता
चांदनी ताप विद्युत परियोजना	नेपानगर, बुरहानपुर	1953	प्रारंभिक उत्पादन क्षमता 17 मेगावाट वर्तमान 177 मेगावाट,	मध्य प्रदेश का प्रथम ताप विद्युत केंद्र, नेपानगर नेशनल न्यूज प्रिंट कारखाने को विद्युत आपूर्ति, कोयला पाथरखेड़ा कोयला क्षेत्र एवं नेशनल कोलफील्ड लिमिटेड नागपुर द्वारा, जलापूर्ति सुक्ता नदी द्वारा
अमरकंटक ताप विद्युत परियोजना	चचाई, अनूपपुर	1965	210 मेगावाट	कोयला आपूर्ति सुहागपुर कोयला क्षेत्र से, जलापूर्ति चचाई बांध सोन नदी से
जबलपुर ताप विद्युत परियोजना	जबलपुर	1960	15 मेगावाट	कोयला क्षेत्र जबलपुर के आसपास से जलापूर्ति नर्मदा नदी से, मध्य प्रदेश विद्युत मंडल का एकमात्र उपक्रम

पेच ताप विद्युत परियोजना	छिंदवाड़ा	2012	1320 मेगावाट (वर्तमान में 420 मेगावाट)	कोयला आपूर्ति पेच घाटी कोयला क्षेत्र से जल की आपूर्ति पेच नदी पर निर्मित बांध से
संजय गांधी ताप विद्युत परियोजना	बिरसिंहपुर, उमरिया	1993	1340 मेगा वाट	कोयला आपूर्ति जोहिला कोयला क्षेत्र जलापूर्ति जोहिला नदी पर निर्मित बांध से
सतपुड़ा ताप विद्युत परियोजना	सारणी, बैतूल	1967	1330 मेगावाट	मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना संयुक्त राज्य अमेरिका के वित्तीय सहयोग से स्थापित, कोयला पाथरखेड़ा कोयला क्षेत्र एवं नेशनल कोलफील्ड लिमिटेड नागपुर द्वारा, जलापूर्ति तवा नदी द्वारा
विंध्याचल ताप विद्युत परियोजना	बैदण सिंगरौली	1987	2260 मेगावाट	पूर्व सोवियत संघ के वित्तीय सहयोग से निर्मित राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम द्वारा संचालित मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा विद्युत गृह पांच राज्यों (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात तथा गोवा) एवं 1 केंद्र शासित (प्रदेश दमनदीव) को विद्युत आपूर्ति
श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना	डोंगलिया गांव खंडवा	2014	1200 मेगावाट	कोयला आपूर्ति चुटकुला कोयला क्षेत्र जलापूर्ति नर्मदा एवं सूक्ता नदी से
झाबुआ ताप विद्युत परियोजना	सिवनी	2016	600 मेगावाट	भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) द्वारा स्थापित की गयी है।
सासन अल्ट्रा मेगा पावर प्रोजेक्ट	सासन गांव सिंगरौली	निर्माणाधीन	4000 मेगावाट	स्थापना रिलायंस पावर की सहायता से की जा रही है।
बुंदेलखंड सुपर ताप विद्युत परियोजना	बरेठी गांव छतरपुर	निर्माणाधीन	2640 मेगावाट	स्थापना के बाद सबसे बड़ी ताप विद्युत परियोजना होगी। पर्यावरण मित्र सुपरक्रिटिकल टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल होगा। 50% विद्युत उत्पादन मध्य प्रदेश को मिलेगा।
गाडरवारा सुपर ताप विद्युत परियोजना	नरसिंहपुर	निर्माणाधीन	16 मेगावाट	कोयला आपूर्ति तलईपल्ली कोल माइन से जलापूर्ति नर्मदा नदी से

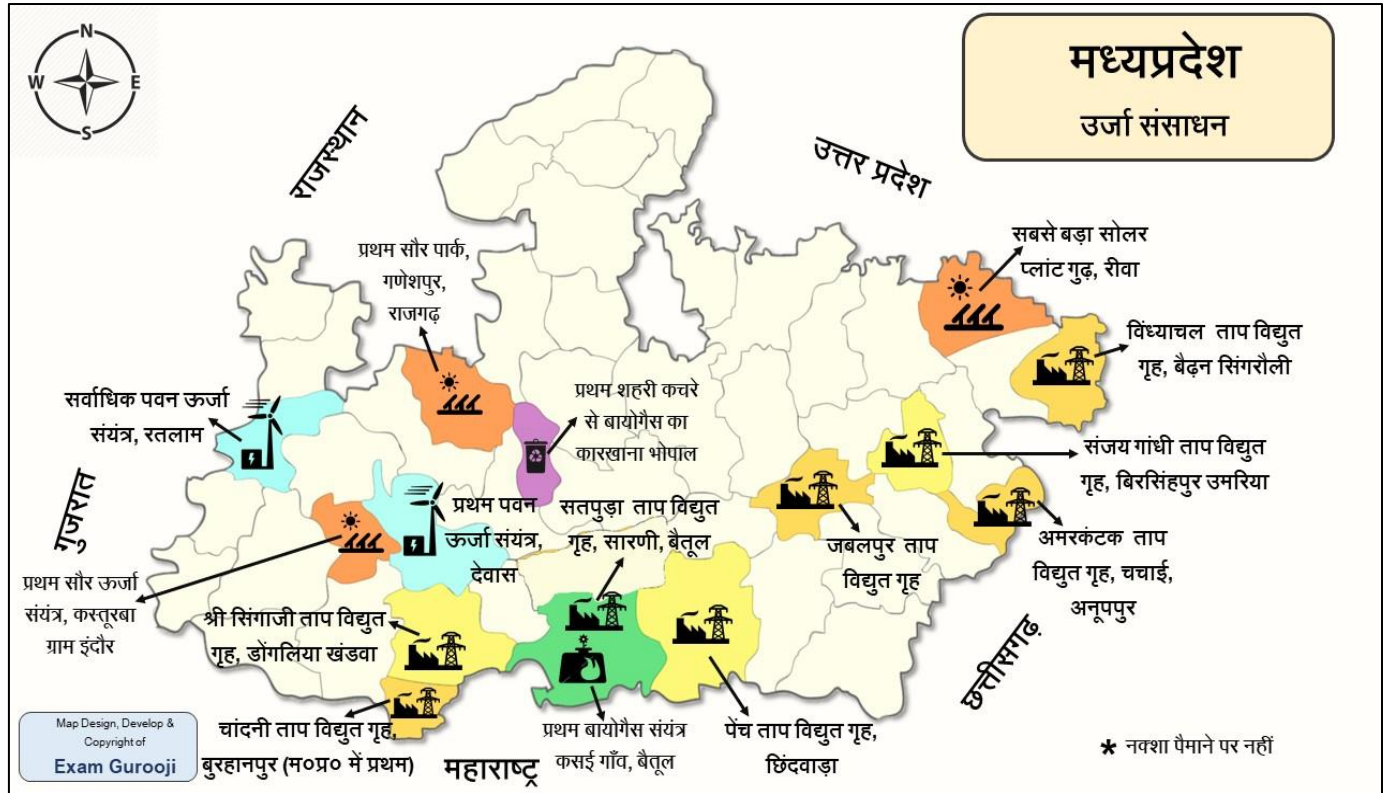
- गैस पाइपलाइन आधारित विद्युत केंद्र की स्थापना रिलायंस इंडस्ट्रीज द्वारा शहडोल जिले में की गई है।
- गुना जिले के विजयपुर में 380 मेगावाट की गैस आधारित विद्युत केंद्र की स्थापना गेल इंडिया लिमिटेड द्वारा की गई है।

जल विद्युत परियोजनाएं

- जल से उत्पन्न (Hydroelectric) जल से प्राप्त की गई विद्युतशक्ति को जलविद्युत् कहते हैं। ऊर्जा का एक नवीकरण योग्य स्रोत है।

जल विद्युत परियोजना	नदी एवं स्थान	स्थापना	विद्युत क्षमता	विशेषता
गांधी सागर	चंबल नदी, पर मंदसौर जिले के भानपुरा तहसील	1960	115 मेगा वाट	मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना है। मध्य प्रदेश का 50% हिस्सा
राणा प्रताप सागर	चंबल नदी, रावतभाटा चित्तौड़गढ़ राजस्थान	1964	172 मेगावाट	मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना है। मध्य प्रदेश का 50% हिस्सा
जवाहर सागर	चंबल नदी, कोटा राजस्थान	1971	99 मेगा वाट	मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना है। मध्य प्रदेश का 50% हिस्सा
पेच	पेच नदी, पेज जिला नागपुर	1986	160 मेगावाट	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना

बरगी	बरगी जिला जबलपुर	1990	90 मेगावाट	
टोंस	टोंस नदी, जिला रीवा	1990	315 मेगावाट	
बाणसागर	सोन नदी, देवलोन (शहडोल), सिलपारा (रीवा), झिन्ना (सतना)	1994-95	60+30+90 = 110 मेगावाट	
मडीखेड़ा	सिंध नदी, शिवपुरी	2008 से विद्युत उत्पादन	60 मेगावाट	
बिरसिंहपुर	जोहिला नदी, बिरसिंहपुर जिला उमरिया		20 मेगावाट	
राजघाट	बेतवा नदी, अशोक नगर		45 मेगावाट	
महेश्वर	नर्मदा नदी, महेश्वर खरगोन	1994	450 मेगावाट	
ओकारेश्वर	नर्मदा नदी, पुनासा खंडवा	2007	520 मेगावाट	
इंदिरा सागर	नर्मदा नदी, खंडवा	2007 से विद्युत उत्पादन	1000 मेगावाट	
सीतारेवा	सीतारेवा नदी, छिंदवाड़ा	2009	15 मेगावाट	मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना है।



परमाणु ऊर्जा

- **चुटका परमाणु विद्युत संयंत्र** - मंडला जिले के चुटका गाँव में निर्माणाधीन है। यह 1,200 एकड़ (490 हे०) क्षेत्रफल में फैला होगा। जिसकी क्षमता 1400 मेगावाट होगी।
- **भीमपुर परमाणु ऊर्जा संयंत्र** - मध्य प्रदेश का दूसरा परमाणु ऊर्जा संयंत्र भीमपुर गांव शिवपुरी जिले में प्रस्तावित है, जिसकी उत्पादन क्षमता 2800 मेगावाट होगी।

गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत

- ऐसे नवीकरणीय स्रोत जो प्रदूषण रहित और पर्यावरण अनुकूल होते हैं तथा कभी न समाप्त होने वाले ऊर्जा के स्रोत होते हैं गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत कहलाते हैं।
- गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा का उत्पादन 3502 मेगा वाट है।

सौर ऊर्जा

- मध्य प्रदेश का सौर ऊर्जा उत्पादन में देश में चौथा स्थान है।
- 2017 तक मध्य प्रदेश की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता 2497.79 मेगावाट थी।



- देश का पहला सौर ऊर्जा संयंत्र इंदौर के कस्तूरबा ग्राम में स्थापित किया गया है।
- इंदौर का देवी अहिल्याबाई होलकर हवाई अड्डा मध्य प्रदेश का पहला सौर ऊर्जा द्वारा संचालित हवाई अड्डा है।
- मध्य प्रदेश की नवीन सौर ऊर्जा नीति 10 जुलाई 2012 को लागू की गई।
- रीवा जिले की गुढ़ तहसील में विश्व बैंक की सहायता से दुनिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र (750 मेगावाट) स्थापित किया गया है।
- देश का प्रथम सौर पार्क गणेशपुर राजगढ़ में स्थापित किया गया है।
- देश का सौर ऊर्जा से पानी गर्म करने का सबसे बड़ा संयंत्र सांची दुग्ध संघ भोपाल में स्थापित किया गया है।
- देश का पहला सौर ऊर्जा से संचालित टेलीफोन एक्सचेंज शिवपुरी जिले में है।

पवन ऊर्जा

- मध्य प्रदेश की कुल पवन ऊर्जा उत्पादन क्षमता 2931 मेगावाट है, जिसमें से वर्तमान में 920 मेगावाट के पवन ऊर्जा संयंत्र स्थापित है। पवन ऊर्जा उत्पादन में मध्यप्रदेश का देश में पांचवा स्थान है।

- मध्यप्रदेश में सर्वप्रथम 1995 में देवास जिले में जामगोदरानी पहाड़ी पर 64 पवन चक्कियां लगाई गई थी, जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 15 मेगावाट है।
- मध्य प्रदेश के सबसे ज्यादा पवन ऊर्जा संयंत्र रतलाम जिले में है एवं सबसे बड़ा पवन ऊर्जा संयंत्र (100 मेगावाट) मामटखेड़ा रतलाम में स्थापित किया गया है।

बायोमास

- बायोमास ऊर्जा कृषि, उद्योग तथा शहरों से निकलने वाले अवशिष्टों को संशोधित कर मिलने वाली वैकल्पिक ऊर्जा है। जैसे गन्ने की खोई, धान की भूसी, अनुपयोगी लकड़ी आदि।
- मध्यप्रदेश में बायोमास पर आधारित संयंत्रों की कुल उत्पादन क्षमता 45.336 मेगावाट है।
- मध्य प्रदेश में पहला बायोगैस संयंत्र बैतूल जिले के कसई गाँव में स्थापित किया गया है।
- मध्यप्रदेश में धार जिले के खेड़ा में धान की भूसी पर आधारित बायोगैस संयंत्र लगाया गया है।
- मध्यप्रदेश में शहर के कचरे से बायोगैस बनाने का पहला कारखाना भोपाल में तथा दूसरा इंदौर में स्थापित किया गया है।
- सितम्बर 2018 में ONGC को मध्य प्रदेश के विंध्य बेसिन ब्लॉक में गैस भंडार मिला है। यह खोज 3,000 मीटर से अधिक पर हुई है।

ऊर्जा से संबंधित प्रमुख योजनाएं

योजना	प्रारंभ	उद्देश्य
मुख्यमंत्री स्थाई कृषि पंप कनेक्शन योजना	सितंबर 2016	5 लाख स्थाई पंप कनेक्शन प्रदान करना जिसे 2019 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है।
फ्लैट रेट योजना	1 अप्रैल 2013	कृषि उपभोक्ताओं के लिए फ्लैट रेट आधारित बिलिंग योजना जिसके अंतर्गत किसानों को वर्ष में दो बार छह माही किस्तों में 1400 रुपए प्रति हॉर्स वार्षिक पावर बिजली बिल का भुगतान करना होगा।
संबल योजना	3 जुलाई 2018	गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को प्रतिमाह ₹200 की लागत से बिजली प्रदान करना
सौभाग्य योजना	22 दिसंबर 2017	गरीबी रेखा से ऊपर जीवन यापन करने वाले परिवारों को ₹500 में विद्युत कनेक्शन
उजाला योजना	30 अप्रैल 2016	9 वाट क्षमता के एलइडी बल्ब का वितरण
स्वयं का ट्रांसफार्मर लगाने की योजना	4 मई 2011	किसान स्वयं के व्यय से निर्धारित मापदंड के अनुसार ट्रांसफार्मर स्थापित कर सकते हैं
फीडर विभक्ति किरण योजना	---	ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं घरेलू उपभोक्ताओं को प्रथक प्रथक फीडर कर कृषि के लिए 10 घंटे और घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे विद्युत की आपूर्ति के लिए
दीनबंधु योजना	30 जून 2013	बकाया बिल की सरचार्ज राशि वितरण कंपनियों द्वारा एवं शेष राशि राज्य शासन द्वारा वहन करना
आभा विद्युत मित्र योजना	---	मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा योजना को रायसेन, विदिशा और राजगढ़ जिले के 10 गांव में प्रयोग के तौर पर शुरू किया गया जिसमें महिला सशक्तिकरण पर बल दिया जा रहा है।

किसान समृद्धि योजना	28 फरवरी 2013	कृषि उपभोक्ताओं पर बिजली बिलों की बकाया राशि के निराकरण के लिए
सरल बिजली योजना	1 जुलाई 2018	श्रम विभाग में पंजीकृत श्रमिकों को निशुल्क बिजली कनेक्शन प्रदान करना
संबल योजना	3 जुलाई 2018	गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को ₹200 प्रति माह में बिजली उपलब्ध कराने हेतु
इंदिरा किसान ज्योति योजना	7 फरवरी 2019 से प्रारंभ 1 अप्रैल 2019 से लागू	किसानों को ₹7000 प्रति हॉर्स पावर प्रतिवर्ष की दर से विद्युत प्रदाय करना
इंदिरा गृह ज्योति योजना	7 फरवरी 2019 से प्रारंभ 25 फरवरी 2019 से लागू	घरेलू उपभोक्ताओं को 100 यूनिट बिजली खपत पर ₹100 बिल



❖ 2011 की जनगणना

- प्रारंभ - 1 अप्रैल 2010 से
- ध्येय वाक्य - हमारी जनगणना हमारा भविष्य
- शुभंकर - प्रगणक शिक्षिका
- जनगणना का प्रतीक चिन्ह बनाने का श्रेय - पदारबिंदा रथ
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार देश की जनगणना कराने का दायित्व केंद्र सरकार को सौंपा गया है।
- भारत में जनसंख्या संगठन केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधीन कार्यरत है, जिसका उच्चतम अधिकारी भारत का महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त होता है।
- भारत के प्रथम जनगणना आयुक्त - डब्ल्यू डब्ल्यू प्लोडेन
- भारत में प्रथम जनगणना 21 फरवरी 1872 में लॉर्ड मेयो के निर्देशन में हुई थी, जिन्हें भारत में जनगणना का जनक माना जाता है।
- भारत में क्रमबद्ध जनगणना गवर्नर जनरल लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में 17 फरवरी 1881 से प्रारंभ हुई थी, इसके पश्चात प्रत्येक 10 वर्ष के पश्चात जनगणना होती है।
- भारत की स्वतंत्रता के समय जनगणना आयुक्त - आर. ए. गोपाल स्वामी
- 2011 की जनगणना के समय जनगणना आयुक्त - सी. चंद्रमौली
- वर्तमान में जनगणना आयुक्त - श्री शैलेश
- 2011 की जनगणना भारत की 15वीं और स्वतंत्र भारत की 7वीं जनगणना है।
- 2001 की जनगणना में 593 जिले सम्मिलित किए गए थे जबकि 2011 की जनगणना में 640 जिले सम्मिलित किए गए हैं।



- भारत में 1952 में राष्ट्रीय परिवार कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था।
 - राष्ट्रीय परिवार कल्याण योजना का प्रारंभ 1978 में किया गया था।
 - राष्ट्रीय सामाजिक जनसांख्यिकीय लक्ष्यों का शुभारंभ 2010 में किया गया था।
 - राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के अनुसार वर्ष 2045 तक जनसंख्या स्थिरता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है।
 - विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाया जाता है तथा मध्य प्रदेश में जनसंख्या नियंत्रण दिवस 11 मई को मनाया जाता है।
- ## ❖ विश्व जनगणना का इतिहास
- विश्व में सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप से जनगणना कराने वाला देश - स्वीडन 1749
 - सर्वप्रथम दशकीय जनगणना कराने वाला देश - अमेरिका 1790
 - मध्य प्रदेश की जनगणना
 - मध्य प्रदेश की प्रथम जनगणना 1961 में हुई थी, 2011 की जनगणना मध्य प्रदेश की 6वीं जनगणना थी।

प्रमुख परिभाषायें

- जनसंख्या घनत्व - किसी देश या क्षेत्र में प्रति वर्ग किमी. में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या
- लिंगानुपात - प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या
- शिशु लिंगानुपात - 0 से 6 आयु समूह के प्रति 1000 बालकों की तुलना में उसी आयु समूह की बालिकाओं की संख्या
- दशकीय वृद्धि दर - 10 वर्षों के मध्य जनसंख्या में हुई प्रतिशत वृद्धि
- साक्षरता दर - 7 वर्ष या उससे अधिक आयु के कुल जनसंख्या में साक्षरों का प्रतिशत
- साक्षर - 7 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भाषा को समझ सकता हो एवं उसे लिख व पढ़ सकता हो

म. प्र. एवं भारत की जनगणना का तुलनात्मक अध्ययन

मध्य प्रदेश की जनगणना	भारत की जनगणना
जनसंख्या - 7,26,26,809 (भारत की कुल जनसंख्या का 6%)	जनसंख्या - 1,21,08,54,977 (विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5%)
पुरुष - 3.76 करोड़ (51.70%)	पुरुष - 62.32 करोड़ (51.47%)
महिला - 3.50 करोड़ (48.50%)	महिला - 58.75 करोड़ (48.53 %)
मध्य प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार एवं पश्चिम बंगाल के बाद पांचवें स्थान पर	भारत जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरे स्थान पर
सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले - इंदौर, जबलपुर, सागर, भोपाल, रीवा सर्वाधिक जनसंख्या वाले संभाग - इंदौर, जबलपुर, उज्जैन	सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य - उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश

न्यूनतम जनसंख्या वाले जिले - निवाड़ी (4,04,807), हरदा (5,70,465), आगर मालवा (5,71,728), उमरिया, शिवपुरी न्यूनतम जनसंख्या वाले संभाग - शहडोल, नर्मदापुरम, चंबल	सबसे कम जनसंख्या वाले राज्य -सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, गोवा
सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले जिले - छिंदवाड़ा, सागर, शिवपुरी, बैतूल सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले संभाग - जबलपुर, इंदौर, सागर	सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले राज्य - राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश
न्यूनतम क्षेत्रफल वाले जिले - निवाड़ी (1321.29 वर्ग किमी), भोपाल (2772 वर्ग किमी), आगर मालवा (2785 वर्ग किमी), दतिया (2902 वर्ग किमी) न्यूनतम क्षेत्रफल वाले संभाग - शहडोल, नर्मदापुरम, चंबल	सबसे कम क्षेत्रफल वाले राज्य - गोवा, सिक्किम, त्रिपुरा
लिंगानुपात	
मध्य प्रदेश का लिंगानुपात - 931	भारत का लिंगानुपात - 943
सर्वाधिक लिंगानुपात वाले जिले - बालाघाट (1021), अलीराजपुर, मंडला, डिंडोरी सर्वाधिक लिंगानुपात वाले संभाग - जबलपुर, इंदौर, शहडोल	सर्वाधिक लिंगानुपात वाले राज्य - केरल (1085), तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, मणिपुर
सबसे कम लिंगानुपात वाले जिले - भिंड (837), मुरैना, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी न्यूनतम लिंगानुपात वाले संभाग - चंबल, ग्वालियर, सागर सर्वाधिक ग्रामीण लिंगानुपात वाला जिला - अलीराजपुर न्यूनतम ग्रामीण लिंगानुपात वाला जिला - भिंड सर्वाधिक शहरी लिंगानुपात वाला जिला - बालाघाट न्यूनतम शहरी लिंगानुपात वाला जिला - मुरैना	सबसे कम लिंगानुपात वाले राज्य - हरियाणा (879), जम्मू कश्मीर, सिक्किम, पंजाब
शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) - 918 ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - 930 शहरी शिशु लिंगानुपात - 901	शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) - 918
सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात वाले जिले - अलीराजपुर (978), मंडला/ डिंडोरी, बालाघाट, बैतूल	सर्वाधिक लिंगानुपात वाले राज्य - अरुणाचल प्रदेश (972), मिजोरम, मेघालय, छत्तीसगढ़
सबसे कम शिशु लिंगानुपात वाले जिले - मुरैना (829), ग्वालियर, भिंड, दतिया सर्वाधिक ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - अलीराजपुर न्यूनतम ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - मुरैना सर्वाधिक शहरी शिशु लिंगानुपात - डिंडोरी न्यूनतम शहरी शिशु लिंगानुपात - मुरैना	सबसे कम लिंगानुपात वाले राज्य - हरियाणा (834), पंजाब, जम्मू कश्मीर, राजस्थान
जन घनत्व	
मध्य प्रदेश का जनसंख्या घनत्व - 236 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी	भारत का जनसंख्या घनत्व - 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
सर्वाधिक जनघनत्व वाले जिले - भोपाल (855), इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर सर्वाधिक जनघनत्व वाले संभाग - भोपाल, इंदौर, चंबल	सर्वाधिक जनघनत्व वाले राज्य - बिहार (1106), पश्चिम बंगाल
न्यूनतम जन घनत्व वाले जिले - डिंडोरी (94), श्योपुर, पन्ना, बैतूल/रायसेन/सिवनी न्यूनतम घनत्व वाले संभाग - नर्मदापुरम, शहडोल, सागर	न्यूनतम जनघनत्व वाला राज्य - अरुणाचल प्रदेश (17), मिजोरम, सिक्किम, मणिपुर
साक्षरता	
मध्य प्रदेश की साक्षरता - 42,851,169 (69.32%)	भारत की साक्षरता - 73%
पुरुष साक्षरता - 25,174,328 (78.73%)	पुरुष साक्षरता - 80.9%
महिला साक्षरता - 17,676,841 (59.24%)	महिला साक्षरता - 64.6%
सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत वाले जिले - जबलपुर (81.1%), इंदौर, भोपाल, बालाघाट	सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत वाले राज्य - केरल, मिजोरम, गोवा, त्रिपुरा

सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत वाले संभाग - जबलपुर, नर्मदापुरम, भोपाल	
न्यूनतम साक्षरता प्रतिशत वाले जिले - अलीराजपुर (32.1%), झाबुआ, बड़वानी, धार	न्यूनतम साक्षरता प्रतिशत वाले राज्य - बिहार, अरुणाचल प्रदेश, राजस्थान, झारखंड
न्यूनतम साक्षरता वाले संभाग - इंदौर, शहडोल, रीवा	
सर्वाधिक पुरुष साक्षरता - इंदौर	सर्वाधिक पुरुष साक्षरता - केरल
सर्वाधिक महिला साक्षरता - भोपाल	सर्वाधिक महिला साक्षरता - केरल
न्यूनतम पुरुष साक्षरता - अलीराजपुर	न्यूनतम पुरुष साक्षरता - बिहार
न्यूनतम महिला साक्षरता - अलीराजपुर	न्यूनतम महिला साक्षरता - बिहार
सर्वाधिक ग्रामीण साक्षरता - बालाघाट	सर्वाधिक ग्रामीण साक्षरता - केरल
न्यूनतम ग्रामीण साक्षरता - अलीराजपुर	
जनसंख्या वृद्धि दर	
मध्य प्रदेश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर - 20.3%	भारत की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर - 17.7%
सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले - इंदौर, झाबुआ, भोपाल, सिंगरौली	सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाले राज्य - मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, जम्मू कश्मीर
सबसे कम जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले - अनूपपुर, बैतूल, छिंदवाड़ा, मंदसौर	सबसे कम जनसंख्या वृद्धि दर वाला राज्य - नागालैंड (-0.6%), केरल, गोवा, आंध्र प्रदेश
सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर वाला जिला - झाबुआ	
न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर वाला जिला - मंदसौर/ नरसिंहपुर	
सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वृद्धि दर वाला जिला - रायसेन	
न्यूनतम शहरी जनसंख्या वृद्धि दर वाला जिला - अनूपपुर	
शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या	
मध्यप्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या - 52,557,404 (72.37%)	भारत में ग्रामीण जनसंख्या - 68.8%
मध्यप्रदेश में नगरीय जनसंख्या - 20,069,405 (27.63%)	भारत में नगरीय जनसंख्या - 31.2%
सर्वाधिक नगरीय तथा न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर	सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाले राज्य - महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल
सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या व न्यूनतम नगरीय जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - डिंडोरी, अलीराजपुर, सीधी, झाबुआ	न्यूनतम नगरीय जनसंख्या वाले राज्य - सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम
	सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या व न्यूनतम नगरीय जनसंख्या प्रतिशत वाले - गोवा, मिजोरम
	सर्वाधिक नगरीय तथा न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - हिमाचल प्रदेश, बिहार
अनुसूचित जाति	
अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या - 11,342,320 (15.6%)	अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या - 201,378,372 (16.6%)
सर्वाधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाले जिले - इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना	सर्वाधिक अनुसूचित जाति जनसंख्या वाले राज्य - उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, तमिलनाडु (नोट - नागालैंड व अरुणाचल प्रदेश में कोई भी अनुसूचित जाति नहीं है।)
न्यूनतम अनुसूचित जाति जनसंख्या वाले जिले - झाबुआ, अलीराजपुर, डिंडोरी, छिंदवाड़ा	न्यूनतम अनुसूचित जाति जनसंख्या वाले राज्य - मिजोरम (1218), मेघालय, गोवा, सिक्किम
सर्वाधिक अनुसूचित जाति प्रतिशत वाले जिले - उज्जैन, दतिया, टीकमगढ़, शाजापुर	सर्वाधिक अनुसूचित जाति प्रतिशत वाले राज्य - पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश
न्यूनतम अनुसूचित जाति प्रतिशत वाले जिले - झाबुआ, अलीराजपुर, मंडला, डिंडोरी	
अनुसूचित जनजाति	

जनसंख्या - 15,316,784 (21.1%)	जनसंख्या - 104,545,716 (8.6%)
सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले जिले - धार, बड़वानी, झाबुआ, छिंदवाड़ा	सर्वाधिक अनुसूचित जाति जनसंख्या वाले राज्य - मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान
सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - अलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी, डिंडोरी	सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - मिजोरम, नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश
न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले जिले - भिंड, दतिया, मुरैना, मंदसौर	न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वाले राज्य - गोवा, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश
न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले - भिंड, मुरैना, दतिया	न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या प्रतिशत वाले राज्य - उत्तर प्रदेश



विधायिका

- राज्य विधानमंडल में एक ही सदन विधानसभा है। यद्यपि विधानपरिषद की स्थापना का प्रस्ताव विधानसभा ने पारित किया था लेकिन कभी भी संसद को प्रेषित नहीं किया गया अतएव विधानपरिषद कभी अस्तित्व में नहीं आयी। ऐसा करने वाला मध्य प्रदेश भारत का पहला राज्य है।

❖ विधानसभा भवन

- विधानसभा का भवन का नाम "इंदिरा गांधी विधान भवन" है, जिसके वास्तुकार चार्ल्स कोरिया है। इसके पूर्व विधानसभा मिन्टो हाल में लगती थी।
- इस नए भवन का उद्घाटन दिनांक 3 अगस्त, 1996 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के द्वारा किया गया था।
- भवन को 6 सेक्टरों में बांटा गया है।

मध्यप्रदेश में विधानसभा/लोकसभा/राज्यसभा की सीटें

विधानसभा	लोकसभा	राज्यसभा
230+1	29	11
अनुसूचित जाति - 35	अनुसूचित जाति - 4 (उज्जैन, भिंड, टीकमगढ़, देवास-शाजापुर)	
अनुसूचित जनजाति - 47	अनुसूचित जनजाति - 6 (शहडोल, मंडला, बैतूल, धार, खरगोन, रतलाम एवं झाबुआ)	

विधानसभा के अध्यक्ष

क्र.	नाम	कार्यकाल
1.	पं. कुंजीलाल दुबे	01/11/1956 से 17/12/1956 18/12/1956 से 01/07/1957
2.	पं. कुंजीलाल दुबे	02/07/1957 से 26/03/1962
3.	पं. कुंजीलाल दुबे	27/03/1962 से 07/03/1967
4.	श्री काशीप्रसाद पाण्डे	24/03/1967 से 24/03/1972
5.	श्री तेजलाल टेंभरे	25/03/1972 से 10/08/1972
6.	श्री गुलशेर अहमद	14/08/1972 से 14/07/1977
7.	श्री मुकुन्द सखाराम नेवालकर	15/07/1977 से 02/07/1980
8.	श्री यज्ञदत्त शर्मा	03/07/1980 से 19/07/1983
9.	श्री रामकिशोर शुक्ला	05/03/1984 से 13/03/1985
10.	श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल	25/03/1985 से 19/03/1990
11.	श्री बृजमोहन मिश्रा	20/03/1990 से 22/12/1993
12.	श्रीयुत श्रीनिवास तिवारी	24/12/1993 से 01/02/1999

13.	श्रीयुत श्रीनिवास तिवारी	02/02/1999 से 11/12/2003
14.	श्री ईश्वरदास रोहाणी	16/12/2003 से 04/01/2009
15.	श्री ईश्वरदास रोहाणी	07/01/2009 से 05/11/2013
16.	डॉ. सीतासरन शर्मा	09/01/2014 से 01/01/2019
17.	श्री नर्मदा प्रसाद प्रजापति	08/01/2019 से निरंतर

- वर्तमान में मध्य प्रदेश विधानसभा की उपाध्यक्ष सुश्री हिना लिखीराम कावरे है, जो विधानसभा की पहली महिला उपाध्यक्ष है।
- मध्य प्रदेश की प्रथम किन्नर महापौर कटनी में कमला जान निर्वाचित हुई थी तथा प्रथम किन्नर विधायक शबनम मौसी सुहागपुर में बनी थी।

कार्यपालिका

❖ मुख्यमंत्री

- म.प्र. की पहली मंत्रीपरिषद 1956 में बनी थी और पं. रविशंकर शुक्ल पहले मुख्यमंत्री बने थे।
- वर्तमान में कांग्रेस के श्री कमलनाथ मुख्यमंत्री हैं।
- राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री उमा भारती थी।
- सबसे कम कार्यकाल अर्जुन सिंह मात्र 1 दिन (11/03/1985 से 12/03/1985) तक मुख्यमंत्री रहे, जबकि राजा नरेशचंद्र सिंह सबसे कम समय 13 दिन मुख्यमंत्री रहे।
- कैलाश चंद्र जोशी म. प्र के प्रथम गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री थे।
- सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री बने रहने का रिकॉर्ड (13 वर्ष 13 दिन) शिवराज सिंह चौहान के नाम है। इन्हें मामा और पांव-पांव वाले भैया के नाम से भी जाना जाता है।

मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्रियों/सदन के नेता की सूची

क्र.	नाम	कार्यकाल
1.	पं. रविशंकर शुक्ल	01/11/1956 से 31/12/1956
2.	श्री भगवंतराव मण्डलोई	09/01/1957 से 30/01/1957
3.	श्री कैलाशनाथ काटजू	31/01/1957 से 14/04/1957
3.	श्री कैलाशनाथ काटजू	15/04/1957 से 11/03/1962
4.	श्री भगवंतराव मण्डलोई	12/03/1962 से 29/09/1963
5.	पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र	30/09/1963 से 08/03/1967
6.	पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र	08/03/1967 से 29/07/1967
7.	श्रीमती विजयाराजे सिंधिया*	30/07/1967 से 25/03/1969
8.	श्री गोविन्द नारायण सिंह	30/07/1967 से 12/03/1969
9.	श्री राजा नरेशचंद्र सिंह	13/03/1969 से 25/03/1969

10.	श्री श्यामाचरण शुक्ल	26/03/1969 से 28/01/1972
11.	श्री प्रकाश चन्द्र सेठी	29/01/1972 से 22/03/1972
12.	श्री प्रकाश चन्द्र सेठी	23/03/1972 से 23/12/1975
13.	श्री श्यामाचरण शुक्ल	23/12/1975 से 30/04/1977
राष्ट्रपति शासन		30.04.1977 से 23.06.1977
14.	श्री कैलाश जोशी	24/06/1977 से 17/01/1978
15.	श्री वीरेन्द्र कुमार सखलेचा	18/01/1978 से 19/01/1980
16.	श्री सुंदरलाल पटवा	20/01/1980 से 17/02/1980
राष्ट्रपति शासन		17.02.1980 से 09.06.1980
17.	श्री अर्जुन सिंह	09/06/1980 से 10/03/1985
18.	श्री अर्जुन सिंह	11/03/1985 से 12/03/1985
19.	श्री मोतीलाल वोरा	13/03/1985 से 13/02/1988
20.	श्री अर्जुन सिंह	14/02/1988 से 23/01/1989
21.	श्री मोतीलाल वोरा	25/01/1989 से 09/12/1989
22.	श्री श्यामाचरण शुक्ल	09/12/1989 से 01/03/1990
23.	श्री सुंदरलाल पटवा	05/03/1990 से 15/12/1992
राष्ट्रपति शासन		15.12.1992 से 06.12.1993
24.	श्री दिग्विजय सिंह	07/12/1993 से 01/12/1998
23.	श्री दिग्विजय सिंह	01/12/1998 से 07/12/2003
24.	सुश्री उमा भारती	08/12/2003 से 23/08/2004
25.	श्री बाबूलाल गौर	23/08/2004 से 29/11/2005
26.	श्री शिवराज सिंह चौहान	29/11/2005 से 11/12/2008
27.	श्री शिवराज सिंह चौहान	12/12/2008 से 09/12/2013
28.	श्री शिवराज सिंह चौहान	14/12/2013 से 12/12/2018
29.	श्री कमलनाथ	17/12/2018 से निरंतर
*साधारणतः मुख्यमंत्री ही सदन का नेता होता है। लेकिन चतुर्थ विधान सभा में श्री गोविन्द नारायण सिंह के कार्यकाल में श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, सदन की नेता रहीं।		

- मुख्यमंत्री की पदेन अध्यक्षता वाली संस्थाए - म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद, मप्र एजेंसी फॉर प्रमोशन ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी (मैप आईटी), राज्य योजना मंडल, महर्षि पतंजलि संस्कृति संस्थान, म.प्र. संस्कृति परिषद।
- मध्य प्रदेश में प्रथम विपक्ष के नेता विश्वनाथ तामस्कर थे जबकि पहले विपक्ष की महिला नेता जमुना देवी थी।
- वर्तमान में मध्यप्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता गोपाल भार्गव है।

❖ राज्यपाल

- राज्यपाल राज्य कार्यपालिका का संवैधानिक प्रमुख होता है। जो मंत्रिमंडल की सहायता से कार्य करता है।

मध्यप्रदेश के राज्यपालों की सूची		
क्र.	नाम	कार्यकाल
1.	डॉ. पट्टाभि सीतारामैया	01/11/1956 से 13/06/1957
2.	श्री हरिविनायक पाटस्कर	14/06/1957 से 10/02/1965
3.	श्री क्यासम्बिल चेंगलराव रेडडी	11/02/1965 से 07/03/1971
4.	श्री पी.वी.दीक्षित (कार्यवाहक)	03/02/1966 से 09/02/1966
5.	श्री सत्यनारायण सिंह	08/03/1971 से 13/10/1977
6.	श्री निरंजन नाथ वांचू	14/10/1977 से 16/08/1978
7.	श्री चेप्पुदिरा मुथाना पुनाचा	17/08/1978 से 29/04/1980
8.	श्री भगवत दयाल शर्मा	30/04/1980 से 14/05/1984
9.	श्री गुरुप्रसन्न सिंह (कार्यवाहक)	26/05/1981 से 09/07/1981
10.	प्रोफेसर के.एम. चांडी	15/05/1984 से 30/03/1989
11.	श्रीमती सरला ग्रेवाल (पहली महिला राज्यपाल)	31/03/1989 से 06/02/1990
12.	कुंवर महमूद अली खाँ	06/02/1990 से 23/06/1993
13.	श्री मोहम्मद शफी कुरेशी	24/06/1993 से 21/04/1998
14.	डॉ. भाई महावीर	22/04/1998 से 06/05/2003
15.	श्री रामप्रकाश गुप्त	07/05/2003 से 01/05/2004
16.	ले.ज.श्री कृष्ण मोहन सेठ	02/05/2004 से 29/06/2004
17.	डॉ. बलराम जाखड़	30/06/2004 से 29/06/2009
18.	श्री रामेश्वर ठाकुर	30/06/2009 से 07/09/2011
19.	श्री रामनरेश यादव	08/09/2011 से 07/09/2016
20.	श्री ओ. पी. कोहली	08/09/2016 से 23/01/2018
21.	श्री ओ. पी. कोहली (कार्यवाहक)	16/05/2018 से 02/06/2018
22.	श्रीमती आनंदीबेन पटेल	23/01/2018 से 29/07/2019
23.	श्री लाल जी टंडन	29/07/2019 से....

प्रशासनिक तंत्र

- राज्य सचिवालय - प्रदेश के प्रशासन का केंद्र बिंदु सचिवालय वल्लभ भवन भोपाल में स्थित है। यह मंत्रियों और सचिवों का कार्यालय है।

मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव		
क्र.	नाम	अवधि
1	श्री एच.एस.कामथ	01.11.1956 से 24.11.1963

2	श्री आर.पी. नरोन्हा	25.11.1963 से Aug. 1968
3	श्री एम.पी. श्रीवास्तव	02.09.1968 से 17.11.1969
4	श्री आर.पी. नायक	18.11.1969 से 6.9.1972
5	श्री आर.पी. नरोन्हा	06.09.1972 से 14.05.1974
6	श्री एम.एस. चौधरी	14.05.1974 से 30.04.1975
7	श्री एस.सी. वर्मा	26.06.1975 से 11.09.1977
8	श्री के.एल. पसरिया	20.09.1977 से 29.02.1980
9	श्री बी.के. दुबे	06.03.1980 से 29.10.1980
10	श्री जी. जगतपति	01.11.1980 से 31.11.1982
11.	श्री बीरबल	01.08.1982 से 27.05.1983
12	श्री ब्रम्हस्वरूप	28.05.1983 से 15.11.1985
13	श्री के.सी.एस. आचार्य	15.11.1985 से 09.03.1988
14	श्री एम.एस. सिंह देव	09.03.1988 से 30.06.1988
15	श्री आर.एन. चोपड़ा	01.07.1988 से 30.09.1989
16	श्री आर.एस. खन्ना	30.09.1989 से 31.03.1990
17	श्री आर.पी. कपूर	31.03.1990 से 22.09.1991
18	श्रीमती निर्मला बुच (प्रथम आईएस एवं महिला मुख्य सचिव)	22.09.1991 से 01.01.1993
19	श्री एन.एस. सेठी	01.01.1993 से 30.11.1995
20	श्री एस.सी. बेहार	30.11.1995 से 31.01.1997
21	श्री के.एस. शर्मा	31.01.1997 से 31.07.2001
22	श्री पी.के. मल्होत्रा	01.08.2001 से 28.02.2002
23	श्री ए.वी. सिंह	01.03.2002 से 05.01.2004
24	श्री बी.के. साहा	05.01.2004 से 30.09.2004
25	श्री विजय सिंह	01.10.2004 से 27.01.2006
26	श्री आर.सी. साहनी	28.01.2006 से 31.01.2010
27	श्री अवनि वैश्य	01.02.2010 से 30.04.2012
28	श्री आर. परशुराम	01.05.2012 से 30.09.2013
29	श्री अन्टोनी जे.सी. डिसा	01.10.2013 से 31.10.2016
30	श्री बसंत प्रताप सिंह	01.11.2016 से 31.12.2018
31	श्री सुधि रंजन मोहन्ती	01.01.2019 से निरंतर

- **लोकायुक्त** - भ्रष्टाचार पर अंकुश रखने के उद्देश्य से 1982 में लोकायुक्त और उपलोकायुक्त अधिनियम पारित किया गया है।
- लोकायुक्त संगठन का सर्वोच्च पदाधिकारी लोकायुक्त होता है, जो सेवानिवृत्त या कार्यरत न्यायाधीश को बनाया जाता है।
- मध्य प्रदेश के प्रथम लोकायुक्त - श्री पी वी दीक्षित
- मध्य प्रदेश के वर्तमान लोकायुक्त - जस्टिस एनके गुप्ता
- मध्य प्रदेश के वर्तमान उप लोकायुक्त - जस्टिस यूसी माहेश्वरी
- **क्षेत्रीय संगठन** - राज्यों में 10 संभाग और 52 जिले हैं।

- जिले में अनुभाग, तहसीले और उपतहसीले सामान्य प्रशासन से संबंधित नियामिकीय कार्य तथा राजस्व प्रशासन से संबंधित कार्य करती है।
- **संभाग आयुक्त** - राज्य के समस्त 10 संभाग में संभाग आयुक्त है। जो संभाग का सबसे प्रमुख अधिकारी होता है।
- इस पद पर नियुक्ति वरिष्ठ आई.ए.एस. की होती है। जो सचिव स्तर का होता है।
- **जिला कलेक्टर** - यह जिले का सबसे प्रमुख अधिकारी होता है। जो आई.ए.ए. (उपसचिव श्रेणी का) होता है।
- जिले में कानून व्यवस्था से लेकर विकास कार्य तक की विभिन्न जिम्मेदारियां कलेक्टर पर होती हैं।

मध्य प्रदेश के वर्तमान में प्रमुख पदाधिकारी

- **मुख्यमंत्री** - श्री कमलनाथ
- **मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश** - अजय कुमार मित्रल
- **नेता प्रतिपक्ष विपक्ष के नेता** - श्री गोपाल भार्गव
- **लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष** - श्री भास्कर चौबे
- **लोकायुक्त** - श्री नरेश कुमार गुप्ता
- **राज्य सूचना आयोग** - श्री अरविन्द कुमार
- **पुलिस महानिदेशक** - श्री विजय कुमार सिंह
- **विधानसभा अध्यक्ष** - श्री नर्मदा प्रसाद प्रजापति
- **विधानसभा उपाध्यक्ष** - सुश्री हिना लिखीराम कावरे
- **मुख्य सचिव** - श्री सुधि रंजन मोहन्ती
- **मध्य प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग आयुक्त** - बसंत प्रताप सिंह
- **राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष** - श्रीमती लता वानखेड़े
- **मध्य प्रदेश राज्य योजना के अध्यक्ष** - श्री कमलनाथ
- **मध्य प्रदेश राज्य योजना के उपाध्यक्ष** - श्री चेतन्य काश्यप
- **मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष** - न्यायमूर्ति नरेंद्र कुमार जैन
- **मध्य प्रदेश राज्य बाल संरक्षण आयोग अध्यक्ष** - श्री राघवेंद्र शर्मा
- **राज्य के महाधिवक्ता (एडवोकेट जनरल)** - श्री शशांक शेखर

प्रशासनिक संस्थाएं और उनके मुख्यालय

संस्था	मुख्यालय
म.प्र. वित्त निगम	इंदौर
म.प्र. योजना आयोग	भोपाल
म.प्र. उच्च न्यायालय	जबलपुर
म.प्र. उच्च न्यायालय की खंडपीठ	इंदौर, ग्वालियर
म.प्र. लोक सेवा आयोग	इंदौर

म.प्र. महालेखाकार कार्यालय	ग्वालियर
म.प्र. विद्युत मंडल	जबलपुर
महात्मा गांधी ग्रामीण विकास संस्थान	जबलपुर
ग्रामीण पंचायत प्रशिक्षण संस्थान	अमरकंटक
म.प्र. राज्य औद्योगिकी विकास निगम	भोपाल
प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड	भोपाल
नरोन्हा प्रशासनिक आकदमी	भोपाल
राज्य निर्यात निगम	भोपाल
लघु उद्योग निगम	भोपाल
राज्य भूमि विकास निगम	भोपाल
राज्य खनिज निगम	भोपाल
राज्य वस्त्र निगम	भोपाल
राज्य पर्यटन विकास निगम	भोपाल
खादी ग्रामोद्योग बोर्ड	भोपाल

प्रमुख प्रशासनिक भवनों के नाम	
मुख्यमंत्री का निवास	श्यामला हिल्स पर
राज्य निर्वाचन आयोग	निर्वाचन भवन
राज्य मानवाधिकार आयोग	पर्यावास भवन
म.प्र. विद्युत नियामक आयोग	ऊर्जा भवन
राज्य विद्युत मंडल	शक्ति भवन
मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम	पुस्तक भवन
राज्य सचिवालय	वल्लभ भवन
राज्य संचनालय	सतपूड़ा और विंध्याचल

मध्य प्रदेश में पंचायती राज

- मध्य प्रदेश में पंचायती राज को व्यवस्थित रूप देने के लिए सर्वप्रथम 1962 में 'मध्यप्रदेश पंचायत अधिनियम 1962' बनाया गया। यह अधिनियम त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था पर आधारित था।
- 73वें संविधान संशोधन अनुसार मध्य प्रदेश पंचायत राज अधिनियम 1993 बनाया गया। जिसे 30 दिसंबर 1993 को विधानसभा द्वारा पारित किया गया।
- इस अधिनियम को 24 जनवरी 1994 को राज्यपाल की स्वीकृति प्रदान की गई तथा 25 जनवरी 1994 से यह अधिनियम संपूर्ण मध्य प्रदेश में लागू हो गया।
- मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने ग्राम स्वराज्य की स्थापना की एवं 26 जनवरी 2001 से संपूर्ण मध्य प्रदेश में ग्राम स्वराज व्यवस्था को लागू किया।
- ग्रामीणों की समस्याएं स्थानीय स्तर पर निराकरण करने के लिए 8 अगस्त 2004 से ग्रामीण सचिवालय व्यवस्था शुरू की गई।
- इस अधिनियम में अभी तक कुल 22 संशोधन किए जा चुके हैं।
- पहला संशोधन 27 दिसंबर 1994 को हुआ।

- 26 जनवरी 2001 को प्रभावी हुए संशोधन में इस अधिनियम का नाम परिवर्तित कर 'मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम, 1993' कर दिया गया जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामसभा को अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाना था।
- ग्राम पंचायत को स्थानीय शासन की स्वायत्तशासी एवं निर्गमित इकाई के साथ - साथ उनके क्षेत्र के लिए 29 विषयों के लिए सर्वांगीण विकास एवं सामाजिक न्याय की योजना बनाने, उनका क्रियान्वयन करने की संपूर्ण अधिकार और शक्तियां भी पंचायतों को 20 अगस्त 1994 को दी गई है।
- इस अधिनियम के अनुसार पंचायती राज व्यवस्था के तीन स्तर हैं। सभी तीनों स्तरों का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है -

❖ ग्राम पंचायत

- इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 10 व अधिकतम 20 हो सकती है।
- 1000 से अधिक आबादी वाले गांव में एक ग्राम पंचायत गठित की जायेगी।
- वर्तमान म.प्र. में ग्राम पंचायतों की संख्या 22,824 है। जिनका मुखिया सरपंच होता है।
- सरपंच, पंच और उपसरपंच और ग्राम के मतदाता होते हैं।
- पंचायत सचिव, पंचायत द्वारा नियुक्त शासकीय कर्मचारी होता है।
- सरपंच, उपसरपंच को अविश्वास प्रस्ताव द्वारा हटाया जा सकता है।
- ग्राम पंचायत के सरपंच व सदस्य पंच प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा व उप-सरपंच अप्रत्यक्ष रूप से पंचों द्वारा निर्वाचित होते हैं।
- ग्राम पंचायत अपने गांव की सफाई, पेयजल व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, आंगनवाडीयों का संचालन, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की निगरानी आदि का कार्य करती है।
- मध्य प्रदेश में पंचायतों में जनता को Right to Recall (वापस बुलाने का अधिकार) का अधिकार दिया गया है। जिसके तहत सरपंच निर्वाचित होने के 2 वर्ष के बाद 2/3 बहुमत द्वारा हटाया जा सकता है।
- इसका प्रथम प्रयोग शहडोल जिले की अनुपपुर नगर पंचायत की अध्यक्षा पल्लविका पटेल को 2001 में इसी अधिकार द्वारा जनता द्वारा हटाया गया था।
- म.प्र. पहला राज्य है जिनसे स्थानीय निकायों में Right To Recall (वापस बुलाने का अधिकार) का प्रावधान किया है।

❖ जनपद पंचायत

- यह त्रिस्तरीय पंचायत का मध्य स्तर है, जिसका गठन विकासखण्ड पर होता है।
- इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 10 व अधिकतम 25 हो सकती है।
- वर्तमान मध्यप्रदेश में 313 जनपद पंचायतें हैं।

- 5 हजार से अधिक आबादी वाले विकासखण्ड में एक जनपद पंचायत वार्ड का गठन किया जाता है।
- सदस्यों का चुनाव प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा जबकि अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से सदस्यों द्वारा किया जाता है।
- इसके अतिरिक्त इसके पदेन सदस्य के रूप में, सांसद, सरपंच और विधायक होते हैं।
- जनपद पंचायत का मुख्य प्रशासकीय अधिकारी (CEO) होता जो राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित अधिकारी होता है।

❖ जिला पंचायत

- इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 10 व अधिकतम 35 हो सकती है।
- वर्तमान मध्यप्रदेश में 51 जिला पंचायतें हैं।
- 50 हजार या अधिक आबादी वाले क्षेत्र में एक जिला पंचायत वार्ड का गठन किया जाता है।
- सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से व अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का निर्वाचन सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।
- इसके पदेन सदस्य के रूप में जनपद पंचायत के अध्यक्ष, विधायक व सांसद होते हैं।
- कलेक्टर भी पदेन सदस्य होता है।
- अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का निर्वाचन सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है।

नगरीय निकाय

- मध्यप्रदेश में नगर पालिका अधिनियम 1956 पारित किया गया, जिसके द्वारा संपूर्ण मध्यप्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में प्रशासन किया जाता है।
- 1992 में देश में 74 वां संविधान संशोधन अधिनियम बना जो 16 जनवरी 1993 से पूरे देश में लागू हुआ।
- 74 वां संविधान संशोधन के क्रियान्वयन हेतु मध्य प्रदेश नगरपालिका अधिनियम 1994 पारित किया गया।
- नगरीय निकायों का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।
- नगरीय निकाय अध्यक्ष Right to Recall (वापस बुलाने का अधिकार) के माध्यम से वापस भी बुलाया जा सकता है। कम से कम 2 वर्ष बीत गए हों एवं अंतिम 6 माह पूर्व होना चाहिए।
- मध्य प्रदेश में स्थानीय संस्थाओं में महिलाओं को 50% आरक्षण है।
- राजेंद्र धारेकर समिति का संबंध नगरीय निकायों से है।

❖ नगर निगम

- सामान्यत एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में नगर निगम स्थापित किया जाता है।
- वर्तमान में नगर निगम की संख्या मध्यप्रदेश में 16 है। जो निम्न हैं – 1. इंदौर, भोपाल, 3.जबलपुर, 4.ग्वालियर, 5.सागर, 6.रीवा,

- 7.उज्जैन, 8. खंडवा, 9. बुरहानपुर, 10.रतलाम, 11.देवास, 12.सिंगरौली, 13. कटनी 14. सतना, 15. छिंदवाड़ा, 16. मुरैना
- इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 40 व अधिकतम 70 हो सकती है।
- नगर निगम परिषद में उस क्षेत्र के लोकसभा राज्यसभा व विधानसभा के पदेन सदस्य होते हैं, छह विशेषज्ञ सदस्य राज्यपाल द्वारा नियुक्त होते हैं।
- महापौर नगर निगम का राजनीतिक प्रमुख होता होता है, इसे उस शहर का प्रथम नागरिक भी कहा जाता है।
- मेयर इन कौंसिल नगर निगम की मुख्य समिति है। इस समिति का महापौर पदेन अध्यक्ष होता है। व इसकी सदस्य संख्या महापौर समेत 11 होती है।
- इसकी सहायता के लिये 10 विभागीय समितियां होती हैं, जिनके अध्यक्ष मेयर इन कौंसिल के सभी सदस्य होते हैं व इन सभी समितियों की सदस्य संख्या अध्यक्ष सहित 7 होती है।
- महापौर एवं पार्षद का चुनाव प्रत्यक्ष रीति से होता है। पहले महापौर को अप्रत्यक्ष रूप से चुना जाता था व कार्यकाल 5 वर्ष होता है। 1997 में संशोधन कर महापौर का कार्यकाल 5 वर्ष व चुनाव प्रत्यक्ष विधि से किया जाता है।

- स्पीकर अप्रत्यक्ष रूप से पार्षदों द्वारा चुना जाता है। इससे पहले स्पीकर को उपमहापौर कहा जाता था।
- नगर निगम का मुख्य कार्यपालन अधिकारी नगर निगम का आयुक्त होता है। जिसे राज्य सरकार नियुक्त करती है।
- राज्य का पहला नगर निगम - जबलपुर (1834)

❖ नगर पालिका

- सामान्यत: बीस हजार से एक लाख जनसंख्या वाले नगरों में नगर पालिका स्थापित की जाती है।
- वर्तमान में मध्यप्रदेश में 98 नगरपालिका है।
- इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 15 व अधिकतम 40 हो सकती है।
- नगर पालिका का प्रशासनिक प्रमुख मुख्य कार्यपालन अधिकारी (CMO) होता है जो राज्य सेवा द्वारा चुना जाता है व जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार करती है।
- इसका राजनीतिक प्रमुख नगर पालिका अध्यक्ष होता है।
- नगर पालिका परिषद में उस क्षेत्र के लोकसभा राज्यसभा व विधानसभा के पदेन सदस्य होते हैं 4 विशेषज्ञ सदस्य राज्यपाल द्वारा नियुक्त होते हैं।
- नगर पालिका अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का चुनाव अप्रत्यक्ष विधि से तथा पार्षद प्रत्यक्ष विधि से पार्षदों द्वारा चुना जाता है।
- नगर पालिका की समिति को प्रेसीडेंट इन कौंसिल कहा जाता है, जिसका अध्यक्ष नगर पालिका प्रमुख होता है व इसकी सदस्य संख्या अध्यक्ष सहित 8 होती है।

● सात अन्य समितियां होती हैं जिसके अध्यक्ष प्रेसीडेंट इन कौंसिल के सभी सदस्य होते हैं, इनमें प्रत्येक समिति की सदस्य संख्या अध्यक्ष सहित 5 होती है।

● राज्य का पहला नगरपालिका - दतिया (1950)

❖ **नगर पंचायत**

● नगर पंचायत एसे संक्रमणशील क्षेत्रों में गठित की जाती है, जिनकी जनसंख्या सामान्यतः पांच हजार से बीस हजार के बीच होती है।

● वर्तमान में मध्यप्रदेश में 269 नगर पंचायत है।

● इसकी सदस्य संख्या न्यूनतम 15 व अधिकतम 40 हो सकती है।

● नगर पंचायत परिषद में उस क्षेत्र के लोकसभा राज्यसभा व विधानसभा के पदेन सदस्य होते हैं, 2 विशेषज्ञ सदस्य राज्यपाल द्वारा नियुक्त होते हैं।

● नगर पंचायत अध्यक्ष व उपाध्यक्ष का चुनाव अप्रत्यक्ष विधि से तथा पार्षद प्रत्यक्ष विधि चुचुने जाते हैं।

● नगर पंचायत का प्रशासनिक प्रमुख मुख्य कार्यपालन अधिकारी (CMO) होता है, जो राज्य सेवा द्वारा चुना जाता है व जिसकी नियुक्ति राज्य सरकार करती है।

● इसका राजनीतिक प्रमुख नगर पंचायत अध्यक्ष होता है।

● नगर पंचायत की समिति को भी प्रेसीडेंट इन कौंसिल कहा जाता है, इसमें अध्यक्ष सहित 6 सदस्य होते हैं।

● इसकी 5 उपसमितियां होती हैं, जिसके अध्यक्ष प्रेसीडेंट इन कौंसिल के सभी सदस्य होते हैं। इसमें प्रत्येक समिति के तीन तीन सदस्य होते हैं।

● नगर निगम संशोधन नियम 2019 के अनुसार नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायतों के महापौर और अध्यक्षों का निर्वाचन अब अप्रत्यक्ष तरीके से होगा जबकि सदस्यों का निर्वाचन प्रत्यक्ष रीति से होगा।

बहुजन समाज पार्टी	2 सीटें	5%
समाजवादी पार्टी	1 सीट	1.3%
निर्दलीय	4 सीट	5.82%
NOTA	---	542295 वोट (1.4%)
	कुल 230 सीटें	

● **15वीं विधानसभा में पहली बार चुने गए विधायकों की संख्या - 90**

● **15वीं विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या - 21**

● **मध्यप्रदेश में सर्वाधिक मतों से जीतने वाले विधायक - रमेश मेंदोला, (बीजेपी) विधानसभा - इंदौर- 2 से 71011 मतों से जीते**

● **सबसे कम मतों से जीतने वाले विधायक - प्रवीण पाठक (कांग्रेस), विधानसभा - ग्वालियर दक्षिण से 121 मतों से जीते**

मध्य प्रदेश में लोक सभा निर्वाचन 2018

● **मतदान प्रतिशत - 71.10%**

● **सर्वाधिक मतों से विजय - राव उदय प्रताप सिंह (होशंगाबाद नरसिंहपुर सीट)**

● **सबसे कम मतों से विजय - नकुल कमलनाथ (छिंदवाड़ा सीट)**

● **17 वीं लोकसभा के प्रोटेम स्पीकर टीकमगढ़ लोकसभा सीट के सांसद वीरेंद्र कुमार को बनाया गया।**

● **लोकसभा में मध्य प्रदेश से विजयी महिलाएं - संध्या राय (भिंड), रीति पाठक (सीधी), हिमाद्री सिंह (शहडोल) व प्रज्ञा ठाकुर (भोपाल)**

मध्यप्रदेश 15वीं विधानसभा निर्वाचन - 2018

- निर्वाचन दिनांक - 28 नवंबर 2018
- मतगणना - 11 दिसंबर 2018
- शपथ ग्रहण - 17 दिसंबर 2018
- प्रथम विधानसभा बैठक - 7 जनवरी 2019
- मप्र इलेक्शन स्वीप आइकन - माही सोनी (बाल कलाकार), छतरपुर

चुनाव परिणाम		
पार्टी	सीटें	वोट प्रतिशत
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	114 सीटें	40.9%
भारतीय जनता पार्टी	109 सीटें	41.02%



पुलिस

- म.प्र. का पुलिस मुख्यालय भोपाल में स्थित है।
- मध्य प्रदेश पुलिस का ध्येय वाक्य "देशभक्ति जनसेवा" है।
- म.प्र. के प्रथम पुलिस महानिरीक्षक श्री वी.जी. घाटे थे।
- 1982 से पुलिस महानिरीक्षक के पद के स्थान पर पुलिस महानिदेशक (DGP) का पद सृजित किया गया है।
- म.प्र. के प्रथम पुलिस महानिदेशक श्री बी.पी. दुबे थे।
- वर्तमान पुलिस महानिदेशक विजय कुमार सिंह हैं।
- पुलिस महानिदेशक (DGP) गृह सचिव के अधीन कार्य करते हैं।
- जोन (आई.जी. पुलिस) - 11
- रेंज (डी.आई.जी. पुलिस) - 15
- पुलिस जिले (एस.पी.) - 52
- कंट्रोल रूम - 53
- पुलिस उप संभाग - 185
- पुलिस थाने - 1099
- पुलिस चौकियां - 579
- वाहिनियों की संख्या - 22

❖ पुलिस जोन

- 1. **इंदौर**- इंदौर, धार, झाबुआ, खरगोन, खण्डवा, बडवानी, बुरहानपुर, अलीराजपुर
- 2. **उज्जैन**- उज्जैन, देवास, रतलाम, शाजापुर, नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा
- 3. **भोपाल**- भोपाल, राजगढ़, सीहोर, विदिशा
- 4. **ग्वालियर**- ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर
- 5. **होशंगाबाद** - होशंगाबाद, हरदा, बैतूल, रायसेन, (मुख्यालय भोपाल है)
- 6. **चम्बल जोन** - भिण्ड, मुरैना, दतिया, श्योपुर (मुख्यालय मुरैना)
- 7. **सागर** - सागर, दमोह, टीकमगढ़, पन्ना, छतरपुर
- 8. **जबलपुर** - जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाडा, सिवनी, कटनी
- 9. **बालाघाट** - बालाघाट, मण्डला, डिण्डोरी
- 10. **रीवा** - रीवा, सीधी, सतना, सिंगरौली
- 11. **शहडोल** - शहडोल, उमरिया, अनूपपुर

❖ अनुसूचित जाति/जनजाति सुरक्षा

- मध्य प्रदेश में अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण शाखा का गठन 1973 में पुलिस मुख्यालय भोपाल में किया गया।
- मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले में अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण थानों की स्थापना की गई है।

❖ महिला सुरक्षा

- प्रत्येक जिले में महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया है।
- प्रदेश में 01 जनवरी 2013 से राज्य स्तरीय महिला हेल्प लाइन 1090 शुरू की गई।
- मध्य प्रदेश का प्रथम महिला पुलिस थाना भोपाल में स्थापित किया गया है।
- **निर्भया पेट्रोलिंग** - महिलाओं की सुरक्षा के लिए जिला मुख्यालयों में निर्भया पेट्रोलिंग की व्यवस्था की गई है, जिसमें महिला पुलिसकर्मियों को पेट्रोलिंग का दायित्व सौंपा गया है।
- **मैत्री पुलिस पेट्रोलिंग** - प्रदेश के 4 बड़े शहरों भोपाल, इंदौर, जबलपुर एवं ग्वालियर में दोपहिया वाहनों द्वारा महिला पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा पेट्रोलिंग की जाती है।
- **समर्थ संगिनी समूह** - महिलाओं को जोड़कर महिलाओं के विरुद्ध हो रहे अपराधों पर कार्यवाही करने के लिए समर्थ संगिनी समूह का गठन किया गया है। इसके अंतर्गत लगभग 3000 समूहों में 1 लाख महिलाओं को जोड़ा गया है।

❖ नारकोटिक्स

- नारकोटिक्स विंग का गठन 1996 में किया गया था जिसका कार्य मादक पदार्थों के अवैध परिवहन पर नियंत्रण करना है, इसका मुख्यालय इंदौर में है।
- नारकोटिक्स मुख्यालय इंदौर के अधीन नीमच में 1996 में नारकोटिक्स प्रवर्तन प्रकोष्ठ की स्थापना की गई।
- मध्य प्रदेश के नीमच, मंदसौर एवं रतलाम आदि जिलों में कृषक को को अफीम की खेती के लिए पट्टे दिए जाते हैं, इसको ध्यान में रखते हुए मंदसौर जिले में नारकोटिक्स प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।

❖ रेल पुलिस

- रेल पुलिस का दायित्व चलती रेल गाड़ियों में घटित होने वाले अपराधों की रोकथाम, रेल एवं प्लेटफार्म पर रेल यात्रियों की जान माल की सुरक्षा, घटित अपराधों का पंजीबद्ध करना, अपराधों की विवेचना कर कार्यवाही करना एवं रात्रि कालीन रेलगाड़ियों में पेट्रोलिंग करना है।
- वर्तमान में रेल पुलिस का मुख्यालय भोपाल में है, मध्यप्रदेश में जीआरपी की 3 इकाइयां हैं - भोपाल (10 थाने व 6 चौकियां), इंदौर (10 थाने व 7 चौकियां) एवं जबलपुर (8 थाने व 7 चौकियां)

❖ मध्य प्रदेश औद्योगिक सुरक्षा बल

- राज्य शासन के आदेश दिनांक 4 अक्टूबर 2013 के द्वारा राज्य औद्योगिक सुरक्षा बल के गठन के लिए 1986 पदों को स्वीकृति प्रदान की गई है।
- इसका मुख्यालय भोपाल में होगा एवं दो वाहिनियां रीवा एवं सिंगरौली में स्थापित की जाएंगी. इसके अतिरिक्त दो और वाहिनीयों के गठन का प्रस्ताव है।

❖ मध्य प्रदेश पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन

- यह एक अर्ध शासकीय संस्था है। जिसका गठन 31 मार्च 1981 को पुलिस कर्मियों के लिए आवास गृह एवं प्रशासनिक भवनों के निर्माण के लिए किया गया था।

❖ मध्य प्रदेश होमगार्ड

- इसकी स्थापना 1947 में गठित एक स्वयंसेवी संगठन है, जिसका उद्देश्य आपातकालीन स्थिति में शांति स्थापित करने के लिए पुलिस बल को सहायता करना है।
- इसका मुख्यालय जबलपुर में है एवं प्रदेश में 106 होमगार्ड कंपनीयां हैं।
- म.प्र. में पुलिस फायर ब्रिगेड की शाखाएं इंदौर, पीथमपुर, (धार) में हैं।
- वर्ष 2012 में राज्य साइबर पुलिस के अंतर्गत साइबर एवं उच्च तकनीकी अपराध पुलिस थाने का गठन किया गया है जिसका कार्य क्षेत्र संपूर्ण मध्यप्रदेश है।
- मध्यप्रदेश के इंदौर DIG ऑफिस देश का पहला ISO प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाला DIG ऑफिस हो गया है।
- म.प्र. की पहली IPS महिला अधिकारी सुश्री आशा गोपालन हैं।
- मध्यप्रदेश में पुलिस स्मृति दिवस 21 अक्टूबर को मनाया जाता है।
- 15 अप्रैल 1982 को पुलिस अपराध रिकार्ड कार्यालय की स्थापना की गई।
- प्रदेश में सर्वप्रथम डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर में अपराधशास्त्र का कोर्स प्रारम्भ किया गया।
- पुलिस स्मृत दिवस 21 अक्टूबर को मनाया जाता है।
- म.प्र. ग्राम एवं नगर रक्षा समिति विधेयक 1999 से प्रभावी है।
- म.प्र. राज्य आर्थिक अपराध अन्वेषण का मुख्यालय भोपाल में है।
- राज्य में 1960 से भोपाल में सी.आई.डी. मुख्यालय की स्थापना की गई।
- प्रथम मेट्रो थाना - हबीबगंज
- प्रथम ISO थाना - देवास

❖ म.प्र. पुलिस के प्रशिक्षण संस्थान

- मध्य प्रदेश पुलिस एकेडमी - भोरी, भोपाल
- जवाहरलाल नेहरू पुलिस अकादमी - सागर
- सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण केंद्र (RAPTC) - इंदौर
- श्वान प्रशिक्षण केन्द्र - भदभदा, भोपाल
- फोरेंसिक साइन्स लेबोरेट्री - सागर
- साइबर फॉरेंसिक लैब - भोपाल
- पुलिस यातायात प्रशिक्षण - भोपाल

- पुलिस बैंड स्कूल - भोपाल
- पुलिस वायरलेस (रेडियो) प्रशिक्षण - इंदौर
- नव आरक्षक/प्लाटून कमाण्डर - छठी वाहिनी जबलपुर
- नव आरक्षक/प्लाटून कमाण्डर - आठवीं वाहिनी छिंदवाड़ा
- पुलिस प्रशिक्षण शाला (नवनियुक्त आरक्षक) - पचमढ़ी, रीवा, उमरिया, तिगरा (ग्वालियर), मकरोनिया (सागर), उज्जैन
- पुलिस वाहन प्रशिक्षण शाला - रीवा
- मध्यप्रदेश के भोपाल में उप पुलिस अधीक्षक की ट्रेनिंग के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान खोला जाना प्रस्तावित है।
- नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का आंतरिक सुरक्षा के लिए 36वीं भारत आरक्षित वाहिनी विशेष सशस्त्र बल बालाघाट में 4 अगस्त 2015 को गठित किया गया।
- छिंदवाड़ा में महिला पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना की जाएगी।

रूस्तमजी सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय इन्दौर

- स्थापना - 1980
- प्रशिक्षण संस्था को महाविद्यालय का दर्जा - 1988
- 2003 में इसको रूस्तमजी सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय का नाम दिया गया।
- वर्तमान में संस्था प्रमुख के पद पर पुलिस महानिरीक्षक पदस्थ है।

जेल

- मध्य प्रदेश में कुल 124 जिले हैं, इनमें 11 केंद्रीय जेल, 40 जिला जेल तथा 71 उप जेल एवं 2 खुली जेल हैं।
- म.प्र. में पहली खुली जेल 'नवजीवन शिविर' 1973 में मुंगावली, अशोकनगर में चम्बल के डकैतों के लिए व दूसरी खुली जेल 1976 में पन्ना जिले के लक्ष्मीपुर में बुन्देलखंड के डकैतों के लिए खोली गयी थी, जो अब बंद हो चुकी है।
- नरसिंहपुर व जबलपुर में किशोर बंदीगृह स्थापित किये गये हैं।
- क्षेत्रीय जेल प्रबंधन एवं शोध संस्थान भोपाल व जेल प्रशिक्षण केन्द्र सागर है।
- प्रदेश की आदिवासी बहुल दो जिला जेलों बेतूल एवं धार में ITI प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया है।
- छिंदवाड़ा जिले में एक नवीन केंद्रीय जेल खोली जाएगी।
- म.प्र. में सन् 1995 से कारागारों में बंदियों के लिए 'योग शिक्षा' अनिवार्य कर दी गयी है।
- म.प्र. के जबलपुर में एक आदर्श महिला जेल की स्थापना की गई है।

- म. प्र. की खुली जेल कॉलोनी नवजीवन आश्रम होशंगाबाद में जनवरी 2010 में खोली गयी है, जिसमें कैदी परिवार के साथ रहते हैं। इसकी क्षमता 25 बंदियों की है।
- मध्य प्रदेश में दूसरी खुली जेल का उद्घाटन 1 जून 2018 को सतना में किया गया है। इसकी क्षमता 25 बंदियों की है।
- मार्च 2019 में भोपाल में छठवीं खुली जेल का उद्घाटन हुआ।
- सेंट्रल जेल भोपाल में हेड कांस्टेबल की हत्या कर फरार हुए 8 सिमी आतंकियों के एनकाउंटर की घटना के बाद देश की तीसरी और प्रदेश की पहली अंडा सेल भोपाल जेल में बनेगी।
- अंडा सेल - यह जेल का सबसे सुरक्षित हिस्सा होता है। इसका आकार अंडे जैसा होता है। सेल को पूरी तरह से 'बॉम्बप्रूफ' बनाया जाएगा।

न्यायालय

- भारत सरकार अधिनियम 1935 की धारा-108 के अंतर्गत सेंट्रल प्राविस व बरार प्रांत हेतु नागपुर उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- नवंबर सन् 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम के तहत मध्य प्रदेश का 1 नवंबर 1956 को गठन किया गया।
- राज्य पुनर्गठन अधिनियम की धारा-49 की उपधारा-(1) विहित करती है कि नियुक्ति दिवस अर्थात् 1 नवंबर 1956 से, वर्तमान मध्यप्रदेश राज्य के संबंध में अधिकारिता का प्रयोग करने वाले उच्च न्यायालय, अर्थात् नागपुर उच्च न्यायालय, वर्तमान मध्यप्रदेश राज्य हेतु उच्च न्यायालय समझा जाएगा।
- इस प्रकार नागपुर उच्च न्यायालय को समाप्त नहीं किया गया बल्कि एक कानूनी कथन द्वारा नवीन राज्य मध्यप्रदेश हेतु यह अपनी जबलपुर स्थित शाखा के साथ उच्च न्यायालय बन गया।
- मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के प्रथम न्यायाधीश न्यायमूर्ति एम हिदायतुल्ला बनाए गए, वे 1958 तक मुख्य न्यायाधीश रहे और यहां से सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनकर दिल्ली गए, बाद में भारत के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश भी बने।
- जबलपुर उच्च न्यायालय के भवन का निर्माण 1899 में हुआ था, इस भवन की डिजाइन लोक निर्माण विभाग के अधिकारी हेनरी इरविन ने बनाई थी।
- इंदौर तथा ग्वालियर में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की खंडपीठों की स्थापना की गई है।
- उच्च न्यायालय की नई सर्किट खंडपीठ भोपाल में स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।
- **मुख्य पीठ जबलपुर के अंतर्गत जिले** - अनूपपुर, बालाघाट, बेतूल, भोपाल, बुरहानपुर, छतरपुर, छिंदवाड़ा, दमोह, डिंडोरी, खंडवा, हरदा, होशंगाबाद, जबलपुर, कटनी, मंडला, नरसिंहपुर,

पन्ना, रायसेन, रीवा, सागर, सतना, सिवनी, शहडोल, सीधी, सीहोर, टीकमगढ़, उमरिया,

➤ **खंडपीठ इंदौर के अंतर्गत जिले** - बड़वानी, देवास, धार, इंदौर, झाबुआ, मंदसौर, नीमच, रतलाम, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, खरगोन,

➤ **खंडपीठ ग्वालियर के अंतर्गत जिले** - अशोकनगर, भिंड, दतिया, गुना, ग्वालियर, मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, विदिशा

❖ फास्ट ट्रेक कोर्ट

- लंबित पड़े मामलों के शीघ्र निपटारे के लिए फास्ट ट्रेक कोर्ट की अवधारणा अपनाई गई है।
- राज्य में इसकी शुरुआत 1 अप्रैल 2001 से की गई। राज्य में 85 फास्ट ट्रेक कोर्ट है।

❖ ग्राम न्यायालय

- छोटे-छोटे मामलों ग्राम में ही निपटाने के उद्देश्य से म. प्र. सरकार द्वारा ग्राम न्यायालयों की स्थापना (अनुसूचित क्षेत्र को छोड़कर) 26 जनवरी 2001 को की गयी।
- इसकी शुरुआत झाँतला ग्राम पंचायत (जावद जिला नीमच) के पहले ग्राम न्यायालय से की गयी।
- भारत सरकार के ग्राम न्यायालय अधिनियम के तहत म.प्र. का पहला ग्राम न्यायालय बैरसिया जिला भोपाल में 2 अक्टूबर 2009 में स्थापित किया गया था।

❖ लोक अभियोजन संचालनालय

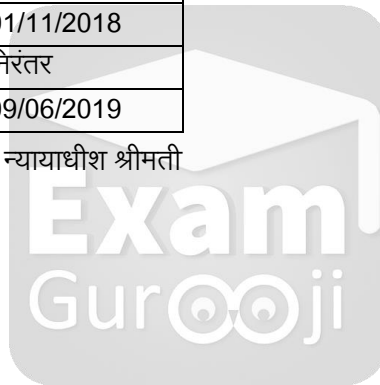
- इसका गठन 1987 में किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य सभी मजिस्ट्रेट न्यायालय एवं सत्र न्यायालय में विचाराधीन अपराधी प्रकरणों का राज्य की ओर से संचालन करना है।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश

क्र.	मुख्य न्यायाधीश	कार्यकाल
1	मोहम्मद हिदायतुल्लाह (भारत के मुख्य न्यायाधीश बने)	01/11/1956 से 12/12/1958 तक
2	जी .पी. भट्ट	13/12/1958 से 22/09/1959 तक
3	पी. वी. दीक्षित (कार्यवाहक राज्यपाल रहे)	22/09/1959 से 18/03/1969 तक
4	बिशम्भर दयाल	19/03/1969 से 13/03/1972 तक
5	पी. के. तारे	14/09/1972 से 10/10/1975 तक
6	शिव दयाल श्रीवास्तव	11/10/1975 से 28/02/1978 तक
7	ए . पी. सेन	28/02/1978 से 14/07/1978 तक
8	जी. पी. सिंह (कार्यवाहक राज्यपाल रहे)	27/07/1978 से 03/01/1984 तक

9	जी. एल. ओझा	01/12/1984 से 27/10/1985 तक
10	जे. एस. वर्मा (भारत के मुख्य न्यायाधीश बने)	14/06/1986 से 27/08/1986 तक
11	एन. डी. ओझा (कार्यवाहक राज्यपाल रहे)	08/01/1986 से 18/01/1988 तक
12	जी. एस. सोहनी	21/10/1989 से 23/10/1989 तक
13	एस. के. झा	27/10/1989 से 15/12/1993 तक
14	यू. एल. भट्ट	15/12/1993 से 10/10/1995 तक
15	ए. के. माथुर	03/02/1996 से 21/12/1999 तक
16	भवानी सिंह	24/02/2000 से 19/08/2003 तक
17	कुमार राजारतनाम	06/09/2003 से 12/03/2004 तक
18	आर. वि. रविन्द्रन	08/07/2004 से 08/09/2005 तक
19	ए. के. पटनायक	02/10/2005 से 16/11/2009 तक
20	एस. रफत आलम	20/12/2009 से 04/08/2011 तक
21	एस. ए. बोबडे	16/10/2012 से 11/04/2013 तक
22	ए. एम्. खानविलकर	24/11/2013 से 12/05/2016 तक
23	हेमंत गुप्ता	18/03/2017 से 01/11/2018 तक
24	संजय कुमार सेठ	14/11/2018 से निरंतर
25	अजय कुमार मिश्र	30/11/2019 से 09/06/2019 तक

- मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की पहली महिला न्यायाधीश श्रीमती सरोजिनी सकसेना थी।



साक्षरता

- साक्षरता - 69.32% (भारत - 73%)
- पुरुष साक्षरता - 78.7% (भारत - 80.90%)
- महिला साक्षरता - 59.2% (भारत - 64.60%)
- सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला - जबलपुर (81.1%)
- सबसे कम साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर (36.1%)
- सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला - इंदौर (87.3%)
- सबसे कम पुरुष साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर 42.0%
- सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला - भोपाल (74.9%)
- सबसे कम महिला साक्षरता वाला जिला - अलीराजपुर (30.3)

स्कूली शिक्षा

- प्रदेश में शासकीय प्राथमिक शाला 80807 एवं शासकीय माध्यमिक शालाएं 30228 हैं।
- प्रदेश में शासकीय हाई स्कूल 4998 एवं हायर सेकेंडरी स्कूल 4238 हैं।
- निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 - प्रदेश में 1 अप्रैल 2010 से यह प्रभावशाली है।
- इसके क्रियान्वयन के लिए प्रदेश में 26 मार्च 2011 को निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2011 जारी किए गए हैं।
- सर्वशिक्षा अभियान 2001 से चलाया जा रहा है। जिसके निम्न उद्देश्य हैं -
- 6 - 14 वर्ष के सभी बच्चों को प्राथमिक शाला में दर्ज कराना।
- 6 जनवरी 2010 तक सभी बच्चे आठ वर्ष की प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करें।
- उत्कृष्ट विद्यालय - शासकीय स्कूलों में माध्यमिक स्तर की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रदेश के प्रत्येक जिला मुख्यालय एवं विकास खंड मुख्यालय पर एक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- KHEL प्रोजेक्ट, IIT मुंबई के सहयोग से शैक्षिक गुणवत्ता के लिए कक्षा 1 से 3 के लिए गणित, हिंदी, अंग्रेजी की दक्षताओं आधारित शिक्षा का प्रोजेक्ट सीहोर, देवास, खंडवा में प्रारंभ किया गया है।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) का क्षेत्रीय कार्यालय ग्वालियर में है।
- मध्यप्रदेश का पहला सैनिक स्कूल रीवा में है।
- मध्यप्रदेश का एकमात्र आवासीय खेलकूद संस्थान सीहोर में है।
- पैदल सेना स्कूल महू है।

- प्रथम किसान विद्यालय जबलपुर में स्थापित किया गया है।
- थल सेना का शस्त्र स्कूल जबलपुर में है।

उच्च शिक्षा

- मध्य प्रदेश में वर्तमान में तो केंद्रीय विश्वविद्यालय, 24 राज्य विश्वविद्यालय, 33 निजी विश्वविद्यालय, 457 शासकीय महाविद्यालय, 483 अशासकीय महाविद्यालय एवं नो अनुदान प्राप्त महाविद्यालय हैं।
- मध्य प्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर है जिसकी स्थापना 1946 में की गई थी।
- इसे 2009 में केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है।
- प्रदेश का प्रथम शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जबलपुर में है।
- प्रदेश का पहला आदिवासी मेडिकल कॉलेज खंडवा में प्रस्तावित है।
- थल सेना शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज व केंद्र पंचमढ़ी है।
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर देश का प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसने ईस्टर्न मिशिगन विश्वविद्यालय अमेरिका के साथ अध्ययन अध्यापन अनुसंधान संबंधित परस्पर सहमति पर हस्ताक्षर किए हैं।
- एकमात्र शासकीय नर्सिंग महाविद्यालय इंदौर में है।
- मध्य प्रदेश का प्रथम यूनानी चिकित्सालय महाविद्यालय बुरहानपुर में है।
- मध्यप्रदेश के अमरकंटक (अनूपपुर) में आदिवासियों पर शोध के लिए 2008 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय आदिवासी विश्वविद्यालय खोला गया है, जिसे केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है।
- मध्य प्रदेश का एकमात्र दंत चिकित्सा महाविद्यालय इंदौर में है।
- कैंसर चिकित्सा महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र इंदौर में है।
- प्रदेश का पहला बालिका शारीरिक प्रशिक्षण कॉलेज शिवपुरी में है।
- देश का पहला आतंकवाद रोधी प्रशिक्षण स्कूल भोपाल में है।
- BHEL द्वारा संचालित जवाहरलाल नेहरू स्कूल ISO 9001-2000 प्रमाण पत्र पाने वाला प्रदेश का पहला स्कूल है।
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय वोकेशनल डिग्री देने वाला मध्य प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है।
- दूर संचार अभियांत्रिकी सैनिक कॉलेज महू में स्थित है।
- भारत की पहली डिजाइन यूनिवर्सिटी उज्जैन में आरंभ होगी।
- आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर में खोलने संबंधित विधेयक राज्यपाल के 2011 में मंजूरी प्रदान की है।
- इंदौर देश का एकमात्र शहर है जहां IIM एवं IIT स्थापित है।
- सबसे ज्यादा विश्वविद्यालय इंदौर है यहां पर 9 विश्वविद्यालय हैं।

- प्रदेश में सर्वाधिक विद्यालय सागर विश्वविद्यालय के अंतर्गत आते हैं।
- HCL एवं NTPC के सहयोग से माइनिंग इंजीनियरिंग महाविद्यालय सिंगरौली में स्थापित किया गया है।
- छिंदवाड़ा में विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया है।
- प्रथम निजी आईटी पार्क रायसेन जिले के मंडीदीप में स्थापित किया जाएगा।
- श्रमिकों के बच्चों के लिए रीवा, शहडोल, छतरपुर व रतलाम में श्रमोदय विद्यालय खोले जाएंगे।
- लीला गुरुकुल संस्थान चित्रकूट में स्थापित किया जाएगा।
- राज्य कैसर संस्थान की स्थापना जबलपुर में की गई है।
- देश का पहला राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास संस्थान की स्थापना सीहोर में की जाएगी।

म.प्र. के राज्य विश्वविद्यालय		
विश्वविद्यालय	स्थापना वर्ष	स्थान
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय	1956	जबलपुर
विक्रम विश्वविद्यालय	1957	उज्जैन
देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय	1964	इंदौर
जीवाजी विश्वविद्यालय	1964	ग्वालियर
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय	1964	जबलपुर
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय	1968	रीवा
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय	1970	भोपाल
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रिका एवं संचार विश्वविद्यालय	1990	भोपाल
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय	1991	सतना
मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय	1991	भोपाल
राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय	1997	भोपाल
राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय	1998	भोपाल
महर्षि पाणिनि संस्कृत वैदिक विश्वविद्यालय	2008	उज्जैन
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय	2008	ग्वालियर
राजा मानसिंह तोमर संगीत और कला विश्वविद्यालय	2008	ग्वालियर
नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय	2009	जबलपुर
अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय	2011	भोपाल
मध्य प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय	2011	जबलपुर
सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अनुसंधान विश्वविद्यालय	2012	सांची, रायसेन

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय	2015	छतरपुर
डॉ. भीमराव अंबेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान	2015	महू, इंदौर
धर्मशास्त्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय	2018	जबलपुर
पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय	2018	शहडोल

❖ सृजनपीठ

- डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर - मुक्तिबोध सृजनपीठ
- विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन - प्रेमचंद सृजनपीठ
- बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल - निराला सृजनपीठ
- रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर - सुभद्राकुमारी सृजनपीठ
- देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय, इंदौर - दुर्गावती सृजनपीठ

➤ प्रस्तावित सृजनपीठ

- परशुराम पीठ - जानापावा पहाड़ी, महू
- महादेवी वर्मा पीठ - अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
- गांधी शोध पीठ - देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय, इंदौर

❖ मेडिकल कॉलेज

- प्रथम मेडिकल कॉलेज गजराजा चिकित्सा महाविद्यालय ग्वालियर में 1946 में स्थापित हुआ था।
- महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज - इंदौर (1948)
- शासकीय चिकित्सालय महाविद्यालय - जबलपुर (1955)
- गांधी मेडिकल कॉलेज - भोपाल (1955)
- एस एन मेडिकल कॉलेज - रीवा (1964)
- शासकीय चिकित्सालय महाविद्यालय - सागर (2008)
- पशु चिकित्सा महाविद्यालय - राज्य में जबलपुर एवं महू दो पशु चिकित्सा महाविद्यालय हैं।
- आयुर्वेदिक महाविद्यालय - राज्य में भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, रीवा, इंदौर, बुरहानपुर और उज्जैन में कुल 7 आयुर्वेदिक महाविद्यालय हैं।
- दन्त चिकित्सा महाविद्यालय - म. प्र. का प्रथम दन्त चिकित्सा महाविद्यालय इंदौर में है, प्रदेश में कुल 11 दन्त चिकित्सा महाविद्यालय हैं।
- होम्योपैथिक कॉलेज - राज्य में 19 होम्योपैथिक कॉलेज हैं जिसमें 1 शासकीय है, शेष निजी हैं।
- यूनानी चिकित्सा महाविद्यालय - राज्य का 4 यूनानी चिकित्सा महाविद्यालय हैं।
- शासकीय महाविद्यालय
 1. हकीम सैयद जिया -उल-हसन शासकीय स्वशासी यूनानी महाविद्यालय एवं चिकित्सालय भोपाल

- **निजी महाविद्यालय**
 1. अलफारुक यूनानी महाविद्यालय, इंदौर
 2. हकीम अबुल हमीद यूनानी महाविद्यालय, देवास
 3. सैफिया हमीदिया तिब्बिया यूनानी महाविद्यालय, बुरहानपुर
- **नर्सिंग महाविद्यालय** - राज्य में एकमात्र नर्सिंग महाविद्यालय इंदौर में है।
- **कैंसर चिकित्सालय** - म.प्र. में 4 कैंसर हॉस्पिटल, भोपाल, इंदौर, जबलपुर और ग्वालियर में है।
- **मानसिक चिकित्सालय** - म.प्र. में दो मानसिक चिकित्सालय इंदौर और ग्वालियर में है।
- **अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स)** - दिल्ली स्थित एम्स के अनुरूप उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा से युक्त राजमाता विजयाराजे सिंधिया अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना भोपाल में की गई है।
- **संगीत महाविद्यालय** - नरसिंहगढ़ (राजगढ़), इंदौर, धार, उज्जैन, मंदसौर, ग्वालियर, मैहर (सतना) में है।
- **ललित कला महाविद्यालय** - जबलपुर, ग्वालियर, धार, इंदौर, खंडवा में हैं।
- राजा भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल को युनेस्को ने मेगा युनिवर्सिटी का दर्जा दिया है।
- ❖ **कृषि विश्वविद्यालय**
 - **जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर** -
 - इसकी स्थापना 2 अक्टूबर 1964 को की गई थी इसके अंतर्गत निम्न कृषि महाविद्यालय हैं -
 1. कृषि महाविद्यालय, जबलपुर
 2. कृषि महाविद्यालय, रीवा
 3. कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़
 4. कृषि महाविद्यालय, गंज बासौदा
 5. कृषि महाविद्यालय, वारासिवनी, बालाघाट
 6. कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा होशंगाबाद
 7. कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जबलपुर
 8. उद्यानिकी वोकेशनल शिक्षण संस्थान, गढ़ाकोटा सागर
 - **राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर**
 - इसकी स्थापना 19 अगस्त, 2008 को की गई थी इसके अंतर्गत निम्न कृषि महाविद्यालय हैं -
 1. कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर
 2. आर ए के कृषि महाविद्यालय, सीहोर
 3. कृषि महाविद्यालय, खंडवा
 4. कृषि महाविद्यालय, इंदौर
 5. उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर
 - उद्यानिकी महाविद्यालय रेहली (सागर) एवं छिंदवाड़ा जिले में प्रस्तावित है।
 - **लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षा विश्वविद्यालय ग्वालियर** - यह एशिया का पहला शारीरिक महाविद्यालय जिसकी स्थापना 1957 में की गयी थी।
 - 1973 में इसे नया नाम लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय (LNCPI) एवं 1995 इसे डीम्ड विद्यालय का दर्जा देकर दिया गया।
 - 14 जनवरी 2009 को इसे पूर्ण विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है।
 - **डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान महु** - 2015 में स्थापित यह सामाजिक विषयों में शोध परक पाठ्यक्रम संचालित करता है। इसे विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है।
 - **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली** - इसके राज्य में आठ केंद्र हैं इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, रीवा, बैतूल, सतना ओर सागर।
 - **इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट ग्वालियर** - 1983 में स्थापित है। इसके परिसर भुवनेश्वर, नई दिल्ली, नेल्लोर, गोवा में भी स्थित है।
 - **अटल बिहारी वाजपाई भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIITM)** - यह ग्वालियर एक सम विश्वविद्यालय है और भारत सरकार द्वारा जनवरी, 1996 में स्थापित शीर्ष सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंध संस्थान है।
 - **पं. द्वारिका प्रसाद मिशरा भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी, अभिकल्पना एवं निर्माण संस्थान (IIITDM), जबलपुर** - इसकी स्थापना जबलपुर में 2005 में की गई है।
 - **शारीरिक शिक्षा योग प्रशिक्षण एवं क्रीड़ा**
 - शासकीय योग प्रशिक्षण संस्थान - शिवाजी नगर भोपाल
 - तात्या टोपे राज्य शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय - शिवपुरी
 - **माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल**
 - स्थापना - 1965 में गठित स्वायत्त निकाय है।
 - इसका मुख्यालय भोपाल में तथा संभागीय कार्यालय इंदौर में है।
 - **म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल**
 - स्थापना - 1968
 - उद्देश्य - स्कूली शिक्षा के लिए पुस्तकें प्रकाशित कर उन्हें बिना लाभ-हानि के छात्र तक पहुंचाना है।
 - **म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल**
 - स्थापना - 1969
 - उद्देश्य - उच्च शिक्षा के लिए पुस्तकों का निर्माण कर बिना लाभ-हानि के छात्रों तक पहुंचाना है।
 - **म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग भोपाल**
 - स्थापना - 1973

प्रमुख संस्थाएँ

- **उद्देश्य** - उच्च शिक्षा में लगे महाविद्यालय को वित्तीय अनुदान हेतु राज्य सरकार को अनुशंसा करना है।
- **राज्य शिक्षक प्रशिक्षण मंडल**
- **स्थापना** - 1987
- **उद्देश्य** - प्रशिक्षण संस्थाओं तथा प्रशिक्षण के स्वरूप को अधिक सक्षम बनाने के लिए
- **शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ**
- **स्थापना** - अक्टूबर 1974
- **उद्देश्य** - दृश्य श्रव्य कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा के विभिन्न स्तरों में गुणात्मक सुधार
- **मध्य प्रदेश राज्य ओपन स्कूल**
- **स्थापना** - 1995
- **उद्देश्य** - मध्यप्रदेश में सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वैकल्पिक शिक्षा की व्यवस्था हेतु
- **राज्य स्त्री शिक्षा परिषद**
- **स्थापना** - 1964 पुनर्गठन 1964 और 1973
- **राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद**
- **स्थापना** - 4 नवंबर 1982
- **उद्देश्य** - शिक्षा सुधार हेतु अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के उद्देश्य से स्थापित इसके अंतर्गत उच्च शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा आती है।
- **राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर**
- **स्थापना** - 1966
- **उद्देश्य** - विज्ञान विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों को स्नातकोत्तर प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है।
- **मध्य प्रदेश निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग भोपाल**
- **स्थापना** - 2009
- **उद्देश्य** - राज्य स्तर पर निजी विश्वविद्यालयों के लिए विनियामक विरचना प्रदान करने के तथा अध्यापन, परीक्षा, छात्रों के हितों का संरक्षण के लिए स्थापित किया गया है।
- **राज्य शिक्षण संस्थान भोपाल**
- **स्थापना** - 1973
- **उद्देश्य** - विद्यालय शिक्षा में गुणात्मक सुधार के उद्देश्य से।
- **शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ**
- **स्थापना** - 1974
- **उद्देश्य** - दृश्य श्रव्य कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा के विभिन्न स्तरों में गुणात्मक सुधार के लिए
- **सेंटर फॉर रिसर्च एंड इंडस्ट्रियल स्टाफ परफॉर्मेंस (क्रिस्प), भोपाल**
- **स्थापना** - 1997
- **उद्देश्य** - जर्मनी के तकनीकी सहयोग से तकनीकी संस्थाओं के शिक्षक एवं विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने के लिए।

अन्य संस्थाएं

- अटल बिहारी वाजपेयी लोक प्रशासन संस्थान - भोपाल
- भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT) - भोपाल
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) - इंदौर
- भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) - इंदौर
- स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन मैनेजमेंट एंड ट्रेनिंग - भोपाल
- सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग - भोपाल
- भीमराव अंबेडकर दूरसंचार परीक्षण संस्थान - जबलपुर
- प्राच्य विद्या शोध प्रतिष्ठान - उज्जैन
- मौलाना आजाद कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी - भोपाल
- उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान - भोपाल
- राष्ट्रीय न्यायिक अकैडमी - भोपाल

शिक्षा सम्बन्धी प्रमुख योजनायें

योजना	शुरुआत	विशेषताएं
राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन	20 अगस्त 1994	इस योजना में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को विभिन्न शिक्षा केंद्रों के माध्यम शिक्षा प्रदान शिक्षा का लोकव्यापीकरण करना है।
मध्याह्न भोजन योजना	2 अक्टूबर 1995	भारत सरकार के सहयोग से राज्य के शासकीय अशासकीय शालाओं में यह योजना संचालित है इस योजना में बच्चों को शासकीय स्कूल में दोपहर का भोजन प्रदान किया जाता है
शिक्षा गारंटी योजना	1 जनवरी 1997	ऐसा क्षेत्र जहां पर स्कूल की सुविधा नहीं है और स्कूल जाने वाली 40 बालक बालिकाओं एवं सामान्य क्षेत्र में तथा 25 बालक बालिकाएं आदिवासी क्षेत्र में होने पर समुदाय की मांग पर 90 दिन अंदर स्कूल खुलने की सरकार की जिम्मेदारी है।
शाखनद योजना	26 जनवरी 1997	आदिवासी क्षेत्रों की विकास प्रतिक्रिया में विद्यालयों को सहभागी बनाने के उद्देश्य प्रारंभ
चले स्कूल हम अभियान	2000 - 2001	शिक्षा का स्तर ऊंचा बढ़ाने के उद्देश्य 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों की पहचान एवं विद्यालय में उनका नामांकन सुनिश्चित किया जाएगा.

महात्मा गांधी विद्यालय योजना	2005	10 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की सभी बालिकाओं को शैक्षणिक सत्र के दौरान निशुल्क आवास और शिक्षक दोनों सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है।
सर्व शिक्षा अभियान	2001	प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के उद्देश्य प्रारंभ की गई है।
कस्तूरबा गांधी विद्यालय योजना	20 जुलाई 2004	SC/ST/OBC की छात्राओं को आवासीय सुविधा माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य सभी राज्यों में लागू की गई है। प्रदेश में 207 ऐसे बालिका विद्यालय संचालित है।
गांव की बेटा योजना	2005	ग्रामीण क्षेत्र में 12वीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने वाली बालिकाओं को ₹500 प्रति माह की दर से छात्रवृत्ति दी जाती है।
कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना	जनवरी 2006	अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं को कक्षा नवी में प्रवेश लेने पर ₹1000 एवं कक्षा ग्यारहवीं में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को ₹2000 राशि दी जाती है।
मेधावी छात्र प्रोत्साहन योजना	2009- 10	शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूलों में अध्ययनरत कक्षा 12वीं में 85% अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को कंप्यूटर हेतु 25000 प्रति छात्र के मान से प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।
सुपर 100 योजना	2011-12	कक्षा 10 वी की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले शासकीय स्कूलों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन कर, उन्हें कक्षा 11 वी एवं 12 वी में अध्ययन हेतु शा. उत्कृष्ट सुभाष उ.मा.वि. भोपाल या शा. मल्हाराश्रम इंदौर में प्रवेश के साथ-साथ देश की प्रख्यात व्यावसायिक संस्थाओं के पाठ्यक्रमों यथा इंजीनियरिंग / मेडिकल / सी.ए. पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग देकर तैयारी कराना है।
शिक्षा विकास छात्रवृत्ति	2012-13	ऐसी समस्त प्रतिभावान बालिकाएं जो अपनी माता पिता की इकलौती संतान हैं एवं मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल से मान्यता प्राप्त एवं मंडल का पाठ्यक्रम संचालित करने वाले समस्त आशासकीय हाई सेकेंडरी विद्यालय में प्रवेश लेने पर छात्रवृत्ति की पात्र होंगी, ऐसे स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षण सत्र 2012-13 से बेटा बचाओ अभियान के अंतर्गत प्रारंभ किया गया है।
हेडस्टार्ट		इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पाठ्यक्रम की विशेषज्ञता कठिन अवधारणाओं को कंप्यूटर के माध्यम से सरल करना है।
निशुल्क साइकिल प्रदाय योजना	2016 - 17	इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में जहां शासकीय विद्यालय नहीं है वहां 6 वी एवं 9 वी कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को इस योजना में लाना लाभान्वित किया जाएगा.
निशुल्क पाठ्य पुस्तक योजना	जून 2017	महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किया गया इस योजना में कक्षा नवी कक्षा बारहवीं तक के विद्यार्थियों को गणित विज्ञान गणित एवं वाणिज्य पुस्तकें उपलब्ध करायी जाती है।
विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा अभियान	2018	योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान विभाग द्वारा कक्षा नौ से 12वीं तक सामान्य विद्यालयों में अध्ययन करने वाले सभी विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सुविधा प्रदान की जाती है।
मुख्यमंत्री जन कल्याण (शिक्षा प्रोत्साहन योजना)	2018	असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के बच्चों को कॉलेजों में प्रवेश की सुविधा प्रदान करने हेतु मुयह योजना प्रारंभ की गई है।
ई - बस्ता		इसके तहत मध्य प्रदेश शासन द्वारा मुद्रित समस्त पाठ पुस्तकें ऑनलाइन उपलब्ध कर दी गई है।
समग्र शिक्षा अभियान	24 मई 2018	सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा और टीचर एजुकेशन को मिलकर समग्र शिक्षा शुरू किया गया है। इसके तहत प्री स्कूल से बारहवीं कक्षा तक के छात्रों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने का उद्देश्य है।

मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2000 के अनुसार मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य संरचना को नया रूप दिया गया है जो निम्न है -

- उप स्वास्थ्य केंद्र - 5000 की आबादी (आदिवासी क्षेत्रों में 3000) पर एक उप स्वास्थ्य केंद्र का प्रावधान है।
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र - 30000 की आबादी (आदिवासी क्षेत्रों में 20000) पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का प्रावधान है।

3. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र - 1.20 लाख की आबादी (आदिवासी क्षेत्रों में 80000) पर एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का प्रावधान है।

● मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं

- जिला चिकित्सालय - 51
- सिविल अस्पताल - 69
- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र - 334
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र - 1170
- उप स्वास्थ्य केंद्र - 11192
- सिविल औषधालय - 92
- टीबी रोग अस्पताल - 07
- पॉली क्लीनिक - 06
- ट्रामा सेंटर - 08
- ग्राम आरोग्य केंद्र - 49864

● मानसिक चिकित्सालय - 2

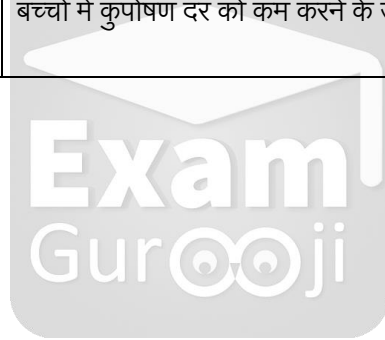
स्वास्थ्य संकेतक		
स्वास्थ्य संकेतक	मध्यप्रदेश	भारत
प्रजनन दर	2.8	2.3
जन्म दर	25.1	20.4
मृत्यु दर	7.1	6.4
शिशु मृत्यु दर	47	34
मातृ मृत्यु दर	173	130

- मध्यप्रदेश में जन्म से 5 वर्ष के बच्चों की कुपोषण दर 42.8% है जो देश में तीसरे स्थान पर है।
- इंदौर में आयोजित उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय कार्यों के चौथे राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन में मध्य प्रदेश को स्वास्थ्य सेवाएं निशुल्क उपलब्ध कराने हेतु प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।
- प्रदेश की पहली बार ओला जिले गांधी मेडिकल कॉलेज भोपाल हमीदिया चिकित्सालय में प्रारंभ की गई है।

मध्य प्रदेश के प्रमुख स्वास्थ्य कार्यक्रम एवं योजनाएं		
योजना	शुरुआत	विशेषताएं
मध्यप्रदेश राज्य बीमारी सहायता निधि	2 सितंबर 1997	मध्य प्रदेश के मूल निवासी एवं गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को 21 चिन्हित बीमारियों के इलाज के लिए ₹25000 से ₹2 लाख तक की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है।
दीनदयाल अंत्योदय उपचार योजना	25 सितंबर 2004	गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को प्रतिवर्ष ₹20000 तक की निशुल्क उपचार एवं जांच की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से
जननी सुरक्षा योजना	2005	मातृ मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर कम करने तथा संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को 1400 रुपए एवं शहरी क्षेत्र की महिलाओं को 1000 रु. आर्थिक सहायता दी जाती है।
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन	2005	ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए उत्तम स्तर की स्वास्थ्य व्यवस्था चुनाव कराना
आशा (ASHA - Accredited Social Health Activist)	2005	प्रत्येक ग्राम में मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता का चयन कर प्रशिक्षित करना, 28 जनवरी को आशा दिवस मनाया जाता है।
दीनदयाल चलित अस्पताल योजना	मई 2006	अनुसूचित जाति एवं जनजाति क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से
अटल बिहारी वाजपेई बाल आरोग्य एवं पोषण मिशन	2010	कुपोषण की रोकथाम तथा 5 वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु दर को कम करने के लिए
जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम	1 जुलाई 2011	शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों में शिशु एवं गर्भवती महिलाओं को निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना।
मुख्यमंत्री बाल हृदय	14 जुलाई 2011	हृदय रोग से पीड़ित बच्चों के उपचार के लिए निशुल्क सुविधा
दीनदयाल 108 एंबुलेंस सेवा	2011-12	नेशनल एंबुलेंस सर्विस अंतर्गत राज्य में आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधन हेतु
राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम	अक्टूबर 2013	सभी स्कूलों में छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण हेतु कार्यक्रम



निशुल्क चिकित्सा जांच योजना	2013	चिकित्सा संस्थानों में पैथोलॉजी जांच निशुल्क उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से
राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन	2013-14	शहरी क्षेत्रों की मलिन बस्तियों में जीवन यापन करने वाले परिवारों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शुरू किया गया।
कैंसर कीमोथेरेपी योजना	5 फरवरी 2014	सभी जिलों में कैंसर कीमोथेरेपी यूनिट स्थापित की गई है जहां 19 प्रकार की एंटी कैंसर मेडिसिंस उपलब्ध कराई जाती है।
स्वागतम लक्ष्मी योजना	2014	बालिकाओं एवं महिलाओं के प्रति समाज में भ्रांतियां एवं को प्रथाओं को समाप्त कर उनके प्रति सम्मानजनक वातावरण निर्मित करने के लिए
मुख्यमंत्री बाल श्रवण उपचार योजना	2015-16	राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत प्रारंभ 5 वर्ष तक के समस्त जन्मजात श्रवण बाधित बच्चों के लिए उपचार व्यवस्था
प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान	अगस्त 2016	प्रत्येक माह गर्भवती महिलाओं की द्वितीय एवं तृतीय मास में चिकित्सक द्वारा जांच कराई जाती है
डायलिसिस योजना	26 जनवरी 2016	किडनी रोगियों के लिए बीपीएल रोगियों को निशुल्क एवं अन्य रोगियों को न्यूनतम दरों पर डायलिसिस की सुविधा
आयुष्मान भारत योजना	15 अगस्त 2018	गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों का निशुल्क स्वास्थ्य बीमा एवं ₹5 लाख तक का निशुल्क इलाज की व्यवस्था
लालिमा अभियान		गर्भवती महिलाओं में एनीमिया के प्रबंधन के लिए
दस्तक अभियान		5 वर्ष तक के बच्चों के घरों में एएनएम आशा एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के संयुक्त दल द्वारा दस्तक देकर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करना
बाल शक्ति योजना (पोषण पुनर्वास केंद्र)		बच्चों में कुपोषण दर को कम करने के उद्देश्य से



- मध्यप्रदेश में खेलकूद गतिविधियों के विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु 1 अक्टूबर 1975 को खेलकूद एवं युवा कल्याण विभाग की स्थापना की गई।
- म.प्र. में 'क्रीडा परिषद' स्थापित थी, जिसे समाप्त कर खेल प्राधिकरण की स्थापना की गयी है।
- खेलों के समुचित विकास के लिए म.प्र. शासन ने अपनी पहली खेल नीति 1989 में घोषित की थी और सबसे नवीन खेल नीति 2005 में घोषित की है।
- भारतीय क्रीडा परिषद पटियाला की सहायता से राज्य स्तरीय क्षेत्रीय प्रशिक्षण परिषद की स्थापना भोपाल में की गई तथा इसके रूप प्रशिक्षण केंद्र इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, सागर, और उज्जैन में स्थापित किया गया।

मध्य प्रदेश के प्रमुख स्टेडियम		
स्टेडियम का नाम	स्थान का नाम	विशेष
रूप सिंह स्टेडियम	ग्वालियर	क्रिकेट का स्टेडियम है और दूधिया रोशनी से युक्त है।
ऐशबाग स्टेडियम	भोपाल	कृत्रिम घास या एस्ट्रोर्टफ युक्त स्टेडियम।
तात्या टोपे स्टेडियम	भोपाल	इस स्टेडियम में खेल संग्रहालय बनाया गया है। पूर्णता सौर ऊर्जा से संचालित एवं मल्टीपरपज स्टेडियम है।
अभय खेल प्रशाल	इंदौर	मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा इंडोर स्टेडियम है।
होलकर स्टेडियम	इंदौर	दूधिया रोशनी से युक्त है।
नेहरू स्टेडियम	इंदौर	सर्वाधिक अंतरराष्ट्रीय मैच इसी स्टेडियम में खेला गया पहला मैच 1993 में भारत और वेस्टइंडीज के बीच हुआ।
रविशंकर शुक्ल स्टेडियम	रीवा	
ठाकुर रणमत सिंह स्टेडियम	जबलपुर	
रानीताल खेल परिसर	जबलपुर	
बालक वालीबाल हॉस्टल	नरसिंहपुर	
मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम	भोपाल	
मध्यप्रदेश में खेल से संबंधित प्रमुख संस्थाएं		

खेलकूद एवं युवक कल्याण विभाग	1975	भोपाल
खेल एवं कल्याण	1981	भोपाल
पारसी क्रिकेट क्लब	1990	इंदौर
मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन	1941	इंदौर
मध्य प्रदेश बैडमिंटन एसोसिएशन	1946	जबलपुर
मध्यप्रदेश टेबल टेनिस एसोसिएशन	1957	जबलपुर
मध्य प्रदेश महिला हॉकी एकेडमी	2006	ग्वालियर
मध्यप्रदेश खेल संचालनालय	1975	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य क्रीडा परिषद	1960	भोपाल
मध्यप्रदेश खेल नीति	1989	
नवीन खेल नीति	2005	

❖ मध्य प्रदेश के प्रमुख खिलाड़ी

- **असलम शेर खां** - यहां मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध खिलाड़ी रहे हैं। इन्होंने टू हेल विथ हॉकी नामक पुस्तक लिखी है। यह बेतूल से सांसद चुने गए थे।
 - **लतीफ अनवर** - हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी थे बाद में पाकिस्तान हॉकी टीम के कप्तान बनाए गए।
 - **मुस्ताक अली** - विदेशी धरती पर शतक लगाने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी। 1936 में इन्होंने इंग्लैंड की सरजमीं पर सबसे पहले शतक लगाया।
 - **संध्या अग्रवाल** - संध्या अग्रवाल का जन्म इंदौर में हुआ था। यहां मध्य प्रदेश की ऐसी महिला खिलाड़ी है जिन्होंने अर्जुन और विक्रम अवार्ड दोनों प्राप्त किए हैं। यह भारतीय महिला टीम की कप्तान रही थी।
 - **नरेंद्र हिरवानी** - क्रिकेट खिलाड़ी थे। इन्होंने 1988 में वेस्टइंडीज टीम के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में एक ही पारी में सर्वाधिक विकेट लिए थे।
 - **कबीर अंसारी** - यह हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।
 - **बीएम कपाड़िया** - यह बैडमिंटन के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।
 - **जाल गोदरेज** - यह टेबल टेनिस के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।
 - **रूप सिंह** - इनका जन्म ग्वालियर में हुआ यहां हॉकी के गेम के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।
 - **जीएल यादव** - तैराकी में स्वर्ण पदक दिलाया था।
 - **मेजर ध्यानचंद** - इन्होंने ग्वालियर से हॉकी गेम खेलना स्टार्ट किया था।
 - **शंकर लक्ष्मण** - यह हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी इन्हें गोली के नाम से जाना जाता है।
- ❖ मध्य प्रदेश के अर्जुन अवार्ड प्राप्त महिला खिलाड़ी

- श्रीमती सुनीता चंद्रा - हॉकी
- सुश्री मधु यादव - हॉकी
- संध्या अग्रवाल - क्रिकेट
- श्रीमती नीलिमा चंद्रकांता - खो-खो

❖ मध्य प्रदेश के कुश्ती खिलाड़ी

- पप्पू यादव
- एनपी यादव
- कृपा शंकर पटेल

खिलाड़ी का नाम	खेल
राजेश्वरी ढोल किया	मध्य प्रदेश क्रिकेट टीम की कप्तान
रीता जैन	टेबल टेनिस
सुशील दोषी	प्रसिद्ध क्रिकेट कमेंटेटर
जलालुद्दीन	हॉकी
समीर दाद	हॉकी
चंद्रकांत पंडित	क्रिकेट
गामा पहलवान	कुश्ती
अमितेश पुरोहित	स्केटिंग
स्निग्धा मेहता	टेबल टेनिस
माइकल नाथ, डी सेनापति	फुटबॉल
रफीक खान, किरण अग्रवाल	शतरंज
बजरंगीप्रसाद, सोनल सिसोदिया	तेराकी
लतिका भंडारी	ताइक्वांडो

❖ विक्रम पुरस्कार

- **स्थापना - 1990**
- ऐसे सीनियर खिलाड़ी को जिन्होंने पिछले 5 वर्ष में कम से कम 2 वर्ष तक सीनियर वर्ग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए 1 पदक प्राप्त किया हो अथवा कम से कम एक सीनियर वर्ग की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए कोई पदक प्राप्त किया हो।
- पुरस्कार - नगद राशि 1 लाख, ब्लेजर, टाई, प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र।

❖ एकलव्य पुरस्कार

- **स्थापना - 1997**
- जूनियर वर्ग के 19 वर्ष से कम आयु के ऐसे खिलाड़ी जिन्होंने विगत 5 वर्ष में कम से कम 2 वर्ष तक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए 1-1 पदक प्राप्त किया हो अथवा कम से कम 1 अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए कोई पदक प्राप्त किया।

- पुरस्कार - नगद राशि 50,000, ब्लेजर, टाई, प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र।

❖ विश्वामित्र पुरस्कार

- **स्थापना - 1994**
- ऐसे प्रशिक्षक जिन्होंने पदक विजेता अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया हो।
- पुरस्कार - नगद राशि 1 लाख, ब्लेजर, टाई, प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र।

❖ लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार

- **स्थापना - 2014**
- ऐसे प्रशिक्षक/खिलाड़ी/प्रशासक का सम्मान जिन्होंने खेल के प्रोत्साहन के लिए योगदान दिया हो
- पुरस्कार - नगद राशि 1 लाख, ब्लेजर, टाई, प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र।

❖ प्रभाश जोशी पुरस्कार

- **स्थापना - 2013**
- यह पुरस्कार एक ऐसे खेल व्यक्तित्व को दिया जाता है जो मल्लखंभ के विकास और प्रचार में योगदान दिया है।

❖ मध्य प्रदेश के प्रमुख खेल प्रतियोगिता -

- **कर्नल डेली शील्ड टूर्नामेंट** - इस प्रतियोगिता का प्रारंभ 1913 में हुआ था। यह मध्य प्रदेश की पहली क्रिकेट प्रतियोगिता है।
- **विधायक कप** - जिला स्तर पर विधायक कप का आयोजन किया जाता।
- **मुख्यमंत्री कप** - राज्य स्तर पर मुख्यमंत्री कप का आयोजन होता है।

खेल से संबंधित अन्य एकेडमी		
एकेडमी का नाम	स्थापना वर्ष	स्थान
एथलेटिक्स अकेडमी	2016	भोपाल
तीरंदाजी अकादमी	2013	जबलपुर
क्रिकेट अकादमी	2016	शिवपुरी
मार्शल आर्ट एकेडमी	2007	भोपाल
मध्यप्रदेश पुरुष हाकी अकेडमी	2007	भोपाल
स्विमिंग अकादमी	2008	होशंगाबाद
शूटिंग अकादमी	2007	भोपाल
वाटर स्पोर्ट्स मेरे अकादमी	2007	भोपाल
इक्वेस्ट्रियन (घुड़दौड़) अकादमी	2007	भोपाल

❖ अन्य प्रमुख तथ्य

- मध्य प्रदेश का सबसे पुराना खेल क्लब पारसी क्रिकेट क्लब था जिसकी स्थापना 1890 में की गई थी।
- महान क्रिकेटर सी के नायडू की अध्यक्षता में 1941 में इसका नाम होलकर क्रिकेट एसोसिएशन कर दिया गया। इसके संस्थापक सचिव मेजर एम जगदाले को बनाया गया।
- आवासीय खेलकूद विद्यालय की स्थापना मध्यप्रदेश के सीहोर जिले में की गई है जबकि मध्य प्रदेश आदिवासी खेलकूद विद्यालय अलीराजपुर में खोला गया।
- मध्यप्रदेश शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय 1957 में ग्वालियर में खोला गया। बाद में इसका नाम परिवर्तित करके रानी लक्ष्मीबाई शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय कर दिया गया।
- मध्य प्रदेश का राज्य खेल मलखंब को घोषित किया गया। मध्यप्रदेश में मलखंब अकादमी की स्थापना उज्जैन में की गई है।
- भोपाल को हॉकी की नर्सरी की गौरव प्राप्त है।
- मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन का मुख्यालय इंदौर में है।
- इंदौर को खेल राजधानी कहा जाता है।
- जबलपुर स्थित रानीताल क्रिकेट स्टेडियम और साइकिलिंग बेलोड्रम की नींव 1999 में पड़ी थी।
- रानीताल में भारतीय खेल प्राधिकरण का प्रशिक्षण केंद्र है।
- यह 9 खेल विधाओं का कोचिंग सेंटर भी है।
- मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से 20 किमी. दूर सतगढ़ी में सर्वसुविधायुक्त खेल गांव स्थापित किया जाएगा, जो प्रदेश का पहला खेल गांव होगा।
- सितंबर 2006 में भोपाल की बड़ी झील के जल कीड़ा केंद्र में प्रदेश के पहले सेलिंग स्कूल की स्थापना की गई।
- प्रदेश का एकमात्र बालक वालीबाल हॉस्टल नरसिंहपुर में सन् 2000 से आरम्भ हुआ है।
- सिवनी में खेल एवं युवा कल्याण विभाग एस्ट्रोर्टफयुक्त हॉकी मैदान बनवा रहा है।
- भोपाल स्थित तात्या टोपे स्टेडियम में खेल संग्रहालय बनाया गया है।
- कृत्रिम घास (एस्ट्रोर्टफ) वाला एकमात्र स्टेडियम ऐशबाग (भोपाल) है।
- खेलों के समुचित विकास के लिए म.प्र. शासन ने अपनी पहली खेल नीति 1989 में घोषित की थी और सबसे नवीन खेल नीति 2005 में घोषित की है।
- म. प्र. की खेल संस्थाओं में प्रदेश टेबल – टेनिस एसोसिएशन इंदौर तथा बैडमिंटन एसोसिएशन इंदौर में स्थित है।
- म. प्र. हॉकी एसोसिएशन का मुख्यालय प्रदेश के जबलपुर में स्थित है।
- म. प्र. के हॉकी खिलाड़ी लतीफ अनवर बाद में पाकिस्तान हॉकी टीम के कप्तान बने, जबकि असलम शेर खान बैतूल के सांसद बने।
- म. प्र. के इंदौर के क्रिकेट खिलाड़ी कैप्टन मुश्ताक अली प्रथम ऐसे भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जिन्होंने विदेशी धरती पर शतक बनाने का गौरव हासिल किया है।
- म.प्र. में पहली क्रिकेट प्रतियोगिता 1913 में कर्नल डेली के नाम से डेली शील्ड टूर्नामेंट आरम्भ हुआ था, जबकि रणजी ट्रॉफी प्रतियोगिता म. प्र. में 1934 से आरम्भ हुई।
- भारत के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी नरेन्द्र हिरवानी ने अपने पदार्पण टेस्ट मैच जनवरी, 1988 में वेस्टइंडीज के खिलाफ चेन्नई में दो परियों में कुल 16 विकेट लिए थे।
- खेलों में अंतरराष्ट्रीय पदक जीतने पर मध्य प्रदेश सरकार अब 2 करोड़ रुपए प्रदान करेगी।
- मध्य प्रदेश के ग्वालियर निवासी सत्येंद्र सिंह लोहिया 20187 में इंग्लिश चैनल पार करने वाले एशिया के प्रथम दिव्यांग और पैरा सिमर खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने अमेरिका में 42 किमी. लंबे कैटलीना चैनल को पार कर नया इतिहास रच दिया। ऐसा करने वाले वे एशिया के पहले दिव्यांग तैराक हैं।

परिवहन

- प्रदेश में सड़क यातायात कारपोरेशन अधिनियम 1950 के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना 1 जून 1962 में की गयी थी, 1 दिसंबर 2002 को सरकार द्वारा इसे विघटित कर दिया गया है।

❖ परिवहन के साधन

- मध्यप्रदेश में परिवहन के साधनों को तीन भागों में बांटा जा सकता है -

1. सड़क परिवहन
2. रेल परिवहन
3. वायु परिवहन

सड़क परिवहन

- मध्य प्रदेश में सड़कों का घनत्व प्रति 100 वर्ग किमी. पर 31 किमी है। जबकि देश का औसत 83 किमी प्रति 100 वर्ग किमी है। इसमें सिद्ध होता है कि प्रदेश में सड़क का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है।
- मध्य प्रदेश सड़कों की लंबाई प्रति 100 वर्ग किमी. पर 52 किमी. है।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2017 - 18 के आंकड़ों के अनुसार मध्य प्रदेश में सड़कों की कुल लंबाई 64719 किमी है।

मध्य प्रदेश में लोक निर्माण विभाग द्वारा संधारित सड़कें (जनवरी 2018)

राष्ट्रीय राजमार्ग	प्रांतीय राजमार्ग	मुख्य जिला मार्ग	अन्य जिला/ग्रामीण मार्ग	कुल योग
8772.3 किमी	11389 किमी	22129 किमी	23395 किमी	64923 किमी

स्रोत - म. प्र. आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18

❖ राष्ट्रीय मार्ग

- राष्ट्रीय राजमार्ग केंद्र सरकार के अधीन होते हैं तथा इनका निर्माण एवं रखरखाव भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा किया जाता है।
- प्रदेश से होकर 44 राष्ट्रीय मार्ग गुजरते हैं जिनकी लंबाई 8772.3 किमी है।
- राज्य से गुजरने वाला सबसे लंबा राष्ट्रीय मार्ग राष्ट्रीय राजमार्ग NH-46 है। प्रदेश में इसकी कुल लंबाई 634 किमी. है।
- मध्य प्रदेश का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग 135BB है, जिसकी लंबाई मात्र 7.5 किमी है।
- ब्यावरा (राजगढ़) को मध्य प्रदेश का राष्ट्रीय राजमार्ग का चौराहा कहा जाता है।

- राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई में मध्य प्रदेश का उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के बाद तीसरा स्थान है।

मध्यप्रदेश से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग

क्र.	राष्ट्रीय राजमार्ग	रूट	लंबाई (किमी में)
1.	719	भिंड - ग्वालियर	108
2.	27	कोटा- कोलारस- शिवपुरी- करेरा	121.9
3.	927A	रतलाम	37
4.	30	रीवा- कटनी- जबलपुर- मंडला	493.7
5.	34	छतरपुर- हीरापुर- दमोह- जबलपुर- लखनादौन	369
6.	135	मंगवान	65.4
7.	135B	डभौरा- सिरमौर	80
8.	135 BB	बरगढ़-डभौरा	7.5
9.	135 BD	सिरमौर- कोल्हा- राजगढ़- लालगांव- पनगड़ी	36
10.	135 BG	मझगावां - सतना - मैहर	121.4
11.	135 C	पिपरा-करोदिया-सिंगरौली	72
12.	44	सागर- नरसिंहपुर- लखनादौन- सिवनी	571.9
13.	45	अमरकंटक- डिंडोरी- शाहपुरा- जबलपुर-देवरी- बरेली- बारी- गोहरगंज- अब्दुल्लागंज- भोपाल- नरसिंहगढ़	495.2
14.	934	बंडा- सागर- बीना	170.4
15.	39	छतरपुर- पन्ना- नागौद- सतना- रीवा- चुरहट- सीधी- सिंगरौली	392.8
16.	339	नौगांव-उत्तर प्रदेश सीमा	15
17.	339B	बमीठा-खजुराहो	9
18.	539	ओरछा-पृथ्वीपुर-टीकमगढ़- शाहगढ़	150
19.	43	गुलगंज- पवाई- कटनी- उमरिया- शहडोल	435.5
20.	543	शहडोल- डिंडोरी- मंडला- बालाघाट	359
21.	943	पवाई -नागौद	70
22.	46	ग्वालियर- शिवपुरी- गुना- ब्यावरा- भोपाल- अब्दुल्लागंज- होशंगाबाद- बैतूल	634
23.	146	भोपाल- विदिशा- सागर	167
24.	146B	बुधनी- रेहटी- नसरुल्लागंज	50

25.	346	झरखेड़ा-बेरसिया- विदिशा- मुगावली- चंदेरी	222
26.	47	झाबुआ- राजगढ़- धार- इंदौर- कन्नौद- खातेगांव- नेमावर- हरदा- बेतूल- मुलताई- चिचोली	558.6
27.	147E	झाबुआ- नवागांव- रायपुरिया	34
28.	347	मुलताई-छिंदवाड़ा- सिवनी	152.3
29.	347A	मुलताई-महाराष्ट्र सीमा	23
30.	347B	खंडवा- खरगोन- बड़वानी	287
31.	347BG	सनावद- बड़वा- इंदौर	106
32.	347C	धार- कसरावद- खरगोन- बुरहानपुर	201
33.	547	अमरवाड़ा- छिंदवाड़ा- सौसर	267
34.	148N	रतलाम- जावरा- झालावाड़- कोटा- सवाई माधोपुर-	255
35.	548C	महाराष्ट्र सीमा -बेतूल	78
36.	52	राजगढ़- ब्यावरा- सारंगपुर- शाजापुर- देवास- इंदौर- महु- सेंधवा	454.2
37.	552	श्योपुर- सबलगढ़-मुरैना -पोरसा- अटेर- भिंड- भांडेर	402
38.	552G	सोयत- सुसनेर- आगर- उज्जैन	192
39.	752B	सुसनेर- खिलचीपुर- ब्यावरा - सिरोंज	151
40.	752C	जीरापुर- पचोर- शुजालपुर- आज	139
41.	752G	सेंधवा-शहादा-परक्षा	53
42.	753L	बुरहानपुर- खंडवा	93
43.	56	भाबरा- अलीराजपुर	52
44.	161G	जामोद-कांकेर	20
		महायोग	8772.3

❖ राजमार्ग

- प्रदेश के एक जिले से दूसरे जिले एवं राजधानी को जिला मुख्यालय से जोड़ने वाले मार्ग होते हैं जिनका निर्माण और प्रबंधन राज्य का लोक निर्माण विभाग करता है।
- मध्य प्रदेश में कुल 48 राजकीय राजमार्ग हैं, जिनकी कुल लंबाई 11389 किमी. है।
- प्रदेश का सबसे लंबा राजकीय राज्य मार्ग SH-19 जैतपुर से छिंदवाड़ा (743.4 किमी) तथा सबसे छोटा राजकीय राजमार्ग SH-39 थांदला से कुशलगढ़ (22 किमी) है।

❖ मुख्य जिला मार्ग

- इन मार्गों के निर्माण का मुख्य उद्देश्य जिले के नगरों बड़ी बस्तियों और अन्य प्रशासनिक केंद्रों को जिला मुख्यालय से जोड़ना है।

- प्रदेश में मुख्य जिला मार्ग की कुल लंबाई 22129 किमी. है।

❖ ग्रामीण मार्ग

- मध्य प्रदेश में ग्रामीण मार्ग की लंबाई 23395 किमी. है।
- अधिकतर ग्रामीण मार्ग कच्चे होते हैं, इन सड़कों पर वर्षा ऋतु में परिवहन काफी कठिन हो जाता है।

मध्यप्रदेश में परिवहन की प्रमुख योजनाएं		
योजना	शुरुआत	विशेषता
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना	25 दिसंबर 2000	500 या इससे अधिक तथा आदिवासी क्षेत्रों में 250 या उससे अधिक आबादी वाले संपर्क विहीन गांव को बारहमासी सड़क से जोड़ना
मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना	2010-11	मैदानी क्षेत्रों में 500 आबादी आदिवासी क्षेत्रों में 250 से कम आबादी वाले गांव को बारहमासी पक्की सड़क से जोड़ना.
मुख्यमंत्री खेत सड़क योजना	1 जनवरी 2014	किसानों को घर से खेतों तक सड़क बनाना है।
अपनी बस सूत्र सेवा योजना	23 जून 2018	इसमें प्रदेश के 16 नगर निगम तथा 4 नगर पालिकाओं क्रमशः भिंड, शिवपुरी, गुना, विदिशा को शामिल किया गया है।

- मध्य प्रदेश राज्य परिवहन नीति बनाने वाला देश का प्रथम राज्य है, जिसमें खुली परमिट नीति कम टैक्स दरों पर ग्रामीण क्षेत्रों में यात्री वाहन सुविधा उपलब्ध कराना उद्देश्य है।
- बस स्टैंडों के उन्नयन के लिए मध्य प्रदेश इंटर सिटी ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी का गठन किया गया है।
- केंद्र शासन द्वारा पांडुर्णा जिला छिंदवाड़ा में ड्राइविंग ट्रेनिंग स्कूल फिटनेस सेंटर का निर्माण किया गया है।
- इंदौर में ऑटोमेटिक एवं कंप्यूटरीकृत ड्राइविंग ट्रक का निर्माण किया गया है।
- भारत सरकार, मध्य प्रदेश सरकार और विश्व बैंक ने 24 अप्रैल 2018 को मध्य प्रदेश ग्रामीण कनेक्टिविटी परियोजना के लिए 210 मिलियन डॉलर के ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- मध्यप्रदेश में सड़क का सर्वाधिक घनत्व वाला जिला सतना है जबकि सबसे कम घनत्व वाला जिला श्योपुर है।

एक्सप्रेस-वे	लंबाई	विशेषता
नर्मदा एक्सप्रेस-वे	1265 किमी	यह 31 हजार करोड़ की लागत से बनेगा यह एक्सप्रेस वे छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश और गुजरात को जोड़ेगा
चंबल एक्सप्रेस-वे	300 किमी	मध्य प्रदेश राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्य और राष्ट्रीय मार्ग माध्यम से उत्तर प्रदेश को जुड़ेगा

रेल परिवहन

- भारत में रेल मार्ग की कुल लंबाई 66687 किमी. है।
- देश के कुल रेल मार्ग लंबाई का 7.49 प्रतिशत लगभग 5000 किमी मध्य प्रदेश में स्थित है।
- मध्य प्रदेश राज्य में सर्वप्रथम वर्ष 1867 में प्रथम रेलवे मार्ग इलाहाबाद जबलपुर के मध्य प्रारंभ हुआ था तत्पश्चात तुकोजीराव होलकर के प्रयास से वर्ष 1869 खंडवा इंदौर रेल लाइन का निर्माण किया गया था जिसे होलकर स्टेट रेलवे कहा जाता था।

मध्यप्रदेश में गुजरने वाले रेलवे जोन

रेलवे जोन	मुख्यालय	क्षेत्र
पश्चिम मध्य रेलवे	जबलपुर	जबलपुर, भोपाल
मध्य रेलवे	मुंबई	ग्वालियर, भोपाल, रीवा, जबलपुर संभागीय मुख्यालय खंडवा
पश्चिम रेलवे	मुंबई	इंदौर, देवास, सीहोर, उज्जैन, रतलाम एवं मंदसौर संभागीय मुख्यालय रतलाम
दक्षिण पूर्वी रेलवे	कोलकाता	शहडोल, छिंदवाड़ा बालाघाट एवं सिवनी, संभागीय मुख्यालय अनूपपुर
उत्तर मध्य रेलवे	प्रयागराज (इलाहाबाद)	ग्वालियर, मुरैना संभागीय मुख्यालय ग्वालियर

- रेल सेवा विभाग का मुख्यालय भोपाल में है।
- मध्यप्रदेश के भोपाल जिले में स्थित हबीबगंज रेलवे स्टेशन वर्ष 2017 में देश का प्रथम निजी रेलवे स्टेशन बन चुका है। इसका संचालन बंसल ग्रुप के माध्यम से किया जा रहा है। यही रेलवे स्टेशन प्रदेश का प्रथम वाईफाई एवं कैशलेस सुविधायुक्त स्टेशन है।
- हबीबगंज रेलवे स्टेशन को देश के पहले विश्व स्तरीय रेलवे स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- हबीबगंज-निजामुद्दीन भोपाल एक्सप्रेस ISO प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाली पहली रेल है।
- मध्यप्रदेश का इटारसी सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन है।
- जबलपुर रेलवे स्टेशन देश का प्रथम वाईफाई एवं स्वचालित रेलवे फाटक सुविधा वाला स्टेशन है।
- खजुराहो रेलवे स्टेशन को ISO14001-2015 प्रमाण पत्र प्रदान किया गया है।
- भारत का पहला ISO-9001 एक प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाला रेलवे स्टेशन हबीबगंज भोपाल है।

- **मेट्रो** - इंदौर में मेट्रो रेल प्रोजेक्ट प्रारंभ हुआ है जिसकी लंबाई 31.55 किमी. है तथा इसके लिए हरियाणा डेवलपमेंट बैंक और न्यू डेवलपमेंट बैंक से लिया गया है।
- भोपाल में मेट्रो रेल 27.8 7 किमी. है और इसके लिए ऋण यूरोपियन इन्वेस्टमेंट बैंक द्वारा प्रदान किया जाएगा।

- **मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण रेलवे प्रतिष्ठान**
- 1. रेलवे कोच रिपेयर फैक्ट्री - निशातपुरा, भोपाल
- 2. रेलवे विद्युत इंजन कारखाना - भोपाल
- 3. रेलवे डीजल इंजन कारखाना - विदिशा (प्रस्तावित)
- 4. रेलवे स्प्रिंग कारखाना - ग्वालियर
- 5. इलेक्ट्रिक लोको सेड - कटनी
- 6. रेलवे भर्ती बोर्ड - भोपाल
- 7. डीजल लोकोमोटिव फैक्ट्री - सीहोर (निर्माणाधीन)
- 8. रेलवे स्लीपर बनाने का कारखाना - बुधनी, सीहोर

वायु परिवहन

- मध्यप्रदेश में वायु परिवहन का शुभारंभ 26 जुलाई 1948 को इंदौर से ग्वालियर के बीच हुआ था।
- राज्य में प्रमुख 5 हवाई अड्डे 33 हवाई पट्टी में स्थित हैं।
- 1. भोपाल राजा भोज हवाई अड्डा - भोपाल
- 2. रानी अहिल्याबाई हवाई अड्डा - इंदौर
- 3. राजमाता विजयाराजे सिंधिया हवाई अड्डा - ग्वालियर
- 4. डुमना/रानी दुर्गावती हवाई अड्डा - जबलपुर (हवाई अड्डा)
- 5. छत्रसाल हवाई अड्डा - खजुराहो
- **निजी हवाई पट्टियां** - 1. दमोह (डायमंड सीमेंट), 2. बुढारा (शहडोल ओरिएंटल पेपर मिल), 3. नागदा (उज्जैन ग्रेसिम इंडस्ट्रीज)
- **भारतीय सेना की हवाई पट्टियां** - 1. ग्वालियर (वायुसेना), 2. नीमच
- **सुरक्षा बलों की हवाई पट्टियां** - 1. टेकनपुर, ग्वालियर (सीमा सुरक्षा बल) 2. शिवपुरी (भारत - तिब्बत सीमा सुरक्षा बल)
- राज्य का एक मात्र कन्हा राष्ट्रीय उद्यान जहां हवाई पट्टी है।
- मध्यप्रदेश में भोपाल एवं इंदौर 2 अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं।

संचार सेवाएं

- संचार सेवाओं का विकास किसी भी समाज की प्रगति को दर्शाता है इसलिए सभी समाज संचार सेवा के उन्नति हेतु प्रयासरत है।

❖ **डाक सेवा**

- मध्य प्रदेश में डाक सेवा की शुरुआत 1 अप्रैल 1962 में हुई। जब नागपुर में डाक तार परिमंडल का गठन किया गया, इसे 11 जुलाई 1965 को भोपाल स्थानांतरित कर दिया गया।
- वर्तमान में प्रदेश में लगभग 8279 डाकघर तथा लगभग 38395 पत्र पेटियां हैं।
- मध्य प्रदेश के विदिशा में 28 फरवरी 2017 को देश का प्रथम डाकघर पासपोर्ट सेवा केंद्र स्थापित किया गया।

❖ दूरसंचार सेवा

- प्रदेश में दूरसंचार सेवा की शुरुआत 1 सितंबर 1974 में प्रारंभ की गयी।
- Airtel टेलीफोन भारतीय समूह सेवा देश की पहली निजी टेलीफोन सेवा है।
- जनवरी 1999 में वर्चुअल कार्ड कॉलिंग सेवा (VCC) की शुरुआत इंदौर में दूरसंचार विभाग द्वारा की गयी। थी, जो भारत में दिल्ली तथा मुंबई के बाद तीसरा शहर था।

❖ आकाशवाणी (रेडियो)

- भारत में रेडियो प्रसारण 1927 से प्रारंभ हुआ, इसे 1936 में ऑल इंडिया रेडियो व 1957 में आकाशवाणी नाम दिया गया।
- आकाशवाणी सेवा की शुरुआत प्रदेश में 22 मई 1955 में इंदौर में पहले आकाशवाणी केंद्र की स्थापना के साथ हुई।
- इसके बाद दूसरा आकाशवाणी केंद्र 1956 में भोपाल में तथा तीसरा 1964 में ग्वालियर में स्थापित किया गया।
- 1975 से भोपाल और इंदौर से व्यवसायिक प्रसारण प्रारंभ किया गया।
- प्रसारण की दृष्टि से सबसे अधिक क्षमता वाला आकाशवाणी केंद्र इंदौर है।
- निजी क्षेत्र में सर्वप्रथम रेडियो मिर्ची FM रेडियो इंदौर में 2006 से प्रारंभ हुआ था।

❖ दूरदर्शन

- भारत में टेलीविजन की शुरुआत सितंबर 1959 से नई दिल्ली में हुई। जबकि मध्यप्रदेश में 1972 - 73 में अविभाजित मध्य प्रदेश के रायपुर (छ.ग.) में रिले केंद्र स्थापित किया गया था।
- 15 अगस्त 1982 से रंगीन प्रसारण शुरू हुआ तथा 1984 में मेट्रो चैनल शुरू हुआ।
- 1982 में अल्प शक्ति ट्रांसमिशन केंद्र भोपाल में तथा 1984 में इंदौर में दूरदर्शन केंद्र स्थापित किया गया।
- मध्य प्रदेश में इंदौर, भोपाल तथा ग्वालियर में कार्यक्रम निर्माण केंद्र (स्टूडियो) है। प्रदेश का पहला टीवी स्टूडियो भोपाल में स्थापित किया गया था।
- प्रदेश का प्रथम सौर ऊर्जा से चलने वाला TV कस्तूरबा इंदौर में लगाया गया है।

- क्षेत्रीय प्रसारण के लिए भोपाल केंद्र को सेटलाइट से जोड़ा गया है।

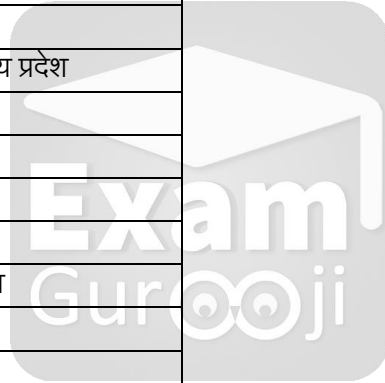
❖ समाचार पत्र

- भारत का पहला समाचार पत्र बंगाल गजट था जिसका संपादन जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 में किया, जबकि मध्य प्रदेश का पहला समाचार पत्र **ग्वालियर अखबार** था जो 1840 में ग्वालियर से प्रकाशित हुआ था जो उर्दू भाषा का था एवं साप्ताहिक प्रकाशित होता था।
- राज्य में हिंदी भाषा से प्रकाशित होने वाला पहला अखबार मालवा अखबार था, जिसकी शुरुआत 6 मार्च 1848 को इंदौर से की गयी थी। इसके प्रकाशक पंडित प्रेम नारायण थे।
- मध्य प्रदेश का पहला हिंदी मासिक पत्र नवजीवन था जो इंदौर से 1939 में प्रकाशित हुआ था।
- मध्य प्रदेश में मराठी का प्रथम अखबार इंदौर से 'पूर्ण चंद्रोदय' का प्रकाशन हुआ।
- मध्य प्रदेश का पहला सांध्य दैनिक प्रदीप (1950) जबलपुर से प्रकाशित हुआ।
- भारत भ्राता 1987 से रीवा से प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है। विन्ध्य का पहला साप्ताहिक समाचार पत्र है।
- मध्य प्रदेश का एकमात्र सिंधी भाषा का समाचार पत्र फर्ज है।
- प्रदेश से निकलने वाली एकमात्र खेल पत्रिका खेल हलचल है जो इंदौर से नईदुनिया प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की जाती है।
- राज्य में सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला समाचार पत्र वर्तमान में दैनिक भास्कर है।
- जयाजीप्रताप ग्वालियर से 1905 से प्रकाशित होने वाला एक साप्ताहिक पत्र था, वर्तमान में यह पत्र मध्यप्रदेश संदेश के नाम से प्रकाशित हो रहा है।
- सर्वाधिक समाचार पत्र भोपाल से प्रकाशित होते हैं।
- सरकारी योजनाओं एवं रोजगार से संबंधित सूचना प्रकाशित करने के लिए माध्यम नामक संस्था का गठन 1985 में भोपाल में किया गया, जिसके द्वारा रोजगार एवं निर्माण साप्ताहिक तथा पंचायिका नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।
- मध्य प्रदेश में पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए 1991 में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना भोपाल में की गयी।
- माखनलाल चतुर्वेदी के संपादन में कर्मवीर का 1920 में जबलपुर से बाद में 1935 में खंडवा से प्रकाशित हुआ।
- नई दुनिया मध्य प्रदेश से प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है जिसकी शुरुआत 5 जून 1947 को इंदौर से की गयी थी।
- माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय की स्थापना भोपाल में 19 जून 1984 में की गयी।

- मध्यप्रदेश में दो पत्रकार संगठन हैं – 1. मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ तथा 2. मध्य प्रदेश आंचलिक पत्रकार संघ

समाचार पत्र एवं प्रकाशन स्थल	
प्रकाशन स्थल	समाचार पत्र
भोपाल	दैनिक आलोक, देशबंधु, प्रदेश टाइम्स, न्यूज एक्सप्रेस, नेशनल मेल, मध्य प्रदेश क्रॉनिकल
ग्वालियर	लोक गाथा, ग्वालियर समाचार, लश्कर समाचार, चंबल वाणी, जवाहर के लाल, भारत भूमि
इंदौर	नई दुनिया, दैनिक भास्कर, पीपुल समाचार, दैनिक जनार्दन, प्रभात किरण, लोकस्वामी, इंदौर समाचार, फ्री प्रेस जर्नल, महा मध्य प्रदेश
जबलपुर	नवीन दुनिया युगधर्म देशबंधु, हिंदी एक्सप्रेस, नर्मदा ज्योति, नर्मदा हेरोल्ड, स्वदेश
उज्जैन	अवंतिका, विक्रम दर्शन, अग्निबाण, जलती मशाल, प्रजा दूत, ब्रिगेडियर
नीमच	नई विद्या, अमृत मंथन
सतना	सतना समाचार, नेशनल टुडे न्यूज, देशबंधु, स्वदेश
मंदसौर	दशपुर दर्शन, कीर्तिमान, ध्वज
शहडोल	शहडोल टाइम्स, समय, दैनिक मध्य प्रदेश
रीवा	आलोक विध्य समाचार
टीकमगढ़	ओरछा टाइम्स
बड़वानी	निमाड़ एक्सप्रेस
बुरहानपुर	वीर संतरी
मुरैना	चंबल वाणी, युग प्रणेता, मध्य राज्य
बालाघाट	बालाघाट टाइम्स, विश्व सूर्य
कटनी	जन्मेजय, महाकौशल, भारती
दतिया	दतिया टाइम्स, अंजाम, दतिया प्रकाश
साहित्यिक पत्रिकाएं एवं प्रकाशन स्थल	
प्रकाशन स्थल	पत्रिकाएं
भोपाल	समीरा, शब्द शिल्पियों के आस, प्रेरणा, शांति ध्वज, शिखर वार्ता, साक्षात्कार (साहित्य अकादमी), सूचना मन्त्र, देश का सन्देश, कर्मनिष्ठा, मध्य प्रदेश सन्देश, साहित्य सरोवर, रोजगार और निर्माण, उर्वशी, राग भोपाली, मीडिया विमर्श, धर्मार्थी, नेचर टुडे, इलेक्ट्रॉनिक आपके लिए, रचना (हिंदी ग्रन्थ अकादमी), आंचलिक पत्रकार, उपभोक्ता शक्ति, कृषक दुनिया, दिव्यलोक, प्रदेश टुडे, प्रेरणा, अक्षरा (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति)
इंदौर	वीणा, स्पूतनिक, सहकार दुनिया, कालसूत्र, सर्व मंगला, क्रान्तिकारी सहारा, कृषि मंथन, देवपुत्र, नियति दर्पण, निरोगाधाम, सिन एक्सप्रेस
जबलपुर	कृषक चेतना, नर्मदा, मेमदीप, पहल, प्राची, कर्मवीर, छात्र सहोदय, प्रेमा

उज्जैन	शब्द संसार, आशवस्त, बाईसा (राजस्थानी), अदम्य, महाकाल भ्रमण, सरयू परिवार
ग्वालियर	जगलीला, जनप्रवाह, लोकमंगल, पृथ्वी और पर्यावरण, साहित्य परिक्रमा, स्वयं निर्माणम्
सागर	परिधि, दिनकर, वदम्बिका, मध्य भारती पत्रिका
छिंदवाडा	जगार, वनांचल
नरसिंहपुर	तुलसी रंगत
होशंगाबाद	मेकलसुता
बालाघाट	पंचायती राज
कटनी	ऋणा
नीमच	विप्र पंचायत
गुना	वीर अभिमन्यु
रतलाम	पर्यावरण डाइजेस्ट, आवेग
विदिशा	नया विकल्प, अनंत अविराम
खण्डवा	अक्षत



- दुर्गम क्षेत्र में निवास करने के कारण कुछ जातीय समूह सामाजिक विकास की मुख्यधारा से अलग-थलग हो गए, जिन्हें अलग अलग नामों से जाना जाता है जैसे - वन्य जाति आदिवासी, पर्वत वासी, वनवासी और आदिम जाति ।
- मध्य प्रदेश में लगभग 47 जातियाँ निवास करती हैं, 2011 की जनगणना अनुसार मध्य प्रदेश की जनसंख्या में 21.8% जनसंख्या आदिवासी है ।
- अनुसूचित जनजाति की संख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश सारे देश में प्रथम स्थान पर है ।
- मध्यप्रदेश में भारत के कुल जनजातियों का 14.69% भाग निवास करता है ।
- मध्य प्रदेश की अधिकतर जनजातियाँ प्रोटोऑस्ट्रेलाइड समूह का प्रतिनिधित्व करती हैं ।
- मध्यप्रदेश में 1964 में आदिम जाति कल्याण विभाग की स्थापना की गई थी, जिसका नाम 1965 में बदलकर आदिवासी एवं हरिजन कल्याण विभाग कर दिया गया ।
- देश का पहला आदिवासी शोध एवं विकास संस्थान भोपाल में है ।
- देश का पहला आदिवासी संचार केंद्र झाबुआ में है ।
- इंदिरा गांधी आदिवासी विश्वविद्यालय अमरकंटक में स्थापित किया गया ।
- आदिवासी संग्रहालय छिंदवाड़ा के पातालकोट में स्थापित है ।
- जनजातीय संग्रहालय भोपाल में स्थापित है ।

सर्वाधिक ST जनसंख्या	सर्वाधिक ST जनसंख्या प्रतिशत	न्यूनतम ST जनसंख्या	न्यूनतम ST जनसंख्या प्रतिशत
1. धार 2. बड़वानी 3. झाबुआ	1. अलीराजपुर (89%) 2. झाबुआ (87%) 3. बड़वानी (69.4%)	1. भिंड 2. दतिया 3. मुरैना	1. भिंड (0.47%) 2. मुरैना (0.9%) 3. दतिया (1.2%)

❖ जनजातियों का क्षेत्र के आधार पर विभाजन

- **उत्तर पूर्वी क्षेत्र** - शहडोल, सीधी, जबलपुर, रीवा, सतना जिलों में कोल, मारिया, अगरिया, पनिका, खेरवार जनजाति के व्यक्ति रहते हैं ।
- इसमें कोल प्रमुख जनजाति हैं, जो जबलपुर, रीवा, सतना क्षेत्र में हैं ।
- **दक्षिणी क्षेत्र** - इसके अन्तर्गत मण्डला, बालाघाट, सिवनी, छिन्दवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद जिले आते हैं ।
- यहाँ भारिया, बैगा, गोंड, कोरकू, भारिया, हल्वा प्रमुख जनजातियाँ हैं ।

- बैगा विशेष रूप से मण्डला, भारिया छिन्दवाड़ा, कोरकू होशंगाबाद से लेकर पूर्वी निमाड़ तक मिलते हैं ।
- **पश्चिमी क्षेत्र** - निमाड़ के दोनों जिले खण्डवा, खरगोन तथा झाबुआ, रतलाम, धार आदि में भील, भीलाला जनजातियाँ विशेष रूप से पाई जाती हैं, इनमें झाबुआ और धार में इनका पर्याप्त संकेद्रण है ।
- **विशेष पिछड़ी जनजातियाँ** - म. प्र. में तीन जनजातियाँ बैगा, सहारिया, भारिया विशेष जनजातियाँ पिछड़ी घोषित हैं ।

गोंड

- गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजाति है । गोंड जनजाति समूह मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा समूह है जबकि एक जनजाति के रूप में दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है ।
- गोंड द्रविड़यन मूल के हैं । गोंड की उत्पत्ति कोंड शब्द से हुई है । उसका अर्थ है - पर्वत, गोंड स्वयं को कोयतोर कहते हैं । जिसका अर्थ है - पर्वतवासी ।
- यह मध्य प्रदेश के सभी जिलों में फैली हुई है । लेकिन नर्मदा के दोनों ओर विन्ध्यांचल और सतपुड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में इसका अधिक संकेद्रण है ।
- इन्हें मोटे अनाज से बना पेय पदार्थ 'पेज' अत्यधिक प्रिय होता है ।
- विधवा विवाह व वधु मूल्य प्रचलित है । ममेरे फुफेरे भाई बहिनो में विवाह अधिमान्य होता है । जिसे दुध लौटावा कहते हैं ।
- **गोंडों में प्रचलित अन्य विवाह** - 1. पटौनी विवाह, 2. चढ़ विवाह, 3. लमसेना विवाह
- गोंड जनजाति के लोग बारी नामक स्थानांतरित कृषि करते हैं । वनोपज संग्रह, पशुपालन, मुर्गीपालन एवं मजदूरी भी इनके आजीविका के साधन हैं ।
- धार्मिक विश्वास में टोटम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है ।
- बूढ़ादेव इनके प्रमुख देवता है । इसके अतिरिक्त दुल्हा देव, सूरज देव, नारायण देव भी महत्वपूर्ण देवता हैं ।
- इनके मनोरंजन की प्रमुख प्रथा घोटूल है । इसके सदस्य अविवाहित युवक-युवतियाँ होते हैं ।
- ❖ **गोंड की उपजातियाँ**
 - **अगरिया** - लोहे का काम करने वाले वर्ग
 - **प्रधान** - मंदिरों में पूजा-पाठ तथा पुजारी का काम करने वाले
 - **कोइला भूतिस** - नाचने गाने वाले
 - **ओझा** - पण्डिताई तथा तांत्रिक क्रिया करने वाले ।
 - **सोलाहस** - साधारण वर्ग है ।
- निवास स्थान के आधार पर 'गोंडों' के दो वर्ग हैं ।
- **राजगोंड** - ये लोग भू स्वामी होते ।
- **धुर गोंड** - यह गोंडों का साधारण वर्ग है ।

- गोंडों के प्रमुख नृत्य - 1. सैला, 2. करमा, 3. भडौनी, 4. विरछा, 5. कहरवा, 6. सजनी, 7. सुआ, 8. दीवानी
- गोंडों के प्रमुख पर्व - 1. बिदरी, 2. करमा, 3. बकपन्थी, 4. भडई, 5. हरदिली, 6. छोरता, 7. नवाखानी, 8. मेघनाद

भील

- भील जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से भारत की दूसरी तथा मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है।
- भील शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बील' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है - धनुष, चूंकि यह धनुर्विधा में निपुण तथा धनुर्धारी है इसलिए इन्हें भील कहा गया है।
- भीलों स्वयं को राजपूत एवं राजस्थान के प्राचीन निवासी मानते हैं।
- यह जनजाति मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र झाबुआ, धार, खरगौन, बड़वानी आदि जिलों में निवास करती है।
- भील अपने निवास स्थल को 'फाल्या' कहते हैं तथा इनके बड़े गाँव को पाल तथा छोटे गाँव को फला कहा जाता है।
- भील संसार की सबसे अधिक रंग प्रिय जनजाति है, जबकि भील स्त्रियाँ विश्व की सबसे अधिक गहना और गुदना प्रिय हैं।
- भील जनजाति का प्रिय खाद्य पदार्थ 'राबड़ी' है। इसके अतिरिक्त मक्का, जौ, ज्वार व दालें प्रमुख भोजन हैं।
- भीलों में दो तरह के विवाह परीक्षा विवाह (गोल गधेड़ों) एवं अपहरण विवाह (भगोरिया) प्रचलित हैं।
- विधवा विवाह और वधुमूल्य भी प्रचलित हैं।
- भगोरिया हाट भीलों का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व का मेला है।
- भीलों का धर्म आत्मावादी है। इनके सबसे प्रमुख देवता राजापंथा हैं, जानवरों में ये लोग घोड़े व सर्प की पूजा करते हैं। शंकर, हनुमान, काली देवी की भी पूजा करते हैं।
- ये 'गोल गधेड़ों' उत्सव मनाते हैं।
- इनके द्वारा की गई कृषि 'चिमाता' कहलाती है।
- भील केसरिनाथ को चढ़ी हुई केसर का पानी पीकर कभी झूट नहीं बोलते हैं।
- मदीव, बदवो या भगत - इस जाति का व्यक्ति सबसे पवित्र माना जाता है।
- पुंजारो - इस जाति के व्यक्ति को औषधि, झाड़-फूंक, रोग उपचार का विशेष ज्ञान होता है।
- उपजातियाँ - 1. बरेला 2. रथियास 3. बैगास 4. पटेलिया 5. भिलाला
- प्रमुख पर्व - 1. गल, 2. भगोरिया 3. चलावणी 4. जतरा
- नृत्य - 1. भगोरिया 2. जोहा 3. वड़वा 4. धूमर 5. गौरी

बैगा

- बैगा द्रविड़ वर्ग की जनजाति है, जिसे विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित किया गया है।
- यह मध्य प्रदेश के पूर्वी सतपुड़ा, डिंडोरी, मण्डला, शहडोल, सीधी तथा बालाघाट जिलों में निवास करती है।
- गोत्र प्रथा प्रचलित है, सगोत्र विवाह नहीं होता।
- विधवा को अपने देवर से विवाह करना होता है।
- भोजन में मोटे अनाज, कंदमूलफल तथा माँस खाते हैं, किन्तु इसमें गो मांस खाना वर्जित है।
- इनके सुबह का भोजन 'बासी' होता है। दोपहर का भोजन 'पेज' होता है। शाम का मुख्य भोजन 'वियारी' होता है।
- बैगाओं की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि अथवा झूम खेती है, जिसे यह 'बेवार' या दाही पोंडू कहते हैं।
- यह धरती को अपनी मां मानते हैं, और इस पर हल चलाना पाप समझते हैं।
- कुल्हाड़ी इनका प्रमुख औजार है। इन्हें औषधियों का अच्छा ज्ञान होता है।
- बैगाओं के प्रमुख देवता बूढा देव हैं, जो साल वृक्ष पर निवास करते हैं। गाँव की रक्षा ठाकुरदेव बीमारियों से रक्षा दुल्हा देव करते हैं।
- बैगा गोंडों के परंपरागत पुरोहित होते हैं।
- उपजातियाँ - 1. बिझवार 2. नरोतिया, 3. भरोतिया, 4. रेमेना 5. नाहर 6. काढ़ मैना, 7. राय
- विवाह - 1. मंगनी या चढ़ विवाह 2. उठवा विवाह 3. चोर विवाह 4. पैदुल विवाह 5. लमसेना 6. उधारिया
- नृत्य - 1. करमा 2. सैला 3. परधोनी 4. फाग

कोरकू

- कोरकू, मुण्डा अथवा कोल जनजाति की एक प्रशाखा है। कोरकू का शाब्दिक अर्थ है 'मनुष्यों का समूह'
- यह प्रदेश में छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद, हरदा, खंडवा, जबलपुर आदि जिलों में रहते हैं।
- कोरकू अपने गाँव के चारों ओर बांस की बाड़ लगाते हैं। इनके घर आमने सामने पंक्तिबद्ध होते हैं।
- कोरकू समाज पितृसत्तात्मक एवं टोटम पर आधारित समाज है।
- इनके दो प्रमुख वर्ग होते हैं -
- राज कोरकू और पठारिया।
- राजकोरकू सामाजिक दृष्टि से उच्च माने जाते हैं।
- इसके अतिरिक्त 4 अन्य वर्ग रूमा, पोडतिया, दुलारया तथा बोवई भी होते हैं।
- भूमियाँ और पड़ियार कोरकूओं के सम्मानित व्यक्ति होते हैं।

- सगोत्र विवाह निषिद्ध है। घर दामाद प्रथा, विधवा विवाह एवं वधू मूल्य का प्रचलन है।
- **विवाह** - 1. लमझना प्रथा या घर दामाद, 2. चिथोड़ा, 3. राजी - वाजी प्रथा, 4. हठ विवाह प्रथा
- आजीविका का मुख्य साधन कृषि एवं आखेटन है। इसके अतिरिक्त पशुपालन, मत्स्यन एवं वनोपज संग्रह भी इनके जीवनयापन के साधन हैं।
- कोरकू स्वयं को हिन्दू मानते हैं। ये लोग महादेव एवं चन्द्रमा की पूजा करते हैं। डोंगर देव, भटुआ देव एवं गाँव के देवता प्रमुख देवता हैं।
- ये लोग गुड़ी पड़वा, अखतीज, दशहरा, दीवाली एवं होली जैसे हिन्दू त्यौहार भी मनाते हैं।
- मृतक संस्कार में सिंडौली प्रथा प्रचलित है। मृतकों को दफनाया जाता है और मृतक की स्मृति में लकड़ी का एक स्तम्भ गाड़ते हैं।
- **उपजातियाँ** - 1. नहाला 2. मोवासीरूमा 3. बवारी 4. बोडोया
- **मोवासी/महुआ** - अपराधी वर्ग का द्योतक है।
- **बाबरिया** - बैतूल जिले के कोरकू को बाबरिया कहते हैं।
- **रूमा** - अमरावती जिले के कोरकू को कहते हैं।
- **बदोरिया** - पचमढ़ी क्षेत्र में रहने वाले कोरकू को कहते हैं।

कोल

- कोल मुण्डा समूह की एक अत्यंत प्राचीन जनजाति है, जिसका मूल स्थान प्रदेश के **रीवा जिले का कुराली क्षेत्र** है।
- कोल जनजाति मध्य प्रदेश में रीवा, सतना, जबलपुर, सीधी, शहडोल जिलों में पाई जाती है।
- कोल लोग संगीत के शौकीन होते हैं तथा इनके घरों में अनेक वाद्य यंत्र पाए जाते हैं।
- कोल समाज पितृसत्तात्मक एवं गोत्रों में विभक्त है। इनमें टोटम का प्रचलन नहीं है।
- पत्नी की मृत्यु पर विधवा अथवा तलाकशुदा स्त्री से विवाह की प्रथा है।
- कोल शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते हैं, लेकिन यह गाय और शेर का मांस नहीं खाते हैं।
- कोल जनजाति में दो उपवर्ग हैं - रौतिया एवं रोतेले।
- अन्य उपवर्ग दशेराथा, कुरिया एवं कगवारिया हैं।
- दहका कोल का प्रसिद्ध आदिम नृत्य है।
- कोल अधिकांशतः खेतिहर मजदूर होते हैं। पुरुष केवल बुवाई का कार्य करते हैं।
- कोल हिन्दू देवी देवताओं की पूजा करते हैं। इनमें फसलों की रक्षा के लिए सूर्य, चन्द्रमा, पवन तथा इन्द्र की पूजा की जाती है।
- मृत्यु पर दफनाने का रिवाज है।

- इनकी पंचायत को 'गोहिया पंचायत' कहा जाता है।

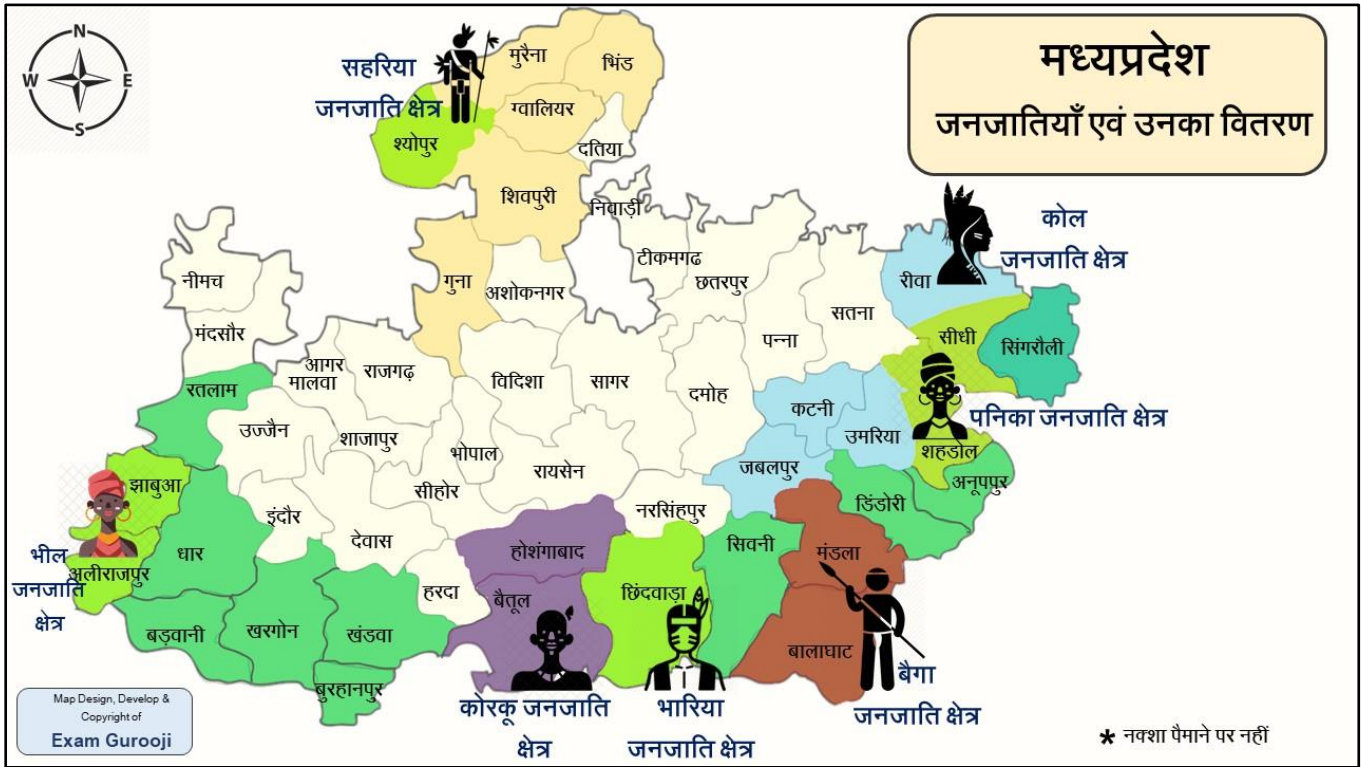
भारिया

- भारिया का शाब्दिक अर्थ है - भार ढोने वाला।
- भारिया गोंड जनजाति की एक शाखा है, जो द्रविड़ियन परिवार की जनजाति में शामिल है।
- भारिया मध्य प्रदेश के जबलपुर, छिंदवाड़ा जिलों में रहते हैं।
- छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र के भारियाओं को अत्यंत पिछड़ी जनजाति घोषित किया है कहते हैं।
- इनके गाँव को ढाना कहते हैं।
- भारियाओं की बोली भरनोटी है। गीत, कथा एवं पहेलियों का इनमें अत्यधिक प्रचलन है।
- इनका मुख्य भोजन पेज है। महुआ और आम की गुठली से बनी रोटी तथा कंदमूल व सब्जियाँ भी इनके भोजन में शामिल होती हैं।
- इनमें भूमका, पड़िहार एवं कोटवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है।
- भारिया स्वयं को हिन्दुओं से प्रभावित मानती है। प्रमुख देवता वृद्धा देव, दूल्हा देव, नागदेव आदि हैं।
- **उपजाति** - 1. भूमिया, 2. भूईहार, 3. पैडो
- **विवाह** - 1. मंगनी विवाह, 2. लमसेना विवाह, 3. राजी बाजी विवाह, 4. विधवा विवाह।
- **पर्व त्यौहार** - 1. बिदरी पूजा, 2. नवाखानी, 3. जवारा, 4. दीवाली, 5. होली
- **नृत्य** - 1. भड़म, 2. करमा, 3. सैतम, 4. सैला

सहरिया

- सहरिया का अर्थ है शेर के साथ रहने वाला।
- कोलेरियन परिवार की एक जनजाति है, जिसे अत्यंत पिछड़ी घोषित किया गया है।
- गुना, ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, विदिशा और बुंदेलखण्ड में निवास करती है।
- सहरिया अपने आपको भीलों का छोटा भाई कहलाने में गौरव का अनुभव करते हैं।
- सहरिया अपना मकान कतारबद्ध बनाते हैं, जिसे 'सहराना' कहते हैं।
- तलाक, विधवा विवाह को मान्यता प्राप्त है।
- सहरिया जंगली जड़ी बूटियों की विशिष्ट पहचान रखते हैं और इनसे दवाएँ बनाते हैं।
- ये प्रायः भूमिहीन हैं। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है। ये हाली/बाँटा के रूप में रोजगार करते हैं।
- वे हिन्दू देवी देवताओं को मानते हैं।

पारधी



● पारधी मराठी भाषा के शब्द 'पारध' का एक तत्सम रूप है, जिसका अर्थ होता है 'आखेट'।

● यह भोपाल, रायसेन, सीहोर आदि जिलों के निवासी है।

● पारधी वन्य पशुओं का शिकार करने और उन्हें पकड़ने में बहुत सिद्धहस्त है।

❖ **उपजातियाँ**

➤ **गोसाई पारधी** - गोसाई पारधी गैरिक वस्त्र धारण करते हैं। तथा भगवा वस्त्रधारी साधुओं जैसे दिखाई देते हैं। ये हिरणों का शिकार करते हैं।

➤ **चीता पारधी** - चीता पारधी आज से कुछ सौ वर्ष पूर्व तक चीता पालते थे

➤ **भील पारधी** - बंदूकों से शिकार करने वाले।

➤ **लंगोटी पारधी** - वस्त्र के नाम पर केवल लंगोटी लगाने वाले पारधी।

➤ **टाकनकार और टाकिया पारधी** - सामान्या शिकारी और हांका लगाने वाले पारधी।

➤ **बंदर वाला पारधी** - बंदर नचाने वाले पारधी।

➤ **शीशी का तेल वाले पारधी** - पुराने समय में मगर का तेल निकालने वाले पारधी।

➤ **फांस पारधी** - शिकार को जाल में पकड़ने वाले।

● सभी पारधी देवी के आराधक है।

● लंगोटी पारधी चांदी की देवी की प्रतिमा रखते हैं। यही कारण है कि लंगोटी पारधियों की महिलाएँ कमर से नीचे चांदी के आभूषण धारण नहीं करती और न ही घुटनों के नीचे धोती, क्योंकि ऐसा करने से देवी की बराबरी करने का भाव आ जाता है यह उनकी मान्यता है।

अगरिया

● अगरिया गोंडों की ही उपजाति है। यह शहडोल और मण्डला जिलों में रहती है।

● अगरिया लौह अयस्क साफ करने व धातु निष्कर्षण का कार्य करते हैं।

● ये लौह अयस्क को अपनी भाषा में (मण्डला में) छावरिया, पोडी, कतर्रा, चरकी और जाक कहते हैं।

● इनके प्रमुख देवता 'लौहा सूर' है, जिनका निवास स्थान धधकती भी माना जाता है।

● ये अपने देवता को प्रसन्न करने के लिए 'काली मुर्गी' भेंट चढ़ाते हैं।

● ये सुअर का मांस विशेष चाव से खाते हैं।

● इनमें गुदने गुदवाने का भी रिवाज है। विवाह में वधु शुल्क का प्रचलन है।

● यह किसी भी सोमवार, मंगलवार या शुक्रवार को संपन्न हो सकता है। समाज में विधवा विवाह की स्वीकृति है।

● अगरिया उड़द की दाल को पवित्र मानते हैं और विवाह में इसका प्रयोग शुभ माना जाता है।

● विवाह में वधू मूल्य चुकाने की परम्परा है।

पनिका

● पनिका परिका सीधी तथा शहडोल जिलों के निवासी है।

● यह द्रविड़ प्रजाति की सदस्य है।

- ऐसा कहा जाता है कि संत कबीर का जन्म जल में हुआ था और वे एक पनका महिला द्वारा पाले-पोसे गए थे। अधिसंख्य पनका कबीर पंथी है। ये 'कबीरहा' भी कहलाते हैं।
- ये मांस-मदिरा इत्यादि से परहेज करते हैं।
- दूसरा वर्ग 'शक्ति पनका' कहलाता है। इन दोनों में विवाह संबंध नहीं है।
- इनके गोत्र टोटम प्रधान हैं, जैसे धुरा, नेवता, परेवा आदि।
- कबीर पंथी पनकाओं के धर्मगुरु मंति कहलाते हैं।
- कट्टर कबीर पंथी देवी-देवताओं को नहीं पूजते किंतु शक्ति पनका अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते हैं।
- कबीरहा पनका महिला एवं पुरुष श्वेत वस्त्र तथा गले में कंठी धारण करते हैं।
- पनका जनजाति मूल रूप से कपड़ा बुनने का कार्य करती है।

उरांव

- सीधी, शहडोल तथा अनूपपुर जिलों में निवासरत इस जनजाति की उत्पत्ति द्रविड़ों से मानी जाती है। ये दक्षिण भारत से आए हैं।
- इनका मुख्य कार्य खेती मजदूरी है।
- इनका मुखिया 'महतो' कहलाता है तथा पुरोहित 'बैगा' होता है।
- इनका एक 'परहा राजा' होता है जो झगड़ों को निपटाता है।
- इनके युवागृह 'धुम कोरिया' कहलाते हैं।
- **त्यौहार** - सरना पूजा, करमा पूजा, कुल देव पूजा।
- **नृत्य** - सरहुल, करमा, कुड़िया डण्डा
- **विवाह** - वधुमूल्य (बुंदे), राजी बाजी (बन्दवा), स्वयंवर (डुंकू)।
- सगोत्र विवाह वर्जित है।
- **बोली** - कुरूख

खैरवार

- खैरवार मुंडा जनजाति समूह की एक प्रमुख जनजाति है।
- खैरवार अपना मूल स्थान खरियागढ़ (कैमूर पहाड़ियाँ) मानते हैं, जहाँ से वे हजारों बाग जिले तक पहुँचे।
- छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, मंडला, सरगुजा और विन्ध्य क्षेत्र में कत्था निकालने वाले खैरवारों को खैरुआ भी कहा जाता है।
- खैरवान कत्था निकालने के अतिरिक्त वनोपज संचयन तथा मजदूरी का कार्य भी करते हैं।

प्रमुख आदिवासी नृत्य

- **करमा** - मंडला जिले के आसपास के क्षेत्र में गोंड और बैगा आदिवासियों द्वारा यह नृत्य कर्म देवता को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है।
- ये विजयदशमी से प्रारंभ होकर अगली वर्षा ऋतु के आरंभ तक चलता है। इसमें स्त्री पुरुष दोनों भाग लेते हैं।

- **परधोनी नृत्य** - बैगा आदिवासियों द्वारा विवाह के अवसर पर बारात अगवानी के लिए किया जाता है।
 - इसमें वर पक्ष की ओर से एक हाथी बनाकर चलाया जाता है।
- **दशहरा नृत्य** - यद्यपि बैगा आदिवासी दशहरा त्योहार नहीं मनाते किंतु विजयदशमी से प्रारंभ होने के कारण इस नृत्य का नाम दशहरा नृत्य पड़ा।
- **भगोरिया नृत्य** - मध्यप्रदेश के झाबुआ और अलीराजपुर क्षेत्र में निवास करने वाले भीलों का भगोरिया नृत्य, भगोरिया हाट में होली तथा अन्य अवसरों पर युवक युवतियों द्वारा किया जाता है।
- **हुलकी नृत्य** - हुलकी पाटा मुरिया आदिवासियों में प्रचलित है, इसमें लड़के लड़कियां दोनों भाग लेते हैं तथा सवाल जवाब होते हैं।
- **थापटी नाच** - यह कोरकुओं का पारंपरिक लोक नृत्य है, इसमें युवतियों के हाथ में चिरकोरा वाद्य होता है, जबकि युवकों के हाथ में एक पंछा और झांझ नामक वाद्य होता है।
- **शैला नृत्य** - यह शुद्धत जनजातियों का नृत्य है, जो आपसी प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है।

- यह नृत्य दशहरे से आरंभ होकर पूरी शरद ऋतु की रातों को चलता है एवं केवल पुरुषों के द्वारा किया जाता है।
- **अटारी नृत्य** - यह बघेलखंड के भूमिया बैगाओं का नृत्य है इसमें एक पुरुष के कंधे पर दो आदमी आरूढ़ होते हैं।
- **ढांडल नृत्य** - यह कोरकू आदिवासियों द्वारा किया जाता है।
- नृत्य करते समय एक दूसरे पर छोटे-छोटे डंडों से प्रहार किया जाता है।
- इसमें वादन की गति नृत्य की गति को नियंत्रित करती है।
- **भड़म नृत्य** - यह भारिया जनजाति में मुख्यतः विवाह के अवसर पर किया जाता है।

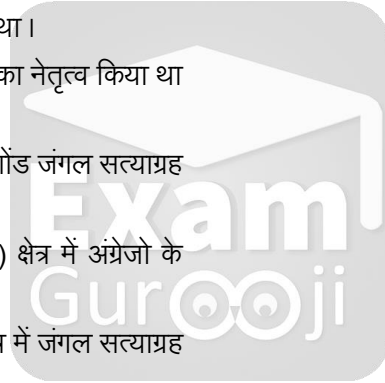
- **सैतम नृत्य** - यह भारिया महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- इसमें हाथों में मंजीरा लेकर युवतियों के दो दल आमने सामने खड़े होते हैं और बीच में एक पुरुष ढोलक बजाता है।
- **सरहुल नृत्य** - यह उरांव जनजाति का अनुष्ठानिक नृत्य है यह साल वृक्ष के आसपास नृत्य करते हैं।
- वीर नारायण सिंह - सोनाखान(छत्तीसगढ़) में वीर नारायण सिंह ने 1856 में कंपनी के खिलाफ रणभेरी फुकी थी।

प्रमुख जनजातीय व्यक्तित्व

- **गुंडाधुर** - छत्तीसगढ़ के बस्तर में इंद्रावती नदी के तट पर 1910 में अंग्रेजों के खिलाफ धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाई थी।
- **भीमा नायक** - निमाड़ क्षेत्र में भीमा नायक ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। भीमा का कार्य क्षेत्र बड़वानी रियासत से वर्तमान महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र तक रहा है। 1857 में हुए अंबापानी युद्ध में भीमा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। अंग्रेज जब भीमा को सीधे नहीं पकड़ पाए तो उन्हें उनके ही किसी करीबी की मुखबिरी पर धोखे से पकड़ा

गया था। उस समय जब तात्या टोपे निमाड़ आए थे तो उनकी मुलाकात भीमा नायक से हुई थी। उस दौरान भीमा ने उन्हें नर्मदा पार करने में सहयोग किया था।

- **जागीरदार राजवा शाह** - अंग्रेजों कि खिलाप अप्पा साहब को छिंदवाड़ा के सोनपुर के जागीरदार चैनशाह और प्रतापगढ़ के सैनिक सहयोग दिया था। इन सामंतों ब्रिटिश सत्ता का प्रतिरोध किया इस प्रतिरोध के अपराध में कंपनी सरकार ने दोनों सामंतों को बंदी बनाकर चांदा जेल भेज दिया तथा दोनों गोंड आदिवासी सरदारों को विष देकर मार डाला।
- **महावीर सिंह** - हराकोर्ट (रावखेड़ी) के जागीरदार ने स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे को शरण दी थी।
- **टंट्या भील** - टंट्या भील का जन्म तत्कालीन सीपी प्रांत के पूर्व निमाड़ (खंडवा) जिले की पंधाना तहसील के बडदा गांव में सन 1842 में हुआ था। टंट्या मामा के कारनामों के चलते अंग्रेज ही उन्हें रॉबिन हुड का नाम देते हैं।
- **शिवराज सिंह** - धर्मजयगढ़ (छत्तीसगढ़ के रायपुर) के राजा शिवराज सिंह अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का शंखनाद किया था।
- **अजीत सिंह** - छत्तीसगढ़ के बरगढ़खोला के जर्मीदार अजीत सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का शंखनाद किया था।
- **गंजन सिंह कोरकु** - बेतूल में जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।
- **रामू और मकडू** - जम्बाड़ा(बेतूल) यह दोनों गोंड जंगल सत्याग्रह के समय शहीद हुए थे।
- **विष्णु सिंह गोंड** - घोड़ाडोंगरी शाहपुर(बेतूल) क्षेत्र में अंग्रेजों के खिलाफ शोले भड़का दिए थे।
- **रामाधान गोंड** - दुर्ग जिले के वनाच्छादित क्षेत्र में जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।
- **रामाधान गोंड** - डोंगरगढ़(छत्तीसगढ़) के निकट बदरा टोला में निहत्थे आदिवासी सत्याग्रही पर रियासती पुलिस ने गोलियां चलाई थी जिसमें रामाधान गोंड शहीद हो गए थे।
- **ठाकुरराम** - 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार हुए और जेल में ही उनकी मृत्यु हो गई।



मध्यप्रदेश के साहित्यकार			
साहित्यकार	जन्म	रचनाएँ	विशेष
प्राचीन काल के साहित्यकार			
कालिदास	निर्धारित नहीं है	महाकाव्य - रघुवंशम्, कुमसंभवम्, नाटक - मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्, खंड काव्य - मेघदूत, ऋतुसंहार	यह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नौ रत्नों में से थे। कालिदास को भारत का शेक्सपियर भी कहा जाता है।
भ्रतहरी	उज्जैन, साधना स्थली - चुनार (UP), माधी - राजस्थान के सरिस्का,	नीतिशतक, श्रंगार शतक, वैराग्य शतक	भ्रतहरी के संबंध में माना जाता है की यह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बड़े भाई थे। भ्रतहरी की गुफाएँ भी उज्जैन में ही स्थित हैं।
भवभूति	महाराष्ट्र के विदर्भ नामक स्थान पर	मालती माधव, महावीर चरित, उत्तर रामचरित प्रथम दुखांत नाटक माना जाता है।	यह कन्नोज के शासक यशोवर्मन के दरबारी कवि रहे हैं, भारतीय मिल्टन भवभूति को कहा जाता है।
बाणभट्ट		हर्षचरित (बाणभट्ट की प्रथम रचना है), कांदबरी (इसे दुनिया का पहला उपन्यास कहा जाता है), चंडीशतक, पार्वती परिणय	यह हर्षवर्धन के दरबारी कवि हैं और हर्षवर्धन के द्वारा वश्यवाणी कवि चक्रवर्ती की उपाधि से विभूषित किया गया था, प्रकृति चित्रण अद्भुत होने के कारण इन्हें साहित्य का वानांचल केशरी भी कहा जाता है।
मध्यकालीन साहित्यकार			
केशवदास	1555 में ओरछा	कवि प्रिया, रसिका प्रिया, नखसिख वर्णन, रतन बाबनी, वीरसिंह देव चरित, जहाँगीर जस चंद्रिका, रामचंद्रिका, बारहमासा, छन्दमाला, विज्ञान, गीता	इनकी रचना कठिन होने के कारण इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। रीतिकाल का प्रथम आचार्य और महाकवि माना जाता है। इन्द्रजीत के दरबार में राजकवि के पद पर आसीन थे।
भूषण	कानपुर के तिगवापुर	शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक, भूषण उल्लास	इनका वास्तविक नाम अज्ञात है अतः इनका उपनाम जटाशंकर था। इनको भूषण की उपाधि चित्रकूट के राजा रुद्रदेव सोलंकी ने दी थी।
पदमाकर	1753 में रामचंद्र शुक्ल के अनुसार - बाँदा (UP), विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार सागर (MP)	प्रबोध पचासा, गंगा लहरी, यमुना लहरी, राम रसायन, राजनीति की वचनिका, पद्माभरण, जगत विनोद, अलीजहां प्रकाश, प्रताप सिंह विरुदावली,	अलीजहां प्रकाश की रचना ग्वालियर के महाराज दौलतराव सिंधिया के दरबार में की थी।
आधुनिक साहित्यकार			

माखनलाल चतुर्वेदी	4 अप्रैल 1889 को बाबई होशंगाबाद	हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, माता समर्पण, युगचारण, साहित्य देवता, कृष्ण अर्जुन युद्ध, वनवासी पत्रिका का प्रकाशन - प्रभा, प्रताप, कर्मवीर	इन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जाना जाता है।
मुल्ला रामूजी (पूरा नाम मोहम्मद सिद्दीकी मुल्ला रामूजी)	21 मई 1896 को भोपाल	पहली पुस्तक गुलाबी उर्दू के नाम से प्रकाशित हुई, इस कारण इन्हें गुलाबी उर्दू का जनक कहा जाता है।	
बालकृष्ण शर्मा नवीन	8 दिसंबर 1897 को शाजापुर	उर्मिला, प्राणपर्ण, कुमकुम, अपलक, रश्मि रेखा, हम विषपायी जनम के	
सुभद्रा कुमारी चौहान	1904 में प्रयाग (इलाहाबाद) विवाह खंडवा के राजा लक्ष्मण सिंह से	वीरों का कैसा वसंत, मुकुल, त्रिधारा, बिखरे मोती, सीधे साधे चित्र, सभा का खेल, उन्मादिनी, झांसी की रानी	गांधी जी के साथ असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला थी। झांसी की रानी नामक रचना के लिए शेक्सपियर पुरस्कार से नवाजा गया था।
आचार्य नंददुलारे वाजपेई	1906 में उत्तर प्रदेश के उन्नाव	बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, राष्ट्रीय भाषा की कुछ समस्याएं, राष्ट्रीय साहित्य व अन्य निबंध, हिंदी साहित्य का आधुनिक युग, आधुनिक साहित्य सर्जन और समीक्षा	
डॉ शिवमंगल सिंह सुमन	1916 में उत्तर प्रदेश के उन्नाव	हिल्लोल, प्रलय सर्जन, पर आंख नहीं भरी, मिट्टी की बारात, कटे अंगूठे सी वंदना वारे, जीवन के गान, विश्वास बढ़ता ही गया, विंध्य हिमालय, वाणी की व्यथा	
गजानंद माधव मुक्तिबोध	1917 में श्योपुर	चांद का मुंह टेढ़ा, तारसत्तक, सतह से उठता आदमी, कांठ का सपना, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में, कामायनी एक पुनर्विचार,	
भवानी प्रसाद मिश्र	1919 में होशंगाबाद	गांधी पंचशती, गीता पुरोश, दूसरा सप्तक, चकित है दुख, अंधेरी कविताएं, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, नीली रेखा तक	इन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था। कल्पना नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया था।
हरिशंकर परसाई	22 अगस्त 1924 को होशंगाबाद	तट की खोज, रानी नागफनी की कहानी, हंसते हैं रोते हैं, निठल्ले की डायरी, सदाचार का ताबीज, भूत के पांव पीछे, ज्वाला और बल, जैसे उनके दिन फिरे	उन्होंने जबलपुर से वसुधा नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
शरद जोशी	21 मई 1931 को उज्जैन	परिक्रमा, फिर किसी बहाने, जीव पर सवार इल्लियां, रहा किनारे बैठ, अंधों का हाथी, एक था गधा, तिलिस्म, यथासंभव	
बाल कवि बेरागी	10 फरवरी 1931 को रामपुर, मंदसौर	गीत, दरद दीवानी, दो टूक, भावी रक्षक देश के, आओ बच्चो गाओ बच्चो, दर्द दीवानी, जूझ रहा हिंदुस्तानी, गौरव गीत, सरपंच, ललकार आदि	राज्य सभा में सांसद एवं मंत्री भी रहे। 31 मई 2018 को निधन हो गया।

मध्यप्रदेश के लोक साहित्यकार

ईसुरी (पुरा नाम हरलाल ईसुरी)	1898 में झांसी के पास मऊरानीपुर	ईसुरी की फाग की रचनायें प्रसिद्ध हैं।	
संत सिंगाजी	1571 में खजूरी गाँव, बड़वानी	इनका एकमात्र प्रमाणिक ग्रंथ परचरी	संत सिंगाजी कबीर के समकालीन माने जाते हैं।
घाघ दुबे	1753 में कन्नोज के पास	इन्होंने अपनी कहावतों से यह सिद्ध कर दिया कि यह एक महान कृषि पंडित थे।	मध्य प्रदेश के प्रमुख कवि घाघ मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे। सम्राट अकबर द्वारा इन्हें चौधरी की उपाधि प्रदान की गई थी।

- मध्य प्रदेश के हिंदी भाषा में लिखने वाले प्रमुख बाल साहित्य का के रूप में जहूरबक्श का नाम उल्लेखित है।
- रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह ने रामकथा पर आधारित आनंद रघुनंदन लिखा भारतेंदु ने इसे हिंदी का पहला नाटक माना।

मध्यप्रदेश के संगीतकार		
संगीतकार	जन्म	विशेष
तानसेन वास्तविक नाम रामतनु पांडेय	1506 में ग्वालियर के निकट बेहट नामक गांव में	पहले यह रीवा के राजा रामचंद्र के दरबार में थे बाद में रीवा के राजा ने इन्हें अकबर को उपहार स्वरूप दिया। गुरु का नाम हरिदास था, उन्होंने नए रागों में दरबारी तोड़ी, मियां की मल्हार, मियां की सारंग है। उनकी याद में प्रतिवर्ष राष्ट्र में तानसेन सम्मान प्रदान किया जाता है तथा ग्वालियर में तानसेन समारोह आयोजित होता है।
उस्ताद अलाउद्दीन खा (बाबा के नाम से प्रसिद्ध बचपन का नाम आलक था)	1881 में बंगाल के त्रिपुरा	नए राग की रचना की मदन मंजरी, हेमंत, हेमा विहंग, माज खमाज, सुर सितार, चंद्र सारंग, तथा जल तरंग नामक वाद्ययंत्र बनाया, भारत संगीत में आजीवन योगदान के लिए संगीत नाटक अकैडमी फेलोशिप प्रदान किया गया।
उस्ताद हाफिज अली खान	1888 में ग्वालियर	यह प्रसिद्ध सरोद वादक थे, उनकी स्मृति में ग्वालियर में सरोद घर स्थापित किया गया था, ग्वालियर के शासक माधवराव सिंधिया ने इन्हें अपने दरबार में सम्मानित किया था।
पंडित कृष्ण राव शंकर	1893 में ग्वालियर	इन्हें गायनाचार्य तथा संगीत मनीषी की उपाधि से सम्मानित किया गया है। इन्होंने ग्वालियर में गंधर्व विद्यालय नामक एक संस्था की स्थापना की।
शंकरराव पंडित	1863 में ग्वालियर	इनके पुत्र कृष्णा राव ने इनकी स्मृति शंकर गंधर्व संगीत महाविद्यालय ग्वालियर में स्थापित किया है।
राजा भैया पूछ वाले (पूरा नाम बालकृष्ण आनंद राव अंबेडकर)	12 अगस्त 1882 को ग्वालियर	इनके पूर्वज झांसी में पूछ नामक स्थान के जागीरदार थे इसलिए इनका नाम पड़ा।
उस्ताद अमीर खान	1913 को इंदौर	श्रेष्ठ ख्याल गायक और तराना गायकी के कुशल गायक थे।
कुमार गंधर्व (वास्तविक नाम शिवपुत्र)	1924 में कर्नाटक के बेलगांव में	इनकी कर्म स्थली देवास रही तथा उनकी याद में 1992 से मध्य प्रदेश सरकार कुमार गंधर्व सम्मान प्रदान करती है। इनकी प्रमुख रचना गांधी राग और अनूप प्रयाग है।
महाराजा चक्रधर सिंह	रायपुर (छत्तीसगढ़)	उनकी स्मृति में मध्य प्रदेश सरकार चक्रधर फेलोशिप प्रदान करती है।
पंडित कार्तिक राम	1912 में बिलासपुर के भंवरतान गांव	गम्मत के श्रेष्ठ कलाकार, नृत्य सम्राट की उपाधि प्राप्त, कार्तिक राम व कल्याण दास की जोड़ी पूरे देश में प्रसिद्ध थी।

अमजद अली खान	1945 में ग्वालियर	प्रसिद्ध सरोद वादक पिता हाफिज अली खान की याद में ग्वालियर में सरोज घर की स्थापना इनके पूर्वजों ने अफगानी यंत्र रबाब से सरोद का आविष्कार किया था।
--------------	-------------------	--

मध्यप्रदेश के चित्रकार

चित्रकार	जन्म	विशेष
सैयद हैदर रजा	1922 में नरसिंहपुर के बावरिया	1947 में मुम्बई में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप की स्थापना। चित्रकला के क्षेत्र में फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित।
देत्तात्रय दामोदर देवलालीकर	धार जिले के बिडवाल गांव	मध्य प्रदेश की चित्रकला का पितृपुरुष कहा जाता है।
विष्णु चिंचालकर	देवास	इन्होंने प्रसिद्धि लैंड ऑफ आर्ट पोर्ट्रेट में पाई।
नारायण श्री धर बेन्द्र	इंदौर	
देवयानी कृष्ण	इंदौर	
डी।जी। जोशी	खरगोन (महेश्वर)	
मंजूषा गांगुली	ग्वालियर	
राजाराम	इंदौर	
मकबूल फिदा हुसैन	महाराष्ट्र के पांढरपुरा	हिन्दू देवी देवताओं के विवादास्पद चित्र बनाने और अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को लेकर, फिल्म 'गज- गामिनी' बनाने से आप काफी चर्चा में रहे।

मध्य प्रदेश के प्रमुख रंगकर्मी

रंगकर्मी	जन्म	विशेष
बाबा डीके	नीमच	1944 में इंदौर में नाट्यभारती की स्थापना की।
हबीब तनवीर	रायपुर (छ. ग.)	2007 में फ्रांस सरकार के प्रतिष्ठित पुरस्कार ऑफिसर ऑफ दी आर्ट्स एंड लेटर्स से भी नवाजा गया। 1954 में हिंदुस्तान थिएटर की स्थापना
नरहरी पटेल	रतलाम	इनके द्वारा जननाट्य संघ तथा यवनिका नामक दो संस्थाओं की स्थापना की।

मध्य प्रदेश के प्रमुख व्यक्तित्व

व्यक्ति का नाम	संबंधित स्थान	विशेष
चंड प्रद्योत	अवंती (उज्जैन)	अवंति का शासक था।
रुद्रदामन	अवंती (उज्जैन)	संस्कृत का महान पंडित था इसके गिरनार स्थित संस्कृत अभिलेख के अनुसार सौराष्ट्र में सुदर्शन ताल का पुनर्निर्माण करवाया।
अशोक	अवंती (उज्जैन)	अवंतिका राज्यपाल रहते समय विदिशा की महादेवी (व्यापारी की पुत्री) से विवाह किया।
अग्नि मित्र	विदिशा	पुष्यमित्र शुंग का पुत्र तथा विदिशा का राज्यपाल था।
चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य)	अवंती (उज्जैन)	शक राज्य का अंत कर संपूर्ण मालवा को अपने अधीन किया।
धंग देव	खजुराहो	महान विजेता एवं निर्माता था खजुराहो के प्रसिद्ध मंदिरों में से पारसनाथ और विश्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।
राजा भोज	धार	परमार वंश का महान राजा एवं योद्धा था जो प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार भी था इसीलिए इन्हें कविराज की उपाधि प्रदान की गई थी।
कुंवर चैन सिंह	नरसिंहगढ़ एवं सीहोर	नरसिंहगढ़ रियासत के राजकुमार थे, जिन्होंने सीहोर में अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की थी, इनकी समाधि सीहोर में है, इन्हें मध्य प्रदेश का मंगल पांडे भी कहा जाता है।

रानी दुर्गावती	मंडला गोंडवाना	रानी दुर्गावती के समय अकबर के सेनापति आसफ़ खान ने 1564 में हमला किया था, जिसमें दुर्गावती ने परास्त हो कर कटार सीने में भोंक ली थी।
रानी अवंती बाई लोधी	रामगढ़ मंडला	1857 की क्रांति रामगढ़ रियासत में झांसी की रानी की तरह भूमिका निभाई थी, अंग्रेज सेनापति वार्डन को भागने को मजबूर किया।
सआदत खान	इंदौर	1857 की क्रांति में इनके नेतृत्व में इंदौर में जबरदस्त विद्रोह हुआ था।
पं। द्वारका प्रसाद मिश्र	जन्म - उन्नाव (उ. प्र.)	राजनीति के चाणक्य कहे जाते हैं, इन्होंने राज्य में 1930 में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया था।
चंद्रशेखर आजाद	भाबरा (चंद्रशेखर आजाद नगर) अलीराजपुर	इन्होंने भगत सिंह के साथ मिलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की थी।
मंगन लाल बांगड़ी		इन्होंने हिंदुस्तानी लाल सेना का गठन कर अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था।
विठ्ठल भाई पटेल	सागर	कवि शायर और राजनीतिज्ञ के रूप में प्रसिद्ध, मध्य प्रदेश के मंत्री रहे तथा अनेक फिल्मी गीतों की रचना की।
लता मंगेशकर	जन्म - इंदौर	लता मंगेशकर को स्वर साम्राज्ञी कहा जाता है भारत सरकार द्वारा 2001 में भारत रत्न से सम्मानित है।
रमेश चंद्र लोहाटी	गुना	सर्वोच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश रहे हैं।
जियाउद्दीन डागर		ध्रुपद गायन के महान कलाकार रहे हैं।
बेगम असगरी बाई	छतरपुर	महान शास्त्रीय संगीत गायिका थी।
अटल बिहारी वाजपेई	जन्म - ग्वालियर	1970 में जनता सरकार में विदेश मंत्री रहे, प्रथम गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री जिन्होंने 5 साल पूरे किए, भाजपा के संस्थापक सदस्य थे। कविता संग्रह - मेरी इक्यावन कविताएं, पुस्तक राजनीति की रपटीली राहें हैं।
गोविंद नारायण सिंह		भारतीय सिविल सेवा से त्यागपत्र देकर जबलपुर से विधायक और मंत्री रहे, 1967 में मुख्यमंत्री बने एवं बिहार के राज्यपाल भी रहे।
किशोर कुमार	जन्म - खंडवा	गायन, संगीत, निर्देशन तथा अभिनय के क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे हैं।
अशोक कुमार	जन्म - खंडवा	जाने-माने अभिनेता रहे जिन्हें दादा मुनि के नाम से जाना जाता था।
डॉ। शंकर दयाल शर्मा	भोपाल	भारत के राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति रहे हैं।
विजयाराजे सिंधिया	सागर	बचपन का नाम लेखा देवेश्वरी, राजमाता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।
कुशाभाऊ ठाकरे	धार	भाजपा के पित्र पुरुष के नाम से जाना जाता है।

मध्यप्रदेश के लोक नृत्य	
बुन्देलखण्ड	
राई नृत्य	विवाह आदि के उत्सव पर किया जाता है, मध्यप्रदेश का राजकीय नृत्य
कानडा नृत्य	धोबी समाज के लोगों द्वारा गजानन भगवान की कथा गाई जाती है।
सैरा नृत्य	पुरुष प्रधान नृत्य है जो सावन भादों में किया जाता है।
बधाई नृत्य	शादी विवाह के अवसर पर स्त्री पुरुष दोनों द्वारा किया जाता है।
ढीमरई नृत्य	ढीमर जाति के लोगों के द्वारा शादी विवाह एवं नव दुर्गा आदि अवसरों पर किया जाता है।
रास नृत्य	स्त्री पर नृत्य है जो जन्माष्टमी पर किया जाता है।
रावला नृत्य	दलित जातियों के द्वारा किया जाता है।
राछ बछाया	विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा किया जाता है।
कातिकिया नृत्य	त्योहार परक नृत्य है जो कार्तिक स्नान पर महिलाओं द्वारा किया जाता है।
देई देवता नृत्य	वर वधू के देवी पूजन के समय महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
बघेलखंड	
बिरहा अथवा अहिराई नृत्य	कोई निश्चित समय नहीं कभी भी खुशी के अवसर पर किया जाता है, जब अहीर जाति के लोग करते हैं तो इसे अहिराई नृत्य कहा जाता है।
राई नृत्य	बघेलखंड में राई ढोल और नगाड़े पर गाई जाती है जबकि बुंदेलखंड में नृतकी और मृदंग राई में प्रमुख होते हैं।
केहरा नृत्य	स्त्री और पुरुष दोनों अलग अलग शैली में नाचते हैं, इसकी मुख्य ताल केहरवा है।
दादर नृत्य	पुरुषों के द्वारा खुशी के अवसर पर किया जाता है।
कलसा नृत्य	अहीरों एवं गड़रियों में सिर पर कलश रखकर बारात की अगवानी पर यह नृत्य किया जाता है।
केमालि नृत्य	इसे साजन सजनी नृत्य भी कहते हैं जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों हिस्सा लेते हैं।
दौगरा नृत्य	कुंवारी कन्याओं द्वारा वर्षा बुलाने के लिए किया जाता है।
निमाड़	

	नृत्य है, दक्कन ग्यारस से प्रारंभ होकर महाशिवरात्रि तक चलता है।
गणगौर	चैत्र में गणगौर उत्सव पर यह नृत्य किया जाता है, जो पारंपरिक अनुष्ठानिक नृत्य है।
फेंफारिया नाच	यह समूह नाच है जिसमें स्त्री पुरुष जोड़ी बनाकर गोल घेरे में नाचते हैं।
मांडल्या नाच	पारंपरिक समूह नृत्य है जो महिलाओं द्वारा ढोल पर किया जाता है।
आडा खडा नाच	जन्म, मुंडन संस्कार और विवाह आदि के अवसर पर किया जाता है, जो सवाल जवाब शैली में होता है।
डंडा नाच	चैत्र वैशाख की रातों में विशेषकर गणगौर पर्व पर किसानों द्वारा किया जाता है।
अंट्या	विवाह, पर्व एवं त्योहार आदि अवसरों पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
मालवा	
मटकी नाच	ढोलक की खास मटकी ताल पर महिलाएं नृत्य करती हैं, एक से अधिक महिला के नृत्य करने पर इसे झेला कहा जाता है।
आडा खडा रजवाड़ी नृत्य	विवाह में मंडप के नीचे महिलाओं द्वारा किया जाता है।
गरबा	पुरुष परक नृत्य है।
गरबी	महिला पर नृत्य है जो नवरात्रि पर किया जाता है।
झाला फूलपाती	गणगौर, कजली तीज आदि पर गीत आधारित महिला द्वारा किया जाता है।
टुटिया (नकटोरा)	विवाह के अवसर पर स्वांग नृत्य है जो महिलाओं द्वारा किया जाता है।
फुन्दी	धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में किशोरियों द्वारा किया जाता है।
ग्वालियर अंचल	
दुल दुल घोड़ी	विवाह एवं खुशी के अवसरों पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।
लांगुरिया	स्त्री एवं पुरुषों द्वारा संयुक्त रूप से देवी के लिए किया जाता है।

मध्यप्रदेश में जनजातियों के नृत्य		
नृत्य	जनजाति	विशेषता
करमा	गोंड, बैगा, कोरकू	लोक नृत्यों का राजा कहा जाता है, भादों माह से कार्तिक माह तक किया जाता है। गिनीज बुक में शामिल होने वाला देश का पहला नृत्य है।

रीना	गोंड	स्त्रियों द्वारा किया जाता है जिसमें गिरजा उत्सव की परंपरा है।	नौटंकी	सामाजिक विषयों पर नाटक आदि का मंचन किया जाता है।
कहरवा	गोंड	विवाह के अवसर पर रात्रि में सामूहिक रूप से किया जाता है। इसके अतिरिक्त मृत्यु संस्कार में भी किया जाता है।	मालवा	
दशहरा	बैगा	विजयदशमी के अवसर पर किया जाता है।	माच	इसका जन्म स्थान उज्जैन माना जाता है जो मध्यप्रदेश का राजकीय नाट्य है।
सैला	बैगा/ भारीया	कार्तिक फागुन माह में अमावस्या के दिन पुरुषों द्वारा किया जाता है, पैंतरे विशेष पद संचालन शैली है।	बघेलखंड	
डांडरिया	बैगा	विजयदशमी के अवसर पर	मनसुखा	मनसुखा उर्फ विदूषक और गोपियों के बीच में नोकझोंक चलती है।
बलमा	बैगा	प्रेम प्रसंग पर आधारित नृत्य है।	हिंगोला	मंच रहित सीधा सरल नाट्य है जिसमें दो दलों के बीच में गीतों की झार मचती है, जीतने वाला दल पराजित दल के पांव से तरह तरह के काम लेता है।
परधोनी	बैगा	बारात की अगवानी के समय किया जाता है।	छाहुर	मुख्यतः कृषक जातियों द्वारा किया जाता है, दीपावली से गोपाष्टमी तक अहीर, तेली और कुम्हार जाति के लोग इसका आयोजन करते हैं।
सुआ	बैगा	महिलाओं और किशोरियों द्वारा कुंवार माह में खरीफ की फसल पकने पर किया जाता है।	निमाड़	
अटारी	भूमिज एवं बैगा	विभिन्न अवसरों पर पुरुषों द्वारा किया जाता है।	गम्मत	इसका आयोजन नवरात्रि पर किया जाता है जिसका मंच चारों ओर से खुला रहता है, यह व्यंग का जीवंत रूप है।
डोहा नृत्य	भील	कार्तिक अमावस्या के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाता है।	काठी	देवउठनी ग्यारस से महाशिवरात्रि तक चलता है।
भगोरिया	भील	होली के अवसर पर किया जाता है।	ग्वालियर अंचल	
गरबी	भील	पितृ एवं प्रकृति पूजा के अवसर पर किया जाता है।	रासलीला	मूलतः उत्तर प्रदेश का लोकनाट्य है जो मध्यप्रदेश के भिंड मुरैना ग्वालियर क्षेत्र में भादो माह में कृष्ण जन्माष्टमी के आस पास होता है।
भड़म	भारिया	विवाह के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाता है।	अन्य लोक नाट्य	
सैताम	भारिया	विवाह के अवसर पर महिलाओं द्वारा किया जाता है।	लकड़बग्घा	आदिवासी युवक युवतियों का लोकनाट्य है जो खुले मंच पर होता है। यह विवाह के बाद खेला जाता है जिसमें लड़की को लकड़बग्घा उठा ले जाता है और लड़की करण वंदन करती है।
पूजा	गोंड एवं उराँव	गोंड जनजाति द्वारा जेठ माह में पितृ पूजा उत्सव पर एवं उराँव जनजाति द्वारा चैत्र माह में साल पूजा उत्सव पर	कर्मा	बैगा जनजाति का लोक नाट्य है।
दहका	कोल	सामाजिक नृत्य है।	रहस	नृत्य प्रधान नाट्य है जिसमें भगवान कृष्ण के विविध लीला अभिनय किए जाते हैं।
चटकोरा	कोरकू		पंडवानी	इसका अर्थ पांडवों की कहानी से है, जिसकी प्रमुख कलाकार तीजन बाई, रितु वर्मा आदि प्रमुख कलाकार हैं। जो बघेलखंड एवं छत्तीसगढ़ में प्रचलित है।
थासी	कोरकू		रामलीला	इसका आयोजन मध्य प्रदेश के सभी ग्रामीण अंचलों में दशहरे पर किया जाता है।
लेहंगी	सहारिया			

मध्य प्रदेश के लोक नाट्य	
बुन्देलखण्ड	
बुंदेली स्वांग	फसल काटने, शादी एवं जन्मोत्सव आदि पर किया जाता है।
खंब स्वांग	कोरकू जनजाति द्वारा नवरात्रि से देवउठनी ग्यारस तक जमीन में एक खंभा गाड़ कर उस के चारों ओर नृत्य किया जाता है और रावण के पुत्र मेघनाथ की पूजा की जाती है।

मध्य प्रदेश के लोकगीत

बुन्देलखण्ड	
आल्हा गायन	वीर रस प्रधान काव्य है, जिसकी रचना लोक कवि जगनिक ने की थी, जो प्रायः वर्षा ऋतु में गाया जाता है। इसके गाने वाले को अल्हैत कहते हैं।
भोला गीत अथवा बंबुलिया	इसे लमटेरा गीत भी कहा जाता है जो स्त्री-पुरुष समूह द्वारा बिना किसी वाद्ययंत्र के प्रश्नोत्तर शैली में सावन के महीने में गाया जाता है।
फाग गीत	होली के अवसर पर गाया जाता है।
बेरायटा गायन	मूलतः कथा गायन शैली है जिसमें मुख्य रूप से महाभारत कथाओं के साथ अनेक ऐतिहासिक नायकों की कथाएं गाई जाती हैं।
देवारी गायन	अहीर, गवली, बरेडी आदि जातियों द्वारा दीपावली के अवसर पर भिक्षावृत्ति करते हुए गाया जाता है।
हरदौल की मनौती	बुंदेलखंड एवं बघेलखंड में वीरता प्रधान गायन परंपरा है।
जगदेव का पुवारा	यह मुख्य का भजन शैली है जो देवी की स्तुति में गाए जाते हैं।
बघेलखंड	
बसदेवा गायन	बसदेवा एक पारंपरिक गायक जाती है जिन्हें हरबोले कहा जाता है।
विरहा गायन	यह प्रायः खेत और सुनसान राहों में सवाल जवाब के रूप में गाया जाता है जो श्रृंगार परक विरह गीत होते हैं।
विदेशिया गायन	यह सुनसान जगह अथवा जंगल में गाया जाता है, गडरिया, तेली व कोटवार जाति के लोग इसमें विशेषता रखते हैं।
फाग गायन	होली के अवसर पर गाया जाता है।
बांस गीत	मोरध्वज एवं करण की गाथाओं पर आधारित महिला परख गीत है।
मालवा	
भरथरी गायन	नाथ संप्रदाय के लोगों द्वारा चिंकारा पर गायन किया जाता है, जिसमें गोरख वाणी, कबीर, मीरा, गोपीचंद कथा आदि के भजन गाए जाते हैं।
निर्गुणी भजन गायन	यह इकतारा और मंजीरे के स्वरों के साथ मालवा की लोक धुनों पर गाया जाता है, इसमें कबीर के अध्यात्म की छाप होती है। प्रहलाद सिंह टिपानिया इसके प्रसिद्ध गायक हैं।
संझा गीत	पित्र पक्ष में किशोरियों द्वारा दीवाल पर गोबर से आकृति बनाकर फूल और पत्तों से सजाकर गीत गाए जाते हैं।
हीड गायन	सावन के महीने में गाया जाता है, जो मुख्यतः अहीर जाति का गायन है।
बरसाती बाराता	यह बरसात के समय गाया जाता है। जो चंपू काव्य (मालवी गद्य और पद्य) का चरम उत्कर्ष है।

निमाड	
कलगी तुरा	प्रतिस्पर्धात्मक लोक गायन शैली है, जो चंग की थाप पर गाया जाता है। इसमें दो अखाड़े होते हैं एक कलगी अखाड़ा और दूसरा तुरा अखाड़ा।
संत सिंगाजी भजन	मृदंग और झांज के साथ उच्च स्वर में भजन गाने की शैली है।
निर्गुणीया गायन शैली	इन्हें नारदीय भजन भी कहा जाता है जो इकतारे के साथ झांझ मृदंग आदि पर गाया जाता है।
फाग गायन	होली के अवसर पर गाया जाता है।
मसाण्या अथवा कायाखो	मृत्यु के अवसर पर गाए जाते हैं।
नाग पंथी गायन	नाथ जोगी भगवा वस्त्र पहनकर हाथ में रेकड़ी अथवा रू रू बाजा बजाते हुए भिक्षावृत्ति करते हैं।
गरबा	नवरात्रि में महिलाओं द्वारा नृत्य के साथ गाया जाता है।
गरबी	पुरुषों द्वारा झांझ मृदंग के साथ गाया जाता है।
गवलन	मुख्यतः कृष्ण लीला से संबंधित गीत है जो रासलीला में पुरुषों द्वारा झांझ, मृदंग व ढोलक के साथ गाए जाते हैं।

मध्यप्रदेश की लोक चित्रकला	
बुन्देलखण्ड	
सुरैती	दीपावली में लक्ष्मी पूजा के समय बनाया जाने वाला भित्ति चित्र।
नौरता	नवरात्रि में मिट्टी, गेरू, हल्दी से कुंवारी कन्याओं द्वारा बनाया जाने वाला भित्ति चित्र।
मामुलिया	नवरात्रि में गोबर से कुंवारी कन्याओं द्वारा बनाया जाने वाला भित्ति चित्र।
मोरते	विवाह के समय मुख्य दरवाजे पर भित्ति चित्र।
बघेलखंड	
बराइन/दहेगर/अगरौहन	मधु मंडप में विवाह के अवसर पर बनाए जाते हैं। यह बुंदेलखंड में भी बनाए जाते हैं।
कोहबर	वैवाहिक अनुष्ठानिक भित्ति चित्र।
तिलंगा	कोयले में तिल्ली के तेल को मिलाकर तिलंगा का चित्र बनाया जाता है।
मोरइला/मोर मुरैला	दीवारों पर विभिन्न रंगों से मोर भित्ति चित्र।
छठी चित्र	शिशु जन्म के छठवें दिन छठी माता का गेरू से भित्ति चित्र बनाया जाता है।
नेउरा नमे	भादों माह की नवमी को सुहागन महिलाएं पारंपरिक भित्ति चित्र बनाकर पूजा करती हैं।
गोदन/गोवर्धन	दीपावली पड़वा पर गोबर से बनाया जाता है।
निमाड	

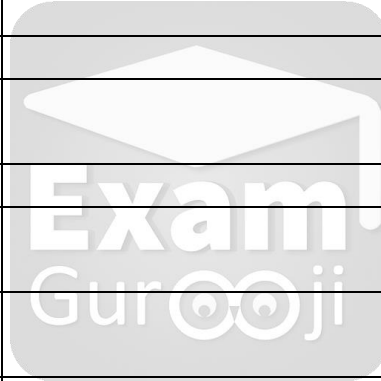
जिरोती	हरियाली अमावस्या को भित्ति चित्र बनाया जाता है।	प्रस्तर शिल्प	इसमें मुख्य कार्य पत्थरों पर नक्काशी है, जो मंदसौर तथा रतलाम की कुछ जनजाति द्वारा किया जाता है। जबलपुर में भेड़ाघाट संगमरमर की मूर्तियां तथा ग्वालियर में पौराणिक देवी देवताओं की मूर्तियां बनाई जाती हैं। धार में फडके स्टूडियो है जहां मूर्तियां बनाई जाती हैं।
थापा	सेली सप्तमी पर हाथ पर थापा लगाया जाता है।	छीपा शिल्प	हाथ के द्वारा कपड़े पर उकेरा जाता है उज्जैन का भैरुगढ़ छीपा शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।
झोपड़ी पूजन	देवउठनी ग्यारस पर झोपड़ी पूजन किया जाता है।	चंदेरी एवं महेश्वरी साड़ी	अशोकनगर जिले के चंदेरी रेशमी व सूती साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है, खरगोन स्थित महेश्वर अपनी रेशमी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।
ईरत	विवाह में कुल देवी का भित्ति चित्र बनाकर पूजा की जाती है।	लाख शिल्प	इसको लखार जाति द्वारा बनाया जाता है। उज्जैन, इन्दौर, रतलाम, मंदसौर, महेश्वर लाख शिल्प के परम्परागत केन्द्र हैं।
पगल्या	पहले शिशु जन्म पर शुभ संदेश का रेखांकन।	गुड़िया शिल्प	ग्वालियर और झाबुआ की भीली गुड़िया देश विदेश में प्रसिद्ध है।
कंचाली भरना	विवाह के अवसर पर दूल्हा दुल्हन के मस्तक-पर कंचाली भरी जाती है।		
मालवा			
संजा	किशोरियों द्वारा श्राद्ध पक्ष में दीवार पर गोबर, फूल पत्ती अथवा चमकीली पत्तियों द्वारा सजाकर बनाया जाता है।		
मांडना	दीपावली एवं भाई दूज आदि के पर्व पर भूमि अलंकरण के रूप में बनाए जाते हैं।		
चित्रावण	चितेरे जाति के द्वारा घर तथा मंदिर की दीवारों पर विवाह आदि के अवसर पर बनाए जाते हैं।		
सम्पूर्ण मध्यप्रदेश			
सांझा फूली	क्वार मास में कुंवारी कन्याओं द्वारा भित्ति चित्र बनाया जाता है।		
गोदना/गोवर्धन	दीपावली पड़वा पर गोबर से बनाया जाता है।		
नाग भित्ति चित्र	नागपंचमी पर दीवारों पर गेरु से नाग नागिन का भित्तिचित्र।		

मध्य प्रदेश में शिल्प कला	
मिट्टी शिल्प	मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ, रीवा, शहडोल, बैतूल, मंडला आदि क्षेत्रों में मिट्टी के खिलौने एवं मूर्तियां बनाए जाते हैं।
काष्ठ शिल्प	मध्यप्रदेश के मंडला, बैतूल, होशंगाबाद, धार, झाबुआ आदि क्षेत्रों में जनजातीय काष्ठ की शिल्प परंपरा है।
धातु शिल्प	टीकमगढ़ और बैतूल में देवी देवताओं का अलंकरण, सतना जिले के उचेहरा में कांसे से बटलोई नामक पात्र, नरसिंहपुर जिले के चीचली में पीतल एवं तांबे की कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती हैं।
बांस शिल्प	झाबुआ एवं मंडला क्षेत्र की जनजातियों द्वारा बांस की कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती हैं।
कंघी शिल्प	बंजारा जनजाति को कंघी का आविष्कारक माना जाता है, इसके प्रमुख केंद्र रतलाम, नीमच तथा उज्जैन हैं।

मध्यप्रदेश की प्रमुख सांस्कृतिक संस्थाएं		
संस्था का नाम	स्थापना	विषय
भारत भवन, भोपाल	13 फरवरी 1982	वास्तुकार - चार्ल्स कोरिया 6 भाग है - 1. रुपंकर - धातु कला व मूर्तिकला एवं आदिवासी लोक कला के नमूने 2. वागर्थ - संगोष्ठी, परिचर्चा एवं संवाद के आयोजन सहित भारतीय भाषा की कविताओं का संग्रह 3. अनहद - लोक एवं शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन 4. आकार - ग्राफिक्स, मूर्ति कला एवं चित्रकला से संबंधित कर्मशाला 5. रंगमंडल - नाट्यशाला से संबंधित 6. प्रकाशन -पत्रिकाओं के प्रकाशन से संबंधित
मध्य प्रदेश कला परिषद, भोपाल	1952	संगीत, नृत्य, ललित एवं रंगमंच आदि को प्रोत्साहन देना, 2003 में संस्कृति विभाग द्वारा मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् का गठन और इसका नाम मध्यप्रदेश कला अकादमी रखा गया। वर्ष 2006 में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के नाम से संचालित संगीत कला अकादमी का विलय कला अकादमी में किया गया।
मध्य प्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल	1954	साहित्य की उन्नति और विकास में उत्प्रेरक का काम एवं साहित्यकारों का सम्मान
पुरातत्व अभिलेखागार संग्रहालय	1956	बिखरी पड़ी पुरातत्व संपदा का सर्वेक्षण, चिन्हाकन, संरक्षण, प्रदर्शन
मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल	1976	उर्दू साहित्य का उन्नयन
कालिदास अकादमी, उज्जैन	1978	नृत्य और संगीत प्रशिक्षण, प्रदर्शनीयां, शोध, सम्मेलन आदि का आयोजन, कालिदास समारोह का आयोजन
मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी, भोपाल	1987	तुलसी साहित्य का अन्वेषण, प्रचार-प्रसार और संरक्षण नोट - तुलसी शोध संस्थान चित्रकूट में है जबकि तुलसी संग्रहालय रामवन सतना में स्थित है।
मध्य प्रदेश सिंधी अकादमी, भोपाल	1983	सिंधी भाषा का उन्नयन एवं सिंधी प्रतिनिधि नामक पत्रिका का प्रकाशन
मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल	1984	संस्कृत साहित्य का उन्नयन
मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी	1969	विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन एवं मासिक पत्रिका रचना का प्रकाशन
उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल	1979	भारतीय शास्त्रीय संगीत का संरक्षण संवर्धन और विस्तार उस्ताद अलाउद्दीन खान समारोह का आयोजन मैहर में करवाना.
आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी	1980	आदिवासी कला, साहित्य का संरक्षण एवं संवर्धन
मराठी साहित्य अकादमी, भोपाल	2010	मराठी संस्कृति और भाषा का संरक्षण एवं उन्नयन

मध्य प्रदेश के प्रमुख समारोह		
समारोह	स्थान	विशेष
मध्य प्रदेश समारोह	दिल्ली	मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत की झलकियां प्रस्तुत की जाती है।

कालिदास समारोह	उज्जैन	आयोजन कालिदास अकादमी उज्जैन द्वारा किया जाता है जिसमें विश्वभर के विद्वान भाग लेते हैं।
तानसेन समारोह	ग्वालियर	शास्त्रीय संगीत के मूर्धन्य कलाकार भाग लेते हैं इसी समारोह में तानसेन सम्मान प्रदान किया जाता है।
खजुराहो नृत्य समारोह	खजुराहो	भारत का सबसे बड़ा नृत्य समारोह है जिसका आयोजन 1976 से किया जा रहा है। आयोजन कर्ता मध्य प्रदेश कला परिषद
उस्ताद अलाउद्दीन खान समारोह	मैहर	महान संगीतज्ञ बाबा अलाउद्दीन खां की स्मृति में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी द्वारा आयोजित किया जाता है।
उस्ताद अमीर खान समारोह	इंदौर	इंदौर घराने के संस्थापक उस्ताद अमीर खां की स्मृति में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी द्वारा आयोजित किया जाता है।
राष्ट्रीय रामलीला समारोह		राम लीला मंडलियों की सहभागिता से प्रतिवर्ष यह समारोह प्रदेश के विभिन्न नगरों में आयोजित किया जाता है
तुलसी उत्सव	चित्रकूट	धनतेरस से दीपावली तक मंदाकिनी नदी के तट पर आयोजित किया जाता है।
मालवा उत्सव	इंदौर, उज्जैन एवं मांडू	1991 से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।
ओरछा उत्सव	निवाड़ी	बुंदेलखंड के कलाकारों द्वारा नृत्य गायन एवं वादन प्रस्तुत किया जाता है।
सुभद्रा कुमारी चौहान समारोह	जबलपुर	साहित्यकार एवं कला विशेषज्ञ भाग लेते हैं।
ध्रुपद समारोह	भोपाल	
मध्य प्रदेश लोक रंग समारोह	भोपाल	
टेपा समारोह	उज्जैन	
दुर्लभ वाद विनोद समारोह	भोपाल	
निमाड़ उत्सव	खंडवा, खरगोन, बड़वानी	
माखनलाल चतुर्वेदी समारोह	खंडवा	
बालकृष्ण शर्मा नवीन समारोह	शाजापुर	



- मध्य प्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए 1978 में मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम की स्थापना की गई थी।
- 12 जुलाई 2005 को मध्य प्रदेश इको पर्यटन विकास बोर्ड का गठन पर्यटन क्षेत्रों के विकास एवं प्रबंधन के लिए किया गया।
- 22 फरवरी 2017 को मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड का गठन प्रदेश में पर्यटन विकास एवं प्रोत्साहन के लिए किया गया।
- प्रदेश में सर्वप्रथम 5 सितंबर 2012 को पर्यटन नीति की घोषणा की गई जिसमें पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया।
- 16 सितंबर 2016 को प्रदेश सरकार द्वारा नवीन पर्यटन नीति और पर्यटन कैबिनेट का गठन किया गया।
- 28 फरवरी 2017 को प्रदेश में जल पर्यटन की गतिविधियों को संचालित करने के लिए जल पर्यटन नीति लागू की गई।

● मध्य प्रदेश के तीन पर्यटन स्थल यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है -

1. खजुराहो मंदिर - 1986
2. सांची बौद्ध स्तूप - 1989
3. भीमबेटका की गुफाएं - 2003

● मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल; 2. धार्मिक स्थल; 3. प्राकृतिक स्थल

1. ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल

❖ खजुराहो - छतरपुर

- चंदेल शासकों की अमूल्य धरोहर खजुराहो के प्रसिद्ध राजा चंद्र वर्मा ने रखी थी। इसे 1986 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।
- इसका प्राचीन नाम खजूर पुरा और खजूर वाहक है। यहां हिंदू एवं जैन मंदिर स्थित हैं।
- खजुराहो के मंदिर का निर्माण 950 ई. से लेकर 1050 के बीच किया गया।
- यहां पर मंदिरों की संख्या 85 थी किंतु वर्तमान में 22 मंदिर बचे हैं।
- यशोवर्मन ने कन्नौज पर आक्रमण कर प्रतिहार राजा देवपाल को हराया तथा उससे एक विष्णु प्रतिमा प्राप्त कर खजुराहो के विष्णु मंदिर में स्थापित की।
- राजा धंग ने जिन्ननाथ, विश्वनाथ, बैधनाथ का निर्माण करवाया।
- कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण यशोवर्मन ने करवाया था।

● खजुराहो के मंदिर की तीन श्रेणियां हैं -

पश्चिमी समूह	पूर्वी समूह	दक्षिणी समूह
लक्ष्मण मंदिर	पार्श्वनाथ मंदिर	दूल्हा देव मंदिर
कंदरिया महादेव मंदिर	घेटई मंदिर	चतुर्भुज मंदिर
चौसठ योगिनी मंदिर	आदिनाथ मंदिर	
चित्रगुप्त मंदिर		
विश्वनाथ मंदिर		
मातेगेश्वर मंदिर		

❖ सांची - रायसेन

- सांची के स्तूप का निर्माण अशोक के द्वारा बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद करवाया गया।
- इसे 1989 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया।
- यहां पर सारिपुत्र प्रकरक एवं महामोगलायन की अस्थियां रखी गई है
- सांची के स्तूप के तोरण द्वार शुंग शासकों के द्वारा बनवाए गए हैं।

❖ मांडू - धार

- 13वीं सदी में मालवा के सुल्तानों ने इसका नाम शादियाबाद यानी "सिटी ऑफ जॉय" रखा था।
- रानी रूपमती और बाज बहादुर की प्रेम कथा के लिए मांडू प्रसिद्ध है।
- बाज बहादुर एवं रानी रूपमती महल का निर्माण नसीरुद्दीन शाह ने करवाया था।
- जहाज महल का निर्माण खिलजी वंश के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी के द्वारा करवाया गया था।
- यहीं पर हिंडोला महल और होशंगशाह का मकबरा स्थित है। होशंगशाह का मकबरा सफेद संगमरमर से बनी भारत के प्रथम इमारत है।
- यहां पर दिल्ली दरवाजा, रामगोपाल दरवाजा, जहांगीर दरवाजा, आलमगीर दरवाजा, भंगी दरवाजा आदि स्थित हैं
- अशर्फी महल, जहांगीर महल, जामी मस्जिद, रेवा कुंड, नीलकंठ महल, महमूद खिलजी का मकबरा आदि है।

❖ ओरछा - निवाड़ी

- बेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा की स्थापना सोलवीं शताब्दी में बुंदेला शासक रुद्र प्रताप ने की थी।
- यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल राजा राम महल, राय प्रवीण महल, चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर आदि है।

❖ इंदौर

- मध्य प्रदेश की वाणिज्यिक राजधानी इंदौर को पेशवा बाजीराव प्रथम के सूबेदार मल्हार राव होलकर ने इसे अपनी राजधानी बनाया था।
- यहां पर लाल बाग पैलेस, राजवाड़ा, कांच मंदिर, खजराना मंदिर, आदि दर्शनीय स्थल है।

❖ विदिशा

- विदिशा, बेसनगर तथा भेलसा के नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र है, जो बेतवा और बेस नदियों के बीच अवस्थित है।
- सम्राट बनने के पूर्व अशोक यहां के राज्यपाल रहे थे।
- यहां हेलियाडोरस का स्तंभ (खंबा बाबा) हेलियोदोरस द्वारा वासुदेव के सम्मान में स्थापित गरुड़स्तंभ है।

❖ मध्य प्रदेश के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

स्थल का नाम	स्थान का नाम	विशेषता
आदमगढ़	होशंगाबाद	पाषाण युगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं
कसरावद	खरगोन	इसका उत्खनन वी आर करंदीकरन के निर्देशन में हुआ
इंदरगढ़	मंदसौर	यहां से राष्ट्रकूट शासक नरप का अभिलेख प्राप्त हुआ है
कायथा	उज्जैन	यहां से ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए
आवरा	मंदसौर	यहां पर ताम्र पाषाण काल से गुप्त काल तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
नागदा	उज्जैन	ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए
नावदा टोली	खरगोन	यहां पर ताम्र पाषाण काल की सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं
एरण	सागर	यहां से सती प्रथा के प्रमाण मिले हैं
जटकरा	खजुराहो	यहां पर खुदाई में विशाल मंदिर प्राप्त हुए हैं।
पीत नगर	खरगोन	प्राचीन बौद्ध कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।
निनौर गांव	सीहोर	गुप्तकालीन वस्तु कला एवं नगर व्यवस्था के अवशेष प्राप्त हुए
जूना एरवास	उज्जैन	तीसहजार वर्ष प्राचीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं
तंदौल	उज्जैन	खुदाई में दो हजार वर्ष पुराना मंदिर प्राप्त हुआ है।
खेड़ी नामा	होशंगाबाद	यहां से ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं
त्योथर	रीवा	यहां से बौद्ध कालीन तथा नगरी सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

डांग वाला	उज्जैन	परमार कालीन अवशेष प्राप्त हुए।
-----------	--------	--------------------------------

2. धार्मिक स्थल

❖ उज्जैन

- भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। यहां पर 12 वर्षों के अंतराल पर बृहस्पति के सिंह राशि में प्रवेश करने पर सिहस्त का मेला लगता है।
- यहां पर भगवान महाकाल का मंदिर देश के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह भारत का एकमात्र दक्षिण मुखी शिवलिंग है।
- यहां पर जंतर मंतर वेधशाला, मंगलनाथ मंदिर, सांदीपनि आश्रम, हरसिद्धि देवी मंदिर, भारत माता का मंदिर, संतोषी माता का मंदिर, भरथरी की गुफा, काल भैरव, कालिया देह महल, मंगलनाथ, भारत माता का मंदिर आदि दर्शनीय स्थल स्थित है।

❖ चित्रकूट - सतना

- यहां मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश दोनों की सीमा पर स्थित है।
- यहां मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है।
- भगवान राम और सीता ने वनवास के 14 वर्ष में से 11 वर्ष यही पर बिताए थे।
- यहां पर महर्षि अत्रि और सती अनुसूया आश्रम, कामतानाथ पर्वत, हनुमान धारा, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय आदि स्थित है।
- नोट - चित्रकूट जलप्रपात छत्तीसगढ़ में इंद्रावती नदी पर स्थित है। इसे भारत का नियाग्रा फाल कहा जाता है

❖ मैहर - सतना

- 1. मैहर में माता शारदा का भव्य मंदिर बना है तथा यहां संगीत सम्राट उस्ताद अलाउद्दीन खान की कार्य स्थली रहा है।
- पन्ना - भगवान प्राणनाथ की नगरी पन्ना को मंदिरों का शहर कहा जाता है।

❖ भोजपुर - रायसेन

- इसे मध्य प्रदेश का सोमनाथ कहा जाता है। यहां शिव मंदिर एवं जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

❖ ओमकारेश्वर - खंडवा

- ओमकारेश्वर में दो शिवलिंग संयुक्त रूप से होने के कारण इसे ज्योतिर्लिंग कहा जाता है।
- इस ज्योतिर्लिंग को मलेश्वर अमलेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।
- ओंकारेश्वर का प्राचीन नाम मांधाता है। यहां महादेव मंदिर, आदि शंकराचार्य की गुफाएं, सिद्धनाथ मंदिर, ममलेश्वर मंदिर, मार्कंडेय आश्रम आदि स्थित है।

❖ महेश्वर - खरगौन

- रामायण और महाभारत में महेश्वर को महिष्मति नाम से संबोधित किया गया है।
- इसे 17 वीं शताब्दी में होलकर परिवार की रानी अहिल्याबाई ने बसाया था।
- यहां पर सहस्रधारा जलप्रपात, राजेश्वर मंदिर, अहिल्या संग्रहालय, फनशे एवं पेशवा घाट, पंढरीनाथ, काशी विश्वविद्यालय स्थित है।

❖ प्रमुख जैन पर्यटक स्थल

स्थल का नाम	स्थान का नाम	विशेषता
मुक्तागिरी	बेतूल	दिगंबर जैनियों का पवित्र तीर्थ स्थल
सोनगिरी	दतिया	दिगंबर जैन से संबंधित 108 मंदिर
पीतांबर पीठ	दतिया	यहां 1 शक्तिपीठ है
पुष्पगिरी	देवास	जैन तीर्थ स्थल
पावागिरी	इंदौर	99 जैन मंदिर होने के कारण इसका नाम ऊन पड़ा
गोमटगिरी	इंदौर	यहां भगवान बाहुबली की 27 फीट ऊंची खड़गासन प्रतिमा है।
बावन गजा	बड़वानी	यहां पर 15 शताब्दी में निर्मित ऋषभदेव की 72 फीट ऊंची प्रतिमा है।
नोहटा	दमोह	जैन मंदिरों के अवशेष हेतु प्रसिद्ध है।
कुंडलपुर	दमोह	

3. प्राकृतिक स्थल

❖ पचमढी - होशंगाबाद

- पचमढी की खोज का श्रेय ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारी केप्टन जे फ़ारसोथ को जाता है।
- मध्यप्रदेश का कश्मीर तथा सतपुड़ा की रानी कहा जाता है।
- पचमढी को 1999 में प्रदेश का पहला तथा देश का 10 बायो स्फ़ेयर रिजर्व घोषित किया गया।
- यहां पर जटाशंकर की गुफाएं, पांडव की गुफा, रजत पाल, डचेस फाल, B फॉल, आदि स्थित है।
- यहीं पर राजेंद्र गिरी पहाड़ी स्थित है जिसे पहले पैनोरमगिरी के नाम से जाना जाता था।
- मध्य प्रदेश का सबसे ऊंचा स्थान 'धूपगढ़' सतपुड़ा में महादेव पर्वत पर स्थित है। इसे पहले हरवत्स कोर्ट के नाम से जाना जाता था।

❖ भेड़ाघाट - जबलपुर

- इसका नाम भेड़ाघाट नर्मदा और बावन नदी के संगम के कारण पड़ा
- यहां पर शिव पार्वती मंदिर, धुआंधार जलप्रपात, बंदर कूदनी आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल है।
- यह सफ़ेद संगमरमर और चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है।

❖ अमरकंटक - अनूपपुर

- नर्मदा नदी का उद्गम स्थल अमरकंटक पुराणों में सर्व तीर्थ नायकम बताया गया है। यहीं से 3 नदियां, नर्मदा, सोन, जोहिला का उद्गम होता है।
- यहां पर माई की बगिया, माई का मंदिर, कपिलधारा, दुग्ध धारा और नर्मदा कुंड स्थित है। यहां के प्राचीन मंदिरों का निर्माण कलचुरी राजाओं ने करवाया था।

❖ भोपाल

- तालाबों और पहाड़ी के लिए प्रसिद्ध है। इसे झीलों की नगरी कहा जाता है।
- यहां पर बड़ा तालाब, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, बिरला मंदिर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय स्थित है।
- भोपाल की ताजुल मस्जिद शाहजहां बेगम के द्वारा बनवाई गई। आंगन की दृष्टि से यहां सबसे बड़ी मस्जिद है।

मध्य प्रदेश के किले

❖ ग्वालियर का किला

- इससे पूर्व का जिब्राल्टर एवं कहा जाता है, इसका निर्माण सूरज सेन के द्वारा आठवीं सदी में करवाया गया।
- इसमें 5 दरवाजे हैं - आलमगीर दरवाजा, हिंडोला दरवाजा, गुजरी महल दरवाजा, चतुर्भुज दरवाजा, हाथीफोड़ दरवाजा।

➤ अन्य इमारतें

- सास बहू का मंदिर का निर्माण कछवाहा शासक महिपाल के द्वारा करवाया गया।
- गुजरी महल, मान मंदिर और हाथी की विशाल प्रतिमा का निर्माण मानसिंह तोमर द्वारा किया गया।
- तेली के मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूट शासक को द्वारा किया गया। यह उत्तर भारत का एकमात्र द्रविड़ शैली में बना हुआ मंदिर है।
- बादल महल भी ग्वालियर के किले में ही स्थित है।

❖ चंदेरी का किला - अशोकनगर

- इसका निर्माण प्रतिहार राजा कीर्तिपाल ने करवाया था।
- यहां किला बेतवा नदी के तट पर स्थित है।
- बाबर के आक्रमण के समय यहां पर 800 राजपूत रानियों ने जौहर किया था।
- यहां पर जोहर कुंड, नौखंडा महल, हवा महल आदि स्थित है।

❖ असीरगढ़ का किला - बुरहानपुर जिला

- इस किले का निर्माण आशा नामक अहीर राजा ने करवाया था।
- इसे ढाई सौ मीटर ऊंची इमारत वाला किला भी कहा जाता है।
- इसे दक्षिण का प्रवेश द्वार कहा जाता है।
- यहां पर प्राचीन शिव मंदिर तथा आशा देवी की विशाल प्रतिमा है।

❖ रायसेन दुर्ग - रायसेन जिला

- इसका निर्माण राजा राज बसंती ने करवाया था। यहां पर राजा रोहित का महल, बादल महल, इन्द्रदान महल आदि महल दर्शनीय है।

❖ धार का किला - धार जिला

- इस किले का निर्माण दक्षिण विजय के दौरान मोहम्मद बिन तुगलक ने करवाया था। यहां पर खरबूजा महल, देवी कालका का मंदिर, अब्दुल साह चंगल का मकबरा स्थित है।

❖ मंदसौर का किला - मंदसौर जिला

- शिवना नदी के किनारे स्थित है इस किले का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया था।

❖ ओरछा दुर्ग - निवाड़ी जिला

- इसका निर्माण वीरसिंह देव द्वारा करवाया गया। बेतवा नदी के तट पर स्थित है। इस किले में चतुर्भुज मंदिर, जहांगीर महल, रामलला मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर स्थित है।

❖ गिन्नौरगढ़ का किला - रायसेन जिला

- इसका निर्माण राजाउदय वर्मन ने करवाया था। यहां किला गिन्नौरी पहाड़ी पर स्थित है। यहां के तोते बहुत प्रसिद्ध है।

❖ बांधवगढ़ दुर्ग - उमारिया जिला

- इस किले को भगवान श्री राम ने लंका विजय के बाद अपने भ्राता लक्ष्मण को भेंट स्वरूप देकर लंका पर निगाह रखने को कहा था। इसी कारण इसको भाई का किला कहा जाता है। इस किले में चमत्कारी योगी की समाधि और क्षीर सागर कुंड भी स्थित है।

❖ मकड़ाई का किला - हरदा जिला

- इस किले का निर्माण राजा मकरंद शाह ने पिंडारियों का दमन करने के लिए करवाया था।

❖ सबलगढ़ का किला - मुरैना जिला

- इस किले का निर्माण सबलगढ़ नामक पहाड़ी पर यदुवंशी नरेश गोपी सिंह ने करवाया था।

❖ कुशलगढ़ का किला - महू, इंदौर

- इसका निर्माण जमींदार कुशल सिंह ने करवाया था।

❖ नरवर का किला - शिवपुरी जिला

- इस किले का निर्माण राजा नल ने करवाया था। यहां राजा नल और दमयंती प्रणय की कथा से संबंधित है।

❖ अजय गढ़ का किला - पन्ना जिला

- यहां पर राजा अमन का महल दर्शनीय है। इस किले का निर्माण अजय पाल नामक राजा ने करवाया था।

❖ दतिया का किला - दतिया जिला

- इस किले का निर्माण राजा वीर सिंह बुंदेला के द्वारा करवाया गया था। यहां पर सतखंडा महल, वीर महल, गोपाल महल, मुंडा महल आदि स्थित है।

❖ अन्य प्रमुख किले व महल

किले का नाम	स्थान का नाम
गोहद किला	भिंड
देवरा का किला	छतरपुर
पालकी महल	ओरछा
लाल बाग पैलेस	इंदौर
जय विलास पैलेस	ग्वालियर
चौगान का किला	नरसिंहपुर
माधवगढ़ का किला	सतना
कालियादेह महल	उज्जैन
मदन महल	जबलपुर
अशर्फी महल	मांडू
जहाज महल	मांडू
हिंडोला महल	मांडू
बघेल महल	मंडला

मध्यप्रदेश की गुफाएं

❖ भीमबेटका की गुफाएं - रायसेन

- भीमबेटका की गुफाएं प्रागैतिहासिक काल से संबंधित है।
- भीमबेटका की गुफाएं विश्व का सबसे बड़ा गुफा समूह बनाती है।
- यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में 2003 शामिल किया गया।
- इन गुफाओं का उत्खनन वाकणकर के द्वारा करवाया गया था।

❖ आदमगढ़ की गुफाएं - होशंगाबाद

- इन गुफाओं का उत्खनन आर. बी. जोशी तथा एम. डी. खरे के द्वारा करवाया गया। यह भी प्रागैतिहासिक कालीन गुफा है।

❖ उदयगिरि की गुफाएं - विदिशा

- इन गुफाओं को नीचे गिरी के नाम से भी जाना जाता है।
- यहां पर 20 गुफा है जो हिंदू एवं जैन मूर्तिकारी के लिए प्रसिद्ध है।
- इन गुफाओं का निर्माण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के सचिव वीरसेन द्वारा करवाया गया।

- गुफा नंबर 5 वराह अवतार से संबंधित है भगवान विष्णु की बराह प्रतिमा स्थापित है।

- गुफा नंबर 20 जैन गुफा के नाम से जानी जाती है।

❖ भ्रतहरि की गुफाएं - उज्जैन

- इन गुफाओं का निर्माण परमार शासकों के द्वारा करवाया गया। यहां पर 9 गुफाएं हैं।

❖ **बाघ की गुफाएं - धार**

- यह गुफाएं बाघिनी नदी के तट पर स्थित है। यह गुफाएं प्राकृतिक ना होकर स्थापत्य कारों द्वारा पहाड़ी को काटकर बनाई गई है। इस कारण इन्हें रॉक कट ऑफ आर्किटेक्चर कहा जाता है।
- इन गुफाओं की शैली अजंता के समान है। इस कारण इन्हें अजंता की गुफा के समकालीन माना जाता है। इन गुफाओं को बौद्ध चित्रों का प्राण या रंग महल कहा जाता है।

❖ **पांडव की गुफाएं - होशंगाबाद**

- इन गुफाओं का निर्माण पहली शताब्दी में बौद्ध साधु के द्वारा करवाया गया था।

❖ **अन्य गुफाएं**

गुफाओं का नाम	स्थान का नाम
माडा की गुफाएं	सिंगरौली
शंकराचार्य की गुफाएं	खंडवा
बिलोवा की गुफा	ग्वालियर
मृगेंद्र नाथ की गुफाएं	रायसेन
सारा मारु गुफाएं	सीहोर
देव नाला गुफाएं डिंडोरी	डिंडोरी
रीछगढ़ की गुफाएं	सतपुड़ा नेशनल पार्क
बांधवगढ़ की गुफा	बांधवगढ़ उमरिया
काजल रानी की गुफाएं	मांधाता खंडवा
गोविंदा भागवतपाद गुफाएं	ओमकारेश्वर
देव नाला की गुफाएं	डिंडोरी
धमनार की गुफाएं	मंदसौर
सिद्ध बाबा की गुफाएं	निवाड़ी
सिद्ध जैन मंदिर गुफाएं	ग्वालियर

❖ **मध्यप्रदेश की प्रमुख समाधि एवं मकबरे**

समाधि का नाम	स्थान का नाम
रानी दुर्गावती की समाधि	जबलपुर
लक्ष्मी बाई की समाधि	ग्वालियर
झलकारी बाई की समाधि	ग्वालियर
मोहम्मद गौस का मकबरा	ग्वालियर
तानसेन की समाधि	ग्वालियर
महात्मा गांधी की समाधि	राजघाट बड़वानी
पीर बुधन का मकबरा	शिवपुरी
पेशवा बाजीराव की समाधि	खरगोन
अब्दुल्ला शाह चंगल का मकबरा	धार
बैजू बावरा की समाधि	चंदेरी
माधवराव सिंधिया की समाधि	शिवपुरी
तात्या टोपे की समाधि	शिवपुरी
महारानी सांख्य राजे सिंधिया की समाधि	शिवपुरी

होशंगशाह का मकबरा	मांडू
नवाब सिद्दीकी हसन का मकबरा	भोपाल
गिरधारी बाई की समाधि	मंडला
मत्स्येन्द्र पीर की समाधि	उज्जैन
बाज बहादुर और रानी रूपमती का मकबरा	सारंगपुर (राजगढ़)
बालजत्ती शाह एवं मस्ताना अली की मजार	सागर
काना बाबा की समाधि	सोडलपुर हरदा
मुमताज महल की समाधि	बुरहानपुर
दौलत का लोधी का मकबरा	बुरहानपुर
हजरत शाह वजीउद्दीन का मकबरा	चंदेरी
महमूद खिलजी की कब्र	मांडू
हृदय शाह का मकबरा	पन्ना

❖ **प्रमुख अभिलेख**

अभिलेख का नाम	स्थान का नाम
मंदसौर अभिलेख	मंदसौर
उदयगिरि अभिलेख	विदिशा
सांची अभिलेख	रायसेन
तूमेन अभिलेख	गुना
सूपिया अभिलेख	रीवा
एरण अभिलेख	सागर

संग्रहालय

❖ **केन्द्रीय संग्रहालय, इंदौर**

- केन्द्रीय संग्रहालय इंदौर की स्थापना 1923 में होलकर शासन के शिक्षा विभाग के अंतर्गत एक संस्था के रूप में हुई, जिसका नाम 'नररत्न मंदिर' रखा गया था।

❖ **राज्य संग्रहालय, भोपाल**

- इस संग्रहालय की स्थापना 1909 में नवाब सुल्तानजहाँ बेगम द्वारा एडवर्ड संग्रहालय के नाम से की गयी थी।

❖ **रानी दुर्गावती संग्रहालय, जबलपुर**

- रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर में स्थित है।
- रानी दुर्गावती की स्मृति में यह स्मारक वर्ष 1964 में निर्मित किया गया था।

❖ **तुलसी संग्रहालय, रामवन सतना**

- इस संग्रहालय की स्थापना सतना के सेठ बाबू शारदा प्रसाद जी ने की थी किया।
- वर्ष 1978 में यह संग्रहालय म.प्र. पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग को दान में प्राप्त हुआ।

❖ **महाराजा छत्रसाल संग्रहालय छत्तरपुर**

- छत्रसाल संग्रहालय धुबेला महल में स्थित है।

- इस भवन का निर्माण महाराज छत्रसाल बुन्देला ने करवाया था।
- इस संग्रहालय में बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड की पुरासामग्री सुरक्षित है, जो वीथिकाओं एवं खुले में प्रदर्शित है।

❖ गूजरी महल संग्रहालय, ग्वालियर

- सन् 1922 ई. में संग्रहालय का उद्घाटन किया गया।
- सन् 1914 -1920 ई के मध्य ग्वालियर रियासत के विभिन्न स्थलों से पुरासामग्री का संकलन किया गया।

❖ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

- इसकी स्थापना 21 मार्च 1977 को भोपाल में की गई थी।
- इस संग्रहालय में मानव सभ्यता के विकास की कहानी को प्रदर्शित किया गया है जो देश का सबसे बड़ा संग्रहालय है।

❖ त्रिवेणी संग्रहालय, उज्जैन

- स्थापना - उज्जैन सिंहस्थ-2016 के अवसर पर इसकी स्थापना की गयी थी।

❖ जन जातीय संग्रहालय

- बादल भोई राज्य जन जातीय संग्रहालय, पातालकोट, छिन्दवाडा
- जन जातीय संग्रहालय, भोपाल
- दुष्यंत कुमार संग्रहालय, भोपाल



- मध्य प्रदेश में 1,400 स्थानों पर मेले लगते हैं। उज्जैन जिले में सर्वाधिक 227 मेले और होशंगाबाद जिले में न्यूनतम 13 मेले आयोजित होते हैं।

❖ सिंहस्थ (कुंभ)

- मध्यप्रदेश में छिप्रा नदी के किनारे उज्जैन एकमात्र स्थान है, जहां कुंभ का मेला लगता है।
- वृहस्पति के सिंह राशि पर आने पर कुंभ मेला लगता है, यह ग्रह स्थिति प्रत्येक बारह साल में आती है इसलिए उज्जैन में लगने वाले कुंभ को सिंहस्थ कहा जाता है।

❖ रामलीला का मेला

- ग्वालियर जिले की भांडेर तहसील में यह मेला लगता है।
- 100 वर्षों से अधिक समय से चला आ रहा यह मेला जनवरी-फरवरी माह में लगता है।

❖ पीर बुधन का मेला

- यह शिवपुरी के सांवरा क्षेत्र में मुस्लिम संत पीर बुधन के मकबरे पर लगता है।
- अगस्त-सितंबर में यह मेला लगता है।

❖ नागाजी का मेला

- अकबर कालीन संत नागाजी की स्मृति में यह मेला लगता है।
- मुरैना जिले के पोरसा गांव में एक माह मेला चलता है।
- पहले यहाँ बंदर बेचे जाते थे। अब सभी पालतू जानवर बेचे जाते हैं।

❖ हीरा भूमिया मेला

- हीरामन बाबा का नाम ग्वालियर और इसके आस-पास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। यह कहा जाता है कि हीरामन बाबा के आशीर्वाद से महिलाओं का बांझपन दूर होता है।
- यह मेला अगस्त और सितंबर में आयोजित किया जाता है।

❖ तेजाजी का मेला

- गुना जिले के भामावड़ में तेजाजी की जयंती पर यह मेला आयोजित होता है।
- तेजाजी सच्चे इंसान थे। कहा जाता है कि उनके पास एक ऐसी शक्ति थी जो शरीर से सांप का जहर उतार देती थी।

❖ जागेश्वरी देवी का मेला

- अशोक नगर जिले के चंदेरी नामक स्थान में यह मेला लगता है।
- कहा जाता है कि चंदेरी के शासक जागेश्वरी देवी के भक्त थे। वे कोढ़ से पीड़ित थे। किंबदंती के अनुसार देवी ने राजा से कहा था कि वे 15 दिन बाद देवी स्थान पर आए किंतु देवी का सिर्फ मस्तक ही दिखाई देना शुरू हुआ था। राजा का कोढ़ ठीक हो गया और उसी दिन से उस स्थान पर मेला लगना शुरू हो गया।

❖ महामृत्यंजना का मेला

- रीवा जिले में महामृत्यंजना का मंदिर स्थित है जहाँ बसंत पंचमी और शिवरात्रि को मेला लगता है।

❖ अमरकंटक का शिवरात्रि मेला

- शहडोल जिले के अमरकंटक नामक स्थान (नर्मदा के उद्गम स्थल) में यह मेला लगता है।
- यह मेला शिवरात्रि को लगता है।

❖ चंडी देवी का मेला

- सीधी जिले के धीधरा नामक स्थान पर चंडी देवी को सरस्वती का अवतार माना जाता है।
- यहाँ पर मार्च-अप्रैल में मेला लगता है।

❖ काना बाबा का मेला

- हरदा जिले के सोढलपुर नामक गांव में काना बाबा की समाधि पर यह मेला लगता है।

❖ कालूजी महाराज का मेला

- पश्चिमी निमाड़ के पिपल्या खुर्द में एक महीने तक यह मेला लगता है।
- यह कहा जाता है कि 200 वर्षों पूर्व कालूजी महाराज यहाँ पर अपनी शक्ति से आदमियों और जनवरों की बीमारी ठीक करते थे।

❖ धमोनी उर्स

- सागर जिले के धमोनी नामक स्थान पर बाबा मस्तान अली शाह की मजार पर अप्रैल-मई में यह उर्स लगता है।

❖ शहाबुद्दीन औलिया का उर्स

- नीमच में फरवरी माह में आयोजित किया जाता है।
- यहां बाबा शहाबुद्दीन की मजार है।

❖ मठ घोघरा का मेला

- सिवनी जिले के मौरंथन नामक स्थान पर शिवरात्रि को 15 दिवसीय मेला लगता है।

❖ सिंगाजी का मेला

- सिंगाजी एक महान संत थे। पश्चिमी निमाड़ के पिपल्या गांव में अगस्त-सितंबर में एक सप्ताह को मेला लगता है।

❖ बरमान का मेला

- नरसिंहपुर जिले के सुप्रसिद्ध ब्रह्मण घाट पर मकर संक्रांति पर 13 दिवसीय मेला लगता है।

❖ गढ़ाकोटा का रहस्य मेला

- गढ़ाकोटा में प्रतिवर्ष फरवरी में बसंत पंचमी से एक माह तक आयोजित होता है।

- ऐसा माना जाता है कि यह मेला सन् 1758 में मर्दनसिंह नामक राजा के गढ़ाकोटा का उत्तराधिकारी बनने के बाद से लगता आ रहा है।

❖ उल्दन का मेला

- सागर जिले के ग्राम उल्दन के निकट धसान और भांडेर नदियों के संगम पर शिव-पार्वती के मंदिर पर मकर संक्रांति का भव्य मेला लगता है।

❖ बनेनी घाट मेला

- सागर जिले की राहतगढ़ में बीना नदी के तट पर भगवान शंकरजी का एक प्राचीन मंदिर है।
- इसी के नजदीक बनेनी घाट पर प्रतिवर्ष शिवरात्रि का मेला लगता है।

❖ सानोधा का मेला

- सागर जबलपुर मार्ग पर स्थित सानोधा में एक छोटा सा किला है। यहाँ पर मकर संक्रांति पर आठ दिन तक चलने वाला धार्मिक महत्व का मेला लगता है।

❖ भापेल का मेला

- सागर जिले के भापेल में महादेव मंदिर है, जिसे फूलनाथ मंदिर भी कहा जाता है। दीपावली के बाद यहाँ कार्तिक पूर्णिमा पर प्रतिवर्ष मेला लगता है।

❖ देवरी का मेला

- यह मेला सागर जिले के देवरी में अगहन के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को खांडेराव मंदिर में लगता है।

❖ मऊ सहानिया का मेला

- मकर संक्रांति पर जिला मुख्यालय छतरपुर से करीब सोलह किमी. दूर मऊ सहानिया ग्राम के पास जगत सागर तालाब पर प्रमुख मेला आयोजित होता है।

❖ कुम्हेण का मेला

- मकर संक्रांति पर ही छतरपुर जिले के महाराजपुर के निकट कुम्हेण नदी पर एक सप्ताह तक कुम्हेण का मेला लगता है।

❖ चरण पादुका का मेला

- छतरपुर जिले के चरण पादुका में भी मकर संक्रांति के अवसर पर मेले का आयोजन किया जाता है।
- मकर संक्रांति के इस मेले को लोग शहीद मेला भी कहते हैं।

❖ जटाशंकर का मेला

- छतरपुर जिले के जटाशंकर तीर्थ स्थल पर हर अमावस्या को मेला लगता है।
- यहाँ पर सबसे बड़ा मेला मकर संक्रांति पर भी लगता है। यह मेला तीन दिन तक चलता है।

❖ अम्बार माता का मेला

- छतरपुर जिले में अम्बार माता का मेला सबसे बड़ा मेला आयोजित होता है।

- यह एक माह तक चलता है, जो मई माह में लगता है।

❖ जल विहार मेला

- छतरपुर में अक्टूबर-नवम्बर माह में दशहरा और दीपावली के बीच पन्द्रह दिन का जलविहार मेला लगता है।

❖ राम-जानकी का मेला

- बिजावर का जानकी मेला क्षेत्र का काफी प्राचीन मेला है।

❖ नांद चांद का मेला

- पन्ना जिले के ग्राम बगवार के निकट नांदचाँद का मेला लगता है।
- मकर संक्रांति पर सात दिनों तक लगने वाले मेले के लिए प्रसिद्ध इस स्थान पर पत्थरों की शिल्पकला काफी प्रसिद्ध है।

❖ कुंआताल का मेला

- पन्ना जिले के कुंआताल में नवरात्रि पर आयोजित होने वाले इस मेले का अपना महत्व है। यहाँ कांगली देवी का मंदिर है।

❖ कलेही देवी का मेला

- पन्ना जिले के कलेही देवी के मंदिर पर माह अप्रैल मई में यह मेला लगता है। यह मेला भी पन्द्रह दिनों तक लगता है।।

❖ जनकपुर का मेला

- पन्ना के करीब पाँच किमी. दूर पन्ना पहाड़ीखेडा मार्ग पर ग्राम जनकपुर के स्थयात्रा के अवसर पर यहाँ चार दिनों तक मेला लगता है।

❖ प्राणनाथ का शरद समैया मेला

- महाराजा छत्रसाल के गुरु और प्रणामी सम्प्रदाय के प्रणेता स्वामी प्राणनाथ की स्मृति में पन्ना के प्राणनाथ मंदिर के परिसर में शरद पूर्णिमा पर शरद समैया नामक मेला आयोजित किया जाता है।

❖ ओरछा का मेला

- ओरछा एक तरह से भगवान राम की नगरी है। इसीलिए ओरछा में भगवान राम से जुड़े विभिन्न संद और प्रसंगों पर कई मेले लगते हैं। इनमें प्रमुख हैं-

- रामनवमी और राम विवाह के मेले।

- ओरछा में सावन तीज के अवसर पर भव्य मेला लगता है। यह मेला दो दिन तक चलता है।

❖ कुण्डेश्वर के मेले

- टीकमगढ़ जिले के कुण्डेश्वर में मकर संक्रांति, शिवरात्रि एवं डोल ग्यारस पर्व पर मेले लगते हैं, जो कई दिनों तक चलते हैं।

❖ बड़े बाबा का मेला

- दमोह में जैन धर्मावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ स्थल है कुण्डलपुर यहाँ बड़े बाबा का मेला प्रतिवर्ष माघ शुक्ल पर कुण्डलपुर में आयोजित किया जाता है।
- ❖ **जागेश्वरी नाथ धाम का मेला**
 - दमोह जिले के बांदकपुर में जागेश्वरी धाम मेला लगता है। यहाँ प्राचीन विशाल भगवान महादेव का शिवलिंग है।

अन्य प्रमुख मेले		
मेला	समय	स्थान
बाबा गरीब नाथ का मेला	पूरे चैत्र माह तक (मार्च अप्रैल)	अवंतिपुर बडोदिया, शाजापुर
कुण्डेश्वर मेला	शिवरात्रि, मकर संक्रांति, बसंत पंचमी	टीकमगढ़ के पास जमदार नदी के किनारे
बडोनी मेला	शिवरात्रि व गुरु पूर्णिमा	बडोनी, दतिया (योगेश्वरी पहाड़ी)
सनकुआ	कार्तिक पूर्णिमा से 15 दिन तक	सेवडा कस्बा, सनकुआ स्थान दतिया
रामजी बाबा का मेला		होशंगाबाद
मान्धाता	कार्तिक माह (सितम्बर - अक्तूबर) 7 दिन	मान्धाता, खंडवा
जल विहारी का मेला	अक्तूबर माह में 10 दिन	छतरपुर
सोनागिरी	चैत्र में एक से पंचमी तक	सोनागिरी, दतिया
रामलीला	माघ (जनवरी - फरवरी)	भांडेर, दतिया
रावतपुरा		लहार तहसील का रावतपुरा गांव, भिंड
रतनगढ़	दीपावली की दूज	रतनगढ़, दतिया



- मध्यप्रदेश में मनुष्य की उपस्थिति मध्य प्लीस्तोसीनसीन से है जिसका प्रमाण हथनोरा से प्राप्त प्राचीन मानव के कपाल का टुकड़ा जो मध्यप्रदेश का ही नहीं भारत का सबसे प्राचीनमानव अवशेष है
- मध्य प्रदेश का क्रमबद्ध इतिहास महाजनपद काल या ईशा पूर्व छठवीं सदी से प्राप्त होता है, हालांकि राजवंशीय इतिहास, महान बौद्ध सम्राट अशोक के समय के साथ शुरू होता है, जिसका मौर्य साम्राज्य मालवा और अवंती में शक्तिशाली था।

मध्य प्रदेश का प्रागैतिहासिक काल

❖ पाषाण काल

- मध्यप्रदेश में पाषाण काल के स्थल नर्मदा घाटी, चंबल घाटी, बेतवा घाटी, सोनार घाटी, भीमबेटिका की गुफा आदि पाए गए हैं तथा 2000 ई. पूर्व नर्मदा की घाटी में सभ्यता विकसित हुई।
- नवपाषाण काल में मानव ने कृषि करना सीख लिया था।
- मानव पशु पक्षी तथा मछली को भोजन में प्रयोग करता था।

➤ पाषाण काल के प्रमुख प्रागैतिहासिक स्थल

- **चंबल** - बेतवा, चंबल, नर्मदा घाटी से बहुतायात औजार प्राप्त हुए हैं। नवपाषाण युग मध्य प्रदेश में लगभग 7000 ई. पूर्व में प्रारंभ हुआ यहाँ से सेल्ट कुल्हाड़ी, बसूला, रजक, घन जैसे औजार मिले हैं। मनुष्य ने इसी काल में कृषि पशुपालन गृह निर्माण और अग्नि जैसे क्रांतिकारी कार्यों को आपनाया है।
- ऐरण, गढी मोरेला, जतकरा, बाहुलई, बुसिगा मुंनई, जबलपुर, दमोह, नंदगाव, होशंगाबाद से युग के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- **आजमगढ़** - यह मध्य पाषाण कालीन स्थल होशंगाबाद के निकट नर्मदा तट पर स्थित है। गुफा शैल चित्र यहाँ की प्रमुख विशेषता है।
- **भीमबेटिका** - मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है। यह आदि-मानव द्वारा बनाये गए शैलचित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है। ये चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन के प्राचीनतम चिह्न हैं।

❖ ताम्र पाषाण काल

- मध्यप्रदेश में बालाघाट एवं जबलपुर जिले के कुछ भागों में ताम्र कालीन औजार मिले हैं।
- यह मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के समकालीन थे।
- नर्मदा चंबल बेतवा नदी के किनारे और जबलपुर बालाघाट में इस सभ्यता का विकास हुआ। मालवा के कायथा ऐरण, आवरा, नवदाटोली, डाँगवाला व बैसनगर आदि से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं।

- डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर ने भीमबेटिका, नागदा, कायथा की खोज की थी।

➤ ताम्र पाषाण काल के प्रमुख प्रागैतिहासिक स्थल

- **कायथा** - यह पहली ताम्रपाषाण बस्ती थी जिसका अस्तित्व 1380 से पूर्व तक रहा। कायथा वराह मिहिर की जन्मभूमि थी।
- **ऐरण** - यह सागर जिले में स्थित है। इसका प्राचीन नाम ऐरिकिण था। इस ताम्र वस्त्री का समय 2000 ई. पूर्व से 700 ई. पूर्व माना जाता है जहाँ से तांबे की कुल्हाड़ियाँ सोने के गोल टुकड़े चित्र मृदभांड ताम्र कालीन बस्ती के प्रमाण आदि प्राप्त हुए।
- **नवदाटोली** - यह महेश्वर में नर्मदा तट पर स्थित है। इसका ताम्रपाषाण एक अस्तित्व 1637 ई. पूर्व के मध्य माना जाता है यहाँ से झोपड़ीनुमा मिट्टी के घरों के साक्ष्य मिले हैं जो चौकोर या आयताकार होते थे।
- **आवरा** - मंदसौर जिले में स्थित आगरा ग्राम से ताम्रपाषाण से लेकर गुप्त काल तक की विभिन्न अवस्थाएं एवं संबंधित सामग्री मिली है।
- **डांगवाला** - यह उज्जैन से 32 किलोमीटर दूर बस्ती में स्थित है यह गत शताब्दी के उत्खनन से अस्तित्व में आई।
- **नागदा** - यह उज्जैन जिले में चंबल नदी के तट पर है इस ताम्रपाषाण बस्ती से भी मृदभांड और लघु पाषाण के अस्त्र आदि मिले हैं।
- **खेडीनामा** - यह होशंगाबाद जिले में स्थित है। यह 1500 पूर्व पुरानी ताम्रपाषाण बस्ती है।

वैदिक काल

- वस्तुतः ऋग्वैदिक काल 1500 -1000 ई. पूर्व में आर्य संस्कृति उत्तर तक सीमित है और उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.) समय में ही उसने विंध्याचल को पार कर मध्यप्रदेश में कदम रखा।
- मनु के 10 पुत्रों में से एक करुष ने कारुस वंश की स्थापना बघेलखंड में की।
- चंद्रवंश - मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ और इस वंश की स्थापना हुई।
- सोम का शासन बुंदेलखंड में था।
- आयु के पुत्र यदि यथार्थ हुए जिसने अपना साम्राज्य पांच पुत्रों में बांट दिया।
- इनमें से वधू को चर्मण्वती (चंबल) वेत्रवती (बेतवा) नदी घाटी क्षेत्र मिला जहाँ यदु के नाम पर यादव वंश स्थापित हुआ।

❖ इक्ष्वाक वंश

- मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के नाम पर इस वंश की स्थापना हुई जिसका शासन दंडकारण्य रहा है।
- इस वंश के प्रतापी राजा मांधाता ने अपने पुत्र पुरुकुत्स को मध्य भारत के नाग राजाओं की सहायता हेतु भेजा (गंधर्व के विरुद्ध)।
- इसी वंश के मुचकुंद ने रिक्ष और परिपात्र पर्वत मालाओं के बीच नर्मदा तट पर अपने पूर्वज नरेश मांधाता के नाम पर मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर-मांधाता) बसाई।

महाकाव्य काल

- रामायण काल में प्राचीन मध्य प्रदेश के अंतर्गत दंडकारण्य के घने वन क्षेत्र, विंध्य सतपुड़ा के अलावा यमुना के कोठे का दक्षिणी भाग और गुर्जर प्रदेश के कई क्षेत्र स्थित थे।
- यदुवंशी नरेश मधु इस क्षेत्र के शासक थे जो अयोध्या के राजा दशरथ के समकालीन थे जनश्रुतियों के अनुसार राम ने अपने वनवास के कुछ क्षण दंडकारण्य (छत्तीसगढ़) में बिताये थे।
- बाल्मीकि आश्रम में माता सीता ने लव कुश को जन्म दिया था यह आश्रम तमसा नदी के तट पर था।
- रामायण कालीन त्रेता युग के बाद महाभारतकालीन द्वारपर युग प्रारंभ हुआ।
- महाभारत में माहिष्मती, उज्जैनी, कुंतलपुर व विराटपुरी को मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर बताया गया है।

❖ प्राचीन जनपद के परिवर्तित नाम (नया जनपद)

- 1. अवंती (अवंतिका) - उज्जैन
- 2. वत्स - ग्वालियर
- 3. चेदि - खजुराहो
- 4. अनूप - निमाड़ (खंडवा)
- 5. दशर्ण - विदिशा
- 6. तुन्डीकेर - दमोह
- 7. नलपुर - नरवर (शिवपुरी)

प्रमुख अभिलेख

- **मौर्यकालीन अभिलेख** - अशोक के समय के तीन पाषाण लेख रूपनाथ (जबलपुर), गुर्जरा (दतिया) और पान गुराडिया (सीहोर) से मिले हैं और एक सांची में है।
- **सातवाहन** - सातवाहन का अभिलेख मध्यप्रदेश में सांची से प्राप्त हुआ है।
- **इंडो ग्रीक अभिलेख** - विदिशा में अंतियाकोश का राजदूत हेलिओडोरस के द्वारा बनवाया गया एक गरुड़ स्तंभ स्थित है।

- **शक क्षत्रपो का अभिलेख** - शक क्षत्रपो का मध्यप्रदेश में होने का विवरण प्रदेश में उज्जैन और मालवा के कई स्थानों से मिले सिक्कों से स्पष्ट हुआ है।
- **कुषाण कालीन** - मध्यप्रदेश में वासिष्क का सांची से और दूसरा जबलपुर में भेड़ाघाट से मिला है।
- **गुप्त** - एरण से मिले अभिलेख से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान के अंतर्गत एरण पर अधिकार कर लिया था।
- उदयगिरी की पहाड़ियों में प्राप्त चंद्रगुप्त द्वितीय के संधि विग्रहक, वीरसेन का अभिलेख महत्वपूर्ण लिखित साक्ष्य है।
- गुप्त काल का एक अभिलेख सांची से भी प्राप्त हुआ है।
- कुमारगुप्त का शिलालेख तुमेन (अशोकनगर) में मिला है। जिस पर तुंबवन के शासक घटोत्कच का उल्लेख है।
- उदयगिरि का शिलालेख कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल का है।
- **वाकाटक** - सिवनी, दुड़िया, तिरोड़ी, इंदौर, पट्टन और बालाघाट से मिले वाकाटक प्रवरसेन के ताम्र पात्र संकेत देते हैं कि उसके राज्य का विस्तार मध्य प्रदेश के कई भागों पर था।
- **हूण** - एरण से मिले तोरमण के शासन के प्रथम वर्ष के वराह प्रतिमा अभिलेख यह पता चलता है कि हूण मध्य भारत में बहुत अंदर तक प्रवेश कर गए थे और सागर तक पहुंच गए थे।
- मिहिरकुल के शासनकाल के 15वें वर्ष का ग्वालियर अभिलेख ग्वालियर अभिलेख मध्य प्रदेश में हूण की उपस्थिति को दर्शाता है।
- **ओलिकार वंश** - मंदसौर, राजगढ़, मुरैना जिला एवं सीतामऊ से प्राप्त इस वंश के 12 अभिलेखों से यह संकेत मिलता है कि प्रारंभिक ओलिकार शासन गुप्तों के सामंत थे।
- मंदसौर अभिलेख यशोधर्मन द्वारा हूण शासक मिहिरकुल की पराजय का विवरण देता है।
- **परिवार्जक महाराज** - बुंदेलखंड पर शासन कर रहे परिवार्जक गुप्तों के सामंत थे। इस वंश का पहला अभिलेख खोह से पाया गया है। इन राजाओं के तीन और अभिलेख खोह, जबलपुर और मझगांव से प्राप्त हुए हैं।
- **मैकल के पांडूवंशी** - शहडोल जिले में वर्तमान अमरकंटक के आसपास के क्षेत्र को पुराने समय में मैकल के नाम से जाना जाता था। मैकल पर शासन कर रहे हैं पांडूवंशियों की वंशावली और कालक्रम का विवरण में बमहनी से प्राप्त भरतवल के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के ताम्रपात्र से मिलता है।
- **वल्लभी के मैत्रक वंश** - वल्लभी के मैत्रक शासक द्वितीय बालादित्य ने अपने राज्य को पश्चिमी मालवा तक बढ़ा लिया था। और यह मध्यप्रदेश के रतलाम जिले के नोगवां से मिले उसके शासन काल के दो अभिलेखों से प्रमाणित होता है।

- **शैल वंश** - आठवीं शताब्दी के दौरान शैल व आधुनिक महाकौशल के पश्चिमी भाग पर शासन कर रहा था। इसकी पुष्टि बालाघाट जिले में राघोली से मिले ताम्र लेख में वर्णित वंशावली और कालक्रम से होती है।

मध्यप्रदेश में प्राप्त हुई विभिन्न देशों की मुद्राएं

- इंडो ग्रीक शासक मिनांडर की एक मुद्रा बालाघाट से मिली है।
- सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णिक की मुद्रा उज्जैन से मिली है। इसी के साथ गौतमीपुत्र सातकर्णिक के सिक्के देवास से प्राप्त हुए हैं।
- शक शासक भूमक का सिक्का त्रिपुरी से प्राप्त हुआ है। शिवपुरी से क्षत्रप शासन नहपान की चांदी की मुद्राएं प्राप्त हुई हैं। तथा क्षत्रप शासक चरुतन की मुद्राएं उज्जैन और शिवपुरी से प्राप्त हुई हैं।
- कुषाण शासक विमकडफिसस की दो मुद्राएं विदिशा और शहडोल मिली हैं। कनिष्क प्रथम की मुद्राएं शहडोल से प्राप्त हुई हैं। कुषाण वंश के शासक हुविष्क की मुद्राएं शहडोल और हरदा से मिली हैं।
- नाग वंश के शासक वृषनाग की एक मुद्रा विदिशा से प्राप्त हुई है।
- बोधी वंश की मुद्राएं मध्य प्रदेश के जबलपुर से प्राप्त हुई हैं।
- चंदेल वंश का मुद्रा जारी करने वाला प्रथम शासक कीर्ति वर्मा था तथा इसके उत्तराधिकारी सल्लक्षण वर्मा की सोने की मुद्राएं रायसेन जिले से खुदाई में प्राप्त हुई हैं।
- चंदेल शासक मदन वर्मा के सिक्कों का एक समूह रीवा से प्राप्त हुआ है तथा परमार्दी देव की मुद्राएं त्रिपुरी से प्राप्त हुई हैं।
- कलचुरियों की त्रिपुरी शाखा में गांगेय देव ने मुद्रा जारी की थी।
- कच्छापघाट शासक महिपाल के सोने के सिक्के ग्वालियर और झांसी में पाए गए तथा वीर सिंह के सिक्के ग्वालियर से मिले हैं।

इतिहास से संबंधित अन्य तथ्य

- माहिष्मती के नील, अवंती, बिंद, अनुविंद, निषाद और शल्वो ने कौरवों का समर्थन किया था तथा पांडवों के समर्थक मध्यप्रदेश के चेदि, कारुष, एवं दशार्ण राजा थे।
- स्थिविरावली के अनुसार उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर का निर्माण अवंती कुमार के पुत्र द्वारा किया गया था और मंदिर प्रांगण में कोटि तीर्थ नामक कुंड का निर्माण करवाया गया था।
- मामा भांजा शैलाश्रय मध्यप्रदेश में पचमढ़ी में है।
- मध्य प्रदेश तक आर्यों का विस्तार नहीं था। इसलिए मध्य प्रदेश से संबंधित उल्लेख वेदों में नहीं मिलते हैं।
- तालजंघ के समकालीन विदर्भ के यादव वंशी शासक उत्तर की और अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए हैहयों के पुराने प्रदेशों पर

अधिकार कर लिया। तालजंघ के समकालीन विदर्भ के यादव वंशी शासक कौशिक ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर चर्मण्यवती और शुक्तिमती मती के मध्य प्रदेश में राज्य स्थापित किया जो कालांतर में चेदि जनपद कहलाया।

- विदर्भ का एक अन्य प्रसिद्ध राजा भीमरत हुआ जिसकी सुंदर कन्या दमयंती का विवाह नलपुर के राजा नल के साथ हुआ था। अनुश्रुति के अनुसार नल ने ही नलपुर नगर बसाया था जो शिवपुरी जिले में नरवर के रूप में विद्यमान है।

महाजनपद युग

- 600 ई. पू. की युग को भारतीय इतिहास में जनपद या महाजनपद युग कहा गया है यह सभी महाजनपद एक राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित हुई, जिनकी अपनी अलग राजनीतिक व्यवस्था थी, अलग अलग शासन था।
- महात्मा बुद्ध के समय तक यह जनपद पूर्ण विकसित हो गए थे और इस युग तक उत्तर भारत में 16 मुख्य जनपद या महाजनपद थे।
- इनका उल्लेख मुख्यतः अंगुतरनिकाय, महावस्तु तथा जैन ग्रंथ भगवती स्रोत सूत्र से मिलता है।
- अंगुतरनिकायमें वर्णित 16 महाजनपदों के नाम इस प्रकार हैं - अंग, मगध, काशी, कौशल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अस्मक, अवंती, गांधार तथा कंबोज।
- इन 16 महाजनपदों में 2 महाजनपद अवंती और चेदि प्राचीन मध्य प्रदेश के महाजनपद थे।

❖ अवंती जनपद

- बुद्ध काल में अवंती जनपद शक्ति और विस्तार की दृष्टि से भारत का प्रबलतम और विशालतम जनपद था।
- सर्वप्रथम ऋग्वेद की एक ऋचा में अवंती शब्द का उल्लेख मिलता है।
- पुराणिक संदर्भ में महिष्मति एक यदुवंशी हैहय शाखा के शासक कार्तवीर्यार्जुन के पुत्र अवंती ने अवंती राज की स्थापना की थी।
- अवंती शेष दो भागों में विभक्त था -
- **उत्तरी भाग** - जिसे उत्तरी अवंति कहा जाता था, जिसकी राजधानी उज्जैनी थी।
- **दक्षिणी भाग** - जिसे अवंति दक्षिणा पथ कहा गया है, जिसकी राजधानी माहिष्मती थी।
- उत्तरी अवंति तथा दक्षिणी अवंती के बीच वेत्रवती नदी (बेतवा) प्रवाहित होती थी।
- दीप वंश के अनुसार राजा अच्युतागामी ने उज्जैनी नगरी की स्थापना की थी।

❖ चेदी जनपद

- इसकी राजधानी सूक्तिमती थी, जो सूक्तिमति (केन) नदी के तट पर थी।

महाभारत कालीन

- शिशुपाल चेदी का राजा था, जिसका वध श्री कृष्ण द्वारा किया गया था।
- इस देश का राजा सुबाहु, राजा नल का समसामयिक था और दमयंती ने यहां सुख पूर्वक निवास किया था।
- महाभारत युद्ध में चेदि नरेश धृष्टकेतु ने पांडवों का साथ दिया था।

❖ प्रद्योत वंश

- पुराणों से प्रमाण मिलता है कि गौतम बुद्ध के समय अमात्य पुलिक (सुनिक) ने समस्त क्षत्रियों के सम्मुख अपने स्वामी की हत्या करके अपने पुत्र प्रद्योत को अवन्ति के सिंहासन पर बैठाया।
- "हर्षचरित" ग्रंथ के अनुसार इस अमात्य का नाम पुणक (पुणिक) था। इस प्रकार वीतिहोत्र कुल के शासन की समाप्ति हो गई तथा 546 ई. पू. यहाँ प्रद्योत का शासन स्थापित हो गया। शक्ति में वह अपने समकालीन समस्त राजाओं में प्रमुख था, इसलिए उसे "चंड" कहा जाता था।
- बौद्ध ग्रंथ "विनयपिटक" के अनुसार चण्ड प्रद्योत का मगध नरेश बिम्बिसार के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे। जब चण्ड प्रद्योत पीलिया रोग से ग्रसित था, तब बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को उज्जैयिनी भेजकर उसका उपचार कराया था।
- पुराणों के अनुसार प्रद्योत वंश का अंतिम शासक नन्दिवर्धन था। मगध की बढ़ती शक्ति के समक्ष धीरे- धीरे अवन्ति कमजोर होता रहा। अंततः मगध नरेश शिशुनाग ने इस राजवंश का अंत कर दिया तथा शूरसेन सहित अवन्ति राज्य को भी मगध में मिला लिया।

नंद वंश (364-324 ईसा पूर्व)

- शिशुनागवंश के बाद अवन्ति क्षेत्र नंदवंशीय शासकों के अधीन रहा।
- कहा जाता है कि शक्तिशाली नंदों ने समकालीन छोटे राज्यों की स्वायत्तता समाप्त कर अपनी "सर्वक्षत्रान्तक नीति" को सार्थक बनाया।
- नंदवंश के संस्थापक महापद्मनंद ने नर्मदा घाटी के हैहय राज्य के साथ- साथ वीतिहात्र राज्य पर अधिकार कर लिया था।
- नंद वंश का संस्थापक नरेश महापद्मनंद था। पुराणों में उसे उग्रसेन कहा गया है।

- नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद का उल्लेख मिलता है जोकि सिकंदर का समकालीन था, जिसके साम्राज्य की सीमाएं दूर-दूर तक थी जिसमें अवंती राष्ट्र सम्मिलित था।

मौर्य वंश (324-187 ईसा पूर्व)

- चंद्रगुप्त मौर्य वंश का संस्थापक था। चंद्रगुप्त ने समस्त उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की। इसी क्रम में चंद्रगुप्त ने अवंती पर विजय प्राप्त की और अवंती अधिपति कहा जाने लगा।
- चंद्रगुप्त मौर्य का उज्जैन के राजा महेश्वर के साथ संबंध थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र बिंदुसार मौर्य साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना।
- बिंदुसार के शासनकाल में प्रांतीय राजधानियों तक्षशिला और अवंती पर समीपस्थ प्रांत के लोगों ने विद्रोह कर दिया था।
- बिंदुसार ने अवंती अवंती प्रांत के आक्रमण को रोकने के लिए अशोक को अवंती भेजा। अशोक ने बिना युद्ध किए उज्जैनी में सत्ता स्थापित कर विद्रोह शांत किया अर्थात् उज्जैनी में उत्कर्ष पूर्ण विजय प्राप्त की।
- राजकुमार अशोक ने उज्जैनी में 11 वर्ष तक राज किया।
- बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात उसका सुयोग्य पुत्र अशोक विशाल मौर्य साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा।
- मध्य प्रदेश के गुर्जरा एवं रूपनाथ लघु शिलालेख से अशोक के शासन की जानकारी मिलती है।
- गुर्जरा लघु शिलालेख में अशोक का नाम अशोक देवनाम प्रिय प्रियदर्शन उल्लेखित है।
- महावंश के अनुसार, सम्राट अशोक ने वेसनगर (विदिशा) के शक वंश के व्यवसायी की पुत्री कुमार देवी से विवाह किया था।
- शासन की सुविधा अनुसार अवंती जनपद को दो भागों में विभक्त किया गया - उत्तरी अवंति की राजधानी उज्जैनी और दक्षिणी अवंती किसकी राजधानी महिष्मति बनी।
- अशोक ने तथागत बुद्ध की अस्थियों पर बनाए गए 8 प्रारंभिक स्थिति में से 7 को खुलवाया और उनमें रखे हुए धातुओं को निकालकर 84000 स्तूप का निर्माण किया।
- अशोक ने देव कुठार उज्जैनी, विदिशा के समीप सांची व सतधारा में विशाल स्तूपों व विहारों का निर्माण करवाया।
- सांची (रायसेन), रूपनाथ (जबलपुर), गुर्जर (दतिया) एवं पान गुडरिया (सीहोर), कसरावद, महिष्मति आदि स्थानों से भी मौर्यकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं जो मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म के प्रसार में अशोक के व्यक्तिगत रुचि को प्रदर्शित करते हैं।
- अशोक के राज्य काल में कुणाल उज्जैनी का प्रांतीय शासक था।

- अशोक ने पश्चिमी मध्य प्रदेश मालवा अंचल में महादेव स्थविर को धर्म प्रचार के हेतु भेजा था।

❖ मौर्यकालीन प्रमुख स्तूप

➤ 1. सांची का महास्तूप

- मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित सांची की पहाड़ी पर स्थित है।
- निर्माण - तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 9 वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक।
- बौद्ध धर्म के केंद्र के रूप में सांची का स्थान महत्वपूर्ण है जो मौर्य काल से दिखाई देता है।
- गुप्त काल तक सांची का नाम काकनादबांट था।
- यहां प्रमुख रूप से तीन स्तूप हैं और छोटे-छोटे अन्य स्तूप भी हैं।
- सन 1818 ई. में जनरल टेलर ने सांची स्तूप की खोज की।
- सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सांची स्तूप का निर्माण करवाया था।

➤ 2. सतधारा स्तूप

- सांची के निकट सतधारा भी प्राचीन बौद्ध केंद्र रहा है।

➤ 3. अंधेर का स्तूप

- विदिशा से लगभग 12 किलोमीटर दूरी पर अंधेर नामक स्थान से तीन स्तूपों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

➤ 4. सोनारी स्तूप

- सोनारी सांची से 9 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित है।
- यहां पर 8 स्तूपों के अवशेष पाए गए हैं।

➤ 5. भोजपुर के स्तूप

- विदिशा से लगभग 10 किलोमीटर दूर भोजपुर है।
- जहां पर कुल 37 स्तूपों के अवशेष पाए गए हैं।

➤ 6. भरहुत का स्तूप

- यह स्तूप मध्यप्रदेश में सतना के निकट स्थित है।
- इसकी खोज सर्वप्रथम कनिंघम ने सन 1873 ई. में की थी।

➤ 7. देउरकोठार के स्तूप

- देउरकोठार रीवा जिले के त्यांथर तहसील के अंतर्गत स्थित है।

➤ 8. तुमैन के स्तूप

- तुमैन, जिला अशोकनगर में, विदिशा तथा मथुरा को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग पर स्थित है।

➤ 9. कसरावद के स्तूप-

- खरगोन जिले में, कसरावद कस्बे से 3 मील दक्षिण में स्थित है।
- यहां के उत्खनन से मौर्यकालीन 11 स्तूप प्राप्त हुए हैं।

➤ 10. महेश्वर एवं नवदाटोली स्तूप-

- महेश्वर एवं नवदाटोली पुरास्थल नर्मदा नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी तट पर स्थित है।
- इनमें महेश्वर की पहचान प्राचीन दक्षिणी अवंति की राजधानी महिष्मति से की गई है।

➤ 11. पानगुडरिया स्तूप

- पानगुडरिया, सीहोर जिले में स्थित है।
- यहां से मौर्यकालीन दक्षिणा पथ युक्त स्तूप प्राप्त हुए हैं।

➤ 12. उज्जैन का बौद्ध स्तूप

- उज्जैन के सोढंग ग्राम से एक मौर्यकालीन स्थित शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है।
- उज्जैन की वैश्य टेकरी (कानी पूरा) नामक टीले के रूप में सम्राट अशोक द्वारा अपनी पत्नी कुमार देवी के लिए एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया गया था।

शुंग वंश

- हर्षचरित व पुराणों से पता चलता है कि सेनापति पुष्यमित्र ने अपने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की थी।
- मध्य प्रदेश के विस्तृत भू-भाग पर शुंग वंश का आधिपत्य रहा है।
- शुंग वंश मुख्यतः उज्जैन से संबंधित थे।

❖ कला एवं स्थापत्य

- सांची के स्तूप में चहारदीवारी और प्रवेश द्वार शुंग काल में नहीं गए।
- भरहुत स्तूप-सतना जिले में स्थित भरहुत स्तूप का निर्माण मूल रूप से मौर्य काल में हुआ जिसे शुंग काल में विस्तृत किया गया।
- शुंग काल में ही मध्यप्रदेश में विदिशा के समीप खामबाबा नामक स्थान पर हेलिओडोरस ने एक गरुण-स्तंभ को स्थापित किया गया था।

सातवाहन कालीन मालवा

- आंध्र देशीय सात वाहनों ने 27 ई. पू. के लगभग अपने साम्राज्य की स्थापना की थी।
- पुराणों के अनुसार सिमुक ने पूर्वी मालवा (विदिशा) क्षेत्र में शासन करने वाले कर्णों तथा शुंगों की शक्ति को समाप्त कर सातवाहन वंश की स्थापना की है।
- सातवाहन वंश का सबसे पराक्रमी राजा शातकार्णि प्रथम को माना जाता है। पुराणों में इसकी चर्चा कृष्ण (कान्ह) के पुत्र के रूप में की गई है, जिनका शासनकाल संभवतः 37 ई. पू. से 27 ई. पू. था।

- सात वाहनों के शासक शिमुक का आधिपत्य विदिशा क्षेत्र में था।
- सातकर्ण प्रथम ने लक्ष्मी मालवा तथा अनूप क्षेत्र पर आधिपत्य कर लिया था।
- गौतमीपुत्र सातकर्ण का उल्लेख सांची के दक्षिण तोरण द्वार के शिलालेख में किया गया है।
- गौतमीपुत्र सातकर्ण सातवाहन वंश का सबसे बड़ा व पराक्रमी राजा था।
- सातवाहन वंश का अंतिम प्रतापी नरेश यज्ञरी शातकर्ण था, जिसने 165 ई. से 193 ई. तक राज्य किया।
- उज्जयिनी लक्षण मुद्रित सिक्कों से उसके उज्जयिनी पर शासन का प्रमाण मिलता है।
- गौतमीपुत्र सातकर्ण के पुत्र वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी यह नासिक अभिलेख में सत करने के सफलताओं का वर्णन मिलता है, जिसके अनुसार गौतमीपुत्र सातकर्ण का साम्राज्य अनूप (महिष्मति-आधुनिक महेश्वर के आसपास के निमाड़), आकर (पूरी मालवा) तथा अवंती (पश्चिमी मालवा) तक विस्तृत था।
- सातवाहन वंश का अंतिम प्रतापी राजा एक श्री शातकर्णी था, मध्यप्रदेश में इसकी सिक्के विसनगर तथा तेवर और दिवस से प्राप्त हुए हैं।
- क्षहरात वंश का सबसे शक्तिशाली शासक नहपान हुआ। वह सातवाहन नरेश गौतमी पुत्र शातकर्ण का समकालीन था।
- नासिक अभिलेख से विदित होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्ण ने नहपान ने आकर (पूर्वी- मालवा) तथा अवंति (पश्चिमी- मालवा) को छीनकर उन पर अधिकार कर लिया।
- क्षहरात वंश का सबसे प्रतापी क्षत्रप नहमान का राज उत्तरी कोकड से लेकर मंदसौर उज्जैन और अजमेर तक विस्तृत था।
- टालमी के भूगोल (140 ई.) पता चलता है कि अवंति या पश्चिम मालवा की राजधानी पर हिमास्टेनीज का अधिकार था। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि चघन ने नहपान द्वारा खोए हुए कुछ प्रदेशों को सातवाहनों से पुनः जीतकर उज्जैन को अपनी राजधानी बनाई।
- चघन के बाद उसका पौत्र रुद्रदामन प्रथम क्षत्रप बना।
- रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ अभिलेख (150 ई.) से विदित होता है कि उसने अपने पितामह के क्षत्रय के रूप में आकर (पूर्वी मालवा) तथा अवंति (पश्चिमी मालवा) को गौतमी पुत्र शातकर्ण व उसके उत्तराधिकारी को पराजित करके जीता था।
- रुद्रदामन प्रथम के बाद भी कदारमक वंश के शक नरेशों का मालवा से संबंध बना रहा और वे उज्जयिनी को अपनी राजधानी बनाकर शासन- संचालन करते रहे।
- भर्तृदामन का पुत्र विश्वसेन चघन वंश का अंतिम क्षत्रप था।
- भर्तृदामन और विश्वसेन की मुद्राएँ गोंदरमऊ सिरोंहा तथा साँची से प्राप्त हुई हैं।
- चघन वंश के पतन के पश्चात शासन करने वाले परवर्ती शक- क्षत्रपों के कुछ सिक्के व अभिलेख मालवा- क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं, जिनसे उन राजाओं के शासन- काल के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।
- इस वंश का प्रथम ज्ञात शासक रुद्रसिंह द्वितीय (स्वामी जीवदामन का पुत्र) था, जिसके सिक्के (शक संवत् 227 - 304 ई.) साँची, गोदरमड (सिरोंहा) आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- रुद्रसिंह द्वितीय के उत्तराधिकारी यशोदामन द्वितीय (शक संवत् 316 - 332 ई.), रुद्रदामन द्वितीय, रुद्रसेन (तृतीय 348 - 378 ई.), सिंहसेन, रुद्रसेन चतुर्थ, सत्यसिं तथा रुद्रसिंह तृतीय था।
- गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) ने व्यक्तिगत रूप से शकों के विरुद्ध पश्चिमी भारत के शक- नरेश रुद्रसिंह तृतीय को परास्त कर पश्चिमी मालवा पर अधिकार कर लिया तथा अपने पुत्र गोविंद गुप्त को उज्जयिनी का शासक नियुक्त किया।

हिंदू यूनानी उत्कर्ष

- मध्य प्रदेश के किसी क्षेत्र पर हिंदू विरोधियों के अधिकार के प्रमाण उपलब्ध नहीं है।
- मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले से अवश्य प्रसिद्ध हिंदू यूनानी शासक मिनांडर के सिक्के प्राप्त हुए हैं।

❖ शक वंश

- शक नरेशों ने भारत के एक विस्तृत प्रदेश पर सीधे अथवा अपने क्षत्रपो (अर्थात् शासको) के माध्यम से राज किया।
- शकों की संयुक्त शासन - प्रणाली में यह परंपरा थी कि वरिष्ठ शासक "महाक्षत्रय" की उपाधि धारण करता था तथा अन्य कनिष्ठ शासक "क्षत्रय" कहलाते थे।
- पश्चिमी भारत के क्षत्रपो के दो वंश थे -
- पहले वंश - क्षहरात वंश
- दूसरा वंश - कदारमक वंश था।

❖ क्षहरात वंश -

- क्षहरात वंश का प्रथम ज्ञात क्षत्रप क्षहरात भूभक है।
- मुद्राओं के अध्ययन से उसके उज्जैन व भिलसा पर अधिकार का प्रमाण मिलता है।

- **विदिशा-** एरण क्षेत्र में शासन करने वाले एक नये शक वंश का पता चलता है, जिसके शासक श्रीधर वर्मन का एक अभिलेख एरण तथा दूसरा साँची के निकट कानखेरा से प्राप्त हुआ है।

- जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार रुद्रदामन का पश्चिमी मालवा और महिष्मति के आसपास के प्रदेशों पर आधिपत्य था।
- शक क्षत्रपों का अभिलेख उज्जैन तथा महाक्षत्रप रुद्र सिंह का शिलालेख खेतखेड़ी (शाजापुर) से मिला है।

❖ कुषाण वंश

- कुषाण वंश का सबसे महत्वपूर्ण राजा कुजुल कैडफिसेज था।
- कुजुल कैडफिसेज का उत्तराधिकारी वीम कैडफिसेज हुआ, जिसका एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है।
- कनिष्क प्रथम के सिक्के झाझापुरी शहडोल तथा हरदा से प्राप्त हुए हैं।
- वासुदेव प्रथम का तांबे का सिक्का तेवर 'जबलपुर' से प्राप्त हुआ है।
- कुषाण कालीन अभिलेखों में कनिष्क का सांची अभिलेख तथा जबलपुर के भेड़ाघाट से प्राप्त दो मूर्तिलेख प्रमुख हैं।

नागवंश

- नाग वंश का उदय ग्वालियर - विदिशा क्षेत्र में हुआ।
- पुराणों में विदिशा में शासन करने वाले नाग-वंशीय राजाओं में शेष, भोगिन, सदाचंद्र, धनधर्मा, भूतनन्दि, शिशुनन्दि तथा यशनन्दि का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार विदिशा नागवंशीय राजाओं का गढ़ था।
- द्वितीय शताब्दी ई. के अंतिम चरण में विदिशा ग्वालियर क्षेत्र के एक नये नाग वंश का आविर्भाव हुआ।
- एच. वी. त्रिवेदी के अनुसार इस वंश का संस्थापक वृषनाग था, जिसका एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है।
- वृष नाग के पश्चात भीमनाग शासक हुआ, जिसने अपनी राजधानी को विदिशा से पद्मावती (ग्वालियर) स्थानान्तरित कर दिया।
- पद्मावती के नाग - शासकों में विभुनाग, भवनाग, प्रभाकर नाग, देवनाग तथा गणपति नाग के सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- इस वंश के अंतिम शासक गणपतिनाग को गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने परास्त कर नाग वंश का अंत कर दिया।

बोधि तथा मघ राजवंश

- दूसरी तीसरी ई. सदी में त्रिपुरी क्षेत्र वर्तमान में तेवर (जबलपुर पर) बोधि वंश के राजाओं का शासन था।
- त्रिपुरी के उत्खनन से प्राप्त मृद- मुद्रा अंकन में चार शासकों के नाम - श्री बोधी, वसु बोधी, चंद्र बोधी तथा शिव बोधि का उल्लेख है।

- लगभग इसी समय मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र पर मघ वंश के शासकों का आधिपत्य था। इस वंश का प्रथम शासक भीमसेन था। अन्य प्रमुख शासक भद्र मघ और शिव मघ थे।
- मघ वंश के शासकों के सिक्के, मुहरे तथा शिलालेख कौशांबी एवं भटा के अतिरिक्त बांधवगढ़ जिला उमरिया से प्राप्त हुए हैं।

वाकाटक वंश

- वाकाटक राजवंश के मूल स्थान संबंध में इतिहासकारों में मतभेद है। फिर भी कुछ इतिहासकार वाकाटक राजवंश का मूल स्थान बुंदेलखंड मानते हैं।
- वाकाटक राजवंश का संस्थापक विंध्य शक्ति था, जिसे पुराणों में मूलतः विदिशा का शासक कहा गया है।
- रुद्र सेन प्रथम के राज्य में जबलपुर तथा बालाघाट शामिल थे रुद्र सेन प्रथम की राजधानी नागपुर थी।
- वाकाटक राज वंश का अंतिम शासक पृथ्वी सेन द्वितीय का शिलालेख बालाघाट जिले से प्राप्त हुआ है।

गुप्त वंश

- तीसरी शताब्दी के अंत तथा चौथी शताब्दी के प्रारंभ में उत्तर भारत में कोई सर्वोपरि राजनैतिक शक्ति नहीं थी।
- मालवा भी अनेक छोटे- छोटे स्वशासित राज्यों में बँटा था। आमीर, सनकानीक, प्रार्जुन, काक और खरपरिक वंश का शासन उस समय विदिशा के आसपास था।
- "पवाया" के निकट के क्षेत्र नागों के अधिकार में था तथा पश्चिमी मालवा पर शकों- क्षत्रपों को शासन था।
- चंद्रगुप्त प्रथम के उपरांत 350 ई. में समुद्रगुप्त ने गुप्त साम्राज्य की बागडोर सम्भाली तथा मालवा समेत भारत के एक विस्तृत भू- भाग की अपनी अधीन कर लिया।
- गुप्त वंश का सर्वाधिक पराक्रमी शासक समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ लेख में उसकी विजयों का उल्लेख है जिस से ज्ञात होता है कि मध्य प्रदेश के इतिहास में उसका बड़ा योगदान रहा है।
- एरण से प्राप्त एक अन्य अभिलेख से विदित होता है कि एरण समुद्रगुप्त के साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- इस खण्डित अभिलेख में एरिकेण प्रदेश में स्थित इस नगर को "स्वभोग नगर" के नाम से पुकारा गया है।
- समुद्रगुप्त ने मालवा क्षेत्र में मालव नागराज्य (जिसमें राजस्थान के भी क्षेत्र शामिल हैं), आभीर (झाँसी ओर विदिशा), सनकानीक, भिलसा (विदिशा) तथा काक (साँची), क्षेत्रों को जीतकर अपनी अधीनता स्वीकार करने पर विवश कर दिया।

❖ समुद्रगुप्त का शक विजय

- समुद्रगुप्त कालीन शक शासक पश्चिमी मालवा में बसे हुए थे, उनकी राजधानी उज्जैन थी।
- मौद्रिक साक्ष्यों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि समुद्रगुप्त ने शक नरेश रुद्रसेन तृतीय को पराजित कर शक राजा से उसके राज्य का पूर्वी हिस्सा छीनकर उस पर अधिकार कर लिया तथा उन्हें पश्चिम भाग में माण्डलिक के रूप में शासन करने का अधिकार प्रदान किया।
- समुद्रगुप्त ने दक्षिण विजय अभियान के दौरान विदिशा के शक सामंत श्रीधर वर्मन पर विजय की स्मृति में सागर जिले के एरण में एक स्मारक का निर्माण किया।
- गुप्त कालीन इतिहास से संबंधित "कांच" नामक शासक के कुछ सिक्के विदिशा तथा साकोर से प्राप्त हुए हैं।
- उदयगिरी गुफा में चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है जिसमें चंद्रगुप्त के एक सामंत किसी सनकानिक महाराज के द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय को श्रेष्ठतम नगर उज्जैन और श्रेष्ठ नगर पाटलिपुत्र का स्वामी कहा गया है।

❖ चंद्रगुप्त द्वितीय

- चंद्रगुप्त द्वितीय 366 - 67 ई. में सिंहासन पर बैठा।।
- उसके शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण विजय पश्चिमी मालवा और काठियावाड़ (सौराष्ट्र) थी, जो शक-क्षत्रपों के अधीन था।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन शक प्रतिद्वंद्वी संभवतः रुद्रसिंह तृतीय था, जिसे परास्त कर उसने पश्चिम मालवा को अपने अधीन कर लिया।
- पहले उसने विदिशा (पूर्वी मालवा) को तथा बाद में पश्चिमी मालवा विजयों के पश्चात उज्जैन को अपना निवास स्थान बनाया।
- गुप्तकालीन चित्रकला के साक्ष्य बाघ गुफाओं (धार) से प्राप्त होते हैं। बाघ गुफाओं के चित्रों की तुलना अजंता गुफा के चित्रों से की जाती है।

गुप्तकालीन अभिलेख	
अभिलेख	महत्वपूर्ण तथ्य
मंदसौर अभिलेख	गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय से संबंधित यह अभिलेख मंदसौर (दशपुर) से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण करवाया गया था।
सांची अभिलेख	इसमें हरी स्वामिनी द्वारा काका नाद वोट में स्थित आर्य संघ को दान दिए जाने का उल्लेख है।

उदयगिरी शिलालेख	यह रायसेन जिले में स्थित है। जिसमें शंकर नमो व्यक्ति द्वारा पासर्वनाथ की मूर्ति स्थापित करने का उल्लेख है।
तुमैन अभिलेख	अशोकनगर जिले में स्थित है जिसमें कुमारगुप्त को शरद कालीन सूर्य की भांति बताया गया है।
एरण अभिलेख	यह सागर जिले में स्थित है। हूणों के आक्रमण की जानकारी देता है।

गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर

तिगवा का विष्णु मंदिर	जबलपुर
भूमरा का शिव मंदिर	नागौद (सतना)
पार्वती मंदिर	नचना कुठार (अजय गढ़)
बोद्ध मंदिर	सांची (रायसेन)
शिव मंदिर	खोह (नागौद)

गुप्तोत्तर युग

- मंदसौर लिख से स्पष्ट होता है कि जिनेंद्र यशोवर्धन ने मेहर कुल को परास्त कर हुण वंश की रही सही शक्ति को नष्ट कर दिया था।
- उसी के अभ्युदय के फल स्वरूप भूतों के टूटते हुए राजनीतिक शक्ति पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो गई थी, परिणाम स्वरूप भारत में पुनः राजनीतिक विशृंखलाता का युग प्रारंभ हो गया।
- गुप्तोत्तर युग में वर्तमान मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में शासन करने वाले प्रमुख राजवंशों का विवरण उनके क्षेत्र तथा काल के साथ निम्नानुसार हैं -

क्र.	राजवंश का नाम	क्षेत्र	काल
1	बल्लभी का मैत्रक वंश	मालवा	छठवीं शताब्दी के मध्य से आठवीं सदी के उत्तरार्ध तक
2	मोरवरि वंश	असीरगढ़ पूर्वी निमाड़	छठवीं सातवीं शताब्दी
3	वर्धन वंश	मालवा बुंदेलखंड महेश्वर तथा नर्मदा के तट के क्षेत्र	सातवीं शताब्दी
4	राष्ट्रकूट राजवंश	बेतूल एवं मालवा	सातवीं शताब्दी से 9 वीं सदी ई. तक
5	शैल वंश	महाकौशल क्षेत्र	आठवीं सदी ई.

- इस काल के साहित्यिक स्रोतों में बाणभट्ट की रचनाओं में हर्षचरित एवं कादंबरी महत्वपूर्ण है।

❖ ओलिकर वंश -

- मालवा की शाखा ओलिकर ने प्राचीन दसपुर (आधुनिक मंदसौर) को राजधानी बनाकर अपना राज्य स्थापित किया
- इस वंश का प्रथम शासक नरवर्मन था। मालवा नाम देने का श्रेय ओलिकरो को दिया जाता है, इस वंश का प्रसिद्ध शासक यशोधर्मन था।
- यशोधर्मन के समय तोरमाण एवं मिहिर कुल के नेतृत्व में हूणों ने मालवा सागर तथा एरण पर आक्रमण किए थे।
- मंदसौर शिलालेख के अनुसार यशोधर्मन ने जिनेंद्र, नराधिपति, राजाधिराज, परमेश्वर आदि उपाधियों से स्वयं को अलंकृत किया था।
- ओलिकरवंश के अन्य प्रमुख शासक जयवर्धन, सिंह वर्मा तथा नरवर्मन आदि थे।

❖ परिव्राजक राजवंश

- बुंदेलखंड से प्राप्त कुछ अभिलेखों से प्राप्त जानकारी के अनुसार पांचवी सदी ई. में पन्ना जिले में परिव्राजक नामक राजवंश के राजाओं का राज्य था।
- यह गुप्त सम्राटों के मांडलिक हो गए थे तथा दान पत्रों में गुप्त संवत का प्रयोग करते थे।

❖ पांडू राजवंश

- कालिंजर से प्राप्त एक शिलालेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि पांचवी शताब्दी ई. के अंत में यहां पांडू वंश के राजा उदयिन का शासन था।

❖ मोखरी वंश

- मध्य प्रदेश के पूर्व निमाड़ जिले में असीरगढ़ के किले के महाराज सर्व वर्मन का एक ताम्र मुहर लेख प्राप्त हुआ है जिस के संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि मोखरी साम्राज्य का पूर्व निमाड़ जिले तक विस्तार था।

कलचुरी राजवंश

- कलचुरि हैहयों की एक शाखा है, मध्य-प्रदेश के प्राचीन इतिहास में कलचुरी राजवंश का महत्वपूर्ण स्थान है।
- कलचुरी राजवंश की मध्यप्रदेश में दो प्रमुख शाखाएं थी -
- महिष्मति के कलचुरी तथा त्रिपुरी के कलचुरी।

❖ महिष्मति के कलचुरी

- इस कलचुरी वंश की प्राचीन राजधानी माहिष्मती थी। महिष्मति में मध्य प्रदेश राज्य के तीन महेश्वर, ओमकारेश्वर मधांता तथा मंडला नामक स्थान सम्मिलित थे।

- इसके तीन प्रमुख राजाओं के नाम मिलते हैं - कृष्णराज, शंकरगढ़ तथा बुद्ध राज।
- अन्य प्रमुख शासक शंकरगढ़ तथा बुध राज थे।

❖ त्रिपुरी के कलचुरी

- चालुक्यों से पराजित होने के पश्चात बुधराज के वंशज महिष्मति छोड़कर चेदी देश की ओर भाग गए तथा त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की।
- त्रिपुरी शाखा का संस्थापक वामराज था।
- शासक कोकल्स प्रथम इस वंश का सुयोग्य एवं प्रतापी राजा था।
- गांगेयदेव का पुत्र लक्ष्मी कर्ण या कर्ण देव कलचुरी राजाओं में सबसे अधिक प्रतापी राजा हुआ था।
- कर्ण देव को हिंद का नेपोलियन कहा जाता है।
- कर्ण देव ने जबलपुर के समीप अपने नाम पर कर्णावती नगर बसाया तथा अमरकंटक के मंदिरों का निर्माण कराया था।
- कलचुरी वंश का अंतिम शासक विजय सिंह था।

चंदेल राजवंश

- चंदेल शासकों का उदय आधुनिक बुंदेलखंड क्षेत्र में 9 वीं सदी में हुआ था।
- चंदेल वंश की स्थापना 831 ई० में नन्नुक ने की थी, बुंदेलखंड को ही पहले जेजाभुक्ति के नाम से जाना जाता था।
- नन्नुक के पौत्र जयसिंह के नाम पर इसका नाम जेजाभुक्ति पड़ा था, इनकी राजधानी खजुराहो थी।
- पहले चंदेल शासक प्रतिहारों के सामंत थे, इस वंश का अगला शासक हर्ष बना, इसके समय चंदेल स्वतन्त्र व शक्तिशाली राज्य था परन्तु अब भी ये प्रतिहारों के अधीन थे।
- हर्षदेव चंदेल वंश का प्रथम महत्वपूर्ण राजा था, जिस के शासनकाल में चंदेल वंश की गणना उत्तरी भारत के शक्तिशाली राजवंशों में की जाने लगी।
- यशोवर्मन या लक्ष्मण वर्मन चंदेल वंश का एक प्रमुख राजा था।
- खजुराहो के शिलालेख में यशोवर्मन की हिमालय से लेकर मालवा तक और कश्मीर से बंगाल तक विस्तृत विजय अभियानों उल्लेख किया गया है।
- यशोवर्मन ने प्रतिहारों से कालिंजर छीन लिया और प्रतिहार राजा देवपाल को पराजित किया।
- विजेता होने के साथ ही निर्माता के रूप में यशोवर्मन ने खजुराहो में एक विशाल 'विष्णु मन्दिर', जो कि "कन्दारिया महादेव मन्दिर" के नाम से प्रसिद्ध है, का निर्माण करवाया। इस मन्दिर को 'चतुर्भुज

मंदिर' भी कहा जाता है तथा मंदिर में वैकुण्ठ की मूर्ति यशोवर्मन ने स्थापित करायी थी। जिसे उसने प्रतिहार शासक देवपाल से प्राप्त किया था।

- यशोवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी राजा धंग सर्वाधिक प्रतापी राजा था।
- इसी के समय चंदेल शासक प्रतिहारों की अधीनता से मुक्त हुए, धंगदेव ने महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की थी।
- इसने प्रारंभ में अपनी राजधानी कालिंजर को बनाया, इसके बाद खजुराहो को राजधानी बनाया।
- इसने भटिण्डा के शाही शासक जयपाल को सुबुक्तगीन के विरुद्ध सैन्य सहायता भेजी। खजुराहो के अधिकतर मंदिरों का निर्माता यही था, इसने खजुराहो में जैन समुदाय के लोगों को भी मंदिर बनाने की अनुमति दी।
- राजा धंग ने अपने शासनकाल में खजुराहो में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जिनमें दो प्रमुख मंदिर-पारसनाथ और विश्वनाथ हैं।
- उसने प्रयाग में गंगा-यमुना के पवित्र संगम में अपना शरीर त्याग दिया।
- इसके बाद इसका पुत्र गण्ड शासक बना, उसके बाद उसका पुत्र विद्याधर शासक बना।
- राजा गंड ने आनंदपाल शाही को महमूद गजनवी के विरुद्ध सहायता प्रदान की थी।
- राजा गंड ने अपने शासनकाल में खजुराहो में जगदंबी नामक वैष्णो मंदिर तथा चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था।
- राजा विद्याधर ने खजुराहो के कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण कराया था।
- विद्याधर के समय ही महमूद ने कालिंजर किले पर आक्रमण किया था।
- विद्याधर ने प्रतिहार शासक राज्यपाल की हत्या मात्र इसलिए कर दी, क्योंकि उसने महमूद गजनवी के कन्नौज पर आक्रमण के समय बिना युद्ध किये ही गजनवी के सामने समर्पण कर दिया था।
- परमर्दिदेव चंदेल वंश का अंतिम महान शासक था, इसकी उपाधि दशाणिधपति थी। चंदेल सेना के दो महान वीर सेनानी आल्हा और ऊदल इसी के समय हुए।
- परमर्दिदेव के शासनकाल में 1182 ई. में दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान ने जेजाक मुक्ति पर आक्रमण कर दिया जिसमें परमर्दिदेव के वीर सेनापति आल्हा और उदल वीरता पूर्वक अपनी शूरता का परिचय दिया।

- 1203 ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक परमाल को पराजित कर कालिंजर के किले पर अधिकार कर लिया। अंत में 1205 ई० में चंदेल राज्य को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- 8वीं शताब्दी ई. में उज्जैनी में एक गुर्जर प्रतिहार राजवंश की स्थापना हुई।
- इस वंश का सर्वप्रथम शासक नागभट्ट प्रथम था, इसे 'हरिश्चन्द्र' के नाम से भी जाना जाता था।
- उसके विषय में ग्वालियर अभिलेख से जानकारी मिलती है, जिसके अनुसार उसने अरबों को सिंध से आगे नहीं बढ़ने दिया।
- मिहिर भोज इस वंश का एक शक्तिशाली शासक था जिसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया
- मिहिर भोज के शासनकाल में बुंदेलखंड पुनः प्रतिहारों के अधीन हो गया।
- मध्य प्रदेश में मिहिर भोज के तीन अभिलेख मिले हैं जिनमें दो अभिलेख ग्वालियर से तथा एक अभिलेख ग्वालियर जिले के सागर ताल नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।
- दौलतपुर अभिलेख में मिहिर भोज को प्रभास एवं ग्वालियर अभिलेख में आदि वराह उपाधियों से विभूषित किया गया है।
- इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख है, जो एक प्रशस्ति के रूप में है।
- कश्मीरी कवि कल्हण की राजतरंगिणी से मिहिरभोज की उपलब्धियों का पता चलता है।
- सुलेमान एक अरब यात्री था, जो गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिरभोज के समय में भारत आया था तथा इसने मिहिरभोज की शक्ति एवं उसके राज्य की समृद्धि की प्रशंसा की है।
- अरब यात्री अलमसूदी 10 वी. शता. में प्रारंभ में पंजाब में आया था। अलमसूदी ने महीपाल प्रथम के विषय में सूचनायें हम लोगों को प्रदान की हैं।

मालवा का परमार वंश

- परमार वंश की उत्पत्ति भी गुर्जर प्रतिहारों की भांति अग्निकुण्ड से बताई जाती है, किन्तु अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन अन्य लेखों से सिद्ध होता है कि परमार शासकों का उद्भव राष्ट्रकूटों के कुल में हुआ था।
- परमार वंश का आरम्भ नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में नर्मदा नदी के उत्तर मालवा (प्राचीन अवन्ती) क्षेत्र में उपेन्द्र अथवा कृष्णराज द्वारा हुआ था।

- आबू पर्वत के निकट उपेन्द्र रहता था। उसे राष्ट्रकूट सम्राट गोविन्द-तृतीय ने शासक नियुक्त कर दिया था।
- परमार वंश के बैरी सिंह द्वितीय के शासनकाल में कन्नौज के प्रतिहार शासक महिपाल प्रथम ने मालवा पर आक्रमण कर उज्जैनी में एक शासक नियुक्त कर दिया था। परंतु उदयपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कुछ समय पश्चात ही वेरी सिंह ने मालवा फिर से जीत लिया।
- परमारों की प्रारम्भिक राजधानी उज्जैन में थी पर वेरी सिंह द्वितीय के शासनकाल में परमारों ने अपनी राजधानी उज्जैन से धार स्थानांतरित कर दी।
- परमार वंश का सर्वप्रथम स्वतंत्र राजा सीयक द्वितीय था, सीयक-द्वितीय ने मालवा के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की जो दक्षिण में तामी नदी, उत्तर में झालवर, पूर्व में भिलसा और पश्चिम में साबरमती से घिरा हुआ था।
- उसने सम्राटोचित विरुद भी धारण किये। उसका पुत्र वाक्यपति मुञ्ज अपने कुल का एक प्रतापी सम्राट् था।
- **वाक्यपति मुञ्ज** - राजा मुंज के समय को मालवा में स्वर्ण युग का समय माना जाता है, उत्पलराज, अमोघवर्ष, श्रीवल्लभ, पृथ्वीवल्लभ आदि विरुद उसने धारण किये।
- राजा मुंज ने धार में मूज सागर झील का निर्माण करवाया था महेश्वर उज्जैन ओमकारेश्वर और धर्मपुरी में भी सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया।
- सबसे पहले उसने त्रिपुरी के राजा युवराज-द्वितीय को पराजित किया, इसके बाद लाट (गुजरात), कर्णाटक, चोल और केरल के राजाओं को युद्ध में परास्त किया।
- उसने उन हूणों पर, जो मालवा के उत्तर-पश्चिम में हूणमण्डल नामक एक छोटे से प्रदेश पर शासन कर रहे थे, भी विजय प्राप्त की।
- मुञ्ज ने अपने पड़ोस के राज्यों को जीत लेने के उपरान्त, चालुक्य नरेश तैल-द्वितीय पर छः बार आक्रमण किये, परन्तु जब उसने, सातवीं बार अपने अनुभवी मंत्री की चेतावनी की उपेक्षा कर गोदावरी पार की तो वह बन्दी बना लिया गया। उसे कारावास में डाल दिया गया।
- मुंज के निधनोपरान्त उसका अनुज सिंधुराज सिंहासन पर बैठा, उसने चालुक्य नरेश सत्यात्रय तथा लाट नरेश गोंगिराज को पराजित किया, किन्तु वह गुजरात नरेश नामुण्डराज द्वारा पराजित हुआ। सिन्धुराज का लगभग 1000 ई. में देहावासन हो गया।
- **भोज** - सिंधु राज के पुत्र राजा भोज एक महान योद्धा तथा महान विद्वान था, उसने 1018-1060 ई. तक शासन किया। उसकी राजधानी धार थी।
- भोज परमार ने 'नवसाहसाक' अर्थात् 'नव विक्रमादित्य' की पदवी धारण की थी।
- भोज ने कल्याणी के चालुक्य नरेश जयसिंह-द्वितीय को परास्त करके मुञ्ज की हार का बदला लिया।
- भोज ने कलिंग के गड्डों के एक सामंत इन्द्ररथ और उत्तरी कोंकण के शासकों को हराया।
- अपने शासन काल के अंतिम वर्षों में भोज परमार को पराजय का अपयश भोगना पड़ा। गुजरात के चालुक्य राजा तथा चेदि नरेश की संयुक्त सेनाओं ने लगभग 1060 ई. में भोज परमार को पराजित कर दिया। इसके बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।
- भोपाल शहर का नाम राजा भोज के नाम पर रखा गया था।
- राजा भोज ने भोपाल के निकट ग्राम भोजपुर नामक ग्राम की स्थापना की और एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- राजा भोज ने विभिन्न विषयों पर 23 ग्रंथों की रचना की है।
- राजा भोज ने धार में संस्कृत के अध्ययन के लिए एक भोजशाला नामक विद्यालय की स्थापना की तथा सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया।
- राजा भोज की 11 अभिलेख उज्जैन, देपालपुर, धार, भोजपुर तथा महंदी से प्राप्त हुए हैं।
- धार प्रशस्ति के अनुसार राजा भोज ने त्रिपुरी के कलचुरी शासक गांधी देव को पराजित किया था।
- राजा भोज बुंदेलखंड के शासक विद्याधर द्वारा संभवत पराजित हुआ था।
- भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह एक ऐसे समय में मालवा के परमार राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ, जिस समय राज्य को चालुक्य और कलचुरि आतंकित किए थे।
- उदयादित्य ने, जो सम्भवतः भोज का भाई था, सिंहासन पर अनुचित तरीकों से अपना अधिकार जमा लिया। उन्होंने मालवा की गिरती शक्ति को संभालने का प्रयत्न किया। उन्होंने उदयपुर में नीलकण्ठेश्वर मन्दिर का निर्माण किया।
- उदयादित्य के उपरान्त लक्ष्मणदेव मालवा का नरेश हुआ। उसने यशकर्ण कलचुरि और कदाचित् चोलों तथा गजनी के महमूद के वंशजों पर विजय प्राप्त की। नरवर्मन और यशोवर्मन लक्ष्मणदेव के बाद मालवा के उत्तराधिकारी हुए।
- यशोवर्मन की मृत्यु के बाद परमारों का राज्य उसके उत्तराधिकारियों के बीच विभाजित कर दिया गया।

❖ साहित्य, कला एवं स्थापत्य

- परमार कालीन मालवा साहित्य के क्षेत्र में चरमोत्कर्ष पर था भोज के काल में धारा नगरी कवि एवं महान पंडितों का काबा स्वरूप था।
- वाकपति द्वितीय मुंज एक कवि हृदय राजकुमार था उसके राजदरबार में 'यशोरूपावलोक' के रचयिता धनिक, 'नवसाहसांकचरित' के लेखक पद्मगुप्त, 'दशरूपक' के लेखक धनंजय आदि रहते थे।
- राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था।
- भोज कालीन या भोज के नाम से उपलब्ध ग्रंथों की सूची हाल में भगवती लाल राजपुरोहित के ग्रंथ भोजराज में प्रकाशित हुई जो निम्नानुसार है -

1.	साहित्य शास्त्र	सरस्वती कंठाभरण, शृंगार प्रकाश
2.	साहित्य	चंपू रामायण, शृंगार मंजरी कथा, सुभाषित प्रबंध, विद्या विनोद, शालिकथा, अवनीकुर्मसतर्क, कोदंडकाव्य, महाकाली विजय, वाग्यदेवी स्तुति.
3.	व्याकरण	प्राकृत व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण
4.	कोष	नाम्मालिका, अम्खायाख्या, अनेकार्थाकोश
5.	संगीत	गीत प्रकाश
6.	इतिहास	संजीवनी
7.	दर्शन	न्यायवार्तिक - तत्व प्रकाश, सिद्धांत संग्रह, सिद्धांत सार पद्धति, राज मार्तंड, योगसूत्र वृत्ति, शिव तत्व रत्न कालिका, तत्व चंद्रिका
8.	खगोल एवं ज्योतिष	आदित्यप्रतापसिद्धान्त, राजमार्तण्ड, राजमृगाङ्क, विद्वज्ज्ञानवल्लभ (प्रश्रविज्ञान)
9.	धर्मशास्त्र	'वृहद्राजमार्तण्ड', भुपालपद्धति, भुपालसमुच्चय
10.	राजनीति शास्त्र	पुर्तमार्तण्ड, राजमार्तण्ड,
11.	आयुर्वेद	आयुर्वेदसर्वस्व, 'राजमृगांक'
12.	स्थापत्य	समरांगण सूत्रधार

कच्छपघात राजवंश

- कच्छपघात राजवंश मध्य प्रदेश की उत्तरी विभाग का एक महत्वपूर्ण राजवंश था।
- इसका मूल स्थान गोपाचल क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर व दतिया आदि जिलों का भूभाग सम्मिलित हैं. पूर्व में कच्छपघात गुर्जर प्रतिहार राजवंश के सामंत के रूप में अस्तित्व में थे।

- कच्छपघात वंश का शासन उत्तरी मध्य प्रदेश में 10 वीं सदी ई. के आठवें दशक में पूर्णता स्थापित हो गया था जिसका नेतृत्व ब्रज दामन नामक राजा ने किया था।
- वज्रदमन ने लगभग 977 ई. में धंग के लिए ग्वालियर किले पर विजय प्राप्त की। तत्पश्चात उसके राजवंश ने 12वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक ग्वालियर क्षेत्र पर शासन किया।
- 13वीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा।
- खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और परमार भाग कर अजमेर चले गए।

तोमर राजवंश

- भारतीय इतिहास में तोमर राजवंश का एक महत्वपूर्ण स्थान है इस वंश का शासन मत् प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थापित हुआ था जिसका पूर्व केंद्र ग्वालियर था इसलिए विद्वानों ने इसे ग्वालियर की तोमर वंश की संज्ञा दी है।
- महाराजा देववरम ने ग्वालियर पर तोमर राज्य की स्थापना की.
- महाराजा देववरम ने ग्वालियर शासनकाल में चतुर्भुज मन्दिर का निर्माण, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, जीत महल, जैत या जीत स्तम्भ, तथा माण्डेर दुर्ग का निर्माण कराया।
- कीर्तिपाल के शासनकाल में बहलोल लोधी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- राजा मानसिंह तोमर वंश का सबसे प्रतापी राजा था।
- राजा मानसिंह को अपने शासनकाल में बहलोल लोदी सिकंदर लोदी तथा इब्राहिम लोदी के आक्रमणों का सामना करना पड़ा.
- 1517 ई. में इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण करके ग्वालियर किला जीत लिया था, इसे युद्ध में राजा मानसिंह वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजा मानसिंह द्वारा अपने शासनकाल में निर्मित मान मंदिर एवं गुजरी महल के अप्रीतम उदाहरण है।
- मान सिंह का पुत्र विक्रमादित्य तोमर वंश का अंतिम शासक था।
- विक्रमादित्य पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोधी के साथ मारा गया था।
- इस प्रकार ग्वालियर राज्य के तोमर राजवंश का अंत हो गया।

❖ महत्वपूर्ण तथ्य

- विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर नामक हीरा जो वर्तमान में इंग्लैंड के राज महल की शोभा बना हुआ है वह ग्वालियर की तोमर राजवंश की एक निधि है। इसे विक्रमादित्य के पश्चातवर्ती तोमर जागीरदार अजीत सिंह ने

मुगल वंश को आगरा दुर्ग पर तथा स्वयं पर आक्रमण न करने की शर्त भेट स्वरूप प्रदान किया था।

- तोमर राजवंश के पास या हीरा अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा लाया गया जिसे उसने दक्षिण भारत के अभियान से प्राप्त किया था।
- यह हीरा काल अनुक्रम में मुगल शासक शाहजहां और मोहम्मद शाह के पास लगभग 1739 ई. तक रहा।
- 1739 में यह नादिरशाह के पास आ गया जिसे अहमद शाह अब्दाली ने 1747 ई. में नादिरशाह का कत्ल करके प्राप्त किया।
- अब्दाली से महाराजा रणजीत सिंह ने छीन लिया जिसे कालांतर में अंग्रेजों ने प्राप्त किया।
- **मान मंदिर** - इसका निर्माण सन 1508 ई. राजा मानसिंह ने करवाया था। यह ग्वालियर दुर्ग के अंदर स्थित है
- **गुजरी महल**- यह महल मानसिंह तोमर की पत्नी गुजरी हेतु राजा मान सिंह द्वारा बनवाया गया था।
- **विक्रम मंदिर** - ग्वालियर दुर्ग के परिसर में विक्रम मंदिर निर्मित है, जो तोमर राजा विक्रमादित्य का महल था।

को पराजित कर कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर अधिकार कर लिया।

- कुतुबुद्दीन ऐबक का मालवा क्षेत्र पर पहला आक्रमण 1196- 97 ई. में उज्जैन पर किया था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक के पूर्व 1019 ई. में महमूद गजनवी ने कालिंजर एवं ग्वालियर पर आक्रमण किया था।
- 1195- 96 ई. में मोहम्मद गोरी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया था
- इल्तुतमिश ने उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर में लूटपाट की थी।
- 1231 में इल्तुतमिश ने ग्वालियर दुर्ग पर आक्रमण कर प्रतिहारों को पराजित किया था
- बलबन ने उलूग खा के नेतृत्व में कालिंजर पर 1251 में आक्रमण किया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने उज्जैन और विदिशा पर आक्रमण करके वहां के मंदिरों को लूटा था। अलाउद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में चंदेरी पर अधिकार कर लिया था।
- 1324 ई. की फारसी भाषा में उत्कीर्ण बटियागढ़ अभिलेख से यह जानकारी प्राप्त होती है कि दमोह क्षेत्र पर गयासुद्दीन तुगलक का आधिपत्य था।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने 1325- 1340 ई. के मध्य में धार के किले का निर्माण करवाया था

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश तथा उनके क्षेत्र	
राजवंश	क्षेत्र
चंदेल वंश	बुंदेलखंड
तोमर वंश	ग्वालियर
परमार वंश	मालवा (धार)
बुंदेला राज	बुंदेलखंड
होल्कर वंश	मालवा (इंदौर)
सिंधिया वंश	ग्वालियर
कारुष वंश	बघेलखंड
चंद्र वंश	बघेलखंड से बुंदेलखंड तक
यादव वंश	चंबल बेतवा के नदियों का मध्य भाग
शुंग वंश	विदिशा
नागवंश	विदिशा -ग्वालियर
बोधी वंश	जबलपुर(त्रिपुरी या तेवर)
मघ वंश	बघेलखंड
आमीर वंश	अहिस्वाश (विदिशा झांसी)
वाकाटक वंश	विंध्य प्रदेश
ओलीकट वंश	दसपुर (मंदसौर)
मौखरी वंश	मालवा (दसपुर मंदसौर)
परिव्राजक वंश	बुंदेलखंड
शैल वंश	महाकौशल
पाण्डेय वंश	मेकल प्रदेश (अमरकंटक)

मालवा में मुस्लिम सल्तनत

- मालवा का राज्य नर्मदा और ताप्ती नदियों के बीच पठार पर बसा था।
- 1305 ई. में इस राज्य पर अलाउद्दीन खिलजी ने अधिकार कर लिया था।
- मालवा की स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना (1401 ई.) हुसैन खाँ गौरी ने की थी, जिसे फिरोज तुगलक ने अमीर के रूप में दिलावर खाँ की उपाधि प्रदान की थी। उसने धार को अपना प्रांतीय मुख्यालय (राजधानी) बनाया।

गौरी राजवंश

- ❖ **दिलावर खाँ**
- मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की स्थापना 1401 ई. में दिलावर खा ने की थी।
- इसने धार को अपनी राजधानी बनाया। दिलावर खान का वास्तविक नाम हुसैन था।

दिल्ली सल्तनत कालीन मध्य प्रदेश का इतिहास

- दिल्ली सल्तनत के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुंदेलखंड पर 1202-03 ई. में आक्रमण किया और चंदेल शासक परमर्दिदेव



● फरिश्ता के अनुसार दिलावर खान का पिता गौर का निवासी था। इससे स्पष्ट होता है कि दिलावर का विदेशी तुर्क था।

● 5 वर्ष के अल्प शासनकाल के बाद दिलावर खान की 1406 ई. में मृत्यु हो गई।

➤ **दिलावर खां की उपलब्धियां**

● दिलावर खान कला प्रेमी था, वह मालवा में मध्ययुगीन मुस्लिम स्थापित कला का संस्थापक था।

● दिलावर खान ने धार और मांडू में दो मस्जिदों का निर्माण करवाया था।

● दिलावर खां के शासनकाल में उसके पुत्र अल्प खा ने "शादियाबाद" मांडू दुर्ग का निर्माण कराया जो मध्य युग में एक शानदार और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया।

❖ **होशंगशाह गौरी**

● दिलावर खां की मृत्यु के बाद उसका पुत्र होशंगशाह गौरी 1406 ई. में गद्दी पर बैठा उसका मूल नाम अनप का था।

● होशंगशाह ने धार से अपनी राजधानी शादियाबाद (मांडू) स्थानांतरित की थी।

● मांडू में होशंगशाह के मकबरे का निर्माण महमूद खिलजी ने करवाया था।

● होशंगशाह के मकबरे को मध्य प्रदेश का ताजमहल भी कहा जाता है।

● 1435 ई. में अपनी मृत्यु से पूर्व उसने नर्मदा के किनारे होशंगाबाद नगर की स्थापना की।

➤ **होशंगशाह की उपलब्धियां**

● होशंगशाह ने मालवा की आंतरिक व्यवस्था और प्रशासन का पुनर्गठन किया।

● उसने राज्य को उज्जैन, चंदेरी, मंदसौर, रायसेन, होशंगाबाद और विजयगढ़ आदि में विभाजित कर क्षेत्र सरकार बनाई, यह सभी मांडू के अधीन थी।

● होशंगशाह ने अपने समकालीन मुसलमान शासकों की धार्मिक नीति की प्रति उदार धार्मिक नीति अपनाई।

● वह मालवा का प्रथम सुल्तान था जिसने शुद्ध सोने, चांदी और तांबे के सिक्के प्रचलित किए।

● होशंगशाह की मृत्यु उपरांत गजनी खां मोहम्मदशाह गौरी के नाम से मालवा का सुल्तान बना गजनी का एक निरकुंश शासक था।

● 1436 ई. में सुल्तान महमूद गौरी को उसके वजीर खलजी तुर्क महमूद खाँ ने जहर देकर मार डाला और तख्त पर कब्जा करके खलजी वंश की नींव डाली।

खिलजी राजवंश

❖ **महमूद खलजी प्रथम (1436-1469ई.)**

● 1436 में महमूद खान मांडू का शासक बना.

● होशंगशाह गौरी ने महमूद की योग्यता को परख कर उसे 16 वर्ष की आयु में 'रेवान' की उपाधि प्रदान की थी।

● उसका जीवन पड़ोसी राजाओं, गुजरात के सुल्तान, मेवाड़ के राणा कुम्भा तथा निजाम शाह बहमनी से युद्ध करने में बीता।

➤ **महमूद खिलजी के आक्रमण-**

● **चंदेरी से विद्रोह** - महमूद खिलजी प्रथम की विजय हुई था उसने चंदेरी की व्यवस्था का उत्तरदायित्व मलिक उस सर्क मुजफ्फर इब्राहिम को सोपा.

● **दिल्ली अभियान-** (1442 ई.) - यह अनिर्णायक रहा।

● **चित्तौड़ पर प्रथम आक्रमण (1442 ई.)** - यह युद्ध अनिर्णायक रहा।

● यद्यपि कुछ राजपूताना इतिहासकारों ने इसे राणा कुंभा की वजह माना और मुस्लिम इतिहासकारों ने इसे महमूद की विजय माना।

● **चित्तौड़ पर द्वितीय आक्रमण (1446 ई.)** - यह युद्ध अनिर्णीत रहा. इस युद्ध के पश्चात राणा ने चित्तौड़ में कीर्ति स्तंभ और महमूद शाह ने मांडू में मीनार का निर्माण करवाया।

● **अजमेर की विजय - (1455 ई.)**- इसमें अजमेर का राज्यपाल गजाधर सिंह मारा गया और किले पर महमूद शाह का अधिकार हो गया।

● **मांडलगढ़ की विजय (1457 ई.)** - महमूद शाह ने मांडलगढ़ पर विजय प्राप्त की।

➤ **महमूद शाह खिलजी की उपलब्धियां**

● महमूद खिलजी के शासन काल में मालवा अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध बन गया।

● फरिश्ता के अनुसार महमूद शाह खिलजी के शासन काल में हिंदू और मुसलमान प्रेम पूर्वक शांति से रहते थे।

● खिलजी ने मदरसे की स्थापना की और प्रांतों से विद्वानों और शिक्षकों को आमंत्रित कर मदरसे में उनकी नियुक्ति की.

● महमूद शाह खिलजी के राज्य का सिद्धांत लोक कल्याण था। उसके अनुसार प्रजा की भलाई के लिए ही विंशन ने उसे राजसत्ता प्रदान की है।

● महमूद शाह खिलजी ने अपने कार्यों से इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की कि, मिस्त्र के अब्बासी खलीफा ने अपने राजदूत को 1466 ई. में मांडू भेजा और खिलहत प्रदान कर उसे सम्मानित किया।

- महमूद शाह खिलजी ने अपने राज्य काल में अनेक भव्य इमारतें, मस्जिदें और मकबरा का निर्माण करवाया। जिसमें प्रमुख हैं - मांडू में होशंगशाह का मकबरा, जामा मस्जिद, गागरोन में मुस्तफाबाद नगर की स्थापना।

- उसकी बनवाई गई इमारतों में राजधानी मांडू में निर्मित एक 'सतखंडी मीनार' भी शामिल है।

- चंदेरी में कुशक महल (सात मंजिला महल) तथा उज्जैन और देपालपुर में अनेक भवनों का निर्माण करवाया।

❖ गियासुद्दीन खिलजी (1469-1500 ई.)

- सुल्तान महमूद खिलजी का बड़ा पुत्र गियासुद्दीन 1469 ई. को अपने पिता की मृत्यु के बाद मालवा एक राज सिंहासन पर बैठा।

- इसने पड़ोसियों के साथ शांति की नीति अपनाई।

❖ नासिर शाह (1501- 1511 ई.)

- मालवा के शासक नसरुद्दीन अब्दुल मुजफ्फर, नासिर शाह के नाम से मालवा के राज सिंहासन पर बैठा, नशीर शाह स्वभाव से क्रूर और निर्दयी था।

❖ महमूद शाह खिलजी द्वितीय (1511- 1531 ई.)

- इसके शासनकाल में मालवा के शासन की एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसके समय मालवा में राजपूतों का राजनीति में वर्चस्व रहा।

- उसने मुसलमान अमीरों के षड्यंत्रों से अपनी रक्षा के लिए चंदेरी के राजपूत शासक मेदनी राय को अपना वजीर नियुक्त किया।

- 1531ई. में गुजरात के शासक बहादुरशाह ने महमूद को पराजित कर मालवा को गुजरात राज्य में मिला लिया।

- महमूद खिलजी ने बहादुरशाह के भाई चांद का को गुजरात की गद्दी पर बैठाने में समर्थन देने का आश्वासन दिया था।

- महमूद खिलजी के इस कार्य से बहादुरशाह नाराज हो गया और उसने 1531 ई. में मालवा पर आक्रमण कर मांडू पर अधिकार कर लिया।

- 1531 ई. में गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने परास्त कर इस वंश का अंत कर दिया।

गुजरात के अधीन मालवा

- बहादुर शाह के नेतृत्व में मालवा पर गुजरात का अधिकार हो गया, बहादुर शाह का मुख्य कार्य सिरहदी की शक्ति को कुचलने का था।

- सरहदी के अधिकार में भिलसा से रायसेन तक का क्षेत्र था।

- सरहदी उस समय मालवा में सबसे शक्तिशाली राजपूत था।

- मई 1532 ई. में रायसेन के दुर्ग पर बहादुर शाह ने आक्रमण कर दिया जिसमें सिलहदी अपने सैनिकों के साथ वीरता से लड़ते हुए मारे गए और इस प्रकार रायसेन पर गुजरात का अधिकार हो गया

मालवा का स्थापत्य कला

- धार का किला - इसे मोहम्मद तुगलक ने 1325 ई. से 1340 ई. के मध्य बनवाया था।

- कमाल मौला मस्जिद और लाट मस्जिद - धार

- दिलावर की मस्जिद और मलिक मुगीस की मस्जिद - मांडू

- शादियाबाद मांडू - होशंगशाह द्वारा इसका निर्माण कराया गया। इसका उत्तरी द्वार दिल्ली दरवाजा कहलाता है।

- जामी मस्जिद - मांडू की सर्वश्रेष्ठ इमारत है। इसका निर्माण होशंगशाह के समय प्रारंभ हुआ जिसे महमूद खिलजी ने पूर्ण करवाया था।

- होशंगशाह का मकबरा - यह मांडू की दूसरी सबसे प्रसिद्ध इमारत है। इसका निर्माण महमूद खिलजी प्रथम ने करवाया था। यह उस समय का भारत का प्रथम मकबरा था जो पूरा सफेद संगमरमर से बना था।

- अशर्फी महल - यह महल कई भवनों का समूह है, जो होशंगशाह के शासनकाल से महमूद खिलजी के काल तक निर्मित किए गए थे।

- हिंडोला महल, दरबार हॉल और जहाज महल - ये आवासी महल थे, इनका निर्माण होशंगशाह के समय शुरू हुआ और यह पूर्ण महमूद खिलजी के समय हुए।

- बाज बहादुर एवं रूपमती का महल- इस इमारत का निर्माण सुल्तान नासिरुद्दीन शाह द्वारा 1508-1509 ई. में करवाया गया।

- अन्य प्रमुख इमारतें - नीलकंठ महल, चिश्ती खां का महल और गदाशाह का महल।

निमाड़ में फारुकी राजवंश का शासन

- फारुकी वंश की नींव खानदेश में 1388 ई. में 'मलिक अहमद रजा फारुकी' द्वारा रखी गई थी, जो सुल्तान फिरोजशाह तुगलक का निजी सेवक था।

- 15-16 वी शताब्दी में मध्य प्रदेश का पश्चिमी क्षेत्र खानदेश के फारुकी राजवंश के अधिकार क्षेत्र में था, यह क्षेत्र ताप्ती नदी के तट पर स्थित था जिसका संस्थापक मलिक रजा था।

- इस समय असीरगढ़ पर राजा आशा अहीर का शासन था जिसने मलिक रजा का स्वामित्व स्वीकार कर लिया था।

- असीरगढ़ किले को उस समय दक्कन के रास्ते का पहरेदार अथवा दक्षिण का प्रवेश द्वार माना जाता था।

- मलिक अहमद रजा फ़ारूकी ने ग्यारह वर्षों (1388-1399 ई.) तक शासन किया। बाद को उसका पुत्र नासिर खान फ़ारूकी प्रथम (1399-1438 ई.) उत्तराधिकारी बना।
- इसने असीरगढ़ को अपना मुख्यालय बनाया।
- मलिक नसीर ने अपने धर्म गुरु संत जैनुद्दीन की सलाह पर ताप्ती नदी के दोनों किनारों पर जैनाबाद और बुरहानपुर की स्थापना की।
- फ़ारूकी वंश के तीसरे बादशाह आदिल खान फ़ारूकी प्रथम (1438-1441 ई.) और चौथे बादशाह मुबारक खान फ़ारूकी प्रथम (1441-1457 ई.) के शासन काल में कोई भी उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। किन्तु पाँचवाँ बादशाह आदिल खान फ़ारूकी द्वितीय (1457-1501 ई.) एक योग्य और शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ।
- आदिल खान फ़ारूकी द्वितीय ने गोंडवाना पर अपनी प्रभुसत्ता कायम की। इसके कोई पुत्र नहीं था, इसीलिए गद्दी उसके भाई दाऊद खान (1501-1508 ई.) को मिली।
- दाऊद के पुत्र और उत्तराधिकारी गज़नी खान (1508 ई.) को गद्दी पर बैठने के दस दिनों के अन्दर ही ज़हर देकर मार डाला गया।
- बहादुर खां ने स्वयं को मालवा का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।
- इसके बाद फ़ारूकी वंश गृहयुद्ध का शिकार बन गया, जिसे अहमदनगर और गुजरात के सुल्तानों ने और भड़काया।
- आंतरिक संघर्ष ने फ़ारूकी वंश को अत्यधिक कमजोर कर दिया और उसके अन्तिम शासक बहादुर खान (1597-1600 ई.) ने 1600 में मुगल बादशाह अकबर के आगे आत्म समर्पण कर दिया।
- फारूकी वंश के शासक रजा अली खान असीरगढ़ के किले में जामा मस्जिद तथा तीन तोपों का निर्माण करवाया।
- **प्रमुख इमारतें**

प्रमुख इमारत	स्थान
बीबी की मस्जिद	बुरहानपुर
फारूकी ईदगाह	बुरहानपुर
हजरत शाह भिखारी दरगाह	बुरहानपुर
जामा मस्जिद	बुरहानपुर
संस्कृत इन्सक्रिप्शन इन जमा मस्जिद	बुरहानपुर
शाही किला	बुरहानपुर
टर्म्स ऑफ़ फारूकी रूल इन बुरहानपुर	बुरहानपुर

मालवा पर मुगलों का अधिकार

- मालवा पर मुगल सम्राट हुमायूँ का आक्रमण करने का प्रमुख कारण गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह की बढ़ती शक्ति थी।
- बाबर ने 1528 में चंदेरी पर आक्रमण किया था उस समय चंदेरी का शासक मेदिनी राय था जो राणा सांगा का सेनापति था और उसने खानवा युद्ध (1527) में, राणा सांगा के अधीन युद्ध में हिस्सा लिया था।
- बाबर ने 1528 में चंदेरी पर आक्रमण कर के चंदेरी के राजा मेदिनीराय को पराजित कर उसकी पुत्रियों का विवाह हुमायूँ और कामरान के साथ कर दिया। चंदेरी का मजबूत दुर्ग मुगलों के अधिकार में आ गया।
- 1535 ई. में हुमायु ने मांडू पर अधिकार कर लिया, बहादुर शाह ने चंपानेर की किले में शरण ले रखी थी इसलिए हुमायूँ उसका पीछा करता हुआ चंपानेर पहुंचा और अंत में बहादुरशाह पराजित हुआ।
- मालवा में हुमायूँ का कुछ समय तक रहना एक प्रकार से निरर्थक सिद्ध हुआ।
- मांडू में रहते हुए भी वह मालवा के प्रशासन की किसी भी प्रकार की स्थाई व्यवस्था नहीं कर पाया था।
- उसने गुजरात पर भी ध्यान नहीं दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि बहादुर शाह ने गुजरात पर पुनः अपनी सत्ता स्थापित कर ली।
- मिर्जा अस्करी और हुमायूँ मालवा को छोड़कर आगरा की ओर कूच कर गए, मालवा में न तो सेना रखी और ना ही अपना कोई सूबेदार. इस प्रकार मालवा में परिस्थितियां अपने स्वभाविक रूप में बदलने लगी।

❖ **मल्लू खां उर्फ़ कादिरशाह (1537-1542 ई.)**

- हुमायु के जाने के बाद बहादुर शाह ने मालवा में मल्लू खां को सूबेदार नियुक्त किया।
- मल्लू खा के उत्तराधिकारी महमूद शाह ने मल्लू खां को मांडू में कादर शाह की उपाधि प्रदान कर उसके नाम से खुतबा पढ़ने और सिक्के जारी करने का फरमान जारी किया। इस प्रकार मल्लू खां कादरशाह के नाम से मालवा का सुल्तान बन गया।

❖ **शेरशाह द्वारा मालवा की विजय (1542 ई.)**

- शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को परास्त कर सूरवंश की स्थापना की तथा मालवा का अभियान करके पहले ग्वालियर व मालवा आक्रमण अपने अधिकार में ले लिया।
- 1543 ई. में शेरशाह ने रायसेन पर आक्रमण किया। रायसेन अभियान शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।
- शेरशाह ने उत्तर में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद मालवा की ओर अभियान किया। शेरशाह ने बिना रक्तपात के मालवा पर अधिकार कर लिया।

- शेरशाह मालवा का सूबेदार सुजाअत खां को नियुक्त कर वापस चला गया।
- 22 मई 1545 ई. में कालिंजर के किले के घेरे के समय शेरशाह की मृत्यु हो गई।
- सुजाअत खां ने अपने अनेक अमीरों को मालवा की विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्त किया।
- 1556 ई. में सुजाअत खां की मृत्यु हो गई।

❖ बाज बहादुर (1556-1561 ई.)

- सुजाअत खान की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार के युद्ध में सुजाअत खान का बड़ा पुत्र मियां बायजीद खां विजयी हुआ और वह बहादुर शाह की पदवी धारण कर मालवा का सुल्तान बना।
- राजा बाज बहादुर ने साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य गढ़ राज्य पर गोंड रानी दुर्गावती आक्रमण किया किंतु असफल रहा।
- एक महिला के द्वारा पराजित होने के कारण बाज बहादुर बहुत लज्जित हुआ और उसने सैनिक अभियानों को छोड़ दिया।
- युद्ध बंद कर देने के बाद बाज बहादुर रूपमती के साथ संगीत साधना और ललित कलाओं के उन्नयन में व्यस्त हो गया।
- उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अनेक रागों का आविष्कार किया जिनमें 'राग मालवीय', 'राग गुजरी' विख्यात थे।
- दोनों के प्रयासों से मालवा में हिंदू मुस्लिम संस्कृति के समन्वय को बहुत प्रोत्साहन मिला।
- रानी रूपमती और बाज बहादुर की प्रेम कथाएं मालवा के अनेक गीतों और चित्रों में वर्णित हैं।

मुगल काल

- मुगल बादशाह बाबर ने 1528 ई. में चंदेरी के युद्ध में मेदनी राय को पराजित किया।
- मुगल बादशाह बाबर ने मंदसौर के युद्ध में गुजरात शासक बहादुर शाह को पराजित किया और पश्चिमी मध्य प्रदेश पर शासन स्थापित किया।
- बहादुर शाह ने मालवा पर अपना अधिकार कर लिया था लेकिन हुमायूं ने उसे पराजित कर मालवा को मुगल शासन के अधीन कर लिया।
- 1561- 62 ई. में अकबर ने मालवा के शासक बाज बहादुरपुर पर आदम खान और पीर मोहम्मद खान के नेतृत्व में आक्रमण किया। सहारनपुर की इस लड़ाई में बाज बहादुर परास्त हुआ और रानी रूपमती ने आत्मदाह कर लिया।
- अकबर के समय की महत्वपूर्ण विजय थी- गोंडवाना। 1564 ई. में अकबर ने गोंडवाना के गढकटंगा राज्य को जीता जिसकी राजधानी

जबलपुर के पास स्थित चौरागढ थी और इसकी शासिका महोबा की चंदेल राजकुमारी दुर्गावती थी।

- गढकटंगा के प्रसिद्ध हिन्दू राज्य की स्थापना अमान दास ने की थी।
- गढकटंगा राज्य को बाद में संग्रामशाह के छोटे पुत्र चंद्रशाह को लौटा दिया गया था। खानदेश एक प्रकार से दक्षिण का प्रवेश द्वार माना जाता था।
- 1601 ई. में अकबर ने अपने अंतिम आक्रमण में असीरगढ़ के किले को जीता, कहा जाता है कि अकबर ने असीरगढ़ का किला सोने की कुंजियों से खोला था।

❖ बुंदेलखंड व मुगलों के सम्बन्ध

- रुद्रप्रताप के साथ ही ओरछा के शासकों का युगारंभ होता है।
- ओरछा की स्थापना सन 1530 में हुई थी। मधुकरशाह (1554 ई.-1592 ई.) गद्दी पर बैठा।
- अकबर के बुलाने पर जब वे दरबार में नहीं पहुँचा तो सादिख खाँ को ओरछा पर चढ़ाई करने भेजा गया, युद्ध में मधुकरशाह हार गए।
- मधुकरशाह के आठ पुत्र थे, उनमें सबसे ज्येष्ठ रामशाह के द्वारा बादशाह से क्षमा याचना करने पर उन्हें ओरछा का शासक बनाया गया। जब रामचन्द्र शासक बना तब मुगलों का ध्यान बुंदेलखण्ड तरफ गया।
- उसके छोटे भाई वीरसिंह देव का दोस्ताना संबंध मुगल राजकुमार सलीम (अकबर का पुत्र जहाँगीर) से था।
- सलीम के कहने पर ही वीर सिंह ने अबुल फजल की हत्या कर दी थी। सलीम जब जहाँगीर के नाम से मुगल सम्राट बना तो उसने वीरसिंह देव को ओरछा नरेश बनाया। इसके बाद जुझार सिंह ओरछा नरेश हुआ, जिसने शाहजहाँ के समय विद्रोह किया।
- औरंगजेब की नीति से असंतुष्ट होकर ओरछा के प्रभावशाली सामन्त चंपतराय ने विद्रोह किया था।
- औरंगजेब की सेना से पराजित होने के बाद उसने आधिपत्य स्वीकार करने के स्थान पर आत्महत्या कर ली।
- चंपतराय के पुत्र छत्रसाल ने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह जारी रखा। 1675 में पन्ना जीत कर उसे राजधानी बनाया।
- छत्रसाल ने मराठों से संधि की। अतत: औरंगजेब ने 1707 में छत्रसाल से संधि की और उसे "राजा" की उपाधि दी। इस प्रकार छत्रसाल स्वतन्त्र शासक बना। बाद में उसने ओरछा को राजधानी बनाया।

❖ बघेलवंश-मुगल संबंध

- बघेल राज्य क्षेत्र का नाम भथा था, जो वर्तमान रीवा है।

- जब अलाउद्दीन खिलजी के गुजरात आक्रमण के समय कर्ण बघेल के साथ कुछ राजपूत कालिंजर क्षेत्र भाग कर आए थे और उन्होंने ही इस क्षेत्र में अपनी सत्ता समय स्थापित की थी, यहाँ का प्रथम सोलंकी राजा व्याधदेव (गुजरात) था।
- वीर सिंह देव की के पुत्र वीरभान ने हुमायूँ की चौसा पराजय के बाद सहायता की थी। राजा रामचन्द्र के समय भथा राज्य के दरबार में तानसेन (रामतनु पाण्डे) रहता था। अकबर के दूत जलालखाँ ने तानसेन को रामचन्द्र से लेकर अकबर के दरबार में पहुँचाया था।
- इसके अधीन कालिंजर दुर्ग भी था जो 1569 में मुगलों ने ले लिया।
- भथा राज्य (विन्ध्य प्रदेश) के अंतिम शासक मार्तण्ड सिंह थे। जिन्होंने इसका विलय 1947 में भारतीय संघ में किया

❖ गोड वंश

- 15 वीं सदी के प्रारंभ में मध्य प्रदेश के दक्षिण पूर्वी भाग में गोंड राजाओं का राज्य स्थित था। 15 वीं शताब्दी में चार महत्वपूर्ण गोंड साम्राज्य थे।
- जिसमें खेरला, गढ मंडला, देवगढ और चाँदागढ प्रमुख थे इस वंश की उत्पत्ति के विषय में गौड़ वंश का महानतम शासक संग्राम शाह के सिक्कों में उसे पुलत्स्यवंशिका गया है।
- रामनगर शिलालेख में उल्लेख है कि संग्राम साह के अधिकार में 52 गढ थे।
- संग्राम सहाय की मृत्यु के पश्चात 1543 ई. में उसका जेष्ठ पुत्र दलपत शाह सिंहासन पर बैठा। परंतु 1550 ई. में दलपत शाह की आकस्मिक मृत्यु हो गई जिसके बाद उसकी विधवा पत्नी दुर्गावती ने राज्य की बागडोर अपने हाथों में ले ली।
- रानी दुर्गावती ने अपने नवजात पुत्र वीर नारायण को राज सिंहासन पर बैठाया।
- अकबर के मुगल सूबेदार आसिफ खान ने गढ़ा राज्य पर आक्रमण कर दिया, आक्रमण का वीरता से सामना करते हुए अंत में रानी दुर्गावती ने अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए अपनी कटार गोप कर आत्महत्या कर ली।
- इसके पश्चात अकबर ने गड़ा राज को अपने सल्तनत में सम्मिलित कर लिया था

मध्य भारत की रियासतें

बघेलखण्ड रियासत

- प्राचीन काल में यह आटविक राज्य की श्रेणी में था।
- 9वीं एवं 10वीं शताब्दियों में चेदि देश (डाहल) के नाम से और 12वीं और 13वीं शताब्दियों में भट्टा के नाम से जाना जाता था।

- 1236 ई. में जब गहोरा (चित्रकूट) में बघेल सत्ता स्थापित हुई तब से यह भट्टा गहोरा कहा जाने लगा बाद में बघेल ने अपनी राजधानी बांधवगढ़ में स्थानांतरित की तब इसे बांधव राज्य (बाँधू देश) के नाम से जाना जाने लगा।
- 17वीं सदी में बघेल राज की राजधानी रीवा को बनाया गया तब इसे रीवा राज्य के नाम से संबोधित किया गया एवं 18 वीं सदी में बघेलों द्वारा शासित यह क्षेत्र बघेलखंड के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इस क्षेत्र की स्थानीय भाषा बघेली कहीं जाने लगी।
- बौद्ध काल में यह क्षेत्र मगध साम्राज्य के अंतर्गत था, अशोक द्वारा निर्मित भरहुत स्तूप के आधार पर यहां पर मौर्य वंश के शासन का भी प्रमाण मिलता है, भरहुत स्तूप पर खुदे लेख से यहां पर शुंग वंश के शासकों के अधिकार की भी जानकारी मिलती है।
- ईशा की दूसरी शताब्दी में मघ वंश ने बांधवगढ़ में अपनी राजधानी स्थापित की इसके पश्चात यह क्षेत्र गुप्त वंश के अधिकार में चला गया
- त्रिपुरी के हैयय वंशीय (चेदि) कलचुरियों के शासनकाल में कालिंजर को राजधानी बनाया गया और कालींजराधीस्वर की उपाधि धारण की। उस समय यह क्षेत्र चेदि देश डाहल के नाम से जाना जाता था।
- 10 वीं शताब्दी में जैजाकभुक्ति के चंदेलो ने कलचुरिओ से कालिंजर छीन कर कालींजराधीस्वर की उपाधि धारण की।
- 1023 ई. में महमूद गजनवी ने कालिंजर पर और 1182 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने महोबा पर आक्रमण करके चंदेल सत्ता को क्षति पहुंचाई।
- 1202 ई. में ऐबक ने परमादिदेव से कालिंजर छीन लिया।
- कलचुरिओं के वास्तविक उत्तराधिकारी बघेल हुए, इस सत्ता का प्रथम प्रभावशाली शासक बल्लारदेव (1353 – 1389) था। राज्य का विस्तार वीर सिंह देव (1500 -535 ई.) तक निरंतर जारी रहा जिसके परिणाम स्वरूप सोलवीं सदी में बघेल राज अपनी उन्नति के शिखर पर पहुंच गया।
- वीर सिंह देव की मित्रता बाबर के साथ थी जिसके परिणाम स्वरूप चौसा युद्ध में पराजित हुमायूँ की सहायता वीर सिंह देव के पुत्र वीर भानु (1535 - 1555) ने की थी, इसी सहायता के कारण सभी मुगल सम्राटों ने बघेलों को कर से मुक्त रखा और विपत्ति व संकट की स्थिति में सदा इनकी सहायता की।
- 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में जब मुगल शक्ति क्षीण हो रही थी तब ऐसे समय में बाँदा के नवाब अली बहादुर ने 1796 ई. में अपने नायक के द्वारा रीवा पर आक्रमण करवा दिया जिसमें उसका नायक मारा गया।

- 1802 ई. में अली बहादुर की मृत्यु के बाद बसीन की संधि के द्वारा संपूर्ण बुंदेलखंड के साथ ही पश्चिमी बघेलखंड भी ब्रिटिश शासन के अंतर्गत आ गया।
- रीवा राज्य भारत की ऐसी रियासतों में था जिसने अंग्रेजों की सनद लेने से साफ मना कर दिया था इसलिए अंग्रेजों ने इसके महत्व को स्वीकार करके इसके साथ 1812 ई. में संधि की थी।
- रीवा राज्य के साथ अंग्रेजों की प्रथम संधि 5 अक्टूबर 1812 ई. को बाँदा में संपन्न हुई थी जिसमें जय सिंह देव को रीवा राज्य का वैध शासक स्वीकार किया गया था।
- 1812 ई. की संधि की शर्तें 1 वर्ष भी नहीं चल सकी जिसके कारण कंपनी सरकार को रीवा राज्य के साथ 2 जून 1813 को द्वितीय संधि करनी पड़ी।
- यह दोनों संधियां रीवा राजा जय सिंह देव एवं ब्रिटिश शासन के मध्य आपसी मित्रता एवं सुरक्षा संबंधी हुई थी।
- अंग्रेज-मराठा संघर्ष के दौरान रीवा के राजा विश्वनाथ सिंह थे जिनका कार्यकाल 1818 से लेकर 1854 तक रहा।
- राजा विश्वनाथ सिंह की मृत्यु के बाद 4 जनवरी 1855 - को रीवा राज्य में रघुराज सिंह (1855 - 1880) का राज्य अभिषेक हुआ।
- 1857 की क्रांति के समय रीवा के महाराजा रघुराज सिंह ने दोहरी भूमिका अदा की थी, ऊपरी तौर पर वे ब्रिटिश शासन के हिमायती बने हुए थे और गुप्त रूप से उन्होंने क्रांतिकारियों को संरक्षण एवं सहायता प्रदान की थी।
- जबकि रीवा राज्य के दीवान दीनबंधु पांडे ने पूर्ण मनोयोग से अंग्रेजों का सहयोग किया था इसीलिए 3 नवंबर 1859 ई. को कानपुर में वायसराय लॉर्ड कैनिंग ने ब्रिटिश शासन के सहयोग के उपलक्ष में जहां रघुराज सिंह को अमरकंटक और सिंहवाड़ा सहित सुहागपुर का इलाका प्रदान किया वहीं दीवान दीनबंधु को बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया था।
- बघेलखंड में 1857 की क्रांति की वास्तविक शुरुआत अगस्त 1857 ई. में जगदीशपुर (बिहार) के कुंवर सिंह के रीवा आगमन पर हुआ था।
- जिसे प्रेरित होकर रीवा राज्य के सिपाही तिलंगा ब्राह्मण ने रीवा राज्य में क्रांति का उद्घोष कर दिया था।
- रीवा में क्रांति की चिंगारी को दबाने के लिए तत्कालीन पॉलीटिकल एजेंट लेफ्टिनेंट आसबर्न ने तिलंगा को गिरफ्तार कर लिया। तिलंगा को बचाने के लिए बघेल सरदार लाल रणमत सिंह, श्यामशाह, धीरसिंह व पंजाब सिंह ने गिरफ्तारी का खुलकर विरोध किया और आसबर्न के बंगले को घेर लिया।
- ❖ **ठाकुर रणमत सिंह**
- 1857 की क्रांति में इस क्षेत्र के प्रमुख क्रांतिकारी ठाकुर रणमत सिंह थे।
- 1857 में कोठी रियासत के मनकहरी ग्राम के निवासी ठाकुर रणमत सिंह ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया। इसमें रीवा नरेश रघुराज सिंह उनकी आंतरिक सहायता करते थे।
- **भिल्लसाय युद्ध (अक्टूबर 1857)** - भिल्लसाय युद्ध ब्रिटिश तथा अजयगढ़ के राजा रनजोर सिंह की संयुक्त सेना और ठाकुर रणमत सिंह के मध्य हुआ था।
- महाराजा रघुराज सिंह ने राज्य की बिगड़ती अर्थव्यवस्था के कारण वर्ष 1875 ई. में रीवा राज्य का प्रबंध ब्रिटिश सरकार को स्थानांतरित कर दिया जो 1875 से 1895 ई. तक ब्रिटिश प्रशासन द्वारा संचालित किया गया।
- दीवान दीवान दीनबंधु की जगह पंडित हेतराम को दीवान नियुक्त किया गया जिन्हें आधुनिक रेवा राज्य का माना जाता है।
- 1880 व्यंकट रमण सिंह को राजा बनाया गया, इन्होंने रेवा किले में सरवस्ती भण्डार नामक पुस्तकालय की स्थापना की।
- व्यंकट रमण सिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र राजा गुलाब सिंह (1922 - 1946) का राज्याभिषेक हुआ।
- राजा गुलाब सिंह के सामाजिक सुधार के लिए सहभोज प्रथा, अस्पतालों का निर्माण, शैक्षणिक सुधार में पंचवर्षीय शिक्षा योजना, स्कूल और कालेजों का निर्माण कराया।
- 1939 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के त्रिपुरी अधिवेशन में रीवा महाराजा गुलाब सिंह ने अधिवेशन के लिए राज्य से कई हाथी भेजकर कांग्रेस के प्रति अपनी आस्था एवं अपने प्रगतिशील विचारों का परिचय दिया था।
- महाराजा गुलाब सिंह के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रियता और पवाईदार की शिकायतों के कारण उन पर कई तरह के प्रतिबंध लगाए गए और आजादी के बाद तक उन्हें राज्य की सीमा से बाहर रहना पड़ा।
- ब्रिटिश क्राउन के प्रतिनिधि की सिफारिश पर 31 जनवरी 1946 ई. को गुलाब सिंह को राज सत्ता से हटाकर युवराज मार्तंड सिंह को राज्य अधिकारी बनाया गया।
- महाराजा मार्तंड सिंह ने रीवा राज्य के लिए लोक सत्तात्मक का संविधान का निर्माण करने के लिए 7 सदस्य संवैधानिक सुधार समिति की भी घोषणा की जिसका अध्यक्ष हरिसिंह गौर को बनाया गया।
- महाराजा मार्तंड सिंह ने 1 अप्रैल 1946 ई. को श्री कृष्ण स्वामी अय्यर की अध्यक्षता में एक संवैधानिक सुधार समिति के गठन की घोषणा की लेकिन कुछ समय बाद ही राज्य का विलीनीकरण हो जाने के कारण इन संवैधानिक सुधारों को लागू नहीं किया जा सका

- बघेलखंड और बुंदेलखंड की सभी 35 रियासतों को मिलाकर संयुक्त राज्य विंध्य प्रदेश की स्थापना हुई।
 - प्रदेश का राज्य प्रमुख महाराजा मार्टंड सिंह को और उप राज्य प्रमुख महाराजा पन्ना को बनाया गया।
 - 4 अप्रैल 1948 ई. को नौगांव मंत्रिमंडल के प्रधानमंत्री पद पर कामता प्रसाद सक्सेना और 15 मई 1948 ई. को रीवा मंत्रीमंडल के प्रधानमंत्री पद पर कप्तान अवधेश प्रताप सिंह की नियुक्ति की गई।
 - लेकिन यह शासन प्रणाली बोझिल और अव्यावहारिक प्रति हुई 19 ई. बघेलखंड और बुंदेलखंड का संयुक्त मंत्रिमंडल विंध्य प्रदेश मंत्रिमंडल के नाम से राजधानी रीवा में गठित हुआ।
 - जिसमें प्रधानमंत्री के रूप में कप्तान अवधेश प्रताप सिंह को और उप प्रधानमंत्री के रूप में कामता प्रसाद सक्सेना को मनोनीत किया गया।
 - भारत सरकार ने 19 जनवरी 1950 ई. को विंध्य प्रदेश को केंद्र शासित राज्य बनाकर वीकेवी पिलाई को चीफ कमिश्नर नियुक्त किया।
 - 1952 में संपूर्ण देश में आम चुनाव हुए जिसमें विंध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित शंभूनाथ शुक्ल निर्वाचित हुए।
 - 1 नवंबर 1956 को विंध्य प्रदेश को मध्यप्रदेश में विलय कर दिया गया।
- ❖ **बघेलखंड की प्रमुख स्थापत्य एवं साहित्य कला**
- माधवगढ़ के किले का निर्माण महाराजा विश्वनाथ सिंह के अनुज रवेन्द्र लक्ष्मण सिंह ने करवाया था।
 - गोविंदगढ़ के किले का निर्माण 1856 ई. में महाराजा रघुराज सिंह ने कराया साथ साथ यहां पर एक विशाल तालाब विश्वनाथ सागर का निर्माण भी करवाया।
 - वेंकट भवन का निर्माण महाराजा वेंकटरमण सिंह ने 1908 में कराया था अब यह भवन पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।
 - महाराजा विश्वनाथ सिंह ने हिन्दी के पहले नाटक आनंद रघुनंदन की रचना की। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इसे हिन्दी का प्रथम नाटक माना है।
- बुंदेलखंड रियासत**
- काशी के गहरवार राजपूत राजाओं के वंशज विंध्य क्षेत्र में बसे जो कालांतर में बुंदेला कहलाए, बुंदेला साम्राज्य की स्थापना का श्रेय पन्ना नरेश छत्रसाल को जाता है।
- 1728 ई. में मुगल सूबेदार मोहम्मद खान बंगस ने छत्रसाल पर आक्रमण किया तब छत्रसाल ने पेशवा बाजीराव प्रथम (1720 - 1740) से सहायता की मांग की थी।
 - इस मदद के बदले छत्रसाल ने पेशवा को अपना पुत्र माना और अपने राज्य का तीसरा भाग प्रदान किया साथ ही मस्तानी नामक सुंदर नृत्य की भी भेंट की थी।
 - छत्रसाल ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने साम्राज्य की रियासतों को अपने तीनों पुत्रों हृदय शाह, जगत राज तथा बाजीराव प्रथम के बीच विभाजित किया था।
 - द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध के बाद पेशवा बाजीराव द्वितीय ने 1802 ई. की बेसिन संधि में भी अंग्रेजों बुंदेलखंड का कुछ भाग सौंपा था जिसकी वजह से यहां की रियासतों और मराठों में आपसी तनाव बना रहा
 - इसी क्रम में दतिया रियासत के राजा पारीछत ने 15 मार्च 1804 ई. को मराठों के विरुद्ध कंपनी सरकार से सुरक्षात्मक संधि भी की थी।
 - 1810 ई. में गढ़ाकोटा रियासत पर भोंसले ने आक्रमण किया जिसमें राजा मर्दन सिंह मारे गए और उनके पुत्र अर्जुन सिंह ने सिंधिया से सहायता मांगी, सिंधिया ने भोंसले को परास्त कर अर्जुन सिंह से गढ़ाकोटा रियासत प्राप्त कर ली और उनके पास मात्र शाहगढ़ रियासत रहने दी।
 - बुंदेलखंड की दूसरी महत्वपूर्ण रियासत चंदेरी बानपुर थी जिस पर 1800 ई. के लगभग सागर के मराठा सूबेदार रघुनाथ राव ने मोरोपंत को चंदेरी पर आक्रमण हेतु भेजा था, मराठों के प्रभाव को रोकने के लिए 1810 ई. में ग्वालियर के सिंधिया ने अपने फ्रेंच सेनापति जीन बैप्टिस्ट को चंदेरी पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जिससे चंदेरी के राजा मोर प्रहलाद झांसी भाग गए और चंदेरी पर सिंधिया का अधिपत्य स्थापित हो गया।
 - मोर प्रहलाद के अधिपत्य में अब केवल बानपुर रियासत बची थी, इसी कारण शाहगढ़ रियासत के राजा बखतवली (अर्जुन सिंह के गोद लिए हुए पुत्र) एवं भानपुर रियासत के राजा मर्दन सिंह (मोर प्रहलाद के पुत्र) ने सिंधिया से अपने चुने हुए क्षेत्र गढ़ाकोटा एवं चंदेरी को प्राप्त करने के उद्देश्य से अंग्रेजों की सहायता की।
 - तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध 1817 - 1818 में मराठे परास्त हुए और उन्होंने अपने अधिपत्य वाली बुंदेलखंड की रियासत अंग्रेजों को सौंप दी और इस प्रकार 1818 ई. से बुंदेलखंड में अंग्रेजों के प्रभुत्व की स्थापना हुई।
 - 1818 ई. में बुंदेलखंड के पश्चिमी क्षेत्र में मराठों के प्रश्रय में पिंडारीयों ने भारी अराजकता उत्पन्न की, पिंडारीयों के दमन के लिए तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स एक बड़ी सेना के साथ

बुंदेलखंड आया, जिसमें दतिया रियासत के राजा पारीछत ने गवर्नर जनरल का सहयोग किया।

बुंदेलखंड की प्रमुख रियासतें

❖ ओरछा रियासत

- परिहार राजाओं के बाद ओरछा चन्देलों के अधिकार में रहा था। चन्देल राजाओं के पराभव के बाद में बुंदेलों ने ओरछा को राजधानी बनाया और इसने पुनः अपना गौरव प्राप्त किया।
- ओरछा राजवंश के संस्थापक रुद्र प्रताप (1501 - 1531) थे जोकि मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के समकालीन थे।
- रुद्र प्रताप की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र भारतीचन्द (1531-1554) ओरछा के राजा बने।
- ओरछा के महल भारतीचन्द के समय 1539 ई. में बनकर पूर्ण हुए और राजधानी भी इसी वर्ष पुरानी राजधानी गढ़कुंडार से ओरछा लायी गयी।
- अकबर के समय यहाँ के राजा मधुकर शाह थे जिनके साथ मुगल सम्राट ने कई युद्ध किए थे।
- जहाँगीर ने वीरसिंहदेव बुंदेला को, जो ओरछा राज्य की बड़ौनी जागीर के स्वामी थे, पूरे ओरछा राज्य की गद्दी दी थी। वीरसिंहदेव ने ही अकबर के शासन काल में जहाँगीर के कहने से अकबर के विद्वान् दरबारी अबुलफजल की हत्या करवा दी थी।
- बाद में जहाँगीर ने वीरसिंहदेव को ओरछा का शासक बना दिया और उनके अग्रज रामशाह को वहाँ से अपदस्थकर चन्देरी का राज्य दिया।
- वीरसिंहदेव ने स्थापत्य कला के क्षेत्र में नवीन बुन्देली स्थापत्य की शैली को जन्म दिया। उन्होने दिसम्बर 1618 ई. में एक साथ बावन इमारतों की नींव डलवाई जिनमें से दतिया का सतखण्डा महल, मथुरा का केषोराव का मन्दिर, करेरा एवं झांसी का किला, धामोनी का किला, ओरछा का जहाँगीरी महल आदि प्रमुख हैं।
- इसके पश्चात जुझार सिंह एवं पहाड़ सिंह ओरछा के प्रमुख राज्य रहे।
- झांसी के मराठों द्वारा फैलाई जा रही अराजकता के बीच महाराजा विक्रमजीत सिंह (1776 - 1817) राजा बने।
- मराठों के आतंक एवं लूट मारी से परेशान होकर सन् 1783 में उन्होंने राजधानी ओरछा से हटाकर टेहरी जिसे 1787 में टीकमगढ़ के नाम से जाना गया स्थापित की।
- विक्रमजीत सिंह के बाद उनके पुत्र धर्मपाल (1817 से 1834) ई. राजा बने सिंधिया के फ्रांसीसी सेनापति जीनबैप्टिस्ट को परास्त

किया था, इन्हीं के समय में लॉर्ड हेस्टिंग्स पिंडारीओ के दमन हेतु 1817 ई. में बुंदेलखंड आया था।

- धर्मपाल सिंह की तीन रानियां थी - गरई रानी, लड़ई रानी और हरई रानी यह तीनों रानियां निःसंतान थी।
- गरई रानी टीकमगढ़ में नजरबाग मंदिर बनवाया था।
- विक्रमजीत सिंह के बाद इनके गोद लिए हुए पुत्र तेज सिंह ओरछा के राजा बने इन्हीं के समय में दिसंबर 1835 ई. में कर्नल स्लीमैन ठगों के दमन के संबंध में टीकमगढ़ आया था।
- क्योंकि तेज सिंह भी नि संतान थे उन्होंने अपने वंशज भाई सुजान सिंह को गोद लेने का स्वीकृत पत्र कंपनी को भेजा और इस स्थिति में धर्मपाल की विधवा लड़ई सरकार के बीच उत्तराधिकार का विवाद हो गया।
- बुंदेला विद्रोह के समय तेज सिंह ने चिरगांव के राव बखत सिंह की मदद की थी, वहीं बुंदेला विद्रोह के दमन में रानी लड़ई सरकार अंग्रेजों का साथ दे रही थी।
- बुंदेला विद्रोह के समय बुंदेलखंड एवं सागर नर्मदा क्षेत्र में गवर्नर जनरल का एजेंट मेजर स्लीमैन था।
- 1842 ई. के बुंदेला विद्रोह के प्रमुख सूत्रधार जैतपुर नरेश पारीक्षत की गिरफ्तारी में रानी लड़ई सरकार की अहम भूमिका रही।
- रानी लड़ई सरकार ने 9 - 10 अगस्त 1857 ई. को नत्थे खां को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई पर आक्रमण हेतु भेजा युद्ध में परास्त होकर वह इंदौर भाग गया और ब्रिगेडियर जनरल हूरोज की बुंदेलखंड की क्रांति के दमन में मदद की।
- 1868 में लड़ई सरकार की मृत्यु हो गई इन्हे ओरछा राज्य की विकटोरिया कहा जाता है।
- **बुढ़वा मंगल** - बुंदेलखंड के राजाओं को काशी नरेश की श्री नारायण सिंह जी की ओर से 1835 ई. में बुढ़वा मंगल मेले के आयोजन में भाग लेने का आमंत्रण दिया गया।
- जैतपुर राजा परीक्षित एवं उनके भतीजे चरखारी नरेश रतन सिंह सहित बुंदेलखंड के प्रमुख राजा 1935 ई. में बुढ़वा मंगल में भाग लेने का जी पहुंचे, यह सांस्कृतिक आयोजन था।
- यहां पर इन सभी राजाओं ने भारत में व्याप्त अंग्रेजों के अत्याचारों की चर्चा की और विचार किया कि यदि यह सभी एकजुट होकर प्रयास करें तो अंग्रेज के आतंक से मुक्ति पाई जा सकती है।
- इसी विचार को कार्य रूप देने के लिए साल 1836 ई. में चरखारी नरेश रतन सिंह के संरक्षण में सूपा नामक स्थान पर भी बुढ़वा मंगल का आयोजन किया गया, इस पर बुंदेलखंड की लगभग 42 छोटी-बड़ी रियासतों के साथ सब जागीरदार एवं उच्चाधिकारियों को आमंत्रित किया।

- इन्होंने सर्वसम्मति से अंग्रेज विरोधी मोर्चे का नेतृत्व जैतपुर राजा परीक्षित को सौंपा और इस प्रकार बुढ़वा मंगल के मेले में 1842 ई. के बुंदेला विद्रोह की पृष्ठभूमि निर्मित हुई.

❖ चरखारी रियासत

- चरखारी रियासत की स्थापना छत्रसाल के पुत्र जगत राज ने की थी।
- इनके पश्चात इस रियासत के राजा खुमान सिंह 1765 से 1782 तक राजा रहे, खुमान सिंह के उनके पुत्र विजय बहादुर सिंह 1782 - 1829 तक राजा रहे।
- विजय बहादुर ने ईसानगर तालाब एवं विजय सागर का निर्माण कराया
- विजय बहादुर में 1822 ई. में रंजीत सिंह के पुत्र रतन सिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाकर कंपनी सरकार से मान्यता प्राप्त करी जिसका विरोध जैतपुर राजा परीक्षित ने किया और स्वयं चरखारी पर अपना दावा प्रस्तुत किया।
- इसी घटनाक्रम के कारण रतन सिंह अपने काका पारीछत से नाराज रहते थे और बुंदेला विद्रोह के दौरान इन्होंने अंग्रेजों का सहयोग किया।

❖ शाहगढ़ रियासत

- शाहगढ़ रियासत राज्य विभाजन में पन्ना नरेश छत्रसाल ने अपने पुत्र हृदय शाह को दिया था, बाद में पृथ्वीराज के विद्रोह के कारण शाहगढ़ गढ़ाकोटा रियासत बनी जिसकी राजधानी शाहगढ़ बनाई गई।
- पृथ्वीराज के बाद उनके पुत्र हरि सिंह राजा बने जिन्होंने अपने भतीजे मर्दन सिंह को अपना उत्तराधिकारी बनाया।
- 1809 ई. में रघुजी भोसले ने गढ़ाकोटा पर आक्रमण किया इस युद्ध में मदन सिंह की मृत्यु हो गई।
- मदन सिंह के पुत्र अर्जुन सिंह ने ग्वालियर के सिंधिया से सहायता मांगी सिंधिया ने राज्य का आधा भाग देने की शर्त पर सहायता दी और संधि के अनुसार गढ़ाकोटा क्षेत्र सिंधिया ने प्राप्त किया।
- अर्जुन सिंह ने शाहगढ़ को अपने बचे राज्य की राजधानी बनाया उन्होंने अपने भतीजे बखतबली को गोद लिया।
- इसी समय 1836 ई. में चरखारी में बुढ़वा मंगल का आयोजन हुआ जिसमें अर्जुन सिंह भी सम्मिलित हुए और अंग्रेज विरोधी गतिविधियों और बुंदेला विद्रोह में वह अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने लगे।
- अर्जुन सिंह के निधन के बाद बखत बली शाहगढ़ रियासत के राजा बने।

- बखत बली अपने पूर्वज मदन सिंह का प्रिय गढ़ाकोटा क्षेत्र हर हालत में सिंधिया से प्राप्त करना चाहता था।
- बुंदेला विद्रोह के दमन के सहयोग देने की शर्त में सागर क्षेत्र गवर्नर जनरल के एजेंट चार्ल्स फ्रीजर ने बखतबली को गढ़ाकोटा क्षेत्र सिंधिया से दिलाने का आश्वासन दिया।
- इसी लालच के चलते बखतबली ने 22 दिसंबर 1842 ई. को बुंदेला विद्रोह के प्रमुख विद्रोही हीरापुर के हृदय शाह को सपरिवार पकड़कर स्लीमेन के सुपुर्द कर दिया।
- गवर्नर जनरल ऐलन बरो ने सिंधिया पर आक्रमण कर गढ़ाकोटा क्षेत्र प्राप्त तो कर लिया लेकिन बखतबली को नहीं दिया जिसकी वजह से बखतबली अंग्रेजों के सहयोगी से असहयोगी हो गया।
- 1857 की क्रांति में बानपुर राजा मर्दन सिंह और बखत बली ने मिलकर झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के साथ एक त्रिगुट की स्थापना की और अंग्रेजों के खिलाफ डटकर मुकाबला किया।
- 1857 की क्रांति के दौरान ही बखत बली के सेनापति बोधनदौआ ने गढ़ाकोटा पर अधिकार कर लिया लेकिन कुछ ही समय बाद फरवरी 1858 में जनरल ह्यूज रोज ने गढ़ाकोटा और शाहगढ़ में पुनः अपना अधिकार कर लिया।
- कड़े संघर्ष के पश्चात 6 जुलाई 1858 ई. को बखतबली ने आत्मसमर्पण कर दिया।

❖ चंदेरी - बानपुर रियासत

- मुगल सम्राट शाहजहां ने राम शाह के वंशज भरत सिंह से प्रसन्न होकर चंदेरी रियासत की सनद प्रदान की थी, 1617 ई. में भरत सिंह ने चंदेरी को अपनी राजधानी बनाया।
- दुर्जन सिंह के समय 1735 ई. में इंदौर के होल्कर एवं सागर के गोविंद राव ने इनका बहुत कुछ भूभाग छीन लिया, इसके पश्चात रामचंद्र के समय एक बार पुनः सागर के मराठा सूबेदार रघुनाथ राव ने मोरोपंत को चंदेरी पर आक्रमण हेतु भेजा।
- 1802 ई. में मोर प्रहलाद (1802 से 1842) चंदेरी के राजा बने इन्हीं के समय सिंधिया ने अपने परिचित सेनापति से आक्रमण करा कर चंदेरी के दो तिहाई भूभाग पर अपना अधिकार कर लिया।
- मोर प्रहलाद के पास बानपुर एवं कैलगुवां शेष बचा इन्होंने कैलगुवां को अपनी राजधानी बनाया 1830 ई. में सिंधिया के साथ एक समझौते के बाद मोर प्रहलाद को कुछ इलाके और दे दिए गए तब उन्होंने बानपुर को अपनी राजधानी बनाया।
- 1842 में मोर प्रहलाद की मृत्यु के बाद इनके पुत्र मर्दन सिंह ने शासन किया, इन्होंने भी शाहगढ़ राजा बखत बली की तरह अपने पूर्वजों द्वारा खोया चंदेरी क्षेत्र सिंधिया से प्राप्त करना उद्देश्य बना लिया और आगे चलकर इसी लालच वश मदन सिंह ने 24 जनवरी

- 1844 ई. को बुंदेला विद्रोही मधुकर शाह को पकड़कर हैमिल्टन के हवाले कर दिया।
- 1844 ई. में लॉर्ड एल एम बरौनी सिंधिया पर आक्रमण किया इसका कारण सिंधिया द्वारा बुंदेला विद्रोहियों की मदद करना था आक्रमण से बचने के लिए सिंधिया ने चंदेरी सहित बहुत सा भूभाग अंग्रेजों को दे दिया लेकिन अंग्रेजों ने मर्दन सिंह के साथ भी विश्वासघात किया।
- इसी का बदला लेने के लिए इन्होंने बख्त बली और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिल कर 1857 की क्रांति की लड़ाई लड़ी और बख्त बली की सहायता से मर्दन सिंह ने चंदेरी पर अपना अधिकार कर लिया।
- स्टुअर्ट के नेतृत्व वाले ब्रिटिश सेना ने 26 मई 1858 ई. को चंदेरी पर पुनः कब्जा कर लिया और क्रांति के दमन पश्चात 5 जुलाई 1858 ई. को मर्दन सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया।

❖ अजयगढ़ रियासत

- जैतपुर राजा पहाड़ सिंह ने 1765 ई. में बांदा अजय गढ़ अपने भतीजे गुमान सिंह को दिया था।
- 1795 ई. में गुमान सिंह की मृत्यु के बाद उनके गोद लिए हुए पुत्र बख्त सिंह अजय गढ़ के राजा बने इन्हीं के समय में अजय गढ़ किले का किलेदार लक्ष्मण दौआ था।
- भगत सिंह के मृत्यु उपरांत माधव सिंह और इनके पश्चात महिपतसिंह अजय गढ़ रियासत के राजा बने।
- 1857 की क्रांति के दौरान महीपत सिंह की पत्नी ने क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ दिया।

भोपाल रियासत

- भोपाल शब्द की व्युत्पत्ति अपने पूर्व नाम भोजपाल से की गई है भोपाल की स्थापना परमार राजा भोज ने 1000- 1055 ई. में की थी। उनके राज्य की राजधानी धार थी।
- आधुनिक भोपाल रियासत रियासत की स्थापना 1723-24 में औरंगजेब की सेना के बहादुर अफगान योद्धा दोस्त मोहम्मद खान ने सीहोर, आष्टा, खिलचीपुर और गिन्नौर को जीतकर स्थापित की।
- जगदीशपुर में अपनी राजधानी भोपाल से 10 किमी दूर स्थापित की। उसने अपनी राजधानी का नाम इस्लामनगर रखा, जिसका अर्थ इस्लाम शहर है।
- 1728 में दोस्त मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद उसके बेटे यार मोहम्मद खान के रूप में भोपाल रियासत को अपना पहला नवाब मिला था।

- 1778 में, प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, जब ब्रिटिश जनरल थॉमस गोडार्ड ने पूरे भारत में अभियान चलाया, भोपाल उन कुछ राज्यों में से एक था जो अंग्रेजों के अनुकूल बने रहे।
- 1817 में, जब तीसरा एंग्लो-मराठा युद्ध शुरू हुआ, तो भारत सरकार और भोपाल के नवाब के बीच निर्भरता की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। भारत में ब्रिटिश राज के दौरान भोपाल ब्रिटिश सरकार का मित्र बना रहा।
- मार्च 1818 में जब नजर मोहम्मद खान नवाब थे तो एंग्लो भोपाल संधि के तहत भोपाल रियासत भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य की प्रिंसली स्टेट हो गई।
- भोपाल राज्य में वर्तमान भोपाल, रायसेन और सीहोर जिले शामिल थे और मध्य भारत एजेंसी का हिस्सा था।

बेगमों का शासन

❖ कुदसिया बेगम

- नवाब नजर मोहम्मद खान की मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी गौहर बेगम जिन्हें कुदसिया बेगम भी कहा जाता था, भोपाल की शासक बनी जहां से भोपाल में महिलाओं के शासन का महान युग आरंभ हुआ।
- भोपाल स्थित शौकत महल का निर्माण 1830 ई. में कुदसिया बेगम ने कराया था।
- भोपाल स्थित जामा मस्जिद का निर्माण कार्य कुदसिया बेगम ने 1832 ई. में शुरू करवाया था यह जामा मस्जिद 1857 ई. में बनकर पूर्ण हुई।

❖ सिकंदर जहान बेगम

- 1844 में जहांगीर मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद उसकी 7 वर्षीया पुत्री शाहजहां बेगम को शासन व्यवस्था के आधीन रियासत की प्रमुख घोषित किया गया।
- लेकिन जुलाई 1847 ई. को भोपाल में एक दरबार आयोजित किया गया दरबार में कैप्टन डी कनिंघम ने सिकंदर जहां बेगम को रियासत का वास्तविक शासक स्वीकार किया और उन्हें रियासत की समस्त शासन शक्तियों का उपयोग करने की अनुमति दी।
- इसी समय रायसेन जिले की सिलवानी तहसील में गढ़ अंबापानी के जागीरदार मोहम्मद फाजिल खान तथा आदिल खान ने 1857 की क्रांति में सिहोर में विद्रोह की शुरुआत की।
- सिकंदर बेगम ने क्रांति के दौरान अंग्रेज अधिकारियों को शरण दी और सागर तथा बुंदेलखंड में हो रहे विद्रोह को दबाने के लिए सैनिक टुकड़ी भी भेजी।

- 5 अगस्त 1857 को सीहोर में विद्रोह हुआ जिसमें सीहोर छावनी पर कब्जा कर लिया गया।

❖ सिपाही बहादुर सरकार

- बेगम के खिलाफ भोपाल के फौजियों महावीर और वली शाह ने 6 अगस्त 1857 को सीहोर में "सिपाही बहादुर" नाम की एक नई हुकूमत की नींव डाली, सिपाही बहादुर सरकार के शासन में दो झण्डे निशाने महावीरी और निशाने मोहम्मदी फहराये जाते थे।
- यह देश की अनूठी और इकलौती क्रांतिकारी सरकार 6 माह तक चली।
- इस सरकार के दमन में सबसे पहले कर्नल हिरोज ने 14 जनवरी 1858 को सीहोर में 356 क्रांतिकारियों को गोलियों से छलनी कर दिया, फिर 31 जनवरी 1858 को यह सरकार तब समाप्त हो गई जब फाजिल मोहम्मद खाँ को राहतगढ़ किले के दरवाजे पर जनरल रोज के आदेश से मृत्यु दण्ड दिया जाकर फांसी पर लटका दिया गया।
- 7 जनवरी 1861 ई. में भारत के वायसराय केनिंग द्वारा जबलपुर में एक दरबार आयोजित किया गया जिसमें सिकंदर जहां बेगम को विशेष रूप से आमंत्रित कर ब्रिटिश शासन की निष्ठा पूर्ण सेवा और सहयोग के पुरस्कार स्वरूप बैरसिया परगना जो की धार रियासत के अधीन था दिया गया।
- सिकंदर जहां बेगम ने मोती मस्जिद और मोती महल का निर्माण 1860 में कराया था।

❖ शाहजहाँ बेगम

- सिकंदर बेगम की मृत्यु पर, शाहजहाँ बेगम पूरी शक्तियों के साथ भोपाल की शासक बन गईं।
- शाहजहां बेगम के काल में भोपाल में प्रशासन, स्थापत्य और न्याय व्यवस्था के क्षेत्र में काफी कार्य हुए जिसमें आधुनिक पद्धति से राज्य की दूसरी जनगणना कराना, (रियासत भोपाल की पहली जनगणना सिकंदर बेगम के काल में की गई थी), भोपाल इटारसी रेल लाइन 1884 ई. में प्रारंभ हुई, न्याय व्यवस्था के सुधार के लिए "सदर उस सदूर" की स्थापना की गई,
- शाहजहां बेगम ने पूरी रियासत का दौरा किया तथा कई सुधार कार्य किए।
- शाहजहां बेगम को भवनों के निर्माण का बहुत शौक था। उसने इंग्लैंड में भी एक मस्जिद बनवाई।
- भोपाल में शाहजहांनाबाद मोहल्ला बसाया।
- उसने अपने लिए एक नया महल ताजमहल, नूर मस्जिद, बेनजीर मंजिल, नूर महल, निशात मंजिल, नवाब मंजिल, आली मंजिल, ताजुल मसाजिद बनवाई।

- पहाड़ी पर जेलखाना तथा पोलीटिकल एजेन्ट के रहने के लिए लाल कोठी बनवाई।

- नवाब जहांगीर मोहम्मद खान और सिकन्दर बेगम के मकबरे बनवाए।

❖ कैखुसरु जहान बेगम 'सरकार अम्मा'

- शाहजहां बेगम के देहांत के बाद उनकी पुत्री कैखुसरु जहान बेगम 'सरकार अम्मा' उत्तराधिकारी बनी।
- उसने अहमद अली खान से शादी की थी जिसे "वजीरुद दौला" की उपाधि दी गई थी।
- महारानी सुल्तान जहान बेगम के शासन के दौरान कई महत्वपूर्ण इमारतों का निर्माण किया गया था।
- वह शिक्षा की संरक्षक थीं। उनके समय के दौरान, सुल्तानिया बालिका विद्यालय और अलेक्जेंडरिया नोबल स्कूल (अब हमीदिया हाई स्कूल के रूप में जाना जाता है) की स्थापना की गई थी।
- उसने नूर-उस-सबा' नामक एक नए महल का निर्माण भी किया, जिसे एक हेरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है।
- वह शिक्षा पर अखिल भारतीय सम्मेलन की पहली अध्यक्ष थीं और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पहली चांसलर थीं।

❖ नवाब हमीदुल्ला खान

- 1926 में नवाब हमीदुल्ला खान ने शासन संभाला।
- इनके कार्यों से प्रसन्न होकर सुल्तान बेगम ने इन्हें इफ्तखार उल मुल्क (देश का गौरव) की उपाधि दी थी।
- वह दो बार 1931-32 में एवं एक बार फिर 1944-47 में चैंबर ऑफ प्रिंसेस के चांसलर के रूप में चुना गया, इसी हैसियत से 1930 में लंदन में हुई गोलमेज कांफ्रेंस और 1931 में दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस में भाग लिया।
- सन् 1947 में नवाब ने एक नामजद मंत्रिमंडल का गठन किया, जिसमें राजा अवधनारायण बिसारिया प्रधानमंत्री, के.एफ. हैदर वित्त मंत्री, मुजफ्फर अली खां खाद्य मंत्री, सईद उल्ला खां रज्मी स्वास्थ्य व शिक्षा मंत्री एवं भैरों प्रसाद लोक निर्माण मंत्री बनाये गये थे।
- इस मंत्रिमंडल के गठन के बाद मार्च, 1948 में नवाब हमीदुल्लाह खान ने भोपाल को एक अलग रियासत का स्वरूप प्रदान करने की दृष्टि से मालगुजारी माफी का ऐलान किया, जिसका भारी विरोध हुआ तथा मंत्रिमंडल का नया गठन हुआ।
- हालांकि, विलय के लिए समझौते पर 30 अप्रैल, 1949 को शासक ने हस्ताक्षर किए थे और राज्य को 1 जून, 1949 को मुख्य आयुक्त के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा ले लिया गया था।

- विलय के बाद, भोपाल राज्य को भारतीय संघ के एक भाग राज्य सी 'राज्य के रूप में बनाया गया था। बाद में 1 नवंबर, 1956 को भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप, भोपाल सी राज्य या मध्य प्रदेश बन गया।
- भोपाल के बड़े तालाब के बीच स्थित टापू पर सूफी संत शालेशाह दाता की मजार है यह नवाब फैज मोहम्मद खान के समकालीन थे,

सिंधिया राजवंश

- सिंधिया राजवंश की स्थापना रणोजी सिंधिया ने की थी, जिन्हें 1726 ई. में पेशवा (मराठा राज्य के प्रमुख मंत्री) द्वारा मालवा का प्रभारी बनाया गया था। 1750 ई. में मृत्यु होने से पहले रणोजी सिंधिया ने उज्जैन में अपनी राजधानी स्थापित कर ली थी।
- महादजी शिन्दे ने 18 जनवरी 1768 ई.-12 फरवरी 1794 ई. तक शासन किया था। इन्होंने 1771 ई. में शाहआलम द्वितीय को दिल्ली के सिंहासन पर पुनः आसीन कर स्वयं उसका रक्षक बने।
- इसके बाद महादजी शिन्दे अंग्रेजों और मराठों के बीच होने वाले प्रथम मराठा युद्ध (1775-82 ई.) में मध्यस्थ बने और सालबाई की सन्धि के द्वारा दोनों पक्षों में पुनः शान्ति स्थापित करा दी। इससे अंग्रेजों में भी उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई।
- दौलतराव शिन्दे का शासन काल बसई की सन्धि तथा सुर्जी अर्जुनगाँव की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है।
- दौलतराव के बाद जनकोजी राव गद्दी पर बैठे जो कमजोर शासक थे उनका अधिकांश समय बैजाबाई से संघर्ष में ही बीता।
- **जयाजीराव सिंधिया (1843-86 ई.)** - जनकोजीराव सिंधिया की मृत्यु के बाद जयाजीराव सिंधिया शासक बने जयाजीराव का मूल नाम भागीरथ राव था।
- जयाजीराव की निजी सेना ने 1857 में झांसी की घटनाओं की सूचना मिलने पर अंग्रेजों से विद्रोह कर दिया था।
- कानपुर, बितूर और झांसी की मारकाट के बाद जब विद्रोही सेनाएं कालपी होते हुए ग्वालियर आईं तो इंदौर की सेना भी आगरा तक आ गई।
- जब लक्ष्मीबाई वहां पहुंची तो जयाजीराव सिंधिया ने अपने परिवार की महिलाओं और फौज के प्रमुख अधिकारियों को नरवर के किले में पहुंचा दिया तथा स्वयं आगरा निकल गए।
- लक्ष्मीबाई के लिए अपनी सेना और खजाना मदद के लिए छोड़ दिया। खजाने की चाबी उनके खजांची 'अमरचंद बांठिया' ने लक्ष्मीबाई को सौंपते हुए सारी जानकारी दी।
- सिंधिया राज्य के खजांची अमरचंद बांठिया को सराफा बाजार में नीम के पेड़ से टांग कर फांसी दे दी गई।

- विद्रोह की समाप्ति के बाद अंग्रेजों ने ग्वालियर किले पर कब्जा कर लिया। सन् 1886 तक मुरार में अंग्रेजी छावनी बनी रही। 20 जून 18 को जयाजीराव सिंधिया की मृत्यु हो गई।
- जयाजीराव के काल में शास्त्रीय संगीत में ग्वालियर घराना विकसित हुआ, जय विलास पैलेस का निर्माण सन 1874 में, कमलाराजा भवन, विक्टोरिया महाविद्यालय उज्जैन आदि का निर्माण हुआ
- डलहौजी अपनी राज्य हड़प-नीति के साथ ग्वालियर रियासत को अपने अधीन करता. उससे पहले उनके दत्तक पुत्र 'माधव राव सिंधिया प्रथम' को 10 वर्ष की उम्र में राजा बना दिया गया। लेकिन उन्हें 15 दिसंबर 1894 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर संपूर्ण कार्यभार दिया गया।
- महाराज माधवराव ने शिक्षा को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया।
- माधवराव सिंधिया प्रथम को अंग्रेजों द्वारा "सर" की उपाधि सौंपी गई थी। इंग्लैंड से लौटते हुए 6 जून 1925 को पेरिस में माधवराव सिंधिया प्रथम का निधन हो गया।
- माधवराव ने शिवपुरी को अपनी ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाया।
- शिवपुरी में माधव विलास पैलेस, ग्राण्ड होटल, जॉर्ज केसल, सेलिंग क्लब, सेक्रेट्रिएट टाउन हॉल, शिवपुरी क्लब, शिवपुरी की प्रशिद्ध छत्रियाँ, उज्जैन में फ्री गंज उन्ही के समय के निर्माण कार्य हैं।
- माधव राव सिंधिया प्रथम की मृत्यु के पश्चात उनके 9 वर्षीय पुत्र 'जीवाजी राव' सिंधिया का राज्य अभिषेक किया गया। अल्पायु होने के कारण उनकी मां महारानी 'चिनकुराजे' सिंधिया की अध्यक्षता में 'काउंसिल ऑफ रीजेंसी' का गठन किया गया।
- महाराज जीवाजी राव सिंधिया ने 1941 ई. में गैर मराठा जाति की एक राजपूत कन्या 'लेखा दिव्येश्वरी' से विवाह किया, लेखा दिव्येश्वरी का जन्म 12 अक्टूबर 1919 में मध्य प्रदेश के सागर जिले में हुआ था।
- बाद में मराठा रीति-रिवाज के अनुसार 'लेखा दिव्येश्वरी' का नाम बदलकर महारानी "विजयाराजे" सिंधिया रखा गया।
- सन 1947 में देश की स्वाधीनता के समय ग्वालियर राज्य का भारत संघ में विलीनीकरण हो गया। इस समय महाराज जीवाजी राव सिंधिया ग्वालियर के शासक थे।

होलकर रियासत

- इन्दौर को 18वीं सदी के मध्य में मल्हारराव होल्कर द्वारा स्थापित किया गया था।
- होल्कर ने दूसरे पेशवा बाजीराव प्रथम की ओर से अनेक लड़ाइयाँ जीती थीं। 1733 में बाजीराव पेशवा ने इन्दौर को मल्हारराव होल्कर को पुरस्कार के रूप में दिया था।

- उसने मालवा के दक्षिण-पश्चिम भाग को कब्जे में करके इन्दौर को अपनी राजधानी बनाया। उसकी मृत्यु के पश्चात् दो अयोग्य शासक गद्दी पर बैठे, किंतु तीसरी शासिका अहिल्या बाई (1765-1795 ई.) ने शासन कार्य बड़ी सफलता के साथ निष्पादित किया।
- महारानी अहिल्याबाई होल्कर का विवाह खंडेराव से हुआ था, 1754 ई. में खंडेराव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य का शासन-भार सम्भाला था।
- उनका जन्म महाराष्ट्र में चौडी गाँव में हुआ था। उन्होंने राजधानी को इंदौर के दक्षिण में नर्मदा नदी पर स्थित महेश्वर पर स्थानांतरित किया।
- रानी अहिल्याबाई ने भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अनेक मन्दिरों, धर्मशालाओं और अन्नसत्रों का निर्माण कराया था। कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर उनके बनवाये हुए हैं।
- वे भगवान शिव की भक्त थीं और इसलिए उन्होंने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया।
- अहिल्याबाई के निधन के बाद तुकोजी इन्दौर की गद्दी पर बैठा।
- मध्य भारत के महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वितीय ऐसे शासक थे, जिन्होंने रेलवे से होने वाले लाभ को समझते हुए अंग्रेजों को 1 करोड़ रुपये का कर्ज दिया। इस राशि की मदद से अंग्रेजों ने 1869 में खंडवा-इंदौर रेलवे लाइन का निर्माण किया। इस लाइन को होलकर स्टेट रेलवे भी कहा जाता था।
- जनवरी 1818 में इन्दौर ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। यह ब्रिटिश मध्य भारत संस्था का मुख्यालय एवं मध्य भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी (1948-56) था।
- 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, इंदौर रियासत, कई पड़ोसी रियासतों के साथ-साथ भारत में शामिल हो गया।
- रियासत के अंतिम शासक यशवंतराव होलकर द्वितीय ने 1 जनवरी 1950 को भारतीय संघ में विलय संधि पर हस्ताक्षर किए। रियासत के क्षेत्र, भारत के मध्य भारत राज्य का हिस्सा बन गये।
- हीरापुर नर्मदा की घाटी में विंध्यांचल की तराई में हिरन नदी और नर्मदा नदी के संगम के पास स्थित था यहां के राजा हिरदेश शाह एक महत्वपूर्ण लोधी राजा थे जो कि जबलपुर जिले के मुख्य विद्रोही थे।
- बुंदेला विद्रोह के समय जैतपुर के राजा परीक्षित थे।
- बिलगांव की लड़ाई मार्च 1841 में राजा परीक्षित और अंग्रेजों के बीच हुई।
- बुंदेला विद्रोह के समय शाहगढ़ के राजा अर्जुन सिंह थे जिनके पुत्र एवं उत्तराधिकारी बखतबली थे।
- विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कर्नल वाटसन के आधीन नागपुर फील्ड फोर्स नागपुर से भेजी थी जोकि जबलपुर 21 अक्टूबर 1842 को पहुंची।
- 1842 के बुंदेला विद्रोह के समय दो प्रमुख बुंदेला राजाओं ने विद्रोह में भाग नहीं लिया बानपुर का राजा मर्दन सिंह और शाहगढ़ का राजा बखतबली, इन्होंने बुंदेला विद्रोह के प्रमुख नेताओं को पकड़वाने में अंग्रेज सरकार की मदद की थी।
- विद्रोह के समय चंदेरी ग्वालियर रियासत का हिस्सा थी।
- 1829 में चंदेरी के राजा मूर पहलाद और ग्वालियर रियासत के बीच एक समझौता हुआ जिसमें चंदेरी रियासत की दो-तिहाई आय ग्वालियर दरबार को देना एवं एक तिहाई हिस्सा स्वयं रखना था।
- मूर पहलाद के बेटे मर्दन सिंह ने 1830 में बानपुर को चंदेरी रियासत की राजधानी बनाया।
- शाहगढ़ के राजा बखतबली ने बुंदेला विद्रोह के प्रमुख विद्रोही राजा हिरदेशाह को पकड़ा कर अंग्रेजों के सुपुर्द किया। बाद में स्लीमेन की सिफारिश पर ब्रिटिश सरकार ने हिरदेशाह और उनके साथियों को माफ कर कैद मुक्त किया।
- नरहट के ठाकुर मधुकर शाह को कैप्टन हैमिल्टन ने भानपुर के ठाकुर मदन सिंह की सहायता से बंदी बनाया जिन्हें बाद में फांसी दे दी गई।

❖ प्रमुख विद्रोही नेता

- गनेश जू - गुढ़ा - सागर जिला
- जवाहर सिंह - चंद्रपुर के दीवान
- परीक्षित सिंह - गिरार के दीवान
- अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव 1836 में बुंदेलखंड की चरखारी रियासत में आयोजित बुढ़वा मंगल में पारित हुआ था।
- बुढ़वा मंगल में सभी रियासतों ने जैतपुर नरेश परीक्षित के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र उठाने का फैसला किया था।

स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान

बुंदेला विद्रोह 1842 - 43 ई.

- बुंदेला विद्रोह 1842 प्रमुख कारण ब्रिटिश भू राजस्व नीति की कमियां थी, इस विद्रोह का प्रसार मुख्यतः सागर और नर्मदा क्षेत्र में था।
- विद्रोह 1842 में सागर नर्मदा टेरिटीरीज के अधिकांश हिस्से में हुआ इस विद्रोह में राजाओमालगुजारों और जागीरदारों ने हिस्सा लिया।

1857 की क्रांति

- 1857 की क्रांति का आरम्भ मध्यप्रदेश में 3 जून 1857 को नीमच छावनी से हुआ।
- 1857 की क्रांति के प्रसार में “चपाती व कमल के वितरण” और “हड्डी चूरा की कहानी” का प्रयोग किया गया।
- अंग्रेज विरोधी आंदोलन में बुंदेलखंड के राजाओं जागीरदारों एवं जनता को भाग लेने हेतु तैयार करने के प्रयास में तीन प्रमुख लोगों का योगदान था।
- **झांसी मे** रानी लक्ष्मीबाई, बानपुर के मर्दन सिंह, शाहगढ़ के बखतवली।
- **सागर में** क्रांति का ऐलान 1 जुलाई 1857 को 42वीं देसी पलटन के सीनियर सूबेदार शेख रमजान एवं दुलमीर खान ने मस्जिद के द्वार पर नगाड़ा बजाकर किया।
- बखतवली एवं मदन सिंह के नेतृत्व में सागर किले में आक्रमण हुआ जिसमें बखतवली के सेनापति बोधन दौआ भी सम्मिलित थे।
- क्रांति के समय राहतगढ़ को सागर का द्वार कहा गया है राहतगढ़ के किले का निर्माण गोंड राजाओं के द्वारा करवाया गया था।
- **भोपाल के पास राहतगढ़ में** 1857 की क्रांति का नेतृत्व अंबापानी के नवाब भाइयों नवाब फ़ाज़िल मोहम्मद खान एवं नवाब आदिल मोहम्मद खान ने किया।
- **दमोह में** विद्रोह के प्रमुख नेता हिंडोरिया के जमींदार किशोर सिंह तथा जोरावर सिंह थे।
- **गढ़ा मंडला** के गोंड राजवंश के राजा शंकर शाह ने जबलपुर में विद्रोहियों का नेतृत्व किया।
- अंग्रेजों ने शंकर शाह एवं उनके पुत्र रघुनाथ शाह को उनके निवास पुरवा से पकड़कर दोनों के विरुद्ध मुकदमा चलाया एवं 18 सितंबर 1857 को पिता एवं पुत्र को तोप के मुंह में बांधकर उड़ा दिया गया।
- इस घटना से विजय राघौगढ़ (मैंहर राज्य के अधीन) ठाकुर सरजू प्रसाद ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया जिसमें उनके सेनापति सरदार रामबोल एवं वंदन चाचा संघर्ष के दौरान मारे गए।
- राम बोल की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी नयनी ने युद्ध का संचालन किया, सरजू प्रसाद को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी आगे चलकर उन्होंने स्वयं को कटार से मारकर आत्महत्या कर ली।
- शंकर शाह की पत्नी रानी फूल कँवर ने मंडला में एक सेना का गठन कर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और अंत में मृत्यु निश्चित देख स्वयं की कटार से आत्महत्या कर ली।
- **रामगढ़ मंडला** जिले की छोटी सी जागीर थी।
- अवंती बाई का विवाह रामगढ़ राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमजीत सिंह से हुआ था।
- अवंती बाई के 2 पुत्र अमान सिंह एवं शेर सिंह थे।
- लक्ष्मण सिंह की मृत्यु एवं विक्रमजीत सिंह के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने के कारण अवंती बाई रामगढ़ का राजकाज देखने लगी, जिसके विरोध में ब्रिटिश सरकार ने शासन प्रबंध देखने के लिए वहां पर एक तहसीलदार नियुक्त कर दिया।
- इस नियुक्ति के विरोध में रानी अवंती बाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध शाहपुरा के लोधी ठाकुर विजय सिंह एवं **सोहागपुर** के बघेल ठाकुर गरुल सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
- 1 अप्रैल 1858 को लेफ्टिनेंट वार्टन ने रामगढ़ पर आक्रमण अपना कब्जा कर लिया।
- रानी ने संघर्ष का केंद्र डिंडोरी - शाहपुरा - जबलपुर मार्ग पर स्थित देवहरगढ़ नामक पहाड़ी को बनाया।
- अंग्रेजों ने वडिंगटन के नेतृत्व में देवहरगढ़ पहाड़ी पर हमला किया रानी ने अपनी पराजय निश्चित जानकर कटार से अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली।
- **होशंगाबाद में** ठाकुर दौलत सिंह एवं पंडित बाबा साहब ने विद्रोह का नेतृत्व किया इनकी गतिविधियों का केंद्र हरदा एवं नेमावर थे।
- **बालाघाट में** 1857 के विद्रोह का नेतृत्व कामथा के जागीरदार चिमना पटेल ने किया।
- **खंडवा एवं खरगोन में** 1857 की क्रांति में मंडलोई के रघुनाथ सिंह एवं भील क्रांतिकारी भीमा नायक के नेतृत्व में विद्रोही कई घटनाएं घटित हुईं।
- **इंदौर में** क्रांति की शुरुआत 1 जुलाई 1857 को सआदत खा, भगीरथ सिलावट, वंश गोपाल के नेतृत्व में होलकर की सेना ने किया, इंदौर में तुकोजीराव होलकर ने अंग्रेजों का सहयोग किया।
- 1 जुलाई 1857 को ही सागर में शेख रमजान एवं महु में मुराद अली खां के नेतृत्व में विद्रोह का आरंभ हुआ।
- झांसी के झोकन बाग में अंग्रेजों के हत्याकांड की खबरों ने ग्वालियर के सैनिकों में भी विद्रोह हेतु उत्साह का संचार किया और 14 जून की रात ग्वालियर के सैनिकों ने भी विद्रोह कर किया, इस समय ग्वालियर के राजा जीवाजीराव सिंधिया थे जो अंग्रेजों के सहयोगी थे, इसके विपरीत इनकी दादी बैजाबाई ने उज्जैन में रह कर क्रांतिकारियों की मदद की।
- बैजाबाई सातारा, उज्जैन एवं ग्वालियर में विद्रोह को अप्रत्यक्ष रूप से संचालित कर रही थी।
- फलस्वरूप जीवाजीराव के बड़ी संख्या में सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया जिसमें जीवाजीराव की

- स्थिति कमजोर होती गई इ नपरिस्थितियों में जीवाजी राव सिंधिया एवं उनका दीवान दिनकर राव अंग्रेजों के संरक्षण में आगरा चले गए।
- **अमझेरा रियासत (धार जिले में)** के विद्रोह का नेतृत्व बख्तावर सिंह ने किया जिन्हे अंग्रेजों ने पकड़कर 10 फरवरी 1858 को फांसी दे दी।
 - मुगल वंश के शहजादे फिरोज शाह ने उज्जैन के पास महिदपुर में विद्रोह को बढ़ावा दिया अंग्रेजी सेना को परास्त कर मंदसौर पर अपना अधिकार कर लिया।
 - अंग्रेजों के महत्वपूर्ण सैन्य स्थान नीमच में 3 जून की रात में विद्रोह हुआ जिसमें सरकारी बंगलों में आग लगा दी गई।
 - क्रांति के समय भोपाल रियासत की नवाब सिकंदर जहां बेगम अंग्रेजों की मदद कर रही थी, इसी समय भोपाल के दो अधिकारियों रिसालदार वली शाह एवं महावीर कोठा ने दो झंडे "निशाने महमदी एवं निशाने महावीरी" गाड़कर 6 अगस्त 1857 को विद्रोह की शुरुआत की।
 - इस प्रकार भोपाल में महावीर एवं वली शाह ने क्रांति का नेतृत्व किया वही रायसेन रियासत के पास स्थित गढ़ी अंबापानी के नवाब बंधु फाजिल मोहम्मद खान एवं आदिल मोहम्मद खान ने भी इनका साथ दिया।
 - क्रांति के दौरान ही महावीर एवं वाली शाह ने एक नई हुकूमत सिपाही बहादुर का गठन किया।
 - बघेलखंड के विद्रोह के दमन में रीवा के तत्कालीन महाराजा रघुराज सिंह ने अंग्रेजों की मदद की जिसके लिए बाद में रीवा के महाराज रघुराज सिंह एवं नागौंद के राजा राघवेंद्र सिंह को अंग्रेजों के द्वारा सम्मानित भी किया गया।
 - बघेलखंड के ही कोठी जागीर के ठाकुर रणमत सिंह जोकि नौगांव छावनी में कैप्टन थे उन्हें बखतवली एवं मर्दन सिंह को गिरफ्तार करने हेतु कहा गया तो इससे उन्होंने इंकार कर दिया और अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह में सम्मिलित हो गए।
 - रीवा राज्य के हीरा सिंह ने इनाम पाने के लालच में ठाकुर रणमत सिंह को गिरफ्तार करवा दिया फलस्वरूप अगस्त 1859 में रणमत सिंह को फांसी दे दी गई।
 - **पन्ना की अजय गढ़ रियासत** के राजा रणजोर सिंह ने अंग्रेजों की मदद की जबकि यहां 1857 के विद्रोह का नेतृत्व फरजंद अली और लोकपाल सिंह ने किया, लोकगीतों में अजय गढ़ के एक और प्रख्यात विद्रोही लक्ष्मण सिंह दौआ का नाम आज भी मिलता है।
 - बुंदेलखंड में एक और विद्रोही देशपत बुंदेला ने जैतपुर राजा परीक्षित की विधवा पत्नी रजो रानी की मदद की थी जनवरी 1858 में जब तात्या टोपे ने चरखारी पर आक्रमण किया तो देशपत बुंदेला ने तात्या टोपे का साथ दिया, चरखारी के राजा रतन सिंह अंग्रेजों के सहयोगी थे।
 - इस तरह उस समय वर्तमान मध्य प्रदेश के सभी जिलों में 1857 का विद्रोह प्रसारित था और अंग्रेजों ने विद्रोह का दमन कई सहयोगी राजाओं के सहयोग से किया।
 - ब्रिटिश सरकार पर विद्रोह के दमन का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा था स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिए 16 दिसंबर 1857 को सर रॉबर्ट हैमिल्टन को इंदौर में सेंटर इंडिया के गवर्नर जनरल के एजेंट नियुक्त किया गया, सागर सहित बुंदेलखंड की स्थिति में नियंत्रण के लिए मेजर जनरल ह्यूरोज के अधीन महु में सेंट्रल इंडिया फोर्स का गठन हुआ, विद्रोह को दबाने के लिए जनरल ह्यूरोज को सेंट्रल इंडिया की फौजों की कमान दी गई।
 - जनरल ह्यूरोज ने दमन की शुरुआत सागर के प्रवेश द्वार राहतगढ़ से की, क्योंकि राहतगढ़ का किला बुंदेलखंड के विद्रोहियों का प्रमुख केंद्र था।
 - आक्रमण में प्रमुख विद्रोही भाग निकले लेकिन नवाब फाजिल मोहम्मद खान को पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया इनपर भोपाल की बेगम सिकंदर जहां की राजसत्ता का विरोध करने का आरोप था।
 - अंग्रेजों ने सागर और चंदेरी के किले पर अधिकार करने के बाद 4 अप्रैल को झांसी किले पर अधिकार कर लिया।
 - रानी अपने सहयोगियों के साथ भागकर कालपी पहुंची जहां ह्यूरोज एवं स्टुअर्ट की सेना के साथ एक बार पुनः घनघोर संग्राम हुआ अंततः 24 मई को अंग्रेजों ने कालपी पर भी अपना अधिकार कर लिया।
 - झांसी के संघर्ष का समाचार सुनने के बाद ग्वालियर के सिंधिया के सैनिकों ने भी विद्रोह कर दिया और कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया।
 - बुंदेलखंड की आजादी के लिए प्रयासरत राज प्रमुखों के गठबंधन में उत्तरी बुंदेलखंड का नेतृत्व झांसी की रानी लक्ष्मीबाई एवं बांदा नवाब अली बहादुर द्वितीय कर रहे थे एवं दक्षिणी बुंदेलखंड का नेतृत्व शाहगढ़ राजा बखतवली एवं कानपुर राजा मर्दन सिंह कर रहे थे।
 - रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे एवं राव साहब कालपी से ग्वालियर की ओर पहुंचे इससे पूर्व ही जीवाजी राव सिंधिया एवं उनका दीवान दिनकराव अंग्रेजों के संरक्षण में आगरा भाग गए।
 - ह्यूरोज एवं रानी लक्ष्मीबाई के बीच अंतिम युद्ध 18 जून 1858 को ग्वालियर के मुरार में स्वर्णरेखा नदी के किनारे हुआ जिसमें 18 जून को रानी लक्ष्मीबाई को वीरगति प्राप्त हुई।

- ह्यूरोज ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी।
- बाजीराव प्रथम के वंशज अली बहादुर द्वितीय ने भी रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया और रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें राखी भेजी थी।
- मध्य प्रदेश के नरवर के राजपूत राजा मानसिंह के विश्वासघात के कारण 7 अप्रैल 1859 को तात्या टोपे को धोखे से पकड़ लिया गया उन्हें शिवपुरी में 18 अप्रैल 1859 के दिन शाम 7:00 बजे फांसी दे दी गई।
- जिसके साथ ही 1857 के महान विप्लव का पूर्णतः दमन कर दिया गया।
- मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड, बघेलखंड एवं मालवा के कुछ शासकों ने अंग्रेजों की सहायता की जिनमें बिजावर, रीवा, गौरी हार, पन्ना, चरखारी, इंदौर और ग्वालियर के राजा प्रमुख हैं।
- भोपाल की सिकंदर जहां बेगम, टीकमगढ़ की लड़ई सरकार ने भी अंग्रेजों का साथ दिया।
- विद्रोह की असफलता में अंग्रेजों की मदद करने वाले प्रमुख भेदिये - जगत राज ने सूचना देकर देशपथ बुंदेला को पकड़वाया, नरवर के मानसिंह ने तात्या टोपे को, दीवान नत्थे खान ने कैप्टन ह्यूरोज को बुंदेलखंड की महत्वपूर्ण सूचनाएं दी।
- गांधी जी के असहयोग आंदोलन वापस लेने और गिरफ्तारी के बाद लोगों में स्वाधीनता के उत्साह को बनाए रखने के लिए झंडा सत्याग्रह की शुरुआत की गई इस सत्याग्रह के कर्णधार पंडित सुंदरलाल थे।
- इसकी शुरुआत कांग्रेस सदस्यों द्वारा 8 मार्च 1923 को नगरपालिका भवन पर झंडा लहराने पर यूरोपियन डिप्टी कमिश्नर ने क्रुद्ध होकर झंडा नीचे उतारने का आदेश दिया, इसके परिणामस्वरूप झंडा आंदोलन प्रारंभ हो गया।
- 18 मार्च को पंडित सुंदरलाल के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया, जुलूस का झंडा विश्व भर नाथ पांडे हाथों में था साथ में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी, बट्टी प्रसाद दुबे, माखनलाल चतुर्वेदी, देवी प्रसाद शुक्ला आदि लोग थे, जुलूस को टाउन हाल से पहले रोक दिया गया फिर भी कुछ नव युवकों ने टाउन हॉल पर पहुंचकर झंडा फहरा दिया और इस प्रकार जबलपुर देश में पहला स्थान बन गया जहां झंडा फहराया गया था और झंडा फहराने वाले नवयुवक दमोह के प्रेमचंद जैन थे।
- सुभद्रा कुमारी चौहान पहली महिला थी जो झंडा सत्याग्रह में बंदी बनाई गई थी।
- शीघ्र ही आंदोलन ने अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर लिया। 18 अगस्त 1923 को ब्रिटिश अधिकारियों ने झुककर राष्ट्रध्वज के साथ सौ स्वयं सेवकों का जुलूस निकालने की अनुमति दी।
- इस जुलूस का नेतृत्व माखनलाल चतुर्वेदी, वल्लभ भाई पटेल, बाबू राजेंद्र प्रसाद ने किया।

मध्य प्रदेश: 1857 की क्रांति के प्रमुख विद्रोही	
विद्रोही	संबंधित स्थल
कुंवर चैन सिंह	सीहोर
रानी लक्ष्मीबाई	झांसी-कालपी
टंट्या भील	खरगोन
शेख रमजान	सागर
तात्या टोपे	कानपुर- झांसी- ग्वालियर
भीमा नायक	मंडलेश्वर
शहादत खान	महू
रानी अवंती बाई	रामगढ़
झलकारी बाई (रानी लक्ष्मीबाई की अंगरक्षक)	झांसी
गिरधारी बाई (रानी अवंती बाई की अंगरक्षक)	रामगढ़
शंकर शाह	गढ़ मंडला
श्री बहादुर एवं देवी सिंह	मंडला
राजा ठाकुर प्रसाद	राघोगढ़
ढेलन शाह	नरसिंहपुर

❖ झंडा सत्याग्रह

- झंडा सत्याग्रह ध्वज सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय का एक शांतिपूर्ण नागरिक अवज्ञा आंदोलन था।

❖ स्वराज्य दल

- अक्टूबर 1923 में डॉ. ई राघवेंद्र राव की अध्यक्षता में हिंदी मध्य प्रांत तथा डॉ. बीएस मुंजे की अध्यक्षता में मराठी मध्य प्रांत के लिए स्वराज्य दल का गठन किया गया।
- नवंबर 1923 के मध्य प्रांत और बरार विधानसभा के चुनाव में स्वराज्य दल को उल्लेखनीय सफलता मिली यह 70 में से 42 निर्वाचन क्षेत्रों में सफल रही।

❖ सविनय अवज्ञा आंदोलन

- मध्य प्रांत में सविनय अवज्ञा आंदोलन दो चरणों में प्रारंभ हुआ पहला नमक सत्याग्रह तथा दूसरा जंगल सत्याग्रह था।

➤ नमक सत्याग्रह

- गांधी जी द्वारा नमक कानून के उल्लंघन के दिन 6 अप्रैल 1930 को जबलपुर में मध्य प्रांत की युद्ध समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया जुलूस में सम्मिलित सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने पूर्ण

- स्वराज्य प्राप्ति हेतु संघर्ष रहने की शपथ ली और बाद में नमक बनाकर नमक कानून को भंग किया।
- कटनी, मंडला, दमोह, रायपुर कथा सीहोरा के आसपास के स्थानों में भी नमक कानून तोड़कर प्रांत में आंदोलन को गति प्रदान की गई।
 - 15 अप्रैल 1930 को रायपुर मध्य प्रांत की राजनीतिक परिषद की बैठक में द्वारका प्रसाद मिश्र के प्रस्ताव अनुसार हिंदी मध्य प्रांत का नाम बदलकर उसका प्राचीन नाम "महाकौशल" कर दिया गया।
 - **युद्ध समिति** - गांधी जी द्वारा नमक कानून के उल्लंघन के साथ कांग्रेस समितियां अवैध घोषित कर दी गई थी तथा उन्हें युद्ध समिति में परिवर्तित कर दिया गया था। मध्य प्रांत युद्ध समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र थे।
 - इसी दौरान जबलपुर में सेठ गोविंद दास तथा द्वारका प्रसाद मिश्र जी के द्वारा "तरुण सभा" की स्थापना जबलपुर में की गई, मिश्र जी ने "हिंदुस्तानी सेवादल" का गठन किया जिसकी शाखाएं प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में थीं।
 - फरवरी 1930 में सेठ गोविंद दास के प्रबंध तथा द्वारका प्रसाद मिश्र के संपादन में जबलपुर से दैनिक लोकमत तथा खंडवा से स्वराज्य नामक साप्ताहिक का प्रकाशन सिद्धनाथ माधव अगरकर के संपादन में प्रारंभ हुआ, इन दोनों समाचार पत्रों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रसार में काफी योगदान दिया।
- **जंगल सत्याग्रह**
- जंगल सत्याग्रह की परिकल्पना द्वारका प्रसाद मिश्र की थी जिसका प्रस्ताव उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू के समक्ष रखा था।
 - जंगल कानून का विरोध करने का उद्देश्य उन वनवासियों का समर्थन प्राप्त करना था जो इस कानून को पूर्णतः समझते थे, उस समय जंगल कानून अन्याय पूर्ण थे सरकार कृषकों से चारागाह की भूमि, सूखे पत्ते तथा लकड़ी आदि में कर लेना चाहती थी।
 - जंगल सत्याग्रह के प्रमुख नेता द्वारका प्रसाद मिश्र के गिरफ्तार हो जाने के कारण बरार में बापूजी अडे के नेतृत्व में 10 जुलाई 1930 को जंगल सत्याग्रह प्रारंभ किया गया।
 - 9 अगस्त 1930 को सिवनी के टूरिया नामक स्थान पर मूका नामक लोहार के नेतृत्व में हजारों गोंड आदिवासियों द्वारा जंगल कानून भंग किए गए।
 - सत्याग्रह के दौरान सागर में वानर सेना तथा बाल सभाएं बच्चों के लिए गठित की गई, सागर में छोटी लड़कियों की एक सभा जिसका नाम रानी दुर्गावती के नाम पर दुर्गा सेना रखा गया।
- **पंजाब मेल हत्याकांड** - 23 जुलाई 1931 में दिल्ली से मुम्बई जा रही पंजाब मेल में खंडवा से वीर यशवंतसिंह, देवनारायण तिवारी तथा दलपत राव ने ट्रेन में सवार अंग्रेजी अफसर हेक्सर, मेजर शाहन और उनके पालतू कुत्ते को मार डाला था, बाद में इन तीनों क्रांतिकारियों को पकड़ कर आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- **चरण पादुका नरसंहार**- 14 जनवरी 1931 को मकर संक्रांति के दिन छतरपुर जिले में और में नदी के तट पर स्थित सिंहपुर चरण पादुका मैदान में चल रही आम सभा को ब्रिटिश सेन बल्ले चारों ओर से ढेर कर आम सभा में उपस्थित लोगों पर गोलियां बरसाईं।
- चरण पादुका नरसंहार को मध्यप्रदेश की जलियांवाला बाग हत्याकांड की संज्ञा प्रदान की जाती है।
- **त्रिपुरी अधिवेशन** - जबलपुर में 29 जनवरी 1939 ई. को कांग्रेसका 52 वां अधिवेशन संपन्न हुआ इस अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस ने 203 मतों से पट्टाभी सीतारमैया को पराजित किया और कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।
- **अगस्त प्रस्ताव** के बाद कांग्रेस के द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ करने का निर्णय किया गया जिसके पहले सत्याग्रही विनोबा भावे थे, व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रभाव मध्य प्रदेश के राजनीति पर भी पड़ा।
 - व्यक्तिगत सत्याग्रह में जबलपुर के प्रथम सत्याग्रही बाबू गोविंद दास थे, जिन्हें गिरफ्तार कर जबलपुर सेंट्रल जेल में रखा गया था, श्रीमती प्रमिला प्रथम महिला सत्याग्रही थी।
 - भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मध्य प्रदेश और बरार के अनेक राजनीतिज्ञों को बेंगलूर जेल में रखा गया था, जिनमें विनोबा भावे, काका कालेलकर, तथा सेठ गोविंद दास प्रमुख थे, इसी दौरान जेल में काका कालेलकर का भाषण काफी प्रसिद्ध था।
 - द्वारिका प्रसाद मिश्र के द्वारा बेंगलूरु जेल में ही कृष्णायन महाकाव्य की रचना की गई।
 - भारत सरकार के द्वारा केंद्रीय विधान मंडलों के निर्वाचन की घोषणा के पश्चात मध्य प्रांत में मतदान 9 जनवरी 1946 में हुए।
 - जिसमें मध्य प्रांत कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ तथा 26 अप्रैल को रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व में मंत्रिमंडल का गठन किया गया।
 - कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार संविधान सभा में प्रांतों का प्रतिनिधित्व जनसंख्या के आधार पर दिया गया था। मध्य प्रांत और बरार के लिए कुल सदस्य संख्या 17 थी जिनमें 16 स्थान सामान्य और एक मुसलमान के लिए था।
 - स्वतंत्रता पश्चात मध्य प्रांत में 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत के प्रांतीय गवर्नर मंगलदास पकवास ने पद की शपथ ली तथा प्रांत: काल नागपुर के सीताबर्डी के प्रसिद्ध दुर्ग पर मध्य प्रांत के मुख्यमंत्री

रविशंकर शुक्ल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया कर स्वतंत्रता प्राप्ति का संदेश दिया।

- **भोपाल का जलियांवाला कांड-** 14 जनवरी 1949 को मकर संक्रांति के दिन रायसेन में नर्मदा नदी के तट पर तिरंगा फहराने के कारण भोपाल रियासत की नवाबी सेना के अधिकारी जफर अली खान और स्थानीय लोगों के मध्य संघर्ष हुआ। इसी कांड को भोपाल का जलियांवाला बाग कांड कहा जाता है।

मध्यप्रांत का गठन 1861

- वर्तमान मध्यप्रांत जिसे ब्रिटिश शासन में मध्यप्रांत नाम से जाना जाता था का गठन सागर, नर्मदा क्षेत्र और नागपुर प्रान्त को मिलाकर 2 नवम्बर 1861 को किया गया था।
- 1903 में मध्य प्रांत के प्रशासनिक ढांचे में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए बरार प्रदेश को भी मध्य प्रांत से जोड़ दिया गया, बरार का प्रदेश मूलतः पेशवा के अधीन था जिसे मराठों के विरुद्ध मदद के बदले पेशवा से छीन कर निजाम को दिया गया था और इस प्रकार इसे मध्य प्रांत और बरार नाम दिया गया।
- 1 नवंबर 1948 को मध्य प्रांत के नाम को परिवर्तित कर मध्य प्रदेश किया गया साथ ही छत्तीसगढ़ की सामंती रियासतें, मध्य भारत के इंदौर, भोपाल, ग्वालियर और रीवा राज्यों को मध्यप्रदेश में संविलियन होने एवं 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम द्वारा मध्य प्रदेश के 8 मराठी भाषी जिलों को महाराष्ट्र को हस्तांतरित किए जाने से वर्तमान मध्यप्रदेश का स्वरूप बना।
- दिसंबर 1910 में कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में बंगाल विभाजन को रद्द करने एवं ब्रिटिश सरकार से मध्य प्रांत एवं बरार में विधानसभा स्थापित करने की मांग की गई।
- इस प्रकार 1913 में मध्य प्रांत में विधानसभा स्थापित की गई 13 दिसंबर को वायसराय लॉर्ड हार्डिज ने नागपुर में विधानसभा भवन का शिलान्यास किया।
- 8 नवंबर 1913 को पहली विधानसभा का गठन हुआ जिसकी सदस्य संख्या 26 थी।

स्वतंत्रता पश्चात मध्यप्रदेश के घटक राज्य एवं इकाईयां

- 15 अगस्त, 1947 के पूर्व देश में कई छोटी-बड़ी रियासतें एवं देशी राज्य अस्तित्व में थे। स्वाधीनता पश्चात् उन्हें स्वतंत्र भारत में विलीन और एकीकृत किया गया। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के बाद देश में सन् 1952 में पहले आम चुनाव हुए, जिसके कारण संसद एवं विधान मण्डल कार्यशील हुए।
- सन् 1956 में राज्यों के पुनर्गठन के फलस्वरूप 1 नवंबर, 1956 को नया राज्य मध्यप्रदेश अस्तित्व में आया। इसके घटक राज्य

मध्यप्रदेश, मध्यभारत, विन्ध्य प्रदेश एवं भोपाल थे, जिनकी अपनी विधान सभाएं थीं।

- पुनर्गठन के फलस्वरूप सभी चारों विधान सभाएं एक विधान सभाएं एक विधान सभा में समाहित हो गईं। अतः 1 नवंबर, 1956 को पहली मध्यप्रदेश विधान सभा अस्तित्व में आई।

❖ विन्ध्य प्रदेश विधान सभा

- 4 अप्रैल, 1948 को विन्ध्यप्रदेश की स्थापना हुई और इसे "ब" श्रेणी के राज्य का दर्जा दिया गया।
- इसके राजप्रमुख श्री मार्तण्ड सिंह हुए। सन् 1950 में यह राज्य "ब" से "स" श्रेणी में कर दिया गया।
- 1 मार्च, 1952 से यह राज्य उप राज्यपाल का प्रदेश बना दिया गया। पं. शंभूनाथ शुक्ल उसके मुख्यमंत्री बने।
- विन्ध्यप्रदेश विधान सभा की पहली बैठक 21 अप्रैल, 1952 को हुई।

❖ भोपाल विधान सभा

- प्रथम आम चुनाव के बाद विधिवत विधान सभा का गठन हुआ।
- भोपाल राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. शंकरदयाल शर्मा एवं इस विधान सभा के अध्यक्ष श्री सुल्तान मोहम्मद खां एवं उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल थे।

❖ मध्यभारत विधान सभा (ग्वालियर)

- मध्यभारत इकाई की स्थापना ग्वालियर, इन्दौर और मालवा रियासतों को मिलाकर मई, 1948 में की गई थी।
- ग्वालियर राज्य के सबसे बड़े होने के कारण वहां के तत्कालीन शासक श्री जीवाजी राव सिंधिया को मध्यभारत का आजीवन राज प्रमुख एवं ग्वालियर के मुख्यमंत्री श्री लीलाधर जोशी को प्रथम मुख्यमंत्री बनाया गया।
- इस मंत्रीमण्डल ने 4 जून, 1948 को शपथ ली। तत्पश्चात् 75 सदस्यीय विधान सभा का गठन किया गया यह विधान सभा 31 अक्टूबर, 1956 तक कायम रही।
- इस विधान सभा के अध्यक्ष श्री अ.स. पटवर्धन और उपाध्यक्ष श्री वि.वि. सर्वटे थे।

❖ सेन्ट्रल प्राविन्सेस एण्ड बरार विधान सभा

- पूर्व में वर्तमान महाकौशल, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के बरार क्षेत्र को मिलाकर सेन्ट्रल प्राविन्सेस एण्ड बरार नामक राज्य अस्तित्व में था।
- राज्य पुनर्गठन के बाद महाकौशल और छत्तीसगढ़ का क्षेत्र यानी पूर्व मध्यप्रदेश (जिसे सेन्ट्रल प्राविन्सेस कहा जाता था) वर्तमान मध्यप्रदेश का भाग बना।

❖ मध्य प्रदेश राज्य योजना मंडल

- योजना आयोग (अब नीति आयोग) की अनुशंसा पर मध्य प्रदेश सरकार ने 24 अक्टूबर 1972 को मध्यप्रदेश योजना मंडल का गठन किया था।
- योजना मंडल के अध्यक्ष राज्य के मुख्यमंत्री पद होते हैं तथा उपाध्यक्ष राज्य के योजना मंत्री होते हैं।
- सन 1978-79 में योजना मंडल का पुनर्गठन किया गया

❖ पंचवर्षीय योजनाएं

- मध्यप्रदेश की स्थापना 1 नवंबर 1956 को की गई थी अतः आर्थिक नियोजन का विधिवत आरंभ तीसरी पंचवर्षीय योजना से ही माना जाता है क्योंकि प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56) के समय तक मध्य प्रदेश का जन्म ही नहीं हुआ था।
- मध्य प्रदेश का जन्म दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61) के दौरान हुआ लेकिन तब तक राज्य के तत्कालीन घटक मध्य भारत महाकौशल भोपाल राज्य एवं मध्य प्रदेश अपनी-अपनी योजनाएं योजना आयोग को दे चुके थे। राज्य की स्थापना के बाद इन योजनाओं का एकीकरण किया गया

➤ प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56)

- राज्य के तत्कालीन घटकों की योजनाओं का आकार निम्न -
- मध्य भारत 22.61 करोड़
- महाकौशल 48.17 करोड़
- भोपाल राज्य 5.52 करोड़
- विन्ध्य प्रदेश 7.35 करोड़
- योग 83.66 करोड़

- प्रथम पंचवर्षीय योजना अवधि में 7 मार्च 1953 को तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने राज्य में गांधी सागर बांध का शिलान्यास किया था।

➤ दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61) - इस अवधि में मध्य प्रदेश राज्य का गठन किया गया, किंतु तब तक राज्य के पूर्व चारों घटक अपनी अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना को अंतिम रूप दे चुके थे और राज्य की स्थापना के बाद इन चारों योजनाओं का एकीकरण किया गया।

➤ तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66) - राज्य की सही अर्थों में पहली पंचवर्षीय योजना यही थी।

- इस योजना में 300 करोड़ रुपए प्रस्तावित व्यय था, किंतु 286.7 करोड़ रुपए राशि (96%) ही व्यय हुई।

➤ चौथी पंचवर्षीय योजना (1969 - 74) - इसका मुख्य उद्देश्य विदेशी सहायता के अभाव में राज्य के विकास कार्यक्रमों को गति प्रदान करना था।

- **पांचवी पंचवर्षीय योजना (1974 - 79)** - इस योजना में कृषि विकास पर सर्वोच्च ध्यान देते हुए राज्य की गरीबी दूर करने वह राज्य की आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दी गई।

- **छठी पंचवर्षीय योजना (1980 - 85)** - इस योजना में सिंचाई एवं विद्युत पर सर्वाधिक व्यय प्रस्तावित किया गया था।

- **सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985 - 90)** - इस योजना में सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण एवं विद्युत को वरीयता दी गई।

- **आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992 - 97)** - राज्य में विद्युत पर सर्वाधिक व्यय करने का प्रावधान किया गया।

- **नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997 - 2002)** - इस योजना में विद्युत, कृषि, समाज सेवा पर विशेष बल दिया गया।

- **दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002 - 07)** - इस योजना का परिव्यय 26,189.93 करोड़ रुपए रखा गया।

- **ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007 - 12)** - इस योजना का परिवेश 70,329 करोड़ रुपए रखा गया था। इस की आर्थिक वृद्धि दर 10.02% रही।

- **12वीं पंचवर्षीय योजना (2012 - 17)** - इस योजना का परिवेश 2,01,862 करोड़ रखा गया जो पिछली पंचवर्षीय योजना से 3 गुना ज्यादा था।

मध्यप्रदेश की प्रमुख योजनायें

❖ लाड़ली लक्ष्मी योजना

- प्रारंभ - अप्रैल 2007

- उद्देश्य - 1 जनवरी 2006 के बाद जन्म लेने वाली प्रदेश की लड़कियों के शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास हेतु सहायता पात्रता - माता पिता आयकरदाता की श्रेणी में नहीं आते हैं।

- लाभ - इस योजना अंतर्गत पंजीकृत बालिका के नाम से प्रदेश सरकार लगातार 5 वर्षों तक 6000/- के राष्ट्रीय बचत पत्र अर्थात् कुल राशी रुपए 30,000/- के राष्ट्रीय बचत पत्र बालिका के नाम से खरीदे जाएंगे।

- भुगतान इस प्रकार होगा -

- कक्षा 6 में प्रवेश करने पर रू. 2000/-

- कक्षा 9 में प्रवेश करने पर रू. 4000/-

- कक्षा 11 में प्रवेश लेने पर रू. 7500/-

- 11वीं कक्षा में प्रवेश लेने के बाद आगामी 2 वर्ष के लिए रू. 200/- प्रतिमाह बालिका को भुगतान।

- बालिका की आयु 21 वर्ष होने पर तथा कक्षा 12वीं में परीक्षा उत्तीर्ण होने पर शेष एकमत राशि का भुगतान होगा।

❖ मुख्यमंत्री कन्यादान योजना

- प्रारंभ - अप्रैल 2006

● **उद्देश** - प्रदेश की गरीब/विधवा/परित्यक्ता महिलाओं के विवाह हेतु सहायता ।

● **लाभ** - इस योजना में विवाहित दंपति को 51,000/- की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है ।

❖ मुख्यमंत्री निकाह योजना

● **प्रारंभ** - 2012

● **उद्देश्य** - प्रदेश के मुस्लिम वर्ग की गरीब/विधवा/परित्यक्ता के निकाह हेतु सहायता ।

● **लाभ** - इस योजना में वरवधू को- 51,000/- की आर्थिक सहायता दी जाती है ।

❖ सौभाग्यवती योजना

● **उद्देश्य** - अनुसूचित जाति की कन्याओं के विवाह में सहायता ।

● **लाभ** - गरीब कन्याओं की विवाह के अतिरिक्त 5000/- की सहायता दी जाती है ।

❖ निशक्तजनों के विवाह हेतु विशेष योजना

● **उद्देश्य** - प्रदेश के निशक्तजनों के विवाह के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना ।

● **लाभ** - विवाह करने वाले में एक के निशक्त होने पर रु.25000/- तथा वर वधू दोनों की निशक्त होने पर-50000/- की सहायता दी जाती है ।

❖ मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना

● **प्रारम्भ** - अप्रैल 2008 भोपाल से प्रारम्भ

● **उद्देश्य** - BPL परिवारों के लिए खाद्यान्न उपलब्ध कराना ।

● **लाभ** - इस योजना अंतर्गत रु. 3/- किलो गेहूं रु. 4.50/- रुपए किलो चावल प्रति माह 35 kg प्रति परिवार उपलब्ध कराया जाता है ।

❖ मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना द्वितीय चरण

● **प्रारम्भ** - 26 अप्रैल 2008 से

● **उद्देश्य** - मध्यप्रदेश के अन्त्योदय तथा निराश्रित वृद्धजन एवं BPL परिवार हेतु खाद्यान्न उपलब्ध कराना ।

● **लाभ** - इस योजना के अंतर्गत रु. 1/- एवं रु. 2/- की दर से क्रमशः गेहूं एवं चावल 35 किलो प्रतिमाह प्रति परिवार उपलब्ध कराया जाता है ।

❖ जननी सुरक्षा योजना

● **प्रारम्भ** - सितंबर 2006

● **उद्देश्य** - प्रदेश में शिशु एवं मातृ मृत्यु दर में कमी लाने के लिए संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना ।

● **लाभ** - इस योजना के अंतर्गत बीपीएल परिवार की गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव कराने हेतु ग्रामीण क्षेत्र के हितग्राहियों को 1400 एवं शहरी क्षेत्र के हितग्राहियों को रु. 1000/- नगद राशि दी जाती है, तथा प्रोत्साहित करने वाली कार्यकर्ताओं को रु. 350/- दिए जाते हैं ।

❖ विजयाराजे जननी कल्याण बीमा योजना

● **प्रारम्भ** - 12 मई 2006

● **उद्देश्य** - प्रदेश में मातृ मृत्यु दर में कमी के साथ साथ संस्थागत-प्रसव को प्रोत्साहित करना ।

● **लाभ** - BPL परिवार की गर्भवती महिलाओं के प्रसव के दौरान चिकित्सा व्यय की प्रतिपूर्ति के रूप में रु.1000/- और प्रसव के दौरान गर्भवती महिला की मृत्यु होने पर उसके उत्तराधिकारी को नामित राशी के रूप में रु. 50,000/- की राशि दी जाती है । इस योजना के साथ जननी सुरक्षा योजना का लाभ दिया जाता है ।

❖ कन्या साक्षरता प्रोत्साहन योजना

● **प्रारंभ** - वर्ष 2006

● **उद्देश्य** - अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की कन्याओं को निरंतर शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना तथा आर्थिक सहायता देना ।

❖ मुख्यमंत्री आश्रय योजना

● **प्रारम्भ** - 13 जुलाई 2008

● **उद्देश्य** - आवास हीन शहरी गरीबों को आवास उपलब्ध कराना ।

● **लाभ** - इस योजना के तहत सरकारी गरीबों को भूमि के अधिकार पत्र प्रदान कर राज्य सरकार आगामी 5 वर्षों में बुनियादी सर्वसुविधायुक्त पक्के मकान उपलब्ध कराएगी ।

❖ दीनदयाल गोकुल ग्राम योजना

● **प्रारम्भ** - 25 सितंबर 2004

● **उद्देश्य** - गांव के आधारभूत अधोसंरचना विकास हेतु हर जिले में 5 गांव प्रतिवर्ष चुनकर विकास करना ।

● **लाभ** - इसके अंतर्गत कमजोर वर्ग और महिला स्व सहायता समूह को प्राथमिकता दी जाएगी और हर जिले में 20 से 25 एकड़ सरकारी जमीन पर पात्र हितग्राहियों को 20 दुधारू पशु प्रदान कर आर्थिक अवलंबन प्रदान किया जाएगा ।

❖ दीनदयाल समर्थ योजना

● **प्रारम्भ** - 25 सितंबर 2004

● **उद्देश्य** - प्रदेश के मानसिक एवं शारीरिक रूप से निशक्त लोगों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ना ।

- **लाभ** - इस योजना के तहत लोगों को शिक्षा एवं रोजगार के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।
- ❖ **दीनदयाल चलित अस्पताल योजना**
 - **प्रारम्भ** - 29 मई 2006
 - **उद्देश्य** - प्रदेश के दूरस्थ एवं अनुसूचित जाति/जनजाति क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना।
 - **लाभ** - इसके तहत आदिवासी विकास खंडों में चलित अस्पताल चलाए जा रहे हैं।
- ❖ **दीनदयाल अंत्योदय उपचार योजना**
 - **प्रारम्भ** - 25 सितंबर 2004
 - **उद्देश्य** - BPL SC/ST के लिए सरकारी अस्पतालों में निशुल्क इलाज।
 - **लाभ** - इस योजना के तहत BPL परिवारों को प्रतिवर्ष रु. 20000/- तक का इलाज निशुल्क किया जाता है।
- ❖ **दीनदयाल स्वरोजगार योजना**
 - **प्रारम्भ** - 25 सितंबर 2004
 - **उद्देश्य** - प्रदेश के बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार की ओर प्रेरित करना।
- ❖ **गांव की बेटा योजना**
 - **प्रारम्भ** - 2005 से
 - **उद्देश्य** - प्रत्येक गांव की 12वीं कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने वाली छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु रु.500/- प्रति माह से 10 माह तक अर्थात् रु. 5000/- की छात्रवृत्ति दी जाती है।
- ❖ **प्रतिभा किरण योजना**
 - **प्रारम्भ** - 2009
 - **उद्देश्य** - शहर की BPL परिवार की 12वीं कक्षा की छात्रा जिसने प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की हो को छात्रवृत्ति।
 - **लाभ** - इस योजना के तहत चयनित छात्रों को परम्परागत उपाधि पाठ्यक्रम के लिए रु. 300/- प्रतिमाह 10 माह तक तथा तकनीकी एवं चिकित्सा शिक्षा पाठ्यक्रम हेतु रु.750/- प्रतिमाह 10 माह तक दिए जाते हैं।
- ❖ **स्वामी विवेकानंद केरियर योजना**
 - **प्रारम्भ** - 2005
 - **उद्देश्य** - प्रदेश के युवा बेरोजगार छात्रों के लिए अनुभवी शिक्षाविद एवं मार्गदर्शकों द्वारा कैरियर हेतु मार्गदर्शन उपलब्ध कराना।
- ❖ **विक्रमादित्य निःशुल्क शिक्षा योजना**
 - **प्रारम्भ** - वर्ष 2008 - 09
- **उद्देश्य** - सामान्य वर्ग के BPL परिवार के विद्यार्थियों के स्नातक स्तर की निशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराना।
- ❖ **सुदामा शिष्यवृत्ति योजना**
 - **प्रारम्भ** - 2009 - 10
 - **उद्देश्य** - उत्कृष्ट विद्यालय में अध्ययन करने वाले सामान्य वर्ग के छात्र छात्राओं के लिए सहायता।
 - **लाभ** - इसके तहत रु. 500 प्रतिमाह 10 माह तक शिष्यवृत्ति प्रदान की जाती है, ऐसे छात्र छात्राओं को जिनके-
 - पिता की वार्षिक आय- 54000/- से अधिक ना हो।
- ❖ **डॉ एपीजे अब्दुल कलाम मेधावी छात्र योजना**
 - **प्रारम्भ** - 2009 - 10
 - **उद्देश्य** - सामान्य वर्ग से मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु प्रोत्साहन
- ❖ **डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी छात्रवृत्ति योजना**
 - **प्रारम्भ** - 21 सितंबर 2010
 - **उद्देश्य** - प्रदेश के प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन करना।
 - **लाभ** - कक्षा 12वीं की परीक्षा में 80% और उससे अधिक अंक पाने वाले सभी वर्गों के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है, जिनके माता पिता की वार्षिक आय-3 लाख से अधिक नहीं हो।
- ❖ **निशुल्क साइकिल प्रदाय योजना**
 - **प्रारम्भ** - वर्ष 2007
 - **उद्देश्य** - SC/ST बालिकाओं के लिए स्कूल जाने हेतु सुविधा प्रदान करना।
 - **लाभ** - इस योजना के तहत अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं को नवी कक्षा में प्रवेश लेने पर एवं स्वयं के गांव में स्कूल नहीं होने पर सरकार द्वारा निशुल्क साइकिल प्रदान की जाती है।
- ❖ **मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना**
 - **प्रारम्भ** - 1 नवंबर 2007
 - **उद्देश्य** - प्रदेश के खेतिहर मजदूरों के जीवन को बीमा सुरक्षा प्रदान करना।
 - **लाभ** - इस योजना के तहत खेतिहर मजदूर एवं उसके परिवार को चिकित्सा सहायता प्रसूति सहायता श्रमिकों के बच्चों को छात्रवृत्ति विवाह सहायता तथा दुर्घटना में मृत्यु होने पर बीमा योजना का लाभ और अंत्येष्टि के लिए सहायता उपलब्ध कराई जाती है।
- ❖ **उषा किरण योजना**

- प्रारम्भ - वर्ष 2006 - 2007
- उद्देश्य - महिलाओं और बच्चों (18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को) घरेलू हिंसा से बचाने के लिए घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2006 के तहत राज्य सरकार द्वारा लागू।
- लाभ - इस योजना में प्रदेश की महिलाओं और बच्चों को सुरक्षा प्रदान की जाती है,
- ❖ मध्य प्रदेश जिला गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम (DPIP)
 - प्रारम्भ - मार्च 2001
 - उद्देश्य - प्रदेश में जिला स्तर पर समान जनसहभागिता समान आवश्यकता सामान आर्थिक आधार और समानता के आधार पर बने स्व सहायता समूहों के माध्यम से गरीबों का विकास।
- ❖ मध्य प्रदेश ग्रामीण आजीविका परियोजना
 - प्रारम्भ - प्रथम चरण जून 2004 से द्वितीय चरण जुलाई 2007 से
 - उद्देश्य - प्रदेश के 9 आदिवासी बहुल जिलों में क्रियान्वित इस मिशन का उद्देश्य गरीब परिवारों को संवहनीय आजीविका के उपलब्ध उपलब्ध कराना है
 - लाभ - यह परियोजना मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिले धार, बड़वानी, झाबुआ, अनूपपुर, अलीराजपुर, शहडोल, मंडला, डिंडोरी, एम श्योपुर में क्रियान्वित है।
- ❖ जनश्री बीमा योजना
 - प्रारम्भ - 2008
 - उद्देश्य - मध्य प्रदेश सरकार द्वारा BPL परिवार के शहरी एवं ग्रामीण व्यक्ति जो मध्यप्रदेश शासन की योजनाओं जैसे आम आदमी बीमा योजना मुख्यमंत्री मजदूर सुरक्षा योजना में सम्मिलित नहीं है उन लोगों के लिए बीमा सुरक्षा प्रदान करना।
- ❖ जलदीप योजना
 - प्रारम्भ - 2007 इंदिरा सागर जलाशय से प्रारंभ है।
 - उद्देश्य - प्रदेश के जलाशयों के मध्य स्थित टापू पर स्थाई रूप से निवास करने वाले और जलाशय की परिधि पर निवास कर रहे मछुआरों के लिए राहत सामग्री और परिवहन की व्यवस्था की जाएगी
- ❖ जलाभिषेक अभियान
 - प्रारम्भ - वर्ष 2006
 - उद्देश्य - प्रदेश में खेती और अन्य प्रयोजन के लिए जल का संरक्षण और संवर्धन करना।
- ❖ बलराम ताल योजना
 - प्रारम्भ - 25 मई 2007
 - उद्देश्य - खेतों में तालाब बनाकर भूजल को रोकना विकसित करना।
 - लाभ - बलराम ताल निर्माण हेतु जरूरतमंद किसानों के लिए 50% अनुदान (अधिकतम रु. 80000/-) SC/ST के लिए 75% (अनुदान 1 लाख रूपय)
- ❖ खेत तालाब योजना
 - प्रारम्भ - 22 मई 2007
 - उद्देश्य - प्रदेश में कृषि के समग्र विकास के लिए सतत और भूमिगत जल की उपलब्धता बढ़ाना।
- ❖ मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना
 - प्रारंभ - अप्रैल 2010
 - उद्देश्य - ऐसे गांव जो प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत नहीं आते उनमें पक्की सड़क का निर्माण करना।
 - लाभ - प्रदेश के ऐसे गांव जो सामान्य क्षेत्र में 500 आबादी एवं आदिवासी क्षेत्र में 250 की आबादी है ऐसे गांव में बारहमासी पक्की सड़कों का निर्माण।
- ❖ मुख्यमंत्री शहरी घरेलू कामकाजी महिला कल्याण योजना
 - प्रारम्भ - वर्ष 2009
 - उद्देश्य - घरेलू कामकाजी महिलाओं का पंजीयन कर उनके परिवार की सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा चिकित्सा एवं कौशल उन्नयन संबंधी जरूरतों को पूरा किया जाना।
 - लाभ - इस योजना के तहत महिलाओं को प्रसूति सहायता व अवकाश के दौरान उक्त अवधि में उनके द्वारा अर्जित राशि के बराबर राशि प्रदान की जाती है।
- ❖ एकलव्य शिक्षा विकास योजना
 - प्रारम्भ - 2008
 - उद्देश्य - प्रदेश के तेंदूपत्ता संग्राहकों के मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करना।
- ❖ पंच परमेश्वर योजना
 - प्रारंभ - 11 जनवरी 2012
 - उद्देश्य - प्रदेश में ग्रामीण अधोसंरचना विकास हेतु ग्राम पंचायतों को एकमुश्त राशि उपलब्ध कराना।
 - लाभ - इस योजना में 2000 तक की जनसंख्या वाली ग्राम पंचायतों को 5 लाख, 2000 से 5000 जनसंख्या वाले ग्राम पंचायत 8 लाख, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले ग्राम पंचायतों को 10 लाख की एकमुश्त राशि प्रदान की जाती है।
- ❖ महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना

- प्रारंभ - 1 अप्रैल 2012
- उद्देश्य - प्रदेश में कृषि क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं की स्थिति में बदलाव लाना।
- लाभ - इस योजना में महिला स्व सहायता समूह गठित कर उन्हें आर्थिक संबल प्रदान किया जाता है।
- इसको 16 जिलों में क्रियान्वित किया जा रहा है बालाघाट, डिंडोरी, झाबुआ, बड़वानी, टीकमगढ़, छतरपुर, सीहोर, धार, सागर, बेतूल, दमोह, छिंदवाड़ा, सिवनी, देवास, उमरिया और मंडला।
- ❖ **जाबालि योजना**
 - प्रारंभ - 2004
 - उद्देश्य - मध्यप्रदेश में बेड़िया, बाछड़ा और सांसी जनजाति की महिलाओं और बच्चों के उत्थान के लिए पुनर्वास एवं सहायता इस योजना में NGO द्वारा स्वैच्छिक संस्थाओं के माध्यम से बेड़िया, बाछड़ा और सांसी जनजाति की महिला और बच्चों के लिए आश्रम शाला स्थापित की जाती है।
 - प्रथम चरण में यह योजना रायसेन, राजगढ़, सागर, मुरैना, उज्जैन, छतरपुर एवं विदिशा सहित 9 जिलों में क्रियान्वित है।
- ❖ **मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना**
 - प्रारंभ - 24 जुलाई 2013
 - उद्देश्य - प्रदेश के नगरीय निकायों के अंदर आने वाले क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का विकास एवं सुधार करना।
 - लाभ - इस योजना के अंतर्गत सड़क शहरी यातायात, नगर को सुंदर बनाने, सामाजिक अधोसंरचना का विकास करने और उद्यान, धरोहर संरक्षण तथा पर्यटन संबंधी नवीन योजनाओं के लिए राशि प्रदान की जाती है।
 - इसमें 30% राशि राज्य सरकार द्वारा अनुदान और 70% ऋण उपलब्ध कराया जाता है।
- ❖ **मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना**
 - प्रारंभ - 3 सितंबर 2012
 - उद्देश्य - राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के 60 से अधिक आयु के व्यक्तियों को धार्मिक एवं तीर्थ स्थलों की निशुल्क यात्रा कराई जाती है।
 - इसके लिए निम्न तीर्थ स्थलों का चयन किया गया है - जगन्नाथपुरी, द्वारकापुरी, हरिद्वार, अमरनाथ, वैष्णो देवी, शिर्डी, तिरुपति बालाजी, अजमेर शरीफ, काशी, गया, अमृतसर, सम्मेद शिखर, श्रवणबेलगोला तथा बेलांगणी चर्च, करतारपुर गुरुद्वारा
- ❖ **मध्य प्रदेश पुलिस स्वास्थ्य सुरक्षा योजना**
 - प्रारंभ - 1 नवंबर 2013
 - उद्देश्य - प्रदेश के पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को समय पर इलाज करवाने के लिए।
 - लाभ - इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के प्रत्येक पुलिस कर्मचारी को रु. 50 प्रतिमाह अंशदान देना होगा।
 - इस योजना में पुलिस अधिकारी व कर्मचारी उसकी पत्नी और बच्चों को एक वित्तीय वर्ष में 8 लाख तक का इलाज प्रदेश के 30 और देश के 31 अस्पतालों में तुरंत शुरू हो सकेगा।
- ❖ **मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार योजना**
 - प्रारंभ - जुलाई 2011
 - उद्देश्य - प्रदेश के हृदय रोग से पीड़ित बच्चों का निशुल्क उपचार उपलब्ध कराना।
 - लाभ - इस योजनांतर्गत के हृदय रोग से पीड़ित बच्चों को निशुल्क उपचार प्रदेश सरकार द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।
- ❖ **सरदार वल्लभ भाई पटेल निशुल्क औषधि वितरण योजना**
 - प्रारंभ - 17 नवंबर 2012, जबलपुर से
 - उद्देश्य - प्रदेश के हर नागरिक को राज्य के समस्त शासकीय अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से निशुल्क दवाइयों का वितरण
- ❖ **मुख्यमंत्री कन्या अभिभावक पेंशन योजना**
 - प्रारंभ - 24 सितंबर 2012
 - उद्देश्य - प्रदेश के ऐसे माता पिता जिनकी आयु-60 वर्ष या उससे अधिक हो एवं जिनकी सिर्फ कन्या संतान हो उन्हें प्रतिमाह पेंशन उपलब्ध करवाना।
 - लाभ - इस योजना के तहत रु. 500/- प्रतिमाह की राशि पेंशन के रूप में दी जाती है, जो वृद्धावस्था पेंशन के अतिरिक्त है।
- ❖ **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना**
 - प्रारंभ - 01 अगस्त, 2014
 - उद्देश्य - समाज के हर वर्ग के युवाओं को अपना विनिर्माण उद्योग और सेवा उद्योग स्थापित करने का अवसर।
 - लाभ - प्रदेश के 18 से 40 वर्ष के 10 वी पास युवा इस योजना का लाभ ले सकेंगे 1000000/- रुपए से एक करोड़ तक की वित्तीय सहायता प्राप्त होगी।
- ❖ **मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना**
 - प्रारंभ - 1 अप्रैल 2013 प्रदेश के युवाओं को स्वयं का उद्योग शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना

- **लाभ** - इसके अंतर्गत तकनीकी डिप्लोमा एवं डिग्रीधारी युवकों 50,000/- से 25 लाख तक की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

❖ टंट्या भील स्वरोजगार योजना

- **प्रारंभ** - 22 मई 2013
- **उद्देश्य** - प्रदेश के आदिवासी युवाओं को स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना।
- **लाभ** - इस योजना में राज्य सरकार उच्च शिक्षित आदिवासी युवाओं को बैंकों के माध्यम से 50,000/- से 25 लाख तक का ऋण उपलब्ध करवाती है।

❖ स्वागतम लक्ष्मी योजना

- **प्रारंभ** - 24 जनवरी 2014
- **उद्देश्य** - देश में कन्या जन्म के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करना।

❖ हाथ ठेला एवं साइकिल रिक्शा चालक कल्याण योजना

- **प्रारंभ** - वर्ष 2009
- **लाभ** - इस योजना के अंतर्गत पंजीकृत सदस्यों को स्वरोजगार स्थापना हेतु मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना अंतर्गत सहायता राशि उपलब्ध कराई जाती है। इसके तहत प्रसूति सहायता, छात्रवृत्ति, विवाह सहायता, चिकित्सा सहायता, अनुग्रह राशि, जनश्री बीमा योजना आदि सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं।

❖ मुख्यमंत्री मानव श्रम रहित ई रिक्शा एवं-LED योजना

- **प्रारंभ** - जनवरी 2017 से
- **उद्देश्य** - शहरी गरीबों के शारीरिक श्रम को न्यूनतम कर उच्च आय अर्जित करने के लिए युक्तियुक्त अवसर प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री मानव रहित एवं योजना प्रारंभ की गई है।
- **लाभ** - इस योजना को मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना से अतिरिक्त घटक के रूप में घोषित किया गया है।

❖ मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना

- **प्रारंभ** - 2015 में
- **लाभ** - इसके अंतर्गत गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के लिए स्वरोजगार स्थापित करने के लिए रु. 50000/- तक के ऋण बैंक के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है।

❖ मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना

- **उद्देश्य** - किसी भी प्रकार की हिंसा से पीड़ित महिलाओं को यदि पारिवारिक सहायता नहीं मिलती तो जीवन यापन करने के सभी

रास्ते बंद हो जाते हैं ऐसी कठिन परिस्थितियों में परिवार एवं समाज में पुनः स्थापित करने हेतु पीड़ित महिला की आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोड़ा गया है। जिससे वह स्वयं के साथ साथ परिवार का भरण पोषण कर सकती है।

❖ नर्मदा नदी के दोनों तटों पर एक 1 किमी. की पट्टी तक फल पौध रोपण की योजना

- **प्रारंभ** - वर्ष 2016 -17
- **उद्देश्य** - शासन द्वारा मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी के संरक्षण एवं प्रदूषण मुक्त करने के साथ क्षेत्र के किसानों की आय बढ़ाने के लिए नदी के मध्य को केंद्र बिंदु मानकर दोनों तटों पर 1 किमी. की पट्टी तक निजी भूमि में फल पौध रोपण की योजना प्रारंभ की गई।

❖ मुख्यमंत्री मंडी हम्माल एवं तुलावटी सहायता योजना

- **उद्देश्य** - प्रदेश की कृषि उपज मंडी में हम्माल एवं तुलावटी के उत्थान के लिए यह योजना लागू की गई
- **लाभ** - इस योजना के अंतर्गत प्रसूति सहायता अधिकतम दो प्रसूति 15 दिवस की अकुशल (पुरुष/महिला) अकुशल मजदूरी 45 दिवस (महिला) की अकुशल मजदूरी, विवाह सहायता, छात्रवृत्ति, मेधावी छात्र पुरस्कार, चिकित्सा सहायता हेतु रु. 30000/- दुर्घटना में स्थाई अपंगता या मृत्यु की स्थिति में प्रांगण में कार्य करते समय हुई दुर्घटना राशि उपलब्ध कराई जाती है।

❖ राष्ट्रीय कृषि बाजार योजना (ई-नाम)

- भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजना को भोपाल की करोड मंडी में दिनांक 14-4-2017 को पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारंभ किया गया।
- पहले चरण में प्रायोगिक तौर पर - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना, झारखण्ड, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश की 21 थोक मंडियों में किसान अपनी 25 जिंस के बिक्री कर सकेंगे।

❖ बाल शक्ति योजना

- **उद्देश्य** - प्रदेश में जन्म से 5 वर्ष के बच्चों में कुपोषण की दर लगभग 60% है जो अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है एवं 0 से 5 वर्ष के बच्चों की मृत्यु का मुख्य कारण कुपोषण है। बच्चों में कुपोषण को दूर करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य विभाग द्वारा बाल शक्ति योजना संचालित की जा रही है।

❖ मुख्यमंत्री (पथ पर बिक्री करने वाले) शहरी गरीबों के लिए कल्याण योजना

- **प्रारंभ** - वर्ष 2012

- **उद्देश्य** - प्रदेश में शहरी फेरीवालों के कल्याण के लिए मुख्यमंत्री पद पर बिक्री करने वाली शहरी गरीबों के लिए कल्याण योजना से लागू की गई है।
- **लाभ** - इस योजना के अंतर्गत पंजीकृत सदस्यों को स्वरोजगार स्थापना हेतु मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना अंतर्गत सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इसके अंतर्गत प्रसूति सहायता, छात्रवृत्ति, विवाह सहायता, चिकित्सा सहायता, अनुग्रह सहायता, जनश्री बीमा योजना आदि सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं भी प्रदान की जाती है।

❖ मुख्यमंत्री स्वरोजगार अंतर्गत केश शिल्पी कल्याण योजना

- **प्रारंभ** - वर्ष 2013
- **उद्देश्य** - राज्य शासन द्वारा प्रदेश के सभी शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में केश शिल्पी का कार्य कर रहे केश शिल्पी कल्याण योजना की गई है।
- **लाभ** - स्वरोजगार स्थापना हेतु मुख्यमंत्री आर्थिक कल्याण योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना अंतर्गत सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

❖ अटल बिहारी वाजपेई बाल आरोग्य एवं पोषण मिशन

- बच्चों के कुपोषण की गंभीर चुनौतियों का सामना करने के लिए यह योजना प्रारंभ की गई है

❖ वन स्टॉप सेंटर सखी योजना

- **उद्देश्य** - सभी प्रकार की हिंसा से पीड़ित महिलाओं और बालिकाओं को एक ही छत के नीचे तत्काल आपातकालीन एवं गैर आपातकालीन सुविधाएं जैसे अस्थाई आश्रय, पुलिस डेस्क, विधि सहायता, चिकित्सा, विधिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक परिवर्तन आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी।

❖ बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ योजना

- **प्रारंभ**- 22 जनवरी 2015
- भारत सरकार की मंशा अनुसार राज्य के चार जिलों ग्वालियर दतिया मुरैना एवं भिंड में यह योजना प्रारंभ की गई थी, वर्ष 2016 से रीवा एवं टीकमगढ़ जिले भी इसमें शामिल किए गए हैं।

❖ मुख्यमंत्री युवा स्वाभिमान योजना

- **प्रारंभ** - 26 जनवरी 2019 को घोषणा
- **उद्देश्य** - शहरी बेरोजगार युवाओं को तात्कालिक रोजगार उपलब्ध कराना।
- **लाभ** - शहरी क्षेत्र के 21 से 30 वर्ष की आयु के युवाओं को 100 दिन का तात्कालिक रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा।

❖ आपकी सरकार आपके द्वार योजना

- **प्रारंभ** - 1 अगस्त 2019
- **उद्देश्य** - नागरिकों की समस्याओं तथा शिकायतों का निवारण, प्रशासन और शासन को ग्रामीण नागरिकों के करीब ले जाना।

❖ मुख्यमंत्री आवास मिशन

- **प्रारंभ** - 11 सितंबर 2019 को झाबुआ से
- **उद्देश्य** - मध्य प्रदेश के सभी शहरों में गरीबों को आवासीय भूमि का पट्टा एवं पक्का आवास उपलब्ध कराना।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा चलाए गए प्रमुख अभियान

❖ जलाभिषेक अभियान

- **प्रारंभ** - 7 अप्रैल 2006
- **उद्देश्य** - इस अभियान के अंतर्गत सतही जल संग्रहण और भूजल संवर्धन के कार्य तकनीकी व वैज्ञानिक आधार पर सरकार और समाज के तालमेल से जन अभियान के रूप में क्रियान्वित किए जा रहे हैं।

❖ बेटी बचाओ अभियान

- **प्रारंभ** - 5 अक्टूबर 2011 दतिया से प्रारंभ
- **उद्देश्य** - मध्यप्रदेश में घटते शिशु लिंगानुपात के सुधार हेतु कन्या भ्रूण हत्या पर पूर्ण रूप एवं कन्या शिशु जन्म के प्रोत्साहन हेतु मध्य प्रदेश में जन जागरण हेतु क्रियान्वित किया जा रहा है।

❖ अटल ज्योति अभियान

- **प्रारंभ** - 20 जनवरी 2013 जबलपुर से
- **उद्देश्य** - मध्य प्रदेश के सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे एवं कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे बिजली उपलब्ध कराई जा रही है।

❖ ममता अभियान

- **प्रारंभ** - 11 अप्रैल 2013 से
- **उद्देश्य** - मध्यप्रदेश में बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिए यह अभियान चलाया जा रहा है।

❖ आस्था अभियान

- **प्रारंभ** - 11 अप्रैल 2013 से
- **उद्देश्य** - मध्यप्रदेश में कुष्ठरोग, टी.बी., मलेरिया एवं अंधत्व रोग के उपचार के लिए यह अभियान चलाया जा रहा है।

❖ नर्मदा शुद्धिकरण अभियान

- **प्रारंभ** - 17 फरवरी 2013 अमर कंटक से

- **उद्देश्य** - नदी को प्रदूषण से दूर करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है।

❖ गौरवी अभियान

- **प्रारंभ** - 16 जून 2014
- **उद्देश्य** - यौन शोषण की शिकार लड़कियों और महिलाओं के उत्थान के लिए वन स्टॉप क्राइसिस सेंटर खोले जाएंगे, पहला वन स्टॉप सेंटर भोपाल में खोला गया है।

❖ लाडो अभियान

- **प्रारंभ** - 2014
- **उद्देश्य** - प्रदेश में बाल विवाह को रोकने के लिए चलाया जा रहा है।
- लाडो अभियान को प्रधानमंत्री जी द्वारा वर्ष 2014 का प्रधानमंत्री लोकसेवा उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मध्य प्रदेश का बजट 2019 -20

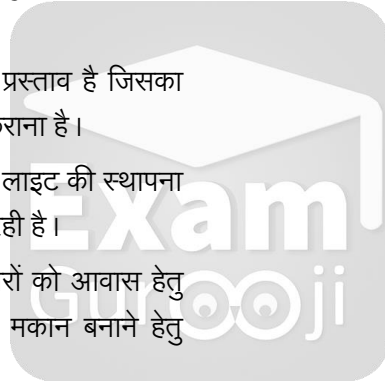
- मध्यप्रदेश शासन का बजट 2019 20 वित्त मंत्री श्री तरुण भनोट के द्वारा 10 जुलाई 2019 को विधानसभा में प्रस्तुत किया गया।
- देश में बेरोजगारी की दर बढ़कर सिक्स पॉइंट वन प्रतिशत पहुंच गई है जो कि संभवत 45 वर्ष में अधिकतम है।
- नीति आयोग द्वारा जारी विश्लेषण के अनुसार प्रदेश में गरीबों का स्तर 29 राज्यों में से 27 में स्थान पर है।
- प्रदेश में संशोधित नवीन उद्योग नीति में प्रदेश के बेरोजगारों के लिए 70% रोजगार स्थाई निवासियों को दिए जाने का प्रावधान है।
- निवेश प्रोत्साहन में लैंड पूलिंग पॉलिसी का पायलट प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है।
- औद्योगिक विकास तथा निवेश संवर्धन के लिए वर्तमान उद्योग संवर्धन नीति में आमूलचूल परिवर्तन के साथ उद्योग संवर्धन नीति 2019 का प्रारूप तैयार किया गया है।
- प्रदेश में उच्च विचार नवीन टैक्सटाइल गारमेंट पार्क एवं एक कन्फेक्शनरी पार्क स्वीकृत किया गया है।
- Magnificent Madhya Pradesh का आयोजन दिनांक 18 से 20 October 2019 तक इंदौर में किया जायेगा।
- महिलाओं के स्वरोजगार के लिए मुख्यमंत्री ई रिक्शा योजना प्रारंभ की जाएगी।
- प्रदेश के विशेष उत्पाद जैसे चंदेरी एवं महेश्वर की साड़ियां धार का बाग प्रिंट कपड़ा भोपाल के बटुए छतरपुर एवं टीकमगढ़ के पीतल के उत्पाद रतलाम के सेव मुरैना की गजक भिंड के पेड़े सागर की

चिरौंजी बर्फी मालवा के चूरमा लड्डू बाटी बुंदेलखंड की मावा जलेबी की ब्रांडिंग और मार्केटिंग के लिए प्रस्ताव किया गया है।

- कृषि योजनाओं के लिए कुल 22736 करोड़ का बजट प्रावधान प्रस्तावित किया गया है जो विगत वर्ष के बजट अनुमान से 145% अधिक है।
- जय किसान फसल ऋण माफी योजना के प्रथम चरण में 2000000 किसानों के साथ हजार करोड़ रुपए माफ किए गए हैं जबकि द्वितीय चरण में 8000 करोड़ का प्रावधान किया गया है।
- इंदिरा किसान ज्योति योजना के अंतर्गत 10 हॉर्स पावर तक के कृषि पंप कनेक्शनों के लिए बिजली की दर प्रतिवर्ष ₹700 एवं घरेलू उपभोक्ताओं के लिए इंदिरा गृह ज्योति योजना प्रारंभ की गई है। जिसमें 100 यूनिट की खपत का बिल ₹100 प्रतिमाह किया गया।
- प्रदेश में कृषि सलाहकार परिषद का गठन किया जाएगा जिसका उद्देश्य किसान प्रतिनिधियों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना समस्याओं के समाधान एवं किसानों के लिए योजनाओं के सुचारू क्रियान्वयन की संस्थागत व्यवस्था करना।
- कृषक बंधु योजना जिसका उद्देश्य प्रत्येक वर्ष नवीन कृषक बंधु को चयनित कर उन्हें प्रशिक्षित करना।
- मुख्यमंत्री बागवानी एवं खाद्य प्रसंस्करण योजना जिसमें 100 करोड़ का प्रावधान है इसका उद्देश्य बागवानी एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि में आए बढ़ाना हैं।
- किसान क्रेडिट कार्ड का लाभ अब किसानों के अलावा पशु पालकों और मछुआरों को भी प्राप्त होगा।
- प्रदेश में प्रथम बार ग्वालियर तथा जबलपुर में डे साइंस एवं खाद्य प्रसंस्करण महाविद्यालय प्रारंभ किए जाने का प्रस्ताव है।
- मुख्यमंत्री सुषेण संजीवनी योजना जिसका उद्देश्य प्रदेश के अधिसूचित क्षेत्रों की आम जनता को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना एवं योग्य चिकित्सकों की पदस्थापना करना है।
- भोपाल इंदौर ग्वालियर रीवा तथा जबलपुर में बर्न यूनिट तथा स्कूल सेंटर फॉर ह्युमन रिसोर्स डेवलपमेंट प्रारंभ किया जाएगा।
- भोपाल में आधुनिक तकनीक से सुसज्जित राज्य स्तरीय पुस्तकालय का निर्माण किया जाएगा।
- सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में ₹600 प्रतिमा कर दिया गया।
- कन्या विवाह एवं निकाह योजना में सरकारी सहायता की राशि 51 हजार कर दी गई है।
- आस्थान योजना जिसका उद्देश्य आदिवासियों के सांस्कृतिक के स्थानों का संरक्षण करना उनके कुल ग्राम देवी देवताओं के स्थानों में निर्मित देवस्थान के निर्माण जीर्णोद्धार सामुदायिक भवन निर्माण

सभा कक्ष पेयजल स्नानागार और शौचालय आदि की व्यवस्था करना है।

- 1 मित्र सॉफ्टवेयर इसका उद्देश्य आदिवासी वर्ग के जिन दावेदारों के वन अधिकार दावे निरस्त किए गए थे उनके बेदखली की कार्रवाई को स्थगित कर इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से अब इन प्रकरणों का पुनरीक्षण किया जाएगा।
- छिंदवाड़ा में नवीन विश्वविद्यालय प्रारंभ किया जाएगा।
- श्रमिकों के कल्याण हेतु नया सवेरा कार्यक्रम लागू किया जाएगा जिसमें वंचित वर्ग के जीवन स्तर को नए आयाम देने की व्यवस्था की जाएगी।
- रीजनल कनेक्टिविटी के लिए दतिया रीवा उज्जैन और छिंदवाड़ा में वायु सेवा की शुरुआत की जाएगी।
- लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों सहित सभी गैर कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे एवं कृषि उपभोक्ताओं को औसतन 10 घंटे प्रतिदिन विद्युत प्रदाय की जा रही है।
- वर्तमान में 31 बृहद 57 मध्यम संता 441 लघु सिंचाई योजनाएं निर्माणाधीन है।
- जल का अधिकार अधिनियम लागू होने का प्रस्ताव है जिसका उद्देश्य संरक्षित एवं पीने योग्य पानी उपलब्ध कराना है।
- इंदौर में विद्युत खर्च कम करने के लिए सोलर लाइट की स्थापना एवं ग्रीन बांड जारी करने की शुरुआत की जा रही है।
- नगरों में निवास करने वाले आवास ही परिवारों को आवास हेतु साडे 400 वर्ग फीट का पट्टा तथा उस पर मकान बनाने हेतु 250000 की राशि दी जाती है।
- समेकित और समृद्ध जल संरक्षण और प्रबंधन के लिए नदी पुनर्जीवन कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है।
- इस वर्ष 14 से 19 नवंबर के मध्य देश भक्ति पर केंद्रित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।
- प्रदेश में वन्यजीवों एवं प्रकृति के मध्य विचरण करने हेतु डुमना नेचर सफारी प्रारंभ की जाएगी।
- महिला पुलिस कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु रानी दुर्गावती प्रशिक्षण संस्थान प्रारंभ किया जाएगा।



म. प्र. में प्रस्तावित अनुसन्धान संस्थान	
पहला नर्सिंग पी.एच.डी.शोध केन्द्र	इंदौर
राष्ट्रीय कामधेनु ब्रीडिंग सेंटर	किरतपुर, इटारसी
एकलव्य तीरंदाजी अकादमी	जबलपुर
प्लास्टिक पार्क निर्माणाधीन	तामोटा, रायसेन
गन्ना अनुसंधान केन्द्र	बोहनी नरसिंहपुर
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT)	भोपाल
राष्ट्रीय यातायात प्रबंध एवं शोध संस्थान	भोपाल
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान विश्वविद्यालय	भोपाल
राज्य स्तरीय ज्ञान प्रबंध केन्द्र	भोपाल
जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रबंध केन्द्र	भोपाल
राष्ट्रीय अभिशासन एवं नगरीय प्रबंध संस्थान	भोपाल
इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट (IIITM)	भोपाल
उपपुलिस अधीक्षक (DSP) ट्रेनिंग हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान	भोपाल
अटल बिहारी वाजपेयी संस्कृति एवं कला केन्द्र)	मुरैना
राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान	शिवपुरी
जयप्रकाश नारायण सेंटर फॉर एक्सीलेस इन ह्यूमेनिटी	स्थान तय नहीं

म. प्र. के प्रमुख अनुसन्धान संस्थान	
भोपाल में	
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च संस्थान	भोपाल
एकीकृत पुलिस संस्थान	भोपाल
एनिमल सोरोगेसी लैब	भोपाल
जनजाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान	भोपाल
नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी	भोपाल
अटल बिहारी लोक प्रशासन संस्थान	भोपाल
स्वान प्रशिक्षण केन्द्र	भोपाल
आपदा प्रबंध संस्थान (देश का पहला)	भोपाल
भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (IIFM)	भोपाल
राष्ट्रीय विधि संस्थान	भोपाल
स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन मैनेजमेंट एण्ड ट्रेनिंग	भोपाल
केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान	भोपाल
राज्य शिक्षण संस्थान	भोपाल
राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद	भोपाल
सेन्टर फॉर रिसर्च एण्ड इण्डस्ट्रीयल स्टॉफ परफार्मेंस (क्रिप्स)	भोपाल
आईटी. इनेबेल्ड सर्विसेस प्रशिक्षण केन्द्र	भोपाल

हाई सिक््योरिटी एनीमल लेबोरेटरी	भोपाल
राष्ट्रीय तकनीकी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान	भोपाल
मध्यप्रदेश नरहोना प्रशासनिक अकादमी	भोपाल
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोइल साइंस	भोपाल
सेण्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग (CIAE) (1955)	भोपाल
मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी)	भोपाल
यातायात प्रशिक्षण संस्थान	भोपाल
इंदौर में	
लेसर किरण ऊर्जा अनुसंधान केन्द्र	इंदौर
पुलिस वायरलेस प्रशिक्षण महाविद्यालय	इंदौर
आम्स एण्ड प्रैक्टिस सेन्टर	इंदौर
राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र	इंदौर
भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM)	इंदौर
इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी आईआईटी)	इंदौर
थलसेना की प्रशिक्षण कमाण्ड (1991 में शामिल)	महू, इंदौर
डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान	महू, इंदौर
मध्यप्रदेश का पहला वाइल्ड लाइफ अवेयरनेस सेन्टर	रालामंडल, इंदौर
ग्वालियर में	
इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट	ग्वालियर
एडव्होकेट्स कान्ट्रीन्यूइंग लीगल एजुकेशन इंस्टीट्यूट	ग्वालियर
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंध संस्थान	ग्वालियर
भारतीय पर्यटन एवं पर्यटन प्रबंधन संस्थान	ग्वालियर
पटवारी प्रशिक्षण केन्द्र	ग्वालियर.
मध्यप्रदेश भू-राजस्व एवं बंदोबस्त प्रशिक्षण संस्थान	ग्वालियर.
जबलपुर में	
वन्यजीव फोरेंसिक एवं स्वास्थ्य केन्द्र	जबलपुर
ऊष्ण कटिबंधीय वन संस्थान	जबलपुर
मध्यप्रदेश वन अनुसंधान संस्थान	जबलपुर
महात्मा गाँधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान	जबलपुर
रेडीमेड गारमेन्ट एवं फैशन डिजाइन क्लस्टर	जबलपुर
नव आरक्षक/ प्लाटून कमाण्डर प्रशिक्षण संस्थान	जबलपुर
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी अभिकल्पना एवं विनिर्माण संस्थान	जबलपुर
राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान	जबलपुर
भारत रत्न भीमराव आम्बेडकर दूरसंचार प्रशिक्षण संस्थान	जबलपुर
राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (1989)	जबलपुर
अंतर्राष्ट्रीय मक्का व गेहूं अनुसंधान केन्द्र	खमरिया, जबलपुर

छिंदवाडा में	
प्रदेश का पहला जैन शोध दर्शन संस्थान	छिंदवाडा
वानिकी अनुसंधान	छिंदवाडा
मानव विकास संस्थान	छिंदवाडा
ड्राइवर ट्रेनिंग सेंटर	सालिमेटा लिंगा गांव, छिंदवाडा
होशंगाबाद में	
मध्यप्रदेश गेहूँ अनुसंधान केन्द्र	पवारखेडा, होशंगाबाद
संजय गाँधी युवा नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास प्रशिक्षण संस्थान	पंचमढी
थल सेना शैक्षिक प्रशिक्षण कॉलेज व केन्द्र	पंचमढी
सागर में	
अपराध अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान	सागर
फोरेन्सिक साइन्स लेबोरेटरी	सागर
जवाहरलाल नेहरू पुलिस अकादमी (1986)	सागर
गुना में	
भू-उपग्रह दूरसंचार अन्वेषण केन्द्र	गुना
फुटवेयर डिजाइन और विकास संस्थान (2013)	हरीपुर, गुना
अन्य शहरों में	
वाहन कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान	रीवा
अंगूर अनुसंधान केन्द्र	रतलाम
महिला एवं बाल विकास प्रशिक्षण संस्थान	बैतूल
तुलसी शोध संस्थान	चित्रकूट
कपास अनुसंधान केन्द्र	खरगोन
प्राच्य विद्या शोध प्रतिष्ठान	उज्जैन
ग्रामीण पंचायत प्रशिक्षण संस्थान	अमरकंटक

मध्यप्रदेश के नगरों के नवीन नाम एवं प्राचीन नाम	
इंदौर	इन्द्रपुर इन्दूर
ग्वालियर	गोपांचल
भोपाल	भोजपाल, भूपाल
उज्जैन	आवन्तिका, उज्जयिनी
मंदसौर	दशपुर
दतिया	दिलीपनगर
धार	धारानगरी
विदिशा	भेलसा/बेसनगर
महेश्वर	महिष्मती
आजाद नगर	भाबरा
डा. भीमराव अम्बेडकर नगर	महू
माण्डू	शादियाबाद, माण्डवगढ़
सांची	काक नाद

जबलपुर	त्रिपुरी
बुरहानपुर	खानदेश
अनूप	निमाड़
ग्वालियर	वत्स
खजुराहो	खजरुवाहक, जेजाकभुक्ति
मंडला	गोंडवाना
कटनी	मुड़वारा
सिरपुर	श्रीपुरी
दतिया	दिलीपनगर
नरवर	नलपुर
विदिशा	रेवा/भाथा
सोहागपुर	विश्वपुरी
पचमढी	पंचालगढ़
निमाड़	अनूप
दमोह	तुंडीकेर
शाजापुर	शजहांपुर
सिहोर	निजामत ए मश्रीक, सिद्धपुर

मध्यप्रदेश के नगरों/ स्थलों की प्रसिद्धि के कारण	
महेश्वर	साडियाँ, अहिल्या किला
माण्डू	खूबसूरत महलो के कारण
उज्जैन	महाकाल का मंदिर, जंतर मंतर, सिंहस्थ मेला, कालियादेह
भोपाल	राजधानी, झीले
इंदौर	उद्योग नगरी
खजुराहो	कलात्मक मंदिरों के कारण
मलाजखंड	ताँबे की खदानों के कारण
पचमढी	एकमात्र हिलस्टेशन
सांची	बौद्ध स्तूप
मंदसौर	पशुपतिनाथ का मंदिर
नेपानगर	कागज कारखाना
इटारसी	रेलवे जंक्शन
रीवा	सफेद शेर
ग्वालियर	किला व मंदिर, जिब्राल्टर ऑफ इंडिया
चंदेरी	किला एवं साडियाँ
बावनगजा बड़वानी	आदिनाथ की 52 गज की मूर्ति
ओंकारेश्वर	ज्योतिर्लिंग
देवास	बैंक नोट प्रेस
अमलाई	पेपर मिल
खरगोन	सिंगाजी को मेला, कालुजी का मेला (खरगोन के पिपल्या खुर्द मे)
खरगोन	सफेद सोना कपास के कारण
भीमबेटका	प्राचीन शैलचित्र
सिंगरौली	कोयला खदानें

पन्ना	हीरा की खदानें
भेड़ाघाट	संगमरमर की चट्टानें
सतना	भरहुत स्तूप
धार	बाघ की गुफाएँ

म. प्र. के प्रमुख संगठनों के मुख्यालय	
भोपाल में	
मध्यप्रदेश की राजधानी	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य सचिवालय	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य संचालनालय	भोपाल
मध्यप्रदेश निर्वाचन आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश सूचना आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजाति आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश पिछड़ा वर्ग आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य अल्पसंख्यक आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश कृषि उद्योग विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश कृषि विपणन बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश लोकायुक्त कार्यालय	भोपाल
इको पर्यटन विकास बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश बीज तथा फार्म विकास निगम (1980)	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य उद्योग निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश लघु उद्योग निगम (1961)	भोपाल
मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम (1965)	भोपाल
मध्यप्रदेश वस्त्रोद्योग मण्डल (1972)	भोपाल
मध्यप्रदेश माइनिंग कॉर्पोरेशन	भोपाल
मध्यप्रदेश एग्री इण्डस्ट्रीज कॉर्पोरेशन	भोपाल
मध्यप्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश हैण्डनालय संचालन (1976)	भोपाल
मध्यप्रदेश निर्यात निगम मर्यादित (1977)	भोपाल
मध्यप्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम (1981)	भोपाल
मध्यप्रदेश महिला वित्त एवं विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य समाज कल्याण बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश गौपालन एवं पशुपालन संवर्द्धन बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य खनिज निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश चर्म विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य योजना आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम	भोपाल
ध्रुपद संगीत अकादमी	भोपाल
प्रशासनिक अकादमी	भोपाल
माटी कला बोर्ड ।	भोपाल

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिक परिषद्	भोपाल
मध्यप्रदेश मानवाधिकार आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश उपभोक्ता आयोग	भोपाल
मध्यप्रदेश सड़क परिवहन निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड	भोपाल
उद्यमिता विकास केन्द्र	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य बीज एवं फार्म विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश श्रम कल्याण मण्डल	भोपाल
मध्यप्रदेश मदरसा बोर्ड	भोपाल
नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण	भोपाल
मध्यप्रदेश राज्य भूमि विकास निगम	भोपाल
मध्यप्रदेश एग्री इण्डस्ट्रीज कॉर्पोरेशन	भोपाल
रेलवे भर्ती बोर्ड	भोपाल
साई (SAI) स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया का क्षेत्रीय कार्यालय	गौरागांव, भोपाल
जबलपुर में	
मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय	जबलपुर
मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल का मुख्यालय	जबलपुर
मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण	जबलपुर
ग्वालियर में	
मध्यप्रदेश राजस्व न्यायालय	ग्वालियर
मध्यप्रदेश महालेखाकार कार्यालय	ग्वालियर
मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय खण्डपीठ	इंदौर व ग्वालियर
इंदौर में	
मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग	इंदौर
मध्यप्रदेश राज्य भण्डार गृह निगम	इंदौर
मध्यप्रदेश वित्त निगम	इंदौर
मध्यप्रदेश वस्त्रोद्योग निगम (1970)	इंदौर
मध्यप्रदेश बैडमिन्टन एसोसिएशन (वर्तमान में)	इंदौर

म. प्र. की राजधानी	
व्यावसायिक राजधानी	इंदौर
खेल राजधानी	इंदौर
ऊर्जा राजधानी	सिंगरौली
सांस्कृतिक राजधानी	जबलपुर
पर्यटन राजधानी	पचमढ़ी
संगीत राजधानी	मैहर
ग्रीष्मकालीन राजधानी	पचमढ़ी
धार्मिक राजधानी	उज्जैन
न्यायिक राजधानी	जबलपुर

म. प्र. के नगर व उनके उपनाम	
संगमरमर नगरी मार्बल सिटी	जबलपुर
मंदिरों का नगर मूर्तियों का नगर	उज्जैन
शिल्प कला का तीर्थ	खजुराहो
बौद्ध जगत की पवित्र नगरी	सांची
मध्य प्रदेश का लखनऊ	सिवनी
मैगनीज नगरी	बालाघाट
चुना नगरी	कटनी
सिटी ऑफ जॉय	मांडू
गेहूं का भंडार	मालवा
तानसेन नगरी	ग्वालियर
संगीत नगरी	मैहर
झीलों की नगरी	भोपाल
पर्यटकों का स्वर्ग	पचमढ़ी
मध्यप्रदेश का डेट्राइट	पीथमपुर
मंगल ग्रह की जन्म भूमि	उज्जैन
अहिल्या नगरी	इंदौर
मध्यप्रदेश का सोमनाथ	भोजपुर
सुनहरे जिले	खंडवा एवं खरगोन
गंजेड़ियों का स्वर्ग	बुरहानपुर
मध्यप्रदेश की गंगा (प्रदूषण के आधार पर)	बेतवा
मालवा की गंगा	क्षिप्रा
सफेद शेर की भूमि	रीवा
कपड़ों का शहर	इंदौर
महलों की नगरी	मांडू
भोज नगरी	धार
डायमंड सिटी	पन्ना
मध्य प्रदेश का स्विट्जरलैंड	सागर
मध्य प्रदेश का मोगली लैंड	पेंच
बागियों का गढ़	भिंड - मुरैना
मल्हार नगरी	इंदौर
आंवला जिला	पन्ना

राज्य निर्वाचन आयोग	निर्वाचन भवन
राज्य योजना आयोग	विंध्याचल भवन
नई दिल्ली स्थित मध्यप्रदेश भवन	मध्याचल भवन
राज्यपाल निवास	राजभवन

म. प्र. के पार्क	
डिफेंस पार्क (प्रस्तावित)	पीथमपुर
डायमंड पार्क (प्रस्तावित)	इंदौर
प्लास्टिक पार्क (प्रस्तावित)	तामोट रायसेन
पहला डाटा सेंटर पार्क (प्रस्तावित)	इंदौर
देश का दूसरा महिला पार्क (प्रस्तावित)	इंदौर
इको टूरिज्म पार्क (प्रस्तावित)	रीवा
बायोटेक्नोलॉजी पार्क (प्रस्तावित)	इंदौर
अपैरल पार्क	इंदौर
जेम्स एंड ज्वेलरी पार्क	इंदौर
जैव प्रौद्योगिकी पार्क	देपालपुर, इंदौर
पहला सौर ऊर्जा पार्क	गणेशपुर राजगढ़
स्टोन पार्क	ग्वालियर व कटनी
मसाला पार्क	छिंदवाड़ा
निर्यात उर्वरक औद्योगिक पार्क	देवास
पहला आईटी पार्क	भोपाल
जैव ऊर्जा पार्क	रीवा
पहला पुरातत्व पार्क	संग्रामपुर दमोह
पहला दिव्यांग पार्क	होशंगाबाद

म. प्र. के प्रमुख कार्यालय एवं भवन	
राज्य का पुराना विधानसभा भवन	मिंटो हॉल
राज्य का नवीन विधानसभा भवन	इंदिरा गांधी विधानसभा भवन
राज्य का सचिवालय	वल्लभ भवन
राज्य का संचालनालय	सतपुड़ा भवन
राज्य विद्युत मंडल	शक्ति भवन
राज्य विद्युत नियामक आयोग	ऊर्जा भवन
राज्य मानवाधिकार आयोग	पर्यावास भवन
मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम	पुस्तक भवन

मध्यप्रदेश शासन द्वारा दिए जाने वाले राष्ट्रीय सम्मान

क्र.	नाम	स्थापना वर्ष	मानदेय	विधा	अंतिम सम्मान
1.	महात्मा गांधी सम्मान	1995	10 लाख	गांधी विचार दर्शन (संस्था हेतु)	लोकायत, पुणे (2018)
2.	कबीर सम्मान	1986	3 लाख	भारतीय भाषाओं की कविता के लिए	हिंदी कवि नरेश सक्सेना (2017) तेलुगु कवि गोरटी वेकन्ना (2018)
3.	तानसेन सम्मान	1980	2 लाख	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत	सितार वादक मंजू मेहता (2018)
4.	कालिदास सम्मान	1980	2 लाख	शास्त्रीय संगीत, रूपंकर कला, रंगकर्म व शास्त्रीय नृत्य	अंजलि इला मेनन, दृश्य कला (2018)
5.	तुलसी सम्मान	1983	2 लाख	आदिवासी लोक व पारम्परिक कलाओं के लिए, पुरुष कलाकार (2 वर्ष प्रदर्शनकारी एवं 1 वर्ष रूपंकर कलाओं के लिए)	कैलाश चन्द्र शर्मा, जयपुर (2017) विक्रम यादव (2018)
6.	लता मंगेशकर सम्मान	1984	2 लाख	संगीत निर्देशन एवं पार्श्व गायन	कृष्णा वर्मा (2017) शांति देवी झा (2016)
7.	इकबाल सम्मान	1986	2 लाख	उर्दू साहित्य के लिए	शम्सुर्रहमान फारुखी (2017) गजनफर अली (2018)
8.	मैथिली शरण गुप्त सम्मान	1987	2 लाख	हिंदी साहित्य के लिए	राजेश जोशी (2017) मंजूर एहतेशाम (2018)
9.	देवी अहिल्या सम्मान	1996	2 लाख	आदिवासी लोक व पारम्परिक कलाओं के लिए (महिला कलाकार)	कृष्णा वर्मा, उज्जैन (2017) शांतिदेवी झा, बिहार (2018)
10.	किशोर कुमार सम्मान	1997	2 लाख	अभिनय, पटकथा, गीत लेखन, निर्देशन	प्रियदर्शन, निर्देशन (2017) वहीदा रहमान, अभिनय (2018)
11.	शरद जोशी सम्मान	1992	2 लाख	हिंदी व्यंग्य, ललित निबन्ध, रिपोर्ट्स, डायरी, पत्र आदि	व्यंग्यकार यशवंत व्यास (2017) टीवी पत्रकार एवं लेखक-विचारक रवीश कुमार (2018)
12.	कवि प्रदीप सम्मान	2012	2 लाख	मंचीय कविता के लिए	अशोक चक्रधर (2018)
13.	नानाजी देशमुख सम्मान	2012	1 लाख	सामाजिक, सांस्कृतिक समरसता, उत्थान, परिष्कार, आध्यात्म, परंपरा, समाज एवं विकास तथा संस्कृति हेतु व्यक्ति (पुरुष अथवा स्त्री) एवं संस्था के लिए	सुयश चेरिटेबल ट्रस्ट पुणे (2012)
14.	कुमार गन्धर्व सम्मान	1992	1.25 लाख	शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन, वादन एवं नृत्य हेतु युवा कलाकार	सितारवादक निलाद्री कुमार (2018)
15.	राजा मानसिंह तोमर सम्मान	2011	1 लाख	संगीत, संस्कृति एवं कला के संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था के लिए	श्री संकट मोचन प्रतिष्ठान, वाराणसी (2017) नटरंग प्रतिष्ठान, दिल्ली (2018)
हिंदी भाषा के विकास में योगदान के लिए					
16.	सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान	2015	1 लाख	हिंदी सॉफ्टवेयर, सर्व इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजिटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजिटल ऑडियो-विसुअल एडिटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान	डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच, गुरुग्राम (2018)

मध्य प्रदेश के पुरस्कार व सम्मान

17.	निर्मल वर्मा सम्मान	2015	1 लाख	भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिन्दी के विकास में अमूल्य योगदान	
18.	फादर कामिल बुल्के सम्मान	2015	1 लाख	विदेशी मूल के व्यक्ति के हिन्दी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान	
19.	गुणाकर मुले सम्मान	2015	1 लाख	हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य पुस्तकों के लिए लेखन	प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल (2018)
20.	हिन्दी सेवा सम्मान	2015	1 लाख	अहिन्दी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को लेखन-सृजन से हिन्दी की समृद्धि के लिए योगदान	चंद्रकान्त पाटिल, पुणे (2018)

राज्य स्तरीय शिखर सम्मान

क्र.	नाम	स्थापना वर्ष	मानदेय	विधा
1.	राज्य स्तरीय शिखर सम्मान	1980	1 लाख	साहित्य, रूपंकर कलाएँ, प्रदर्शनकारी कलाएँ (स्थापना - 1980), नृत्य, नाटक, संस्कृत, उर्दू, संगीत, दुर्लभ वाद्य वादन आदिवासी एवं लोक कला (स्थापना - 2016)

मध्य प्रदेश साहित्य परिषद के पुरस्कार

अखिल भारतीय सम्मान		रामविलास शर्मा पुरस्कार	लेखक की श्रेष्ठ पहली कृति
भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार	कविता	दुष्यंत कुमार पुरस्कार	35 वर्ष से कम आयु के लेखक की पहली कृति
वीर सिंह देव पुरस्कार	उपन्यास	शरद जोशी पुरस्कार	व्यंग
गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार	कहानी	राजेंद्र माथुर पुरस्कार	रेखा चित्र, संस्मरण, यात्रा, आत्मकथा, पत्र, रिपोतार्ज
सेठ गोविंददास पुरस्कार नाटक	एकांकी	ईसुरी पुरस्कार	लोकभाषा कृति
रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार	आलोचना	रविशंकर शुक्ल पुरस्कार	बाल साहित्य
पदम लाल पुन्ना लाल बख्शी पुरस्कार	व्यंग, ललित निबंध, स्मरण, रेखाचित्र, यात्रा, आत्मकथा, डायरी, पत्र रिपोतार्ज	ताम्रे पुरस्कार	मराठी साहित्य
प्रादेशिक पुरस्कार		अनिल कुमार पुरस्कार	प्रदेश की लघु पत्रिका
माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार	कविता		
बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार	गीत प्रबंध		
सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार	कहानी		
विश्वनाथ सिंह पुरस्कार	उपन्यास		
नंददुलारे वाजपेई पुरस्कार	आलोचना		
हरि कृष्ण प्रेमी पुरस्कार	नाटक, एकांकी		
मुकुटधर पांडेय पुरस्कार	सृजनात्मक चिंतन, ललित निबंध		
माधवराव सप्रे पुरस्कार	प्रदेश की विभूति, स्थान, इतिहास पर लिखी कृति		

प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान			
सम्मान	स्थापना	पुरस्कार राशी	विधा
अल्पसंख्यक वर्ग सेवा पुरस्कार			
शहीद अशफाक उल्ला खान पुरस्कार	2012	1 लाख	अल्पसंख्यक वर्ग की उत्कृष्ट समाज सेवा में योगदान के लिए।
कैप्टन हमीद खान पुरस्कार	2012	1 लाख	राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता सामाजिक सद्भाव बढ़ाने वीरता एवं नागरिकों की सुरक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए
मौलाना अबुल कलाम आजाद सम्मान	2012	1 लाख	साहित्य कला रंगकर्म एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान हेतु
पत्रकारिता के क्षेत्र में दिए जाने वाले पुरस्कार			
विद्यानिवास मिश्र राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार	2007	2 लाख	
सत्यनारायण श्रीवास्तव राज्य स्तरीय पत्रकारिता पुरस्कार	2008	1 लाख	
गणेश शंकर विद्यार्थी राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार	2007	2 लाख	मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश में उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए उत्साहजनक वातावरण बनाए जाने तथा अग्रणी पत्रकारों को सम्मानित करने के लिए
स्वर्गीय मणिक चंद बाजपाई राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार	2006	2 लाख	
तरुण कुमार भादुड़ी पुरस्कार			प्रतिवर्ष 35 वर्ष की आयु तक के दो युवा पत्रकारों को
माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता पुरस्कार		5000	किसी कार्यरत संपादक को उसके श्रेष्ठ संपादन हेतु
जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी पुरस्कार		5000	राज्य के युवा पत्रकार को श्रेष्ठ आलेखन हेतु
रामेश्वर गुरु पुरस्कार			
विज्ञान के क्षेत्र में दिए जाने वाले पुरस्कार			
डॉ कैलाश काटजू पुरस्कार	1982	50,000	यह पुरस्कार विज्ञान के क्षेत्र में प्रदान
डॉ लज्जा शंकर झा पुरस्कार	1982	50,000	अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी के लिए
डॉ हरिसिंह गौर पुरस्कार	1982	50,000	सामाजिक विज्ञान के लिए
डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर राष्ट्रीय पुरस्कार	2005		प्राचीन संपदा एवं पुरातात्विक संस्कृति के संरक्षण के लिए
महिलाओं के लिए विशेष पुरस्कार			
वीरांगना लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय सम्मान	2013	2 लाख	देश की सुरक्षा कर्तव्य देश बलिदान अदम्य साहस वीरता नारी उत्थान सामाजिक पुनर्जागरण एवं उपलब्धियों व योगदान करने वाली महिलाओं को
अरुणा शानबाग पुरस्कार	19 मई 2015	1 लाख	महिला हिंसा के खिलाफ काम करने वालों को
आदिवासियों के लिए विशेष पुरस्कार			
जननायक टट्या भील सम्मान		1 लाख	शिक्षा खेल एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आदिवासी युवा को
रानी दुर्गावती राष्ट्रीय पुरस्कार	2008	2 लाख	आदिवासियों के विकास के लिए कार्य करने वाले व्यक्ति व संस्थाओं को
ठक्कर बापा राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मान	2008	2 लाख	आदिवासी समुदाय के निर्धन पीड़ित एवं पिछड़े लोगों के प्रति प्रेम व समता पूर्ण सेवा हेतु।
शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह पुरस्कार		2 लाख	आदिवासी कला सृजन के लिए
अन्य पुरस्कार			
इंदिरा गांधी राज्य पुरस्कार	1985	1 लाख	समाज के किसी विशेष क्षेत्र में समर्पित सेवा हेतु।
अखिल इंदिरा गांधी राज्य पुरस्कार	1985	2 लाख	समाज के किसी विशेष क्षेत्र में समर्पित सेवा हेतु।



मध्यप्रदेश के पुरस्कार एवं सम्मान

संत रविदास स्मृति पुरस्कार	2004	2 लाख	सामाजिक चेतना को जागृत तथा दलित वर्गों के उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को
महावीर अहिंसा पुरस्कार		2 लाख	अहिंसा शाकाहार के सिद्धांत पर उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य हेतु
सावित्रीबाई फुले पुरस्कार	2012	1 लाख	शिक्षण के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाली शिक्षिका को
महाराजा अग्रसेन सम्मान	2008 - 09	2 लाख	सामाजिक सद्भावना एवं समरसता हेतु
महर्षि वेद व्यास सम्मान	2008 - 09	2 लाख	शिक्षा के क्षेत्र में समग्र रचनात्मक योगदान हेतु।
चंद्रशेखर आजाद सम्मान पुरस्कार	2008 - 09	2 लाख	समाज सेवा एवं देश भक्ति के क्षेत्र में
डॉ शंकर दयाल शर्मा सृजन सम्मान	1986	31 हजार	हिंदी ग्रंथ अकादमी के लेखकों को उत्कृष्ट रचना के लिए पांच विषयों में
विनोवा भावे पुरस्कार	2019		सोलर पंप के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले देश को

मध्यप्रदेश शासन द्वारा दी जाने वाली फैलोशिप

राजेंद्र माथुर स्मृति शिक्षा वृत्ति	पत्रकारिता के क्षेत्र में
मुक्तिबोध फैलोशिप	साहित्य के क्षेत्र में
अमृता शेरगिल फैलोशिप	चित्र और मूर्तिकला के क्षेत्र में
उस्ताद अलाउद्दीन खान फैलोशिप	संगीत के क्षेत्र में
इंदिरा गांधी फैलोशिप	पर्यावरण शोध हेतु
चक्रधर फैलोशिप	शिक्षा के क्षेत्र में
अशोक वाजपाई फैलोशिप	सांस्कृतिक सरोकारों का वर्णन करने और युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से



Download Exam Gurooji App from Google Play